



Madina Academy Pakistan

Learn Islam Teachings by

Umar Shahzad Madani

Download Darse Nizami Books from

Website

DarseNizami.MadinaAcademy.Pk

MadinaAcademy.Pk

DarseNizami.MadinaAcadmey.pk

DarseNizami.MadinaAcademy.Pk

ناينين ٣٨-ارُدوبارارلارور

Copyright © All Rights reserved

This book is registered under the copyright act. Reproduction of any part, line, paragraph or material from it is a crime under the above act.

جملہ حقوق محفوظ ہیں یہ کتاب کا لی رائٹ ایکٹ کے تحت رجٹر ڈے، جس کا کوئی جملہ، پیرا، لائن یا کسی قتم کے مواد کی نقل یا کا لی کرنا قانونی طور پر جرم ہے۔



تقیح : حافظ محدا کرم ساجد محداشتیاق مطبع : روی پهلیکیشنز ایند پرنزز کا مور اطبع الفتی الم

Farid Book Stall

Phone No:092-42-7312173-7123435 Fax No.092-42-7224899 Email:info@faridbookstall.com Visit us at:www.faridbookstall.com فريديكي الروبازازلايور فرن نبر ٩٢.٤٢.٧٣١٢١٧٣.٧١٢٣٤٣٥، على نبر ٩٢.٤٢.٧٢٢٤٨٩٩، ال يمل بالله المالكة المالكة

فلمرسيئ ولي القرآن في علوم القرآن

| | | | | + | | |
|-------------|------|-------------------------------|----------|------|-----------------------------|--------|
| | صفحه | عنوان | نمبرثنار | صفحه | عنوان | ببرشار |
| | 21 | تشريح | 3 | 11 | الاهداء | 1 |
| | 21 | قرآن كريم كويا در كھنے كاتھم | 4 | 12 | تعارف مصنف | 2 |
| en | | خوش الحانی کے ساتھ قرآن | 5 | 12 | تغليى سفر | 3 |
| | 22 | مجيد پڙھنے کا استحباب | | 12 | فن حديث ميں ڈاکٹريٹ | 4 |
| S | | نماز میں قر آن مجید پڑھنے اور | 6 | 12 | فرائض تدريس اورعدم بلوغ | 5 |
| aAca | 22 | اس کو سکھنے کی فضیلت | | 13 | الكليه الشرعيه كے ساتھ تعلق | 6 |
| \subseteq | 24 | قواعدِ قرآنيه | l | 13 | مبجد حرام میں تدریس | 7 |
| 99 | 24 | قاعدهنمبرا | 1 | 13 | نداءالاسلام پردرس | 8 |
| \geq | 25 | قاعده نمبر ۴ | 2 | 13 | ادارے کا قیام | 9 |
| | 25 | قاعده نمبر ۳ | 3 | 14 | ہرروزمحفل ذکر دنعت | 10 |
| zar | 25 | قاعده نمبرنه | 4 | 14 | عالمی کانفرنسول میں شرکت | 11 |
| | 26 | قاعده نمبر ۵ | 5 | 14 | عالمي مقابله قراءت كي صدارت | 12 |
| sel | 26 | قاعده نمبر ٢ | 6 | 14 | اتصانف ا | 13 |
| ars | 26 | قاعده نمبر ۷ | 7 | 14 | آپ کی تصانیف کے نام | 14 |
| | 27 | قاعده نمبر ۸ | 8 | 17 | مقدمه | |
| | 27 | قاعده نمبر ۹ | 9 | | قرآن مجيد پرهمل كرنے والے | 1 |
| | 27 | قاعده نمبر ۱۰ | 10 | | اوراس کی تعلیم دینے والے کی | |
| | 28 | | 11 | 20 | فضيلت | |
| | 28 | قاعده نمبر ۱۲ | 12 | 21 | حافظ قرآن کی فضیلت | 2 |
| Ł | | | | | | |

| فبرست | | | | 4 | | لا تقان في علوم القرآن | زبدةا | |
|-------|---|-------------------------------|------------|-------|---|---|-------------|---|
| صنح | 1 | عنوان | نمبرثار | صفحه | | عنوان | ا مبرشار | |
| 49 | | أقسام ترجمه | 7 | 28 | | قاعده نمبر ۱۳ | 13 | |
| 50 | | ترجمهاً ورتفسير مين فرق | 8 | 29 | | قاعده نمبر ۱۴۳ | 14 | |
| | - | وہ چنداُمور جن کے بغیر ترجم | 9 | 30 | | قاعده تمبر ۱۵ | 15 | |
| 51 | | انبیں کیا جا سکتا | | 30 | | قاعده تمبر ١٦ | 16 | 1 |
| 58 | • | پیش لفظ | | 31 | | قاعده تمبر ۷۱ | 17 | |
| 59 | | قرآن مجيد | 1 | 31 | | قاعده تمبر ۱۸ | 18 | |
| 62 | | اصطلاحات تفيير كابيان | | 31 | | ا قاعد دنمبر ۱۹ آ | 19 | |
| 63 | | تفسيراورتاويل كالغوى معنى | · 1 | 32 | | ا قاعده نمبر ۴۰ | 20 | |
| 64 | | تفسيراورتاويل كافرق | 2 | 32 | | ا قاعده تمبر ۲۱ | 21 | |
| 66 | | فائده اورغرض وغايت | 3 | 33 | } | قاعده تمبر ۲۲ | 22 | |
| | | تفبيرقرآن کی فضیلت پرعقلی | 4 | 33 | 3 | قاعده تمبر ۳۳ | 23 | |
| 66 | ; | ولاكل | | 34 | | ا قاعده نمبر ۴۳ | 24 | |
| | | تفییر قرآن کی فضیلت کے | 5 | 34 | 1 | ا قاعده تمبر ۲۵ | 25 | |
| 67 | , | متعلق احاديث وآثار | | 34 | 1 | . قاعده نمبر ۲۶ | 26 | |
| 68 | 3 | دحى كالغوى اورا صطلاحي معنى | 6 | 35 | 5 | قاعده تمبر ۲۷ | 27 | |
| 69 | 9 | غرورت وحی اور ثبوت وحی | 7 | 35 | 5 | قاعده تمبر ۲۸ | 28 | |
| 72 | 2 | جی کی اقسام | 8 | | | قرآن مجيد كے تراجم | | |
| | | نر آن مجید کی تعریف اور قر آن | 9 | 3. | 7 | كا تقابلي جائز ه | | |
| 7 | 5 | مید کے اساء | | 4 | 3 | اصول ترجمهُ قرآن کریم | 1 | |
| 70 | 6 | ر آن مجید کے نام | 1 |) 4 | 3 | قر آ ن کریم ت | | |
| 7 | 6 | ن ناموں کی وجہ | 11 11 | 1 4 | 3 | تفییر بار دیرین | 1 | |
| | | عياديامت' ولها كتاب | 12 | 2 4 | 4 | ^و ہ علوم جن کی مُفتر کوحاجت ہے ت | 1 | |
| 8 | 0 | علوم'' | ما | 4 | 7 | ز جمهٔ عربی لغت کی روشنی میں تہ سریہ ہذیبہ د | 1 | |
| 8 | 3 | ول قر آن کریم | <i>i</i> 1 | 3 4 | 9 | ر جمه کا عرفی معنی | 6 | _ |

| فهرست | | | 5 | فان في علوم القرآن | بدةالات |
|----------|--------------------------------|--------|------|-----------------------------|---------|
| صنحه | عنوان | نبرشار | صفحہ | عنوان | ببرثنار |
| | سب سے پہلے قرآن مجید کا | 6 | | قرآن مجید کے غیرتحریف شدہ | 14 |
| 101 | كون ساحصه نازل ہوا؟ | 1 | | ہونے کے متعلق علماء شیعہ کی | |
| 104 | اوائل مخصوصه | 7 | 84 | تصريحات | |
| <u> </u> | سب ہے آخر میں کون ساحصہ | 8 | | جمع قرآن کے متعلق علاء شیعہ | 15 |
| 105 | نازل ہوا؟ | | 85 | كانظرىي | |
| | نزول کے اعتبار سے آخری | | | قرآن مجید کے بوسیدہ اوراق | 16 |
| | آیات اور سورتوں کے متعلق دیگر | | 87 | كوكياكرين؟ | ļ ! |
| 106 | اقوال كابيان اوران كاجواب | | | قرآن مجيد پر نقطے ادر اعراب | 17 |
| 107 | سبب نزول کی پہچان | 10 | 87 | لگانے کی تاریخ اور شحقیق | |
| 107 | سبب نزول کی معرفت کے فوائد | 11 | | قرآن مجيد پررموز اور اوقاف | 18 |
| | نص میں لفظ کے عام ہونے کا | 12 | 89 | لگانے کی تاریخ کی تحقیق | |
| | اعتبار کرنا جاہیے یا سبب نزول | | 91 | وقف کی پانچ مشہورا قسام ہیں | 19 |
| 109 | کے خاص ہونے کا؟ | | | مضامین قرآن کا خاکه | |
| | اسبابِ نزول کے متعلق مفید | 13 | 96 | ایک نظرمیں | |
| 111 | أموركابيان | | | سمکی اور مدنی سورتوں | |
| , | وعن المسئلة الثانيه وهي | 14 | 97 | کی شناخت | |
| 112 | هل يفيد سببا النزول الايه | | İ | کی اور مدنی کی شناخت کے | 1 |
| | اگر ایک ہی آیت کے گئ | 15 | 98 | فوائد | |
| | اسباب نزول بیان کیے گئے | | 98 | کمی اور مدنی کی کرامات | 2 |
| 112 | ہوں تو اس کے حکم کا بیان | | | مدینه منوره میں نازل ہونے | 3 |
| ŧ | متفرق آینوں کے نزول ک | 16 | 99 | والی سورتیں پیر ہیں | |
| 115 | ایک ہی سبب ہونے کابیان | | | حضری اور سفری آیات اور | 4 |
| 6 | قرآن مجيد كے ان حصول | 17 | 99 | سورتو ل كابيان | |
| ر | بیان ٔ جن کا نز ول بعض صحابه ک | - | 100 | منبية تشيم نزول قرآن | 5 |

| فبرست | · | | 6 | الانقان في علوم القرآن | زبرة === |
|-------|--|--------------|--------|--|-------------|
| صفحه | عنوان | نمبرثار | صنحہ | ر عنوان | لنبرثا |
| 136 | طريقه | | | زبان پر جاری ہونے والے | |
| 138 | فائده اولي | 33 | 115 | الفاظ کے مطابق ہواہے | |
| | قرآن پاک کوبہ کثرت پڑھنے | 34 | 117 | | 18 |
| 139 | كااستحباب | | | ً قرآن کے حفاظ اور راویوں کا | 19 |
| | قرآن پاک بڑھنے کی مقدار | 35 | 117 | تعارف | |
| 140 | مين اسلاف كامعمول كياتها؟ | | 120 | • • | 20 |
| 142 | قرآن مجید کی خلاوت کے آ داب | 36 | | 122 | 21 |
| | او کچی آ واز ہے قراءت کرنے | 37 | 122 | قار يول كاذ كر | |
| 151 | كابيان | | | متواتر مشهوراً حاد شاذ موضوع | 22 |
| 152 | مفحف من د مکھر پڑھنے کابیان | 1 | | اور مدرج قراءتوں کی تعریفات | |
| 160 | اقتباس كابيان | 1 | | قيد "موافقت مصاحف"كا | 23 |
| 160 | _ ' | 1 | 126 | | |
| | قرآن تھیم کے غریب (غیر | 41 | 127 | قير وصح سندها "كافائده | 24 |
| 162 | | Į. | 127 | 1 | |
| | عراب القرآن سے كيا مراد | 42 | 129 | i | 26 |
| 163 | • | | | سات مشہور قراء توں کے علاوہ | 27 |
| | ر آن ڪيم ميں غير عربي زبان | | 131 | 1 1 / 1 | |
| 168 | 1 | 1 | 132 | | 28 |
| | ندا بم قواعد كابيان جن كاجانا | . 1 | 1 | ים ובע | 29 |
| | نسر کے لیے ضروری ہے' یہ متراہ | | 139 | • | 1 |
| 17 | | ا | | فصل: قراءتوں کے الگ الگ اند جمع کا سے مدد ک | 31 |
| 17 | |] | 1 | اور جمع کر کے بڑھنے کے طریقت کا ان | |
| | صنعت استخدام'' کی تعریف سریه رمیحه: | " 46 | 5 13 | · • • | 32 |
| 17 | رايك آيت كالتح ترجمه 3 | او | | قراءتوں کو یکجا کر کے پڑھنے کا | 32 |

| فهرست | | | 7 | قان في علوم القرآن | زبرة الات |
|-------|-------------------------------|-------|-----|---------------------------------------|-----------|
| صفحہ | عنوان | برشار | صنح | عثوان | نبر ثار |
| 194 | ا جات آجا | | 174 | قاعده | 47 |
| 195 | "بروبحر" | 63 | 175 | . قاعده | 48 |
| 198 | اعراب قرآن کی پہچان | 64 | 175 | معرفهاورنكره كيقواعد | 49 |
| 206 | فاكده | 65 | | تعریف و تنکیر کے متعلق ایک | 50 |
| 207 | مثاليس | 1 | 179 | اورقاعده | |
| 208 | 7 | 1 | 183 | قاعده (دربیان مفرد وجمع) | 51 |
| 208 | قرآن محکم ہے یا متشاب؟ | | 188 | سوال وجواب كابيان | 52 |
| 210 | قصل | 69 | 189 | وجوه اور نظائر کی شناخت | 53 |
| 213 | منشا بهات کی حکمت | 70 | 189 | 0.50 | 54 |
| 214 | قصل | 71 | 189 | نظارَ | 55 |
| 217 | قرآن کے مقدم اور مؤخر مقامات | 72 | | ''الهدى''پيلفظستره معانی | 56 |
| 226 | قرآن کےعام اور خاص کا بیان | 73 | 190 | کے لیے آتا ہے | |
| 226 | صيغه بالي عموم كابيان | 74 | | "السوء" يبجى كى وجوه برآتا | 57 |
| | احادیث مبارکہ کے ذریعہ ا | 75 | 192 | <u> </u> | |
| 230 | متحصیص کی مثالیں ہے ہیں | | | "المصلوة" يأجى كن وجوه ير | 58 |
| 231 | [قصل | 76 | 192 | جات آ | |
| | عموم وخصوص ہی کے متعلق چند | 77 | | "اكسرَّحْـمَةُ وَرَرَتْ عَلْى | 59 |
| 232 | متفرق ذیلی مسائل کابیان | | | أَوْجُهِ "(رحت بھی کی وجوہ پر | |
| | قرآن مجيد كے مجمل اور مبين كا | 78 | 193 | (جاءآ | |
| 235 | بيان | | | " ٱلْفِتْنَةُ وَرَدَتْ عَلَى أُوجُهِ" | 60 |
| | قرآن حکیم کے ناسخ اورمنسوخ | 79 | 193 | (کئی وجوہ کے لیے آتا ہے) | - 1 |
| 237 | كابيان | | | "إَلُوُّونَ حُورَة عَلَى أَوْجُهِ" | 61 |
| 237 | لشغ کے معنی کی لغوی شخفیق | 80 | 193 | (کی وجوہ کے لیے آتاہے) | |
| 244 | متفرق فوائد | 81 | | "السذكسر" (كى وجوه ك | 62 |

| فهرست | | | - | 017.13.000 | = |
|-------|-------------------------------|---------|--------------|--------------------------------|---------------|
| صفح | عنوان | نمبرشار | صفحه | عنوان | نمبر شار |
| 283 | فصل | 100 | | متشابه اوربه ظاهرمتضاد ومتناقض | 82 |
| 283 | ادوات استفهام كابيان | 101 | 246 | آ يات كابيان | |
| 288 | أفصل | 102 | 250 | | |
| 288 | امر کے مجازی معانی | 103 | | قرآن مجید کی مطلق اور مقید | 84 |
| 290 | اقصل | 104 | 253 | آ يات كابيان | 1 L |
| 291 | سورتوں کےفواتح کابیان | 105 | | قرآن مجید کے منطوق اور | 85 |
| 294 | قرآنی سورتوں کےخواتم | | | مفهوم كابيان |] |
| | قرآن باک کی آیات اور | 107 | 258 | قرآن پاک کے وجوہ مخاطبات | 86 |
| 297 | سورتوں میں مناسبت | | 261 | فائده | |
| 298 | تنبيد | 108 | 261 | قرآن کے حقیقت اور مجاز کابیان | |
| 300 | اعجازِقر آ ن : | 109 | 262 | | ļ |
| 303 | _ | | 269 | , | |
| 305 | تنبيبهات | 111 | 271 | حصر میں طرز ق | |
| 306 | قر آن مجيد مين مستنبط علوم | 112 | 272 | | |
| 317 | امثال قر آن | 1 | | | ļ |
| 319 | قصل | 114 | | ایجاز کی دوسری قسم ایجاز الحذف | 94 |
| 321 | أَمْثَالِ كَامِنَهُ | 1 | 1 | | . } |
| 327 | قرآن اورقشمين الطانے كابيان | 116 | 274 | | |
| 332 | | ł | Į. | | 96 |
| | قرآن پاک میں واقع اساء و | 1 | ı | | |
| 336 | | 1 | 278 | | |
| 337 | ساءملائکہ(فرشتوں کے نام) ۔ | | i | فر آن حکیم کے کنابیاورتعریض | , |
| 338 | | | | | |
| 338 | باکل کے نام | 12 | 1 282 | براورانشاء کابیان | 99 |

| فبرست | | | 9 | غان في علوم القرآن | بدةالان |
|-------|-------|-------------|------|--|---------|
| صفحه | عنوان | نمبرنثار | صفحه | عنوان | نبرشار |
| | | | 338 | قوموں کے نام | 122 |
| | | | | قرآن پاک کوبے وضوحچھونے | 123 |
| | | | 342 | كأتتكم | |
| | | | 342 | مفردات قرآن كابيان | 124 |
| | | | 346 | مبهمآ بات كابيان | 125 |
| | | | | قرآن مجيد ميں ابہام ك_آنے | 126 |
| | | | 350 | کے اسباب ووجوہ کا بیان |] |
| | | | | قرآن کی تفسیروناویل کی معرفت | 127 |
| | | | 352 | اوراس کی ضرورت کابیان | |
| | | | 352 | علم تفسير کی فضیلت | |
| | | | 353 | | ļ |
| | | | 354 | | |
| | | | 358 | مفسر کون ہوسکتا ہے؟ | 131 |
| | | | 360 | طبقات ِمفسرين | 132 |
| | | İ | 360 | تفبيرصحاب | 133 |
| | | | 364 | طبقه تابعین متندادر قابل اعتما رتفسیر کون سی ہے؟ | 134 |
| | | | | متنداور قابل اعتاد تفسير كون ي | 135 |
| | • | | 368 | ?ج | |
| | | | | | |
| | | | | É | |
| | | | | ** | |
| | | | | | |
| | | | ! | | |
| | | | | | |



الاحداء

ترجمان القرآن عنمالله حضرت عبد الله بن عباس وعنمالله كالله بن عباس وعنمالله كالله ك



DarseNizami. MadinaAcademy. Pl



تعارف مصنف عالم عرب کے ظیم صلح اور مفکر فضیلة الشیخ بروفیسرڈ اکٹر محمد علوی الحسنی المالکی مدخلیہ

آ پ کا اسم گرامی محمر والد کا نام علوی اور دادا کا نام عباس ہے۔ آپ کا تعلق خاندان سادات ہے۔ سلسلہ نسب ستائیس واسطول سے رسالت مآب طبق آلیم کی بہنچنا ہے۔ مسلکا مالکی اور مشر با قادری ہیں۔ کیونکہ آپ کے دادااور والدگرامی دونوں شنرادہ اعلیٰ حضرت مفتی اعظم ہند شاہ مصطفیٰ رضا خان رحمہ اللہ تعالیٰ کے خلفاء تھے اور خود آپ خلیفہ اعلیٰ حضرت مولا ناضاء الدین مدنی قادری کے خلیفہ ہیں۔

آ پ مکہ مرمہ میں پیدا ہوئے وہیں آ پ نے پرورش پائی مسجد حرام مدرسہ الفلاح ادر مدرسہ تعلیم حاصل کی آپ نہایت حسین وجمیل قد آور شخصت کے مالک تھے۔

تغليمي سفر

۔ آپ نے صرف اپنے وطن میں علوم حاصل کرنے پر اکتفا نہیں کیا بلکہ اس کے لیے تمام عالم اسلام کاسفر کیا۔

فن حديث ميں ڈاکٹريٺ

آ پ نے جامعہ از ہرمصر میں فن حدیث اور اصول حدیث کے موضوع پرڈ اکٹریٹ کی۔ فر اکفن تدرلیس اور عدم بلوغ

آ ب بین ای سے نہایت ذہین وفطین ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ آ ب نے بلوغ سے قبل بہت سے علوم کی تدریس کے فرائض سرانجام دیئے ہیں۔اس کرم پراللہ کاشکرادا کرتے ہوئے

لکھتے ہں:

وَقَدْ بَدَأْتُ التَّدُرِيْسَ بِفَضْل مِي فِي الله كَفْل وكرم سے جب اللَّهِ وَأَنَّا دُونَ الْبُلُوعُ عِلَمُ وَاللِّهِي تَركِين شروع كي تواس وقت البحي نابالغ تها ، اَلْمَرْ خُوْمَ السّيّدِ عَلُوى الْمَالِكِي اللَّذِي مِن اين والدّرامي علوي المالكي ي جو كَانَ يَالْمُرُنِي بِتَدُريْسِ كُلَّ كِتَابِ كَتَابِ كَابِهِي يرُهِمًا 'جبِخْم موتى تو آبِاس أَنْهُ مُنْ قِرَاتُهُ عَلَيْهِ فِي ذَٰلِكَ الْوَقْتِ كَيْ تَدريس كَاحَكُم ديتي وطالب علم بهي فَكَانَ يَامُو الطُّلَّابَ الَّذِينَ يَقُرَءُ وْنَ مَرُوره كَابِ يرْضِ كَ لِيهِ اللهِ عَلَى إِلَ آتا'اےمیرے یاں بھیج دیتے۔

عِنْدَهُ بِالْحُضُورِ عِنْدِيْ.

الكليهالشرعيه كيساته تعلق

علمي ثقابت وشهرت كي وجهرة آپ كو ٩٠ ١٣١ ه مين كليدالشرعيه مكة المكرّ مه مين استاد مقررر کیا گیا۔

13

مسجد حرام میں تدریس

جب او ۱۳۹۱ ہیں آپ کے والدگرامی سیدعلوی المالکی کا وصال ہو گیا تو علماء مکہ نے آ ب کی خدمت میں حاضر ہوکر کہا کہ اب ان کی مند کی ذمہ داری نبھا نا آ پ کا بی کام ہے۔ نداءالاسلام يردرس

مبجد حرام میں اینے والدگرامی کی جگہ درس دینے کے ساتھ ساتھ مکۃ المکرّ مہ کے ندا ، الاسلام ریڈیو سے اسلامی موضوعات پر درس کا سلسلہ بھی شروع فر مایا ، جس طرح آپ کے والدكرا مي كا درس ہر جمعه كي صبح كونداءالاسلام نشر كرتا تھا'اي طرح آپ كا درس بھي اس موقع پر شروع کرد ما گیا۔

ادارے کا قیام

آب نے مکۃ المکر مدے محلّہ رصفہ میں وین علوم کا ایک مرکز قائم کر رکھا ہے جس کا نام مدرسة عتيبيد ہے۔ DarseNizami.MadinaAcademy.P

هرروزمحفل ذكرونعت

آ پ کے پاس چونکہ ہرروز مختلف مقامات سے تربیت زیارت اور ملاقات کے لیے کافی تعداد میں لوگ آتے رہتے ہیں۔اس لیے ہرروز مغرب کی نماز کے بعد آپ کے ہاں معفل ذکر ونعت منعقد ہوتی ہے۔

عالمي كانفرنسول ميں شركت

حجاز مقدس میں اپنی گونال گول مصروفیات کے باوجود آپ نے متعدد وفعہ الجزائر ' انڈونیشیا' کینیڈا' مراکش' برطانیہ' پاکستان اور ہندوستان سمیت کی ممالک میں بین الاقوامی کانفرنسول میں شرکت کی۔

عالمي مقابله قراءت كي صدارت

آ پ سعود پیمیں منعقد ہونے والے بین الاقوامی مقابلہ قراءت کے تین سال تک صدر

ر ہے'

تصانيف

آپ نے مختلف تعلیمی کہ رہی اور انظامی ذمہ داریاں سنجالنے کے ساتھ ساتھ سے سے زائد کتب تصنیف کی ہیں جو عالم اسلام کے لیے رہتی و نیا تک رہنمائی کا کام دیں گی۔ آپ نے عقائد تفییر عدیث سیرت معیشت معاشرت پر جس طرح قلم اٹھایا ہے وہ آپ ہی کا حصہ ہے۔ ہرکتاب کا مطالعہ کرنے والاشخص یوں سمجھتا ہے کہ اس فن میں ان کا کوئی ثانی نہیں۔

آپ کی تصانیف کے نام

- (١) الإنسان الكامل
- (٢) زبدة الاتقان في علوم القرآن
- (٣) المنهل اللطيف في اصول الحديث
- (٣) القواعد الاساسيه في علم مصطلح الحديث
 - (٥) فضل المؤطا وعناية الامة الاسلاميه
 - (٢) حول خصائص القرآن

- (۷) قل هذه سبيلي
- (٨) لبيك اللهم لبيك
- (٩) حول الاحتفال بالمولد النبوى الشريف
 - (١٠) حاشيه المختصر في السيره النبويه
 - (١١) في رحاب البيت الحرام
 - (۱۲) ذكريات ومناسبات
 - (١٣) المستشرقون بين الانصاف والعصبيه
 - (١٣) الدعوه الاصلاحيه
 - (١٥) في سُبُل الهدى والرشاد
 - (١٢) ادب السلام في نظام الأسرة
- (١٤) الطالع السعيد المنتخب من المسلسلات و الأسانيد
 - (١٨) شريعة الله الخالدة
 - (۱۹) حاشيه المورد الروى
 - (٢٠)شرح المولد لإبن كثير
 - (٢١) الذخائر المُحمّديه
 - (۲۲)مفاهیم یجب ان تصحح
 - (٢٣)شرف الأمة المُحمديه
 - (٢٣)القدوة الحسنه في منهج الدعوة الى الله
 - (٢٥) تحقيق و تعليق على قريب المُجيب
 - (٢٦)الحصون المنيعه
 - (٢٤)مقبرة جنت المعلى
 - (٢٨)شفاء الفواد بزياره خير العباد
 - (٢٩) تاريخ الحوادث والأحوال النبويه
 - (٣٠)مفهوم التطور والتجديد في الشريعة الاسلاميه

(٣١)كشف الغمه في اصطناع المعروف ورحمة الأمة

(٣٢)وهو بالأفق الأعلى

(٣٣)منهج السلف في فهم النصوص

(٣٣) القواعد الأساسيه في علم مصطلح الحديث

(٣٥) القواعد الأساسيه في علوم القرآن

(٣٦) القواعد الأساسيه في اصول الفقه.





مقدمه فضائل قر آ ن

گرهمی خواهی مسلمان زیستن نیست ممکن جز بقرآن زیستن

اللہ ہجانہ تبارک وتعالیٰ کامسلمانوں پربے پایاں کرم ہے کہاں نے مسلمانوں کو آن مجیدالی عظیم دولت سے نوازا قرآن کریم آسانی کتابوں میں وہ واحد اور منفر دکتاب ہے جس میں تخریف اور تبدیلی نہیں ہو عتی ہس میں اللہ تبارک و تعالیٰ نے زمانہ بعث نبوی سے بس میں تخریف اور تبدیلی ہوئے والے انسانوں اور اُن کی زندگی کے ہر شعبہ کے لیے جامع ہدایات عطاکی ہیں جس کی پہلے سے کی گئی پیشین گوئیوں کو بعد میں آنے والے وقت نے صحیح میں است کر دیا اور قیامت تک اس کی پیشین گوئیاں تسلسل اور توانر سے پوری ہوکر قرآن مجید کی معداقت کو ہرزمانہ میں دنیا والوں برآشکاراکرتی رہیں گی۔

- یہ وہ واحد اور منفر دکتاب ہے جس کو یاد کرنے اور زبانی پڑھنے والے تمام دنیا میں موجود ہیں۔
- قرآن مجید کے علاوہ دنیا میں کوئی ایسی کتاب نہیں ہے جس کا پورامتن زبانی پڑھا جاتا
 مواوراس کثرت سے پڑھا جاتا ہو۔ میدوہ واحد کتاب ہے جود نیا میں بہ کثرت چھپتی ہے۔
- سب سے زیادہ پڑھی اور من جاتی ہے اور جس کی تعلیمات پر دنیا میں سب سے زیادہ
 ممل کیا جاتا ہے۔
- سیوہ منفرد کتاب ہے جس نے اپنے نبی کے علاوہ انبیاء سابقین کی تعظیم کو بھی واجب کیا
 اوران پرایمان لانے کو ضروری قرار دیا۔ جس کا پیغام تمام عالم انسانیت کے لیے ہے۔

اورجس کے ہردمویٰ کوآنے والے دنت نے سیا کر دکھایا۔

قرآن کریم سے پہلے نازل ہونے والی آ عانی کتابوں میں سے آج کوئی کتاب اپنی اس زبان میں موجود نہیں ہے جس زبان میں وہ نازل ہوئی تھی اور نہ کسی دوسری آ عانی کتاب کے مانے والے بیدوی کر سکتے ہیں کہ ان کی کتاب آج ان کے ہاتھوں میں بعینہ ای طرح موجود ہے 'جس طرح وہ نازل ہوئی تھی اور اس میں کوئی کی بیشی یا تبدیلی اور تحریف نہیں ہوئی۔ اس کے برخلاف قرآن مجیدنے دعویٰ کیا:

' إِنَّا نَحْنُ نَزَّلُنَا اللِّهِ كُرَ وَإِنَّا لَـهُ لَحَافِظُونَ O '(الحِر:٩)

بے شک ہم نے قرآن مجید کونازل کیااور ہم ہی اس کے محافظ ہیں۔

قرآن مجید کایہ چینج چودہ صدیوں سے موجود ہے اور اسلام کا کٹر سے کٹر مخالف بھی یہ ثابت نہیں کرسکا کہ قرآن کریم میں فلال سورت یا فلال آیت کم یازیادہ ہوگئ اور قرآن مجید کا یہ دعویٰ جھوٹا ہوگیا۔ کسی صورت یا آیت میں کی بیشی تو بڑی بات ہے 'یہ تک نہیں ٹابت کیا جا سکا کہ قرآن کریم میں کسی نقطہ یاز برز برکی کمی بیشی ہوگئی۔

ای طرح قرآن مجید نے یہ دعویٰ کیا کہ اس کی کی آیت میں تحریف نہیں ہو کی ڈوآن کر یم کی کئی آیت میں تحریف نہیں ہو کی ڈوآن کی سالٹا'' لا یک آئیٹ ہو البُ اطِل مِن بَیْنِ یکڈیڈہ وَ لَا مِن خَلْفِه '' (خم اسجدہ: ۴۲) غیرقر آن فرآن میں شامل نہیں ہو سکتا نہ آگے نہ پیچھے ہے۔
چودہ صدیاں گزرجانے کے بعد کوئی بڑے ہے بڑا منگر اسلام بھی بیٹابت نہیں کر سکا کہ قرآن مجید کی فلاں آیت پہلے اس طرح تھی اوراب اس طرح ہے۔قرآن مجید میں چھ ہزار چھاوسولہ آیات سُتر ہزار نوسو چونیس کلمات اور تین لاکھ سیس ہزار چھسوا کہ ترحروف ہیں۔
چھوسولہ آیات سُتر ہزار نوسو چونیس کلمات اور تین لاکھ سیس ہزار چھسوا کہ ترحروف ہیں۔
اور کسی آیت کسی کلمہ بلکہ کسی حرف کے بارے میں بھی کی بیشی یا تبدیلی اور تحریف کا کوئی شخص دعویٰ نہیں کر سکا اور قرآن مجید کی جتنی آیات 'جینے کلمات بلکہ جینے حروف ہیں' وہ سب خض دعویٰ نہیں کر سکا اور قرآن مجید کی جنتی آیات 'جینے کلمات بلکہ جینے حروف ہیں' وہ سب تین طرح قرآن مجید کی صدافت پر دلیل ہیں' نہ کسی کی ہو تکی نہ زیاد تی ہو تکی نہاں میں کوئی تبدیلی ہو تکی نہاں دیے جاسکے۔
تین طرح قرآن مجید کی صدافت پر دلیل ہیں' نہ کسی کی ہو تکی نہیں دیے جاسکے۔

قرآن كريم في افي صدافت اور حقانيت يرايك اور طرز سے دليل قائم كى كه جن وائس

میں سے کوئی شخص اس کی نظیر اور مثیل نہیں لاسکتا 'پہلے فر مایا:'' قُل لَینِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْحِنُّ عَلَى اَنْ يَّاتُوْا بِمِعْلِ هَلْذَا الْقُرْانِ لَا يَاتُوْنَ بِمِعْلِهِ ''(بن اسرائل ۱۸۸) آپ فر ما و تیجئے کے اگر تمام انسان اور جنات قرآن مجید کی مثال لانے پراکٹھے ہوجا کیں تو پھر بھی اس جیسا کلام نہیں لا کئے 'اس کے بعد فر مایا:

'' أُمُّ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلُ فَأَتُوا بِعَشْرِ سُورٍ مِّشْلِهِ مُفْتَرَيْتٍ ''(حُود: ١٣) كيابه كَتَّ بين كدرسول الله نے بيخود بناليا ہے'آپ كهدد بيجے كرتم اس جيسى دس سورتيں بناكر لے آؤ۔ پھرفر ماما:

" وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَى عَبْدِنَا فَأَتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّعْلِهِ" (البقره: ٢٣) الرَّمَ اس كلام (ككلام رباني مونے) ميں شك كرتے ہو جس كوہم نے اپنے بندے پر نازل كيا ہے تو اس كلام كي مثل ايك سورت ہى لے آؤ۔

اس کے بعد فرمایا:

'' فَلْمَهَاتُوا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهِ إِنْ كَانُوا صَدِقِيْنَ ''(الطّور:٣٣) الرّبيتِ بي تواس جيسي ايك آيت بي ك آئيں۔

چودہ صدیاں گزر چکی ہیں اور دن بدن دنیا میں علوم وفنون کی ترقی ہور ہی ہے اور زبان و بیان کے متعلق ہرفن پرسینکڑوں کتا ہیں لکھی جا چکی ہیں۔ اور اسلام کے مخالفین اور منکرین کی بے پناہ کثرت اور یورش ہے' اس کے باوجود چودہ سوسال سے لے کر آج تک کوئی یہ دعویٰ نہیں کرسکا کہ میں نے قرآن مجیدیا اس کی ایک سورت یا ایک آیت کی مثال بنا کی ہے۔
لی ہے۔

اور قرآن مجید کی جس قدر سور تیں اور جتنی آیات ہیں 'منکرین کے سامنے اتنے ہی چیلنج میں اور قرآن کی حمدانت پر اتنی ہی دلیلیں ہیں 'کیونکہ ہر ہر سورت اور ہر ہر آیت ایک چیلنج ہے۔

اگر کسی کے بس میں قرآن مجیدیا اس کی کسی سورت یا کسی آیت کی مثل لا ناممکن ہوتی تو ابت کک کا دونت کوئی مثال لا سکانہ اب تک لا چکا ہوتا'جس وقت قرآن مجید نے بیدوعویٰ کیا' اُس وقت کوئی مثال لا سکانہ اب تک لا سکا ہے۔ اس لیے کہا جا سکتا ہے کہ بیقرآن جس طرح چودہ سوسال پہلے رسول الله مُنْ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الل

کی صدافت پر دلیل تھا' آج بھی دلیل ہے' بلکہ اس کی ہرآیت آپ کی نبوت کی دلیل ہے اور متعدد وجوہ ہے دلیل ہے نہاس کی کسی آیت کی کوئی مثل لاسکتا ہے اور جب کرقر آن مجید میں چھے ہزار ہے زیادہ آیات ہیں تو آپ کی نبوت پر چوہیں ہزار سے زیادہ دلائل ہیں اورایک لاکھ چوہیں ہزارانبیاء ورسل میں ہے کسی نبی اور رسول کی نبوت اور رسالت براس قدر دلائل نہیں ہیں اور جب تک قرآن رہے گا'آپ کی نبوت پریددلائل قائم رہیں گے۔

سر کار دوعالم منتونیکی کے معجزات میں سب ہے برامعجز ہ قر آ ن کریم ہے اور یہ کہنا بڑا اعجاز ہے کہ تمام انبیائے کرام مینٹم کے معجزات ان کے ساتھ رخصت ہو گئے'لیکن آپ کی ا نبوت کامعجز ہ قیامت تک قائم رہے گا۔

دوسرے انبیاء اُنٹا کے ماننے والول سے اگر کوئی یو چھے کہ تمہارے نبی (علیہ السلام) کی نبوت پر کیا دلیل ہے تو کوئی دلیل نہیں پیش کرسکتا اور اگر ہم ہے یو چھے کہتمہارے نبی کی نبوت پر کیا دلیل ہے تو ہم سرکار کی نبوت پر ایک دونہیں چوہیں ہزار سے زیادہ دلیلیں پیش کر کتے ہیں۔اس طرح اگر کسی دین کا پیرو کارا پنے دین کے بارے میں شاکی ہوتو اس کو مطمئن کرنے کے لیے کوئی چیزنہیں ہےاور اگر خدانخواستہ کوئی مسلمان اپنے دین سے مشکوک ہوتو 🕝 اس کومطمئن کرنے کے لیے چوہیں ہزار سے زیادہ وجوہات ہیں۔ولٹدالحمدعلیٰ ذلک

(حضرت مولا ناعلامه غلام رسول سعيدي دامت بركاتهم العاليه شرح صحيح مسلم شريف ، ج ٢ ص ٥٦٨ ، فريد

يك سال أردوبازارُلا ہور)

قرآن مجید بیمل کرنے والے اوراس کی تعلیم دینے والے کی فضیلت

حضرت عبدالله بن عمر وينالله بيان كرت کیا اور وہ رات اور دن اس کی تلاوت کرتا ہو' دوسرا و ہخص جس کواللہ تعالیٰ نے مال عطا فر مایا ہواور وہ رات اور دن اس مال کو (اللہ

عن سالم عن ابيه عن النبي اتاه الله القران فهو يقوم اناء الليل كسوااوركى يررشك نبيس كرنا جائيك واناء النهار ورجل اتاه الله مالًا فهو والمخص جس كوالله تعالى في آن مجيد عطا ينفقه اناء الليل واناء النهار.

تعالیٰ کی راہ میں)خرچ کرتا ہو۔

حافظ قرآن كى فضيلت

عن عائشة رضى الله تعالى فيه وهو عليه شاق له اجران.

ام المؤمنين حضرت عائشة صديقه رض الله عنها قالت قال رسول الله مُنتُ اللُّهُ مَن بِإِن كرتَى مِن كدرسول الله مُنتَ أَيْلَامُ فِي اللَّهُ مِن اللَّهُ مُنااذ الماهو بالقران مع السفرة الكوام جوفخص قرآن مجيد مين مامر مو وه ان فرشتول البررة والذى يقوا القوان ويتتصنع كماتهر بتاب جومعزز اور بزرگ بس اور (نامهُ اعمال يا لوح محفوظ كو لكصتر بين)ادر جس شخص کو قرآن مجید بڑھنے میں دشواری ہوتی ہے اورا ٹک اٹک کریڑھتا ہو' اُس کو دو أجريلتے ہیں۔

اس حدیث شریف کی تشریح کرتے ہوئے شارح مسلم لکھتے ہیں:

یہلا مرتبہاس مسلمان کا ہے' جوقر آن مجید کے حفظ'اس کی کثریت تلاوت اور اس کے معانی اور مطالب پرغوروخوض میں منہمک اور مستغرق رہتا ہے۔ جس کو یہ ملکہ اور مہارت حاصل ہوتی ہے کہ وہ قرآنی آیات کے مطالب اور مغانی اور ان نے حاصل شدہ مسائل آسانی سے بیان کرسکتا ہے'اس مخص کو بیعزت دی جاتی ہے کہ اس کو اُو نیجے درجہ کے فرشتوں کی رفانت عطاکی جاتی ہے۔

دوسرا درجه أس مسلمان كاب جس كومهارت كابيه مرتبه تو حاصل نبيس موتا ، ليكن و ه قر آن کریم کی تلاوت میں کوشال رہتا ہے اور باوجوداستعداداور ضلاحیت کی کمی کے قرآن مجید ہے رابط تو شخنہیں دیتا'اس وجہ ہے دواَ جر ملتے ہیں۔

اور جومسلمان قرآن مجید کی تلاوت کرے نہ اُس کے معنی برغور وخوض کرے اس کی بربختی برجس قدرافسوس کیاجائے کم ہے۔ قرآن كريم كويادر كطنے كاحكم حضرت ابوموی وی تفاتله بیان کرتے ہیں کہ نبی کریم ملتی لیکم نے فر مایا:

تعاهدوا القران فوالذي نفس قرآن كريم كويادرككؤ فتم أس ذات والے اونٹ کی نسبت زیادہ (سینوں سے)

محمد بيده لهو اشد تفلتا من الابل كرض كقبضة قدرت مس محر (مُنْ يُنْكِلُمُ) فی عقلها. (ملم شریف کاب نفائل القرآن) کی جان ہے! قرآن مجید رسیال ترانے

نكلنے والا ہے۔

خوش الحانی کے ساتھ قرآن مجید پڑھنے کا استحباب

حضرت ابو ہریرہ مِنی آللہ بیان کرتے ہیں کہرسول کر میم ملتی آلیم نے فر مایا:

الله تعالی کسی کام پراس قدراً جرنہیں ویتا' جتنا نبی کے خوش الحانی ہے قرآن مجید پڑھنے یراً جرعطا فر ما تا ہے۔ (صحیح مسلم کتاب فضائل القرآن)

حضرت ابومویٰ اشعری رسی آند بهان کرتے بی کدرسول الله ملی آیکم نے فر مایا:

"جومؤمن قرآن كريم يره عتائ اس كى مثال ترنج كى طرح ہے جس كى خوشبو يهنديده اور ذا نَقه خوش گوار ہےاور جومؤمن قر آن مجیدنہیں پڑھتا' وہ تھجور کی طرح ہے جس میں خوشبو نہیں کیکن ذا کقہ میٹھا ہے اور جومنافق قر آ ن پڑھتا ہے' اُس کی مثال ریجان کی طرح ہے' جس کی خوشبوا حیمی ہے اور ذا کقہ کڑوا ہے اور منافق جوقر آن مجید نہیں پڑھتا'اس کی مثال ا ندرائن کی طرح ہے'اس میں خوشبونہیں اور مزاکڑ واہے'۔ (صحیح مسلمٰ کتاب فضائل القرآن)

نماز میں قر آن مجید پڑھنے اور اس کوسکھنے کی فضیلت

حضرت ابو ہریرہ رضی تندیبان کرتے ہیں کہ حضور ملٹی کیا بھے فر مایا:

'' تم میں سے کی شخص کو بیر پسند ہے کہ جب وہ گھر جائے تو وہاں تین حاملہ اونٹنیاں موجود ہوں' جونہایت بردی اور موٹی ہوں؟ ہم نے عرض کیا: یقیینًا!

آپ ملتی ایک نے فر مایا: جن تین آیتوں کوتم میں سے کوئی مخص نماز میں پر متاہے وہ تین بڑی اور فریہ اونٹیوں سے بہتر ہیں''۔ (صحح مسلم)

یعن فریداونٹنوں کے صدقہ کی بنسبت قرآن مجید سکھنے اور سکھانے کا تواب زیادہ ہے۔ ایک اور حدیث میں اس طرح ہے: حضرت عتبہ بن عامر و کا تشہیان کرتے ہیں کہ رسول الله ملتَّهُ يُلِيَّمُ تشريف لائے ورال حاليك بم چبور بير بيٹے بوئ) منظ آپ ملتَّ يُلاَلِمُ DarseNizami. MadinaAcademy. Pk

نے فرمایا:

تم میں ہے کی شخص کو یہ بیند ہے کہ وہ ہرروز صبح بطحان (مدیند کی پھر یلی زمین) یا عقیق (ایک بازار) جائے اور وہاں ہے بغیر کسی گناہ اور قطع حری کے دو ہڑے ہڑے کو ہان والی اونٹنیال لے آئے۔ ہم نے عرض کیا: یارسول اللہ! ہم سب کو یہ بات بیند ہے۔ آپ ملی آئیلہ کہ نے فر مایا: پھرتم میں ہے کو کی شخص صبح کو مسجد میں کیوں نہیں جاتا' تا کہ قر آن جمید کی دوآ بیتی خود سکھے یا کسی کو سکھائے۔ اور یہ (دوآ بیوں کی تعلیم) دواونٹیوں (کے حصول) ہے بہتر ہے اور تین نین سے بہتر ہیں اور چار جارہ اور چار ہیا رہی نیا القیاس آیات کی تعداد اونٹیوں کی تعداد ہے بہتر ہیں نور چار میاں القرآن)



arseNizami.MadinaAcademy.Pk

قواعدِقرآ نيه

مغرِقر آ ل رُورِ ايمال جانِ دي مست حُبّ رحمةً اللعالمين

قر آن مجید میں بعض جگدا یک لفظ کی معنوں کے لیے آتا ہے۔ ہرمقام پر لفظ کے وہی معنی کرنا چاہئیں' جواس جگدمناسب ہوں۔اب ہم وہ قواعد بیان کرتے ہیں' جن ہے معلوم ہو جائے کہ لفظ کے کون سے معنی کس جگدمناسب وموزوں ہیں۔ان قواعد کا بغور مطالعہ کرنے اور ان کالحاظ رکھنے ہے قر آن مجید کا طالب علم غلطی ہے محفوظ رہ سکتا ہے۔

ان ہ عاطر سے سے ران جید فاطانب م بی سے معوظ رہ سلما ہے۔
نوٹ: طوالت کے خوف سے یہاں صرف قواعد کے بیان پر اکتفا کیا جائے گا' توضیح اور
تفصیل کے لیے بطور مثال آیات کے حوالہ جات' سورت اور آیت کے نمبر کے ساتھ ذکر کر
دیئے ہیں۔ طالب علم خود قرآن مجید سے نکال کر دیکھ لیں۔ واضیح رہے کہ تقریباً ہر قاعدہ کی دو
شقیں ہوں گی: الف اور ب۔ ای ترتیب سے مثالوں میں آیات کے معانی کا لحاظ رکھا

قاعده نمبرا

(الف) جب وحی کی نسبت نبی کی طرف ہوتو اس کامعنی ہوتا ہے بذر بعیہ فرشتہ یا بلا واسطہ فرشتہ اللہ واسطہ فرشتہ اللہ کارسول (مُنْ اَنْ اللہ عُمْ اللہ مُنْ اللہ عَلَیْ اللہ اللہ عَلَیْ اللّٰ عَلَیْ اللّٰ اللّٰ عَلَیْ اللّٰ عَلَیْ اللّٰ اللّٰ عَلَیْ اللّٰ عَلَیْ اللّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰ عَلَیْ اللّٰ عَلَیْ اللّٰ اللّٰ عَلَیْ اللّٰ اللّٰ اللّٰ عَلَیْ اللّٰ اللّ

(ب) جب وحی کی نسبت غیر نبی کی طرف ہوتو اس کامعنی ول میں (بات) ڈالنااور خیال پیدا کردینا ہوگا۔

الف كى مثال ان آيات سے ب:

(۱) النساء: ۱۶۳ (۲) هود: ۲ ۳ (۳) النجم: ۱۰-۹، بيه اور ان جيسي متعدد آيات ميس

" وحی" سے مراد وحی اللی ہے جور سولوں کی طرف آتی ہے۔

'' ب'' کی مثالیں ہے آیات ہیں:

(١) النحل: ١٨ (٢) الانعام: ١٢٢ (٣) القصص: ٧

```
قاعدهنمبر
```

(الف) جب لفظ 'عبد' کی نسبت الله تعالی کی طرف ہوتواس سے مراد مخلوق عابدیا بندہ ہوتا

(ب) اور جب' عبد' کی نسبت بندے کی طرف ہوتواس کے معنی خادم' نوکر ہوں گے۔

الف كى مثال ان آيات ميس ب:

(۱)الاسراء:۱(۲)ص:۱۶

ب كى مثال ان آيات ميس ب:

(١) النور: ٣٢ (٢) الزمر: ٥٣

ان آیوں میں چونکہ'' عبد' کی نسبت بندوں کی طرف ہے'اس لیےاس کے معنی مخلوق نہ ہوں گئ بلکہ خادم' غلام ہوں گئ لہذا عبد النبی اور غبد الرسول کے معنی ہیں نبی پاک مُنْقَلِيَهُم كا خادم۔

قاعدهنمبرس

(الف) جب لفظ رب کی نسبت اللہ تعالیٰ کی طرف ہوتو اس سے مراد حقیقی پالنے والا یعنی اللہ تعالیٰ ۔

(ب) جب کسی بندے کورپ کہا جائے تو اس کے معنی ہوں گئے مربی محسن پر ورش کرنے والا۔

الف كى مثال بيآيات بين:

(١) الفاتحة: ١ (٢) الدخان: ٨ (٣) الناس: ١

ب کی مثال ان آیات میں ہے:

(۱) پوسف: ۵۰ (۲) پوسف: ۲۳

قاعدهنمبرهم

(الف) جب ضلال کی نسبت غیرنبی کی طرف ہوتو اس کے معنی گمراہ ہوتے ہیں۔

(ب) جب ضلال کی نسبت نبی کی طرف ہوتو اس کامعنی وارفتۂ محبت یا راہ ہے ناواقف ہوں گے۔ DarseNizami.MadinaAcademy.Pl

الف كى مثال بيرة يات بين:

(١) الاعراف:١٨٦ (٢) الفاتح: ١٤ (٣) الكبف: ١٤

ب كى مثال ان آيات ميس ب:

(۱) والفحى: ۷/ ۲) يوسف: ۹۵ (۳) الشعراء: ۲۰ (۴) النجم: ۲۰ (۵) الاعراف: ۱۱ قاعده نمسر ۵

(الف)'' مکر''یا خداع کی نسبت جب الله تعالیٰ کی طرف ہوتو اس کے معنی دھوکا یا فریب نه ہول گئے' کیونکہ میرعیب ہیں بلکہ اس کے معنی ہول گے: دھوکا کی سز اوینا یا خفیہ تدبیر کرنا۔

(ب) جب اس کی نسبت بندول کی طرف ہوتو '' مکر'' کے معنی دھوکا' مکاری' دغا بازی اور خداع کے معنی فریب ہول گے۔

ان دونول كي مثاليل بيرآيات ہيں:

(۱) النساء: ۱۳۲۲ (۲) البقره: ۹ (۳) آل عمران: ۵۳

قاعدهنمبر٢

(الف) جب تقوي كي نسبت رب كي طرف ہوتواس سے مراد'' ڈرنا'' ہوگا۔

(ب) جب تقویٰ کی نسبت اوراضافت آگ' کفریا گناه کی طرف ہوتواس ہے مراد' بچنا'' ہوگا۔

ان دونو ل کی مثالیں ہے ہیں:

(۱) البقره: ۲۱ (۲) البقره: ۲۴

قاعدہ نمبر کے

(الف) جب ين دُونِ الله "عبادت كساتها عنواس كمعنى مول عي:"الله كسوا".

(ب) جب''مِنْ دُونِ الله''مدون فرت ولايت وعاجمعنى پكارنا كے ساتھ آئے تواس كے معنی ہوں گے اللہ كے مقابل ہيں۔

ان دونوں کی مثالیں یہ ہیں:

الف (١) الانبياء: ٩٨ (٢) الانبياء: ١٨ (٣) الجن: ١٨

(ب) (۱) البقره: ۷-۱ (۲) الانبياء: ۳۳ (۳) بني اسرائيل: ۲ (۴) الزمر: ۳۳

تائيري آيات: (١) الاحزاب: ١٤ (٢) آل عران: ١٢٠

قاعده نمبر ۸

(الف) جب' ولمی ''رب کے مقابل آئے تواس سے مراد معبودیا مالک حقیق ہے اور ایساولی اختیار کرناشرک و کفر ہے۔

یں ہے۔ '(ولمی''رب کے مقابل نہ ہوتواس سے مراد دوست' مدد گار' قریب وغیرہ ہیں۔ الف کی مثالیں:

(۱) الكهف: ۱۰۲ (۲) العنكبوت: ۲۱

ب كى مثالين:

(١) الماكده: ٥٥ (٢) النساء: ٥٥

قاعدهنمبرو

(ب) جب دُعا کے ساتھ اللہ تعالیٰ کا ذکر ہوتو وہاں اس کے معنی پکارنا' پو جنا' دُعاما نگنا ہوگا۔ حسب موقع معنی کیے جائیں گے۔

الف كي مثاليس:

(١) الاحقاف: ۵(٢) الجن: ١٨ (٣) المومن: ١٥

بى مثالىس:

(١) الاعراف: ٥٥ (٢) البقره: ١٨٦

قاعدهنمبر ١٠

(الف) جب شرك كامقا بله ايمان سے ہوگا تو شرك سے مراد كفر ہوگا۔

(ب) جب شرك كامقابله اعمال سے ہوگاتو شرك سے مراد مشركوں ايا كام ہوگانه كه كفر۔ الف كى مثاليں:

(۱)البقره:۲۲۱(۲)النساء:۱۱۲

ب كى مثاليں:

(۱)الروم: ۳۱

قاعده نمبر(۱۱) مُر دوں کاسنیا

جب قرآن مجید میں مردے اندھے بہرے گونگے ، قبر والے کے ساتھ رجوع نہ ، ب رئیں بیدیں رئے ہیرے ، ہرے میں ہیرے کے سوے 'بروائے سے من طار بوں یہ کے ۔ کرنے' ہدایت نہ پانے اور نہ سُنانے وغیرہ کا ذکر ہوگا تو ان لفظوں سے مراد کا فر ہوں کرے ہدایت نہ پانے اور نہ سنانے و بیرہ کا دکر ہوکا تو ان معطول سے مراد کافر ہول کے لیعنی دل کے مُر دے دل کے اندھے وغیرہ عام مُر دے دغیرہ مراد نہ ہوں گے اور ان کے لئد سے نہ ادان کا ہدایت نہ پانا ہوگا نہ کہ واقع میں نہ سننا۔ اور ان آ بات کا مطلب بیہ ہوگا کہ آ ب دل کے مُر دے اندھے بہرے کا فروں کو نہیں سُنا سکتے ، جس سے وہ ہدایت پر آ جا بمیں ۔ بیہ مطلب نہ ہوگا کہ آ پ مُر دوں کو نہیں سُنا سکتے ۔ مثالیں: (۱) البقرہ: ۱۸ (۲) الروم: ۵۲ (۳) بنی اسرائیل: ۲۷ محولہ بالا آ بات میں دیکھیں جو قرآن مجید میں متعدد جگہ آئی ہیں ان سب میں مُر دوں کا بہروں سے مراد کفار ہی ہیں نہ کہ ظاہری آئھوں کے اندھے اور بے جان مردے۔ کی تفسیران آئیوں سے ہور ہی ہے:

ا ندھوں' بہروں ہے مراد کفار ہی ہیں نہ کہ ظاہری آئکھوں کے اند ھے اور بے جان مردے۔ ان آیات کی تفسیران آیول سے ہور ہی ہے:

(۱) كنمل: ۸۱_۸۰ (۲) ثم السجده: ۴۵ (۳) محمد: ۳۵ (۴) الزخرف: ۴۵

قاعدهتمبر ١٢

(الف) جب مومن کوامیان کا حکم دیا جائے یا نبی کوتقوی کا حکم ہوتو اُس ہے مراد ایمان اور تقویٰ برقائم رہنا ہوگا' کیونکہ وہاں ایمان اور تقویٰ تو پہلے ہی موجود ہے اور حاصل شده کوحاصل کرناچه عنی دارد؟

مثالين: (١) النساء: ٢ ١١٣ (٢) الاحزاب: ١ (٣) النساء: ١١ ا

قاعده تمبرسا

(الف) جب" خلق" كي نسبت الله تعالى كي طرف بهوتواس يرمراد پيدا كرنا بهوگاليعني نيست کو ہست کرنا

(ب) جب خلق کی نسبت بندے کی طرف ہوتو اس سے مراد ہوگا: بنانا 'گڑھنا۔

الف كي مثالين:

(1) الملك: ۲ (۲) البقره: ۲۱

ب كى مثالين:

(١) آل عمران: ٩ ٣ (٢) العنكبوت: ١٤ (٣) المؤمنون: ١٨

قاعده نمبرتها

(الف) عَلَمْ گُوابی و کالت حساب لینا 'ما لک ہونا۔ ان اُمور کو جہاں قر آن کریم میں اللہ تعالیٰ کے ساتھ خاص کیا گیا ہے۔ وہاں حقیقی ' دائمی مستقل مراد ہوگا' مثلاً جب کہا جائے کہ اللہ تعالیٰ بی ہر چیز کا ما لک ہے یا اللہ تعالیٰ کے سواکسی کو وکیل نہ بناؤ تو اس سے مراد حقیقی دائمی مالک اور مستقل وکیل ہے۔

(ب) جب ان اُمور کی نسبت بندوں کی طرف کی جائے تو ان سے مراد عارضی عطائی اور مجازی مالک وغیرہ ہوں گے۔

الف كى مثالين:

(۱) الانعام: ۲۵(۲) النساء: ۱۲۱ (۳) بني اسرائيل: ۲۵_۵۴_۹۴ (۴) الانعام: ۱۰۸

(٥) الاحزاب: ٩ ٣ (١) الحشر: ا (٤) المزمل: ٩

ب كى مثال ان آيات ميس ب:

(۱) النساء: ۳۵ (۲) النساء: ۱۵ (۳) البقره: ۱۸۸ (۴) بنی اسرائیل: ۱۴ (۵) النساء:

۲۲(۲) القره:۲۸۲ (۷) المائده:۲۰۱

ان جیسی آیوں میں عارضی غیر مستقل عطائی ملیت گوائی وکالت کومت حساب لینا بندول کے لیے ثابت کیا گیا ہے کینی اللہ کے بندے مجازی طور پر حاکم ووکیل ہیں گواہ ہیں۔ لہذاان آیات میں تعارض نہیں جیسے 'سمیع 'بصیر 'حی ''وغیرہ اللہ تعالیٰ کی صفتیں ہیں۔ لہذاان آیات میں تعارض نہیں جیسے 'السمیٹ البہ تعالیٰ ہی سننے والا دیکھنے والا ہے اور بندول کی بھی سے فتیں ہیں۔ فرما تا ہے: ''فَحَعَلْنَاہُ سَمِیعًا بَصِیْرًا ''ہم نے انسان کو سننے والا دیکھنے والا بناویا۔ اللہ کا سننا 'دیکھنے والا بناویا۔ اللہ کا سننا 'دیکھنا وائی غیر محدود 'مستقل ذاتی ہے اور بندوں کا دیکھنا سننا 'دیکھنا والا بناویا۔ اللہ کا سننا 'دیکھنا کے اللہ تعالیٰ کا نام بھی ''علیٰ 'ہے۔ ' وَ هُو الْ عَلِیْ عَارضیٰ محدود 'عطائی غیر مستقل ہے۔ اس کے اللہ تعالیٰ کا نام بھی ''علی' ہے۔ ' وَ هُو الْ عَلِیْ گا

الْعَظِيْمُ ''اورحضرت على مرتضى كانام بهى' على 'ئے۔اللہ تعالی کی صفت ہے: ''مولیٰنا''۔''انت مولیٰنا ''، ورعالموں کو بھی'' مولیٰنا''صاحب کہا جاتا ہے۔ گر اللہ تعالیٰ کا'' علی''یا'' مولیٰ' ہونا اور طرح کا ہے اور بندوں کاعلی اور مولا ہونا کچھا ورشم کا' یے فرق ضروری ہے۔ قاعدہ نمبر 10

(الف) جہاں علم غیب کواللہ تعالیٰ کے ساتھ خاص کیا جائے یااس کی بندوں سے نفی کی جائے تو اس علم غیب سے ذاتی ' دائمی' جمیع علوم غیبیۂ قدیمی مراد ہوگا۔

(ب) جہاں علم غیب بندوں کے لیے ثابت کیا جائے یا کسی نبی کا قول قر آن مجید میں نقل کیا جائے کہ جہاں علم غیب بندوں کے لیے ثابت کیا جائے کا حیات ہوں۔ وہاں مجازی ' جائے کہ فلال رسول (علیہ السلام) نے فر مایا کہ جیس غیب جانتا ہوں۔ وہاں مجازی ' حادث' عطائی علم غیب مراد ہوگا' جیسا کہ قاعدہ نمبر ۱۲ میں دیگر صفات کے بارے میں بیان کردیا گیا ہے۔

الف كي مثاليس:

(۱) النمل: ۲۵ (۲) الانعام: ۵۹ (۳) لقمان: ۳۳ (۳) الاعراف: ۱۸۸ بیمثالین:

(۱) البقره: ۳-۲(۲) الجن:۲۷ (۳) النساء: ۱۱۳ (۴) الاعراف:۱۲۲ (۵) آل عمران: ۹ ۲ (۲) يوسف: ۲۷ (۷) التكوير: ۲۴

قاعده تمبراا

(الف) جن آیاتِ قرآنیہ میں شفاعت کی نفی ہے وہاں یا تو دھونس کی شفاعت مراد ہے یا کفار کے لیے شفاعت یا بتوں کی شفاعت مراد ہے کیعنی اللہ تعالیٰ کے سامنے جرأ شفاعت کو کی نہیں کرسکتا یا کافروں کی شفاعت نہیں یائرت شفیع نہیں۔

(ب) جہال قرآن مجید میں شفاعت کا ثبوت ہے وہاں اللہ کے پیاروں کی ایمان والوں

کے لیے محبت والی شفاعت بالا ذن مراد ہے۔ یعنی اللہ تعالیٰ کے پیارے بندے

مؤمنوں کواللہ تعالیٰ کی اجازت ہے محبوبیت کی بناء پر بخشوا کیں گے۔

الف کی مثالیں:

(١) البقره: ٢٥٢ (٢) البقره: ١٣٣ (٣) المدثر: ٨٨ (٣) الزمر: ٣٣ (٥) الغافر: ١٨

(٢)المومن: ١٨ (٤)الزخرف: ٨٦

بى كەمالىس:

(۱) التوبه: ۱۰۹ (۲) البقره:۲۵۵ (۳) مريم:۸۷ (۴) طهٰ: ۱۰۹

قاعدہ نمبر کا

(الف) جب غیر خدا کو پکارنے سے منع فر مایا جائے یا پکارنے والوں کی بُر ائی بیان ہوتو اس پکارنے سے مراد معبود سمجھ کر پکارنا ہے یعنی یو جنا۔

پرے ہے رہ جور بھر پورہ ہے۔ ن پوجہ ۔ (ب) جہاں غیر خدا کو پکارنے کا تھم ہے یا اس پکارنے پر ناراضی کا اظہار نہ ہو' تو اس سے مراد بلانا یا پکارنا ہی ہوگا۔

الف كى مثال يەسى:

(۱)الاحقاف:۵(۲)الجن:۸۱

ب کی مثال اس آیت میں ہے:

(۱) يۇنس: ۳۸

قاعده نمبر ۱۸

(الف) جب غیرخدا کو' ولی ''بنانے سے منع کیا جائے یا'' ولمی ''مانے پرناراضگی اور عمّاب ہوگا۔ یا ہو یا ایسے کومشرک کا فرکہا جائے تو ولی سے مراد معبود یارب کے مقابل مددگار ہوگا۔ یا آیت کا مطلب سے ہوگا کہ قیامت میں کا فروں کا مددگار کوئی نہیں۔

(ب) جب غیرخدا کوولی بنانے کا حکم دیا جائے آیا اس پر ناراضگی کا اظہار نہ ہوتو ولی سے مراد دوست ٔ مددگار ٔ باذن اللہ یا قریب ہوگا۔

الف كي مثالين:

(١) الشورى: ٨ (٢) البقرة: ٤٠١

ب كى مثالين:

(۱) الماكده: ۵۵ (۲) النساء: ۵۵

قاعده نمبر ١٩

(الف) جہاں وسلہ کا اٹکار ہے وہاں بتوں کا وسلہ یا کفار کے لیے وسلہ مراد ہے یا وہ وسلہ

مراد ہے جس کی پوجایات کی جائے۔

(ب) جہال وسلہ کا ثبوت ہے وہاں رب کے پیاروں کا دسلہ یا مؤمنوں کے لیے وسلہ مراد ہے تا کہ آیات قر آنیہ میں تعارض اور نکراؤوا قع نہ ہو۔

الف كي مثال: (١) الزمر: ٣

ب كى مثاليں:

(۱) المائده: ۵ ۳ (۲) النساء: ۱۲ (۳) آل عمران: ۱۲۴ (۴) السجده: ۱۱

قاعده نمبر ۲۰

(الف) قرآن مجید کی جن آیات میں فر مایا گیا ہے کہ انسان کوصرف اپنے عمل ہی کام آئیں گے یا فر مایا گیا ہے کہ''نہیں ہے انسان کے لیے مگر وہ جوخود کرئے'۔اس سے مراد بدنی فرض عبادتیں ہیں یا بیہ مطلب ہے کہ قابل اعتاد اپنے اعمال ہیں' کسی کے بیسجنے کا یقین نہیں۔

(ب) جن آیات میں فر مایا گیاہے کہ دوسروں کی نیکی اپنے کام آتی ہے'اس سے مرادا ممال کا ثواب ہے یا مصیبت دُ ورہونا یا درجے بلند ہونا۔

الف كي مثالين:

(۱) النجم: ۹ ۳ (۲) البقره: ۲۸۶

ب كى مثالين:

(١) الكهف: ٨٢ (٢) الطّور: ٢١

قاعدهنمبرا

(الف) جن آیتوں میں فر مایا گیا ہے کہ قیامت میں کوئی کسی کا بو جھنہیں اُٹھائے گا۔اس کا اُ مطلب ہے کہ بہ خوشی نہ اُٹھائے گا یااس طرح نہ اُٹھائے گا' جس سے مجرم آزاد ہو حائے گا۔

(ب) جن آیات میں فر مایا گیا ہے کہ قیامت میں بعض لوگ بعض کا بو جھ اُٹھا کیں گے اس کا مطلب سے ہے کہ مجبور آ اُٹھا کیں گے یا ہے بھی اُٹھا کیں گے اور مجرم بھی کہ یہ تو اُٹھا کیں گے گاناہ کرنے کی وجہ ہے۔ گے گناہ کرانے کی وجہ ہے۔

الف كى مثاليں:

(۱)الانعام: ۱۶۵(۲) بنی اسرائیل: ۱۵_۷(۳)العنکبوت: ۱۲(۴)البقره: ۱۳۳۰ کیمثالین:

(١) العنكبوت: ١٣ (٢) التحريم: ١ (٣) الانفال: ٢٥

قاعده نمبر ۲۲

(الف) قرآن مجید کی جن آیات میں ہے کہ رسولوں میں فرق نہ کرو وہاں ایمان میں فرق کرنا مراد ہے یعنی ایسے فرق نہ کرو کہ بعض کو مانو اور بعض کو نہ مانو' یا مرادیہ ہے کہ اپنی طرف سے فرق پیدانہ کرویعنی ان کے فضائل اپنی طرف سے نہ گھٹا ویا ایسا فرق نہ کرو جس ہے بعض پیغیبروں کی تو بین ہوجائے۔

(ب) اور جن آیات قرآنیه میں فرمایا گیا ہے کہ رسولوں میں فرق ہے وہاں درجات اور مراتب کا فرق مراد ہے 'یعنی بعضوں کے درجے بعض ہے اعلیٰ ہیں۔ الف کی یہ مثالیں ہیں:

(١) البقره: ٢٨٥ (٢) النساء: ١٥٢

ان آیوں میں ایمان کا فرق مُر اد ہے یعنی بعض رسولوں کو ماننا اور بعض کو نہ ماننا ہے کفر ہے۔ایمان کے لیےسب نبیوں کو ماننا ضروری ہے۔

ب كى بيمثالين بين:

(١) البقره: ٢٥٣ (٢) الاحزاب: ٢٦ _ ٣٥ (٣) الانبياء: ١٠٧

قاعده نمبر ۲۳

(الف) قرآن شریف میں جہاں حضور ملٹی کیائی ہے کہلوایا گیا ہے کہ'' مجھے خبر نہیں کہ میرے اور تمہارے ساتھ کیا ہوگا'' وہاں انگل' حساب' قیاس اندازے سے جاننا مراد ہے یعنی میں اندازے یا قیاس سے بنہیں جانتا۔

(ب) اور جہال اس کےخلاف ہے وہاں وحی البهام کے ذریعے سے علم دینا مراد ہے۔ الف کی مثالیں:

(١) الاحقاف: ٩ (٢) الشوريٰ: ٥٢ (٣) مريم: ٣٠

ب کی مثالیں:

(١) الفتح: ٢ (٢) الكوثر: ١ (٣) الم نشرح: ٣

قاعده تمبر ۲۴

(الف) جن آیتوں میں فر مایا گیا ہے کہ نبی ہدایت نہیں کرتے وہاں مراد ہے کہ اللہ تعالیٰ کی مرضی کے خلاف اس کے مقابل مدایت نہیں کرتے کدرب سی کو (اس کی برعملیوں کی وجہ ہے) گمراہی و صلالت میں بے یارومددگار چھوڑ دینا جا ہے اور نبی ہدایت 🗡 کردین به ناممکن ہے۔

' (ب) اور جہاں فر مایا ہے کہ ہدایت کرتے ہیں' وہاں مراد ہے باؤن الٰہی مدایت کرتے

الف كي مثالين:

(١) القصص: ٥٦ (٢) الانعام: ٣٥ (٣) البقرة: ٢٧٢

كى مثالير):

(۱)الشوريٰ: ۵۲ (۲) بني اسرائيل: ۹ (۳) آلعمران: ۱۲۳ (۴) البقره: ۱۸۵

قاعده تمبر ۲۵

(الف) جن آیات میں فرمایا گیا ہے کہ غیر خدا کے نام پر پکارا ہوا جانور حرام ہے۔ وہاں ذیج کے وقت کسی کا نام یکار نامراو ہے۔

(ب) اورجن آیتول میں فرمایا گیا ہے کہ غیر خدا کے نام پر یکارا ہوا جانور حرام نہیں ہے حلال ہے۔ان میں زندگی کی حالت میں کسی کا نام یکارنا مراد ہے جیسے بتوں کے نام برجھوڑ اہوا جانوریازید کا بکرا'عبدالرحیم کی گائے وغیرہ۔

الف كي مثاليل:

(١) البقره: ٣٤١ (٢) الإنعام: ١٢٠ (٣) المائده: ٣

ب کی مثال ہے ہے: (۱)المائدہ: ۱۰۳

قاعده تمبر ٢٦

(الف) جہاں نبی کریم ملتی الم سے کہلوایا گیاہے کہ ' میں اینے اویر تمہارے نفع کا مالک نہیں

ہوں''۔وہاں اللہ تعالیٰ کے بغیر مرضی ملکیت مراد ہے۔

(ب) جہاں فرمایا گیاہے کہ رسول اللہ ملٹی کی کہ دیتے ہیں 'وہاں بہ عطائے اللہی اللہ کے ارب اللہ کے ارب کے ارب کے ارب کے اللہ کا اور دینا اور عطا کرنا مراد ہے۔

الف كي مثاليس:

(۱) الاعراف: ۱۸۸ (۲) يوسف: ۱۸۸ ـ ۲۷

ب كى مثالين:

(١) التوبه: ٢٤ (٢) التوبه: ٥٩ (٣) الاحزاب: ٣٧

قاعده نمبر ۲۷

(الف) جب' رفع'' کامفعول کوئی زمینی جسم ہوتو'' رفع'' کے معنی ہوں گے:اونچی جگہ میں اُٹھانا'چڑ ھانا' اُونچا کرنا۔

اسان پرسان او پارات (ب) جب" دفع" کامفعول کوئی زمینی جسم نه ہوتواس کے عنی ہوں گے: روحانی بلندی مرتبہ کا اُونچا ہونا۔

الف كي مثالين:

(۱) آل عمران:۵۵(۲) پوسف:۱۰۰ (۳) النساء: ۱۵۴

ب كى مثاليں:

(۱) البقره: ۲۵۳ (۲) النور: ۳ ۲

قاعده نمبر ۲۸

(الف) جن آیوں میں نبی ہے کہلوایا گیا ہے کہ ہم تم جیسے ' بشر' ہیں۔ وہاں مطلب یہ ہے کہ ہم تم جیسے ' بشر' ہیں کہ جیسے تم ندخدا ہونہ خدا کے بیٹے' نہ خدا کے میام ہیں کہ جیسے تم ندخدا ہوں کہ ایسے ہی ہم نہ خدا ہیں' نداُس کے بیٹے' نداُس کے ساجھی' خالص بندے ہیں۔

(ب) اورجن آیوں میں نی کوبشر کہنے پر کفر کا فتویٰ صادر کیا گیا ہے۔اور انہیں ''بشر'' کہنے والوں کو کا فر کہا گیا ہے۔ان کا مطلب یہ ہے کہ جو نبی کی ہمسری اور برابری کا دعویٰ کرتے ہوئے انہیں بشر کہے یا ان کی اہانت کرنے کے لیے بشر کہے یا یوں کہے کہ

جیسے ہم محض بشر ہیں' نی نہیں' ایسے ہی تم نبوت سے خالی ہو محض بشر ہو'وہ کا فر ہے۔ الف كي مثالين:

> (۱) الكهف: ۱۱۰ (۲) ابراتيم: ۱۱ (۳) النور: ۳۵ ب كى مثالين:

(۱) التغابن: ۲ (۲) الحجر: ۳۳ (۳) المؤمنون: ۲ ۴ سر ۳۳ سر ۲۴

نوٹ:حضور نبی کریم ملتی لیانم کا بار ہا اپنی بندگی اور بشریت کا اعلان کرنا اس کیے تھا کہ توف: حضور نبی کریم ملتی البها کی بندگی اور بشریت کا اعلان کرنا اس کیے تھا کہ عبدا کہد یا ایک تو ان کا بغیر عبدا کہد یا ایک تو ان کا بغیر عبدا ہونا اور دوسرا مُر دے زندہ کرنا۔ مسلمانوں نے صد ہام مجز ہے حضور ملتی البیانی کے دیکھے۔ اندیشتر کے دیکھے اندیشتی کہ وہ علیا نافلیوں سے پانی کے چشے ہتے دیکھے۔ اندیشتر تا کہ دو می حضور ملتی البیانی کے چشے ہتے دیکھے۔ اندیشتر تا کا علان کبھی حضور ملتی البیانی کے بار بارا بنی بشریت کا اعلان فر مایا۔ (مخص علم القرآن کی عیم الامت حضرے مفتی احمد یارخان نعیم قدس مرہ العزیز)



قرآن مجيد كے تراجم كا تقابلي جائزه

قرآن کریم کا ترجمہ کرنے کے لیے صرف لغت کا جاننا کافی نہیں ورنہ صلوٰۃ کالفظی ترجمہ مرین ہلانا کیا جائے 'زکوٰۃ کا ترجمہ پاکیزگی اور حج اور تیم کا ترجمہ ارادہ کے ساتھ کیا جائے 'بلکہ ترجمہ کے لیے تمام تفاسیر معتبرہ 'احادیث شریفہ اور فقہی مسائل پر نظر ہونا ضروری ہے ۔ غرض یہ کہ جب تک تمام اسلامی علوم پر کسی شخص کوعبور نہ ہوتو اُس وقت تک وہ قرآن کریم کا ضحیح ترجمہ نہیں کر سکتا۔

ُ يُا مَعُشَوْ الْحِنِّ وَالْإِنْسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْ ا مِنْ اَقْطَارِ السَّمُواتِ وَالْآرْضِ فَانْفُذُوْ ا لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلَطَنِ '(الرَّض:٣٣)_

اشرف علی تھانوی صاحب اس آیت کے ترجمہ میں لکھتے ہیں:

'' اے گروہ جن اور انسان!اگرتم کو بیقدرت ہے کہ آسان اور زمین کی حدود ہے کہیں

با ہر نکل جاؤنو (ہم بھی دیکھیں) نکلو' مگر بدوں زور کے نہیں نکل سکتے (اور زور ہے نہیں پس نكلنے كا وقوع بھى محتمل نہيں)''_

تھانوی صاحب کے اس ترجمہ سے بہتا تر ملتا ہے کہ انسان کرہ ارض سے باہر نہیں نکل سكتا - حالانكه اب بيثابت مو چكا بكه افسان كرة ارض سے بام نكل كر جاند ير جا پہنچا ہے۔ اس قتم کے ترجموں سے نی نسل کے ذہنوں میں اسلام کے خلاف شکوک وشبہات پیدا ہوتے

جا يہنيج تواس ترجمه كي روشني ميں قرآن كا خلاف لازم نہيں آتا۔

ایک اورآیت ممارکه کاتر جمه ملاحظه ہو:

"فُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشُرٌ مِّثْلُكُمْ" (الكبف: ١١٠) (ترجمه:)" (اعصبيب! كافرول سے) فر مادیجے میں (الوہیت کامدعی نہیں بلکہ معبود نہ ہونے میں)تم جیسا ہی بشر ہوں'۔

حضور ملنی کیا ہے کی بشریت بھی ان معرکۃ الآراء مسائل میں سے ہے جن میں اہل سنت و جماعت اورمبتدعین کے درمیان عموماً مباحثہ ہوتار ہتا ہے۔ اہل سنت و جماعت کاعقیدہ یہ ہے كد حضور التَّوْيَلِيم الرَّحِه صورة بشر بين ليكن آب كي حقيقت عقلِ انساني سے ماوراء ہے اور ہر چند کہ آپ بشریت میں بہ ظاہر ہاری مثل ہیں' لیکن فضائل ومحاس میں کوئی بھی آپ کا ہمسرنہیں'اسبب سے اہل سنت کے زویک آپ وصف بشر کہنا ہے ادبی ہے۔ چنانچہ آپ کو سیدالبشر یا افضل البشر کہنا چاہیے۔اس کے برعکس مبتدعین آپ کی ذات پرمحض بشریت کا اطلاق کرنے میں کوئی حرج نہیں سمجھتے۔اس تمہید کے بعد آ سے مذکورہ بالا آیت مبارکہ کے تراجم پرایک نظر ڈالیس۔

مولوی اشرف علی تھانوی صاحب: اور آپ یوں بھی کہہ دیجئے کہ میں تو تم ہی جیسا بشر ہوں۔

مولوی محمودحسن دیو بندی: تو کہہ میں بھی ایک آ دی ہوں جیسےتم۔ مولوی وحید الز مان (غیر مقلد و ہائی): کہہ دے میں ادر پچھ بھی نہیں تمہاری طرح ایک

> آ دمی ہوں۔ آ

امام احدرضا خان بریلوی:تم فرماؤ ظاہری صورتِ بشری میں تو میں تم جیسا ہی ہوں۔

تمام مشہور اُردوتراجم میں حضور طلق آلیم کے لیے مطلقا بشریت اور مماثلت بیان کی گئی ہے۔ اعلیٰ حضرت رحمہ اللہ نے دوقیدیں لگائی ہیں ایک صورت کی اور دوسری ظاہری کی۔ صورت کی قیدلگا کریہ ظاہر فرمایا کہ حضور (طلق آلیم میں صورت کی قیدلگا کریہ ظاہر فرمایا کہ حضور (طلق آلیم میں ہے: آپکارب ہی جانتا ہے جیسا کہ مشہور حدیث میں ہے:

" یا ابا بکو لم یعوفنی حقیقةً غیر ربی "اے ابو بکر! میری حقیقت کو ماسوا میرے دب کے اور کوئی تبیں جانا۔

اور ظاہری کی قیدلگا کر بیظ ہر فر مایا کہ صورت میں بھی میری بشریت کی تمہاری بشریت سے مماثلت محض ظاہری ہے حقیقا نہیں ہے بعنی تمہاری بھی دوآ تکھیں ہیں اور میری بھی دو آ تکھیں ہیں الیکن تم ان آ تکھول سے آ گی کی آ تکھیں ہیں کی کئی جانے تھول سے آ گی کی کوئی چیز پوشیدہ ہے نہ بائیں کی تم دیوار کے پار نہیں دیکھے اور میں جب سی چیز کو دیکھنا چاہوں تو میری نظر کے لئے سات آ سان بھی تجاب نہیں ہو سکتے اور تم نے تو اپنی آ تکھول سے پوری مخلوق کو بھی نہیں و یکھا اور میں نے اپنی آ تکھول سے جمال الوہیت کو بھی بہ ججاب دیکھا ہے اس طرح کان تمہار سے بھی دو ہیں اور میر سے بھی دو اس کی تمول سے لیکن تم اپنی کانوں سے مرف قریب کی آ واز سنتے ہواور میں اپنی کانوں سے دورونز دیک کی آ واز سنتے ہواور میں اپنی کانوں سے دورونز دیک کی آ واز سنتے ہواور میں اپنی کانوں سے دورونز دیک کی آ واز سنتے ہواور میں اپنی کانوں سے دورونز دیک کی آ واز سنتے ہواور میں اپنی کانوں کو بھی نہیں سُنا اور

میں نے اپنے کا نوں سے رب کا ئنات کا کلام سُنا ہے کچرمما ثلت کیسی؟ ای لیے فر مایا: میں وہ حقائق دیکھتا ہوں' جنہیں تم نہیں دیکھ سکتے اور میں وہ باتیں سنتا ہوں' جنہیں تم سنہیں سکتے۔

اورايك حديث مين صاف طور پرفر مايا:

"لُسْتُ كَاحَدٍ مِنْكُمْ" تم مين كوئي شخص ميرامماثل نهيل _

اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان قدس سرۂ العزیز ان تمام احادیث اور حقائق ومعارف پر نظر رکھتے تھے۔ای لیے اس آیت کے ترجمہ میں فرمایا:

تم فر ماؤ ظاہری صورتِ بشری میں تم جبیبا ہی ہوں۔

لیعنی جومما ثلت ہے'وہ صرف صورت میں ہے اور اس میں بھی بہ ظاہر ہے حقیقاً نہ کوئی آپ کی ذات میں مماثل ہے نہ صفات میں اور جن مترجمین کی ان چیز وں پرنظر نہ تھی' اُنہوں نے ان تمام حقائق ہے آئکھیں بند کر کے مطلقاً بہتر جمہ کردیا:

میںتم جبیابشر ہوں۔

'' وَ مَاۤ اَرۡسَلۡنَكَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعَالَمِینَ O''(الانبیاء:۱۰۷)'' اور (اے محبوب!) ہم نے تمہیں نہیں بھیجا مگرتمام جہانوں کے لیے رحمت بنا کر O''

جن آیات میں حضور سید عالم طرف کی عظمت اور شان نمایاں طور پر بیان کی گئی ہے نیہ ان آیات کر یمہ میں سے ایک آیت ہے۔ مومن صادق اور سچے امتی کے لیے اس سے بڑھ کر کیا مسرت ہوگی کہ اس کے نبی کی شان اور عظمت بیان کی جائے 'لیکن غور سیجے ویو بندی علماء کیا مسرت ہوگی کہ اس کے نبی کی شان اور عظمت بیان کی جائے 'لیکن غور سیجے ویو بندی علماء نے اس آیت کا ترجمہ کرتے ہوئے حضور ملتی کیا گھٹا کے فضل و کمال کو کس طرح کم کرنے کی کوشش کی ہے۔

علامہ اشرف علی تھانوی صاحب: آپ کواور کسی بات کے لیے نہیں بھیجا مگر دنیا جہان کے لوگوں (یعنی مکلفین) پرمہر بانی کرنے کے لیے۔

علامہ محمود الحسن دیو بندی: اور تجھ کوہم نے بھیجا سوم ہربانی کر جہاں کے لوگوں پر۔ ابوالاعلیٰ مودودی صاحب: اے محمر! ہم نے جو تہمیں بھیجا ہے تو بید دراصل دنیا والوں کے ت میں ہاری رحت ہے۔ اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خال بریلوی قدس سرۂ العزیز: اور ہم نے تہیں نہ بھیجا مگر رحمت سارے جہانوں کے لیے۔

حضرت صدرالا فاضل سیدمحرنعیم الدین مرادآ بادی قدس سرهٔ العزیز نے حاشیہ پراس کی تفسیر میں لکھا:

آیت کے معنی میں کہ ہم نے آپ کونہیں بھیجا مگر رحمتِ مطلقہ تامنہ کاملہ عامه شاملہ عامه شاملہ عامه شاملہ عامه مثاملہ عامه محیط برجمیع مقیدات رحمت غیبیہ وشہادت علمیہ وعینیہ دوجود بیدوشہود بیدوسابقہ ولاحقہ وغیرہ ذالک۔ تمام جہانوں کے لیے عالم اُرواح ہو یا عالم اجسام ذوی العقول ہوں یا غیر ذوی العقول۔

غور فرما ہے! یہ کیا سبب ہے کہ مودودی صاحب و حضور طبق اللہ اللہ کو سرے سے رحمت مانتے ہی نہیں اور تھانوی صاحب اور محمود حسن صاحب دیو بندی و حضور طبق اللہ اللہ کی رحمت کا دائر ہ تگ کر کے صرف دنیا کے مکلفوں تک محدود رکھتے ہیں۔ اس کے برخلاف اعلیٰ حضرت اور حضرت صدر الا فاضل حضور طبق اللہ اللہ کی رحمت کا عموم شمول اور اطلاق بیان کرتے ہیں۔ جہاں اللہ تعالیٰ حضور نبی کریم و ماارسلنا ک الارحمة للعالمین علیہ افضل الصلوق و السلیم کے فضل و ممال کوعلی العموم بیان کرتا ہے وہاں بید یو بندی حضرات کیوں تقیید کرتے ہیں اور اعلیٰ حضرت اور صدر الا فاضل کیوں ایسے مواقع پر حضور سید العالمین میں آئی اللہ اللہ کے کمالات بڑھ چڑھ کر بیان کرتے ہیں۔ آخر اس فرق کا سبب کیا ہے؟ آپ خود بی سوج لیں۔ ہم اگر عرض کریں گوت شکایت ہوگی۔

امام الل سنت غزالی زمان سید احمد سعید کاظمی شاہ صاحب کے شاہکار ترجمہ قر آن '' البیان'' ہے ایک مثال ملاحظ فرما ہے' لکھتے ہیں:

بعض مترجمین نے آیت کریمہ و مَسریم ابْنَتَ عِـمُوانَ الَّتِی اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِیهِ مِنْ دُوْ حِنَا" (التحریم: ۱۲) کا انتہائی شرم ناک الفاظ میں حسب ذیل ترجمہ کیا: اور مریم بیٹی عمران کی جس نے رو کے رکھا اپنی شہوت کی جگہ کو پھر ہم نے پھونک دی اس میں اپنی طرف سے جان ۔ (ترجمہ مولا نامحود الحن دیوبندی)

حضرت شاہ صاحب فر ماتے ہیں: بیغلط ہے کہ حضرت مریم کی شہوت کی جگہ میں جان

بھونگ گئ کونکہ یہ بات نہایت شرم ناک اور حضرت مریم کی عزت وعظمت کے قطعاً خلاف ہے۔ حضرت جبریل نے اللہ تعالی کے حکم سے حضرت مریم کے چاک گریبان میں جان پھونگ ۔ (تغیرابن کیرج می ۱۳۹۳) ہم نے اپنے ترجمہ میں شرم وحیا اور حضرت مریم کی عزت و عظمت کو ملحوظ رکھتے ہوئے جمہور مفسرین کے مطابق ''صنعتِ استخدام' سے کام لیا ہے۔ ' عظمت کو ملحوظ رکھتے ہوئے جمہور مفسرین کے مطابق ''صنعتِ استخدام' سے کام لیا ہے۔ ' ناظرین کرام سے مخفی نہ رہے کہ صنعتِ استخدام ہی ہے کہ ایک لفظ کے دومعنی ہوں' ایک معنی کے اس لفظ سے مراد لیے جائیں' جواس کی طرف اس کی طرف کے دومعنی مثال جریر کا یہ مشہور شعر ہے۔ راجع ہے' جس کی مثال جریر کا یہ مشہور شعر ہے ۔

اِذَا نَزَلَ السَّمَآءُ بِأَرْضِ قُوم دَعَيْنَاهُ وَإِنْ كَانُوْا غِضَابًا لِعِنْ ' جَبِسَى قُوم كَا زَمِن مِن بِين بَارْش بُوتُو بَم اس سے پيدا بُون والے بِرَه كو چِرالِية بِين اگر چِدوه لوگ غضب ناك بى كيول نه بول'

لفظ 'سَمَاءٌ 'کے دو مجازی معنی ہیں' ایک بارش دوسر ابارش سے پیدا ہونے والا سبزہ۔ شاعر نے لفظ 'سَمَاءٌ ' سے بارش مراد لی۔ اور ' رعیناہ ' میں اس کی طرف راجع ہونے والی ضمیر منصوب سے بارش سے پیدا ہونے والا سبزہ مراد لیا۔ بیصنعتِ استخدام ہے۔ اس کے مطابق ہم نے لفظ ' فرح' ' سے اس کے مجازی معنی عقت مراد لیے اور ' فید ' میں اس کی طرف راجع ہونے والی ضمیر مجرور سے لفظ ' فرج' ' کے دوسر سے مجازی معنی جاک گریبان مراد لیے اور اجتم ہونے والی ضمیر مجرور سے لفظ ' فرج' ' کے دوسر سے مجازی معنی جاک گریبان مراد لیے اور اجتم ہفسرین کے مطابق حب ذیل ترجمہ کیا: اور عمران کی بیٹی مریم (کی مثال بھی) جس اور اجتم ہفسرین کے مطابق حب ذیل ترجمہ کیا: اور عمران کی بیٹی مریم (کی مثال بھی) جس نے اپنی عقت کی (ہر طرح) حفاظت کی تو ہم نے (بواسطہ جبریل اس کے) جاگ گریبان میں اپنی طرف کی) روح بھونگ دی۔

(مقدمه أردور جمهُ قرآن عكيم' البيان' كاظمى پبليكيشنز' كچبرى رود'ملتان)



اصول ترجمه قرآن كريم

حفزت علامہ محمد عبد الحکیم شرف قادری برکاتی دامت برکاتہم العالیہ لکھتے ہیں: اصل موضوع پر گفتگو کرنے ہے پہلے مناسب معلوم ہوتا ہے کہ قر آن کریم 'تفسیر اور ترجمہ کے معانی اور تعریفات ذکر کر دی جائیں تا کہ اصل مطلب کے بجھنے اور سمجھانے ہیں آسانی رہے۔

قرآن كريم

عربی لغت میں قرآن قراءت کا ہم معنی مصدر ہے جس کامعنی پڑھنا ہے۔ارشاد باری تعالیٰ ہے:

'' اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرُ النَهُ فَإِذَا قَرَانَاهُ فَاتَبِعُ قُرُ النَهُ ''(١٧-١٥) بِ شَكَ اس كامحفوظ كرنا اور برُ هنا بهار ب ذمه بُ توجب بم اسب برُ ه چكيس اس وقت برُ هي بوئ كي اتباع كرو (كنز الايمان) -

پھرمعنی مصدری نے نقل کر کے اللہ تعالیٰ کے نبی اکرم ملٹی آلیا ہم پنازل کیے ہوئے معجز کلام کا نام قر آن رکھا گیا 'بیمصدر کا استعال ہے' مفعول کے معنی میں جیسے خلق بمعنی مخلوق عام طور پر آتا ہے۔ (علامہ محموعبد العظیم زرقانی' منابل العرفان' جامس کے 'داراحیاء الکتب العربیہ مصر) تفسیر

عربی زبان میں تفسیر کامعنی ہے: واضح کرنا اور بیان کرنا' ای معنی میں کلمہ ُ تفسیر سورہُ فرقان کی اس آیت میں آیا ہے:

''وَلَا يَاتُوْنَكَ بِمَثَلِ إِلَّا جِنْنَكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا''(الفرقان:٣٣))ور کوئی کہاوت تمہارے پاس ندلائیں گے گرہم اس ہے بہتر بیان لے آئیں گے۔ اصطلاحی طور پرتفییر وہ علم ہے جس میں انسانی طاقت کے مطابق قرآن پاک سے متعلق بحث کی جاتی ہے کہ وہ کس طرح اللہ تعالی کی مراد پر دلالت کرتا ہے۔ متعلق بحث کی جاتی ہوتی ہے کہ وہ کس طرح اللہ تعالی کی مراد پر دلالت کرتا ہے۔ جب یہ کہا گیا کہ تفییر میں قرآن کریم سے بحث ہوتی ہے کیون اللہ تعالی کی مراد پر

دلالت كرنے كے اعتبار سے تو اس قيد سے درج ذيل علوم خارج ہو گئے 'آئبيں تفسير نہيں كہا جائے گا:

علم قراءت:اس علم میں قرآن کریم کے احوال ہی ہے بحث ہوتی ہے کیکن قرآن پاک کے کلمات کے ضبط اوران کی ادائیگی کی کیفیت پیش نظر ہوتی ہے۔

علم رسم عثمانی: اس علم میں قرآن کریم کے کلمات کی کتابت سے بحث کی جاتی ہے۔

علم کلام: العلم میں بحث کی جاتی ہے کہ قرآن پاک مخلوق ہے یائیں۔

علم فقہ:اس علم میں بحث کی جاتی ہے کہ حیض ونفاس اور جنابت کی حالت میں قر آن پاک کا ا پڑھناحرام ہے۔

(علامه محمد عبد العظيم زرقاني منابل العرفان جاص ٢٥ مهمه ا ٤ واراحياء الكتب العربية مصر)

علم صرف:اس علم میں کلمات کی ساخت سے بحث ہوتی ہے۔

علم نحو:اس میں کلمات کے معرب (اعراب لگانا) و مبنی ہونے اور ترکیب کلمات سے بحث ہوتی ہے۔ ہوتی ہے۔

علم معانی: اس میں کلام ضیح کے موقع محل کے مطابق ہونے سے بحث کی جاتی ہے۔ علم میان: اس میں ایک مطلب کومختلف طریقوں سے بیان کرنے کی بحث ہوتی ہے۔

علم بدلیع: اس میں وہ امور زیر بحث آتے ہیں' جن کاتعلق الفاظ کے حسن وخو بی ہے ہوتا ہے' 'غرض میہ کہ صرف علم تفسیر ہی وہ علم ہے' جس میں طاقت انسانی کے مطابق قرآن پاک کے ان معانی اور مطالب کو بیان کیا جاتا ہے' جو اللہ تعالیٰ کی مراد ہیں۔

طاقتِ انسانی کی قید کا مطلب یہ ہے کہ متشابہات کے مطالب اور اللہ تعالیٰ کی واقعی مراد کامعلوم نہ ہوناعلم تفییر کے خلاف نہیں ہے اللہ تعالیٰ کی مراداس حد تک بیان کی جائے گئ جہاں تک انسانی طاقت اور علم ساتھ دیے گا۔

وه علوم جن كى مُفتر كوحاجت ب

علماء اسلام نے مفسر کے لیے درج ذیل علوم میں مہارت لازی قرار دی ہے: (۱) لغت (۲) صرف (۳) نحو (۴) بلاغت (۵) اصول فقه (۲) علم التوحید (۷) قضص (۸) ناشخ دمنسوخ (۹) علم دہبی (۱۰) اسباب نزول کی معرفت (۱۱) قرآن کریم کے مجمل اور

مبهم کوبیان کرنے والی احادیث۔

وہبی علم' عالمِ باعمل کوعطا کیا جاتا ہے' جس شخص کے دل میں بدعت' تکبر' دنیا کی محبت یا گناہوں کی طرف میلان ہو'اسے علم وہبی سے نہیں نواز اجاتا۔

ارشادِربانی ہے:

'' سَاصَوِفُ عَنُ ایکاتِی الَّذِینَ یَتَکَبَّرُونَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ ''(الاعراف:١٣٦) اور میں اپنی آیتوں سے انہیں پھیردوں گاجوز مین میں ناحق بڑائی جا ہے ہیں (کنزالا یمان)۔

امام شافعی فرماتے ہیں:

فَارَشَدَنِیُ اِلٰی تَرْكِ المَعَاصِیُ وَنُوْرُ اللّٰهِ لَا يَـهُـدِیْ لِعَاصِیْ

شَكُونَ إلى وَكِيْعِ سُوءَ حِفْطِي وَاخْبَرَنِي بِأَنَّ الْعِلْمَ نُوْرٌ

" O میں نے امام وکیع کے پاس حافظے کی خرابی کی شکایت کی تو انہوں نے مجھے گناہوں کے ترک کرنے کی مدایت فر مائی'

0 اور مجھے بتایا کیلم نور ہے اور اللہ تعالیٰ کا نور گنا ہگار کوعطانہیں کیا جاتا''۔

یعلوم اوران کے علاوہ دیگر شرا کو تفسیر کے اعلیٰ مراتب کے لیے ضروری ہیں۔ عموی طور پرا تناعلم کافی ہے 'جس سے قرآن پاک کے مطالب اجمالی طور پر سمجھے جاسکیس اور انسان اپنے مولائے کریم کی عظمت اوراس کے پیغام ہے آگاہ ہوسکے۔

تفسیر کے اعلیٰ مراتب کے لیے چندامور نہایت ضروری ہیں:

- (۱) قرآن کریم میں واقع کلمات مفردہ کی تحقیق 'لغت عربی کے استعالات کے مطابق کی جائے' کسی بھی محقق کو چاہیے کہ کلمات ِقرآن کی تفسیر ان معانی سے کرے جن میں وہ کلمات نزولِ قرآن کے زمانے میں استعال ہوتے تھے۔ بہترین طریقہ یہ ہے کہ دیکھا جائے کہ یہ لفظ قرآن پاک کے مختلف مقامات میں کن معانی میں استعال ہوا ہے' کہ پہرسیاق وسباق اور موقع محل کے مطابق اس کا معنی بیان کیا جائے' قرآن پاک کی بہترین تفسیر وہ ہے' جوخود قرآن پاک سے کی جائے۔
- (۲) بلغاء کے کلام کا وسیع اور گہرا مطالعہ کر کے ان کے کلام کے بلند پایدا سالیب نکات اور کا محاسن کی معرفت حاصل کی جائے اس محاسن کی معرفت حاصل کی جائے اس

طریقے ہے ہم اللہ تعالیٰ کی مراد کھمل طور پر سیجھنے کا دعویٰ تو نہیں کر سکتے 'تاہم کلام اللّٰی کے مطالب تک اس قدر رسائی حاصل کی جاشت ہے' جس سے ہم ہدایت حاصل کر سکیں ۔اس سلسلے میں علم نحو معانی اور بیان کی حاجت ہے' لیکن صرف ان علوم کے بڑھ لینے سے کام نہیں چلے گا' بلکہ ان علوم کی روشنی میں بلغاء کے کلام' قرآن کریم اور صدیث شریف کا وسیع مطالعہ بہت ضروری ہے۔

(m) الله تعالیٰ نے اپنی آخری کتاب میں مخلوق کے بہت سے احوال اور ان کی طبیعتوں کا بیان کیا ہے اور پیجمی بتایا ہے کہ اللہ تعالیٰ کا طریقہ ان کے بارے میں کیا رہا؟ سابقہ امتوں کے بہترین واقعات اوران کی سیرتیں بیان کیں اس لیے قر آن یاک کا مطالعہ ' کرنے والے کے لیےضروری ہے کہ سابقہ قوموں کے ادوار اور اطوار ہے واقف ہو اورائے معلوم ہو کہ طاقت ورکون تھااور کمزورکون؟ اس طرح عزت کس کوملی اور ذلت کے نصیب ہوئی ؟علم اورا بمان کس کے حصے میں آیا اور کفروجہل کس کوملا؟ نیز عالم کبیر یعنی عناصر (آگ موا یانی اورمٹی)اور افلاک کے احوال سے باخبر ہوا اس مقصد کے لیے بہت سے فنون در کار ہیں'ان میں سے اہم علم تاریخ اینے تمام شعبوں سمیت ہے۔ قرآن پاک میں ام سابقهٔ سنن الہیداوراللہ تعالیٰ کی ان آیات کا اجمالاَ ذکر کیا گیا ہے جوآ سانوں اور زمین آفاق اور نفوس میں یائی جاتی ہیں سیاستی کا بیان کردہ اجمال ہے جس کاعلم ہر شے کوا حاطہ کیے ہوئے ہے اس نے ہمیں غور وفکراور زمین میں | سیر کرنے کا حکم دیا ہے' تا کہ ہم اس کے اجمال کی تفصیل کو سمجھ کر ترقی کے زینے طے کر سکیں' اب اگر ہم کا ئنات پر ایک سرسری نظر ڈالنا ہی کافی جان لیں تو پیرا ہے ہی ہوگا 🖔 جیسے کہ ایک شخص کسی کتاب کی جلد کی رنگینی اور دلکشی کود مکھ کرخوش ہو جائے اور اس علم و حکت سے غرض ندر کھے جواس کتاب میں ہے۔

(۳) فرض کفامیاداکرنے والےمفسر پرلازم ہے کہ وہ میہ حقیقت معلوم کرے کہ قرآن پاک نے مشار کا اس کا اسانوں کو کس طرح ہدایت دی ہے اسے معلوم ہونا چاہیے کہ نبی اکرم ساتھ کے لیا ہے کہ نبی مام انسان خواہ وہ عربی ہوں یا مجمی کس حال میں تھے؟ کیونکہ قرآن یا کہ کا اعلان ہے کہ سب لوگ گراہی اور بدیختی میں مبتلا تھے اور نبی اکرم ملتی کی کی اس

سب کی ہدایت وسعادت کے لیے مبعوث ہوئے تھے اگر مفسر اس دور کے انسانوں کے حالات (عقائد ومعمولات) سے کماھئہ آگاہ نہیں ہوگا تو قر آن حمید نے ان کی جن عادتوں کو نتیج قرار دیا ہے انہیں کمل طور پر کسے جان سکے گا؟

حضرت عمرفاروق وعی اللہ ہے کہ جو محض احوالِ جاہلیت سے جس قدر زیادہ جاہل ہے اس کے بارے میں اتنابی زیادہ خوف ہے کہ وہ اسلام کی ری کو تار تارکرد کے مطلب یہ ہے کہ جو محض اسلام کی آغوش میں پیدا ہوا' پلا بڑھا اور اسے پہلے لوگوں کے مطلب یہ ہے کہ جو محض اسلام کی آغوش میں پیدا ہوا' پلا بڑھا اور اسے پہلے لوگوں کے حالات معلوم نہیں ہیں تو اسے پتانہیں چلے گا کہ اللہ تعالیٰ کی ہدایت وعنایت نے کس طرح انقلاب بر پاکیا اور کس طرح انسانوں کو گمرائی کے اندھیروں سے نکال کر مدایت کے جگ مگ راستے بر کھڑ اکر دیا؟

(۵) نی اکرم ملی آلیم کی سیرت طیبه کا وسیع مطالعه ہونا چاہیے نیز صحابہ کرام کی سیرتوں سے بہ خوبی آگاہ ہونا چاہیے اور پتا ہونا چاہیے کہ صحابہ کرام علم وعمل کے کس مرتبے پر فائز سے اور نیاوی واخر وی معاملات کس طرح انجام دیتے تھے؟

(علامه محمد عبدالعظيم زرقاني منامل العرفان جاص ٢٦٣ ـ ٥١٩ 'داراحياء الكتاب العربية مصر)

ترجمهٔ عربی لغت کی روشنی میں

عربی زبان میں لفظ "ترجمه علی ارمعنوں کے لیے استعال ہوتا ہے:

(۱) كلام كاال شخص تك پېنچانا جس تك كلامنېيس پېنچا_

ایک شاعرنے لفظ ترجمہ ای معنی میں استعمال کیا ہے:

(یعنی مجھے مخاطب کی بات سائی نہیں دین' اس لیے میں ایسے شخص کا محتاج ہوں' جو خاص طور پر مجھے دہ بات سمجھائے)

(۲) کلام جس زبان میں ہے'ای زبان میں اس کی تفسیر کرنا۔ اس معنی کے اعتبار سے ابن عباس رہنی لندکو' ترجمان القرآن' کہا جاتا ہے۔

(۳) کسی دوسری زبان میں کلام کی تفسیر کرنا۔

لسان العرب اور قاموں میں ہے کہ تر جمان کلام کے مفسر کو کہتے ہیں۔ شارح قاموں نے جو ہری کے حوالے سے بیان کیا کہ' تُو جَمّهٔ وَتُو جَمّ عَنْهُ'' کا مطلب یہ ہے کہ ایک شخص کسی کے کلام کا مطلب دوسری زبان میں بیان کرے۔

البتة تفسیر ابن کثیر اورتفسیر بغوی ہے معلوم ہوتا ہے کہ لفظ تر جمہ 'عربی زبان میں مطلقا بیان کرنے کو کہتے ہیں' خواہ اس زبان میں ہو' جس میں اصل کلام ہے یا دوسری زبان میں ۔

(°) کلام کوائیک زبان سے دوسری زبان کی طرف نقل کرنا۔ لسان العرب میں ترجمان' پہلے حرف پر پیش یا زبر' دہ شخص ہے جو کلام کوایک زبان ہے دوسری زبان کی طرف نقل کر ہے۔

قاموں ہے معلوم ہوتا ہے کہ ترجمان کا تلفظ تین طرح کیا جاسکتا ہے۔

- 🖈 تاءاورجيم دونول پرپيش ' تُرجُمان''
 - 🖈 دونول پرزیر''تَر جَمان''
- 🖈 تاء پرز براورجیم پر پیش'' تَو جُمان''

چونکہ ان چاروں معنوں میں بیان پایا جاتا ہے' اس لیے وسعت دیتے ہوئے ان جار معنوں کے علاوہ ہر اس چیز پرتر جمہ کا اطلاق کر دیا جاتا ہے' جس میں بیان ہو' مثلاً کہا

جاتاہے:

- البّابَ بكذا "مصنف نياس بابكاريعنوان مقرركيا البّابَ بكذا "مصنف نياس بابكاريعنوان مقرركيا
 - الله عنه المُعَلِينَ الله المُعْضِ كَا تَذَكُره لَكُها اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ
 - ﴿ نُتُوْجَمَةُ هُذَا الْبَابِ كَذَا "اسبابكامقصداورظاصديه،

(علامة محموعبد العظيم زرقانی منابل العرفان ج ۲ ص ۲ هـ ۵ واراحیاء الکتاب العربیه مصر)
یا در ہے کہ ' قَدرَ جَمَة ''رباعی محرد کے باب' فی علکہ اُ'' سے ہے اس لیے ترجمہ کرنے
دالے کو ' مُتَرْجِم ''اور قرآن پاک کو' مُتَرْجَم ''کہاجائے گا'' مُتَرَجِّم ''اور' مُتَرَجَّم ''
میں جیم کومشد دیڑھنا غلط ہے۔

ترجمه كاعرفي معني

لغوی اعتبار سے لفظ ترجمہ چارمعنوں میں استعال ہوتا ہے' جن کا ذکر ابھی ابھی کیا گیا ہے۔عرف عام میں لفظ ترجمہ سے چوتھامعنی مرادلیا جاتا ہے بعنی ایک کلام کامعنی کسی دوسری زبان میں بیان کرنا۔

علامہ محمد عبد العظیم زرقانی کہتے ہیں کہ ترجمہ کاعر فی معنی یہ ہے کہ کلام ایک زبان میں ہو' اور اُس کا مطلب دوسری زبان میں اس طرح بیان کیا جائے کہ اس کلام کے تمام معانی اور مقاصد بھی ادا کردیئے جا کیں۔(علامہ:محم عبد العظیم زرقانی' منابل العرفان ج اس ک

اور ظاہر ہے کہ کسی بھی کلام کااور خاص طور پر قرآن مجید کا ایساتر جمہ نہیں کیا جاسکتا' جس میں اصل کلام کے تمام معانی اور مقاصدادا کردیئے جائیں۔اس لیے علامہ محمد عبدالعظیم زرقانی قرآن پاک کے ترجمہ کو ناجائز قرار دیتے ہیں' اور کہتے ہیں کہ تفسیر میں اصل کلام کے تمام معانی کاادا کرنا ضروری نہیں ہے بلکہ بعض مقاصد کا ادا کرنا کافی ہے' اس لیے قرآن پاک کی تفسیر تو کی جا سکتی ہے' ترجمہ نہیں کیا جا سکتا۔

دنیا جرکی مختلف زبانوں میں قرآن پاک کا ترجمہ کیا گیا ہے اور کوئی بھی ترجمہ کرنے والا یہ دعویٰ نہیں کرتا کہ میں نے قرآن مجید کے تمام معانی اور مقاصد کواپی زبان میں منتقل کر دیا ہے اور یہ ہو بھی نہیں سکتا، تو اس بحث کی حاجت ،ی نہیں رہتی کہ ایسا ترجمہ جائز ہے یا نہیں؟ اس سے پہلے لسان العرب اور شرح قاموں کے حوالے سے بیان کیا گیا ہے کہ ترجمہ کا مطلب ایک کلام کے معنی کو دوسری زبان میں بیان کرنا ہے یہ قید علامہ زرقانی نے اپی طرف سے لگائی ہے کہ اصل کلام کے تمام معانی اور مقاصد بھی ادا کیے جائیں ظاہر ہے کہ اس قید کے اضاف فی میں ان سے اتفاق نہیں کیا جا سکتا، جو شخص بھی قرآن مجید کا ترجمہ کرے گا، وہ بعض معانی اور مقاصد ہی کو بیان کرے گا، اگر ایسے ترجمہ کوتفیری ترجمہ کہا جائے تو اس میں کوئی مفا نقہ نہیں ہے۔

أقسام ترجمه

عرفی معنی کے لحاظ ہے ترجمہ کی دوسمیں ہیں: (۱) لفظی (۲) تفسیری کفتلی ترجمه میں اصل کلام کے کلمات کی ترتیب کو کھوظ رکھا جاتا ہے اور ایک ایک کلمه کی جگه اس کا ہم معنی لفظ رکھ دیا جاتا ہے جیسے کہ شاہ رفیع الدین محدث دہلوی اور'' تفسیر نعیمی' میں مفتی احمد یا رخال نعیمی اور'' تفسیر الحسنات' میں علامه ابوالحسنات سیدمحمد احمد قادری نے کیا ہے' اس ترجمہ کوحر فی ترجمہ بھی کہا جاتا ہے۔

ترجمها ورتفسير مين فرق

ترجمه لفظی ہو یاتفسیری' و ہفسیرے الگ چیز ہے'ترجمہ اورتفسیر میں متعدد وجوہ ہے فرق

7

- (۱) ترجمہ کے کلمات مستقل حیثیت رکھتے ہیں 'یہاں تک کہان کلمات کواصل کی جگہ رکھا جا

 سکتا ہے' جب کہ تغییر ہمیشہ اپنے اصل سے متعلق ہوتی ہے' مثلاً ایک مفرد یا مرکب لایا
 جاتا ہے' بھراس کی شرح کی جاتی ہے اور شرح کا تعلق اصل کے ساتھ ایسے ہوتا ہے
 جیے خبر کا مبتدا کے ساتھ' بھر دوسری جز کی اسی طرح شرح کی جاتی ہے' ابتدا سے انہا

 تک بھی سلسلہ جاری رہتا ہے' تفییر اپنے اصل سے اس طرح متعلق ہوتی ہے کہ اگر
 تفییر کواصل سے جدا کر دیا جائے تو وہ بے معنی ہوکررہ جائے گی' اسے اصل کی جگہ نہیں
 رکھا جا سکتا ۔
- (۲) ترجمہ میں اضافہ نہیں کیا جاسکتا' کیونکہ ترجمہ تو ہو بہواصل کی نقل ہے'اس لیے دیانت داری کا تقاضا ہے کہ نقل کسی کی بیشی کے بغیر اصل کے مطابق ہو' برخلاف تفسیر کے کہ اس میں اصل کی وضاحت ہوتی ہے' مثلاً بعض اوقات مفسر کو الفاظ لغویہ کی شرح کی ضرورت پیش آئے گئ خصوصا اس وقت جب کہ ان کے وضعی معانی مراد نہ ہوں'ای طرح کہیں دلائل پیش کیے جائیں گے اور کہیں حکمت بیان کی جائے گی۔ طرح کہیں دلائل پیش کیے جائیں گے اور کہیں حکمت بیان کی جائے گ۔ یہی دجہ ہے کہ اکثر تفسیروں میں لغوی' اعتقادی' فقہی اور اصولی مباحث بیان کی جاتی

میں کا کاتی اور اجھای مسائل زیر بحث لائے جاتے ہیں اسبابِ نزول اور ناتخ و منسوخ کاذکر کیا جاتا ہے جب کہ ترجمہ میں ان مباحث ومسائل کی گنجائش نہیں ہوتی۔
(۳) عرفی ترجمہ میں بید عویٰ کیا جاتا ہے کہ اصل کلام کے تمام معانی اور مقاصد بیان کردیئے گئے ہیں (یہ علامہ محمد عبد العظیم زرقانی کی ذاتی رائے ہے) کیکن تفسیر میں صرف وضاحت مقصود ہوتی ہے '

🖈 خواه اجمالأ هو يا تفصيلا

🖈 تمام معانی اور مقاصد پر شتمل ہویا بعض پر ٔ

اس کا دارو مداران حالات پر ہے جن میں مفسر گزرر ما ہے اور ان لوگول کی ذہنی سطح پر ہے جن کے حلے میں مفسر گزرر ما ہے اور ان لوگول کی ذہنی سطح پر ہے جن کے لیے تفسیر لکھی گئی ہے۔

(٣) عرف عام کے مطابق ترجہ میں اس اطمینان کا دعویٰ کیا جاتا ہے کہ مترجم کے نقل کردہ تمام معانی اور مقاصد اصل کلام کے مدلول ہیں اور قائل کی مراد ہیں۔ تفییر میں یہ دعویٰ نہیں کیا جاتا ' بعض اوقات مفسر دلائل کے پیش نظر اطمینان اور وثو ق کا دعویٰ کرتا ہے اور جب اسے قو کی دلائل میسر نہیں ہوتے تو وہ اطمینان کا دعویٰ نہیں کرتا ' بھی وہ بعض احتالات کا ذکر کرتا ہے' جسی چنداخمالات ذکر کر ویتا ہے' جن میں سے بعض کو ترجیح حاصل ہوتی ہے' بعض اوقات وہ تصریح یا ترجیح ہے گریز کرتا ہے اور بھی بیحالت ہوتی ہے کہ وہ کی کلے یا جملے کے بار سے میں کہد ویتا ہے کہ اس کا قائل ہی بہتر جانتا ہے کہ اس سے مراد کیا ہے؟ جیسے کہ بہت سے مفسر بین حروف مقطعات اور قرآنی متنا بہات کے بار سے میں کہد دیتے ہیں۔ (ملامہ محرعبر انعظیم ذرقانی 'منابل العرفان نی ہم سے اس جگہ اس موقف کا اعادہ مناسب معلوم ہوتا ہے کہ قرآن یا کہ کامخلف زبانوں میں ترجمہ کرنا مکن ہی نہیں ہے اور انسانی طافت ترجمہ کرنا مکن ہی نہیں ہے اور انسانی طافت کو دوسری زبان میں منتقل کر رہے ہیں' کیونکہ ایسا ترجمہ کرنا ممکن ہی نہیں ہے اور انسانی طافت کو دوسری زبان میں منتقل کر رہے ہیں' کیونکہ ایسا ترجمہ کرنا ممکن ہی نہیں ہے اور انسانی طافت کے باہ ہے۔

وہ چندامورجن کے بغیرتر جمہ ہیں کیا جاسکتا

اس سے پہلے بیان کیا جا چکا ہے کہ مفسر کے لیے کن علوم میں دسترس ضروری ہے؟

قرآن مجید کے ترجمہ کے لیے بھی ان علوم میں مہارت لازمی ہے ان کے علاوہ مترجم کے لیے جواُ مورضروری ہیں'ان میں سے چندایک درج ذیل ہیں:

- (۱) مترجم کے لیے ضروری ہے کہ وہ جس زبان میں ترجمہ کرر ہاہے اس زبان اور عربی لغت کے معانی وضعیہ سے آگاہ ہوا ہے معلوم ہو کہ کون سالفظ کس معنی کے لیے وضع کیا گیا ہے؟
 - (۲) اسے دونوں زبانوں کے اُسالیب اور خصوصیّات کا بھی یہا ہو۔
 - (٣) کسی آیت کے متعدد مطالب ہوں تو ان میں سے راجح مطلب کو اختیار کرے۔
- (٣) الله تعالیٰ کی عظمت وجلالت کو پیش نظرر کھے اور ترجمہ میں کوئی ایسالفظ نہ لائے جو بار گاہِ الٰہی کے شایانِ شان نہ ہو ٔ مثلاً اس آیت کا ترجمہ کیا جاتا ہے :

'' إِنَّ الْمُنْفِقِيْنَ يُنْحُدِعُوْنَ اللَّهُ وَهُوَ خَادِعُهُمُ ''(النهاء:١٣٢) البنة منافق وغابازي كرتے ہيں اللہ ہے اور وہی ان کو دغادے گا۔

الله تعالیٰ کی طرف دغا کی نبست کسی طرح بھی صحیح نہیں ہے اس لیے اس آیت کا ترجمہ سیے:

ہے شک منافق لوگ اپنے گمان میں اللّٰہ کوفریب دینا چاہتے ہیں اور وہی انہیں غافل کر کے مارے گا۔ (کنز الایمان)

منافقین اللہ تعالیٰ کو دغانہیں دے سکتے کیونکہ وہ تو''عالم الغیب و الشہادہ''ہے'وہ ہر ظاہراور مخفی امر کو جانتا ہے'اسے کون دھوکا دیے سکتا ہے؟ ہاں! منافقین دھوکا دیے کی اپنی کی کوشش کرتے ہیں'اگر چہ انہیں اس میں کامیا بی نہیں ہوسکتی'' وَ هُوَ خَادِعُهُمْ '' کا کتنا عمدہ اور شیح ترجمہ ہے؟ کہ'' وہی انہیں غافل کر کے مارے گا' بیمعیٰ نہیں کہ وہی ان کو دغاوے گا۔

اس ترجمه میں دوباتیں قابل غور ہیں:

(۱)رسولانِ گرامی کی طرف مایوی کی نسبت کی گئی ہے ٔ حالانکہ اللہ تعالیٰ کا فر مان ہے: '' إِنَّهُ لَا يَائِنَسُ مِنْ رُّوْحِ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْكُفِرُوْنَ ''(يسف: ۸۷) بِ شَك الله کی رحمت سے ناميز نبيں ہوتے مگر کا فراوگ۔

۲)اللہ تعالیٰ کے رسولوں کی نسبت کہا گیا: اور خیال کرنے لگے کہ ان سے جھوٹ کہا گیا تھا۔

معاذ الله!انبیاء کرام معصوم ہیں'ان کے گوشۂ خیال میں بھی یہ بات نہیں آ سکتی کہان کو الله تعالیٰ کی طرف ہے جو کہا گیاتھا' وہ جھوٹ تھا۔

حضرت عروہ بن زبیر رضی اللہ فی اللہ حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ سے بوچھا: "وَظَنَوْ النَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْ ا" (بوسف:١١٠) كيار سولوں نے بير كمان كيا كه انہيں جموث كہا كيا تقا؟ انہوں نے فرمایا:

مَعَاذَ اللهِ لَمْ تَكُنِ الرَّسُلُ تَظُنَّ اللهُ لَمْ تَكُنِ الرَّسُلُ تَظُنَّ الله كَانِهِ اللهِ كَانِ اللهُ كَانِ اللهِ كَانِ اللهِ كَانَ اللهِ كَانَ اللهِ كَانَ اللهِ كَانَ اللهِ كَانَ اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ ال

حضرت ام المؤمنيان رئي الله كي قراءت فك سحّدِبُو ان به ذال مشدد مكسور كساته الله صورت ميس معنى بيه به كدرسولول نے گمان كيا كه انبيل ان كي قوم كي طرف سے جھلاديا گيا ہے۔ دوسرى قراءت ميل فقد محدِبُون بها اب اگر نظمنو ان كي ضمير رسولول كي طرف راجع كريں تو معنى بيه ہوگا كه رسولول نے گمان كيا كه انبيل جھوٹ كہا گيا اس صورت ميل مطلب بيه ہوگا كه رسولول كے خيال ميل الله تعالى كي طرف سے انبيل جو سحورت ميل مطلب بيه ہوگا كه رسولول كے خيال ميل الله تعالى كي طرف سے انبيل جو سامنے ركھتے ہوئے حضرت ام المؤمنيان كي كھرت ام المؤمنيان عائشہ صديقة وقي الله في الله عاد الله الله الله تعالى كے رسول الله دب كي نسبت بي گمان منبيل كر سول الله دب كي نسبت بي گمان منبيل كر سول الله دب كي نسبت بي گمان منبيل كر سكتے۔

ام المؤمنين و فيالله كا الكاراى صورت سے متعلق ہے جب كه فطف وا" كي ضمير

ا مام احمد رضا بریلوی قدس سرۂ العزیز نے اس آیت کا جوتر جمہ کیا ہے'اہل علم اسے پڑھ کر دا دویئے بغیرنہیں رہ سکتے' ملاحظہ ہو:

یہاں تک کہ جب رسولوں کو ظاہری اسباب کی امید ندر ہی اورلوگ سمجھے کہ رسولوں نے ان سے غلط کہا تھا۔ (کنز الایمان)

یعنی رسولوں کی مایوی ظاہری اسباب سے تھی نہ کہ اللہ تعالیٰ کی رحمت ہے'اورلوگوں نے گمان کیا کہ انہیں عذاب وغیرہ کے بارے میں جھوٹ کہا گیا تھا' انبیاء کرام کا دامنِ عصمت اس خیال سے ہرگز داغ دار نہ تھا۔

(۲) اسلام کے قطعی اور یقینی عقا ئد کو ملحوظ رکھا جائے اور انہیں ذرای تھیں بھی نہ لگنے دی جائے۔ ارشادِر بانی ہے:'' فَ ظُنَّ اَنْ لَنْ تَقْدِدَ عَلَيْهِ''(الانبياء:۸۷)اس کا ترجمہ بد کیا گیا: پھر سمجھانہ پکڑ سکیں گے اس کو۔

اس آیت میں سیدنا یونس عالیہ لاا کا ذکر ہے ترجمہ میں ان کی طرف اس امر کی نبعت کی گئی ہے کہ انہوں نے سیخھا کہ اللہ تعالیٰ انہیں نہ پکڑ سکے گا'اور بیاللہ تعالیٰ کی قدرت کا انکار ہے' جس کی نبیت جضرت یونس عالیہ لاا کی طرف کرنا کسی طرح بھی جائز نہیں ہے' مغالط اس لیے جس کی نبیت جضرت یونس عالیہ لاا کی طرف کرنا کسی طرح بھی جائز نہیں ہے' مغالط اس لیے پیدا ہوا کہ' قَدَدَ یَقْدِدُ '' کا استعال دومعنوں میں ہوتا ہے: (۱) قادر ہونا (۲) تنگی کرنا۔

مترجم نے سمجھا کہ اس جگہ پہلامعنی مراد ہے جو قطعاً غلط ہے اس موقع اور عصمتِ انبیاء ا کے مطابق صرف دوسرامعنی ہے۔

علامه محمر بن مكرم افريقي فرماتے ہيں:

جس شخص نے اس آیت میں' قسدر '' کوقدرت سے ماخوذ مان کرکہا کہ حضرت یونس علی کا گمان کرنا کے اس کے عالیہ لاگا نے یوں گمان کیا کہ اللہ تعالی ان کونہ پکڑ سکے گا' توبیا جائز ہے اور اس معنی کا گمان کرنا

کفر ہے کیونکہ اللہ تعالیٰ کی قدرت میں ظن کرنا شک ہے اوراس کی قدرت میں شک کرنا کفر ہے۔ اللہ تعالیٰ نے اپنیاء عین اُکھر کواس قسم کے گمان سے محفوظ اور معصوم رکھا ہے ایسی تاویل وہی کرے گاجوعرب کے کلام اور اُن کی لغات سے جاہل ہوگا۔

(علامدامام محمد بن مرم افریقی کسان العرب ج۵ ص ۷۷ وارصادر بیروت) اس تفصیل کے بعد امام احمد رضا بریلوی کا ترجمہ د کیھئے ایمان تازہ ہو جائے گا: تو گمان کیا (یونس علالیلاً نے) کہ ہم اس پرتنگی نہ کریں گے۔

ایک دوسری آیت کریمه دیکھئے:

'' وَقَالَ اللَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْوِجَتَكُمْ مِنْ اَرْضِنَا اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِي مِلْتِنَا'' (ابراہیم: ۱۳)اس کا ترجمہاس طرح کیا گیا ہے:'' ان کفار نے اپنے رسولوں سے کہا کہ ہم تم کو اپنی زمین سے تکال دیں گے یا ہے کہ تم ہمارے ندہب میں لوٹ آ و''۔

''لوٹ آ وُ'' کا واضح مطلب یہ ہے کہ حضرات رسولانِ گرامی اُلیّنا معاذ اللہ! پہلے کافروں کے مذہب میں کافروں کے مذہب میں شامل تھے حالانکہ انبیاء کرام اُلیّنا کبھی بھی کافروں کے مذہب میں شامل نہیں ہوتے۔اس جگہ مغالطے کی وجہ یہ ہے کہ' تعاقہ یَعُوْدُ ڈ'' کا استعمال دوطرح ہوتا ہے:

﴿ فعل تام اُس وقت اس کامعنی لوٹنا ہوگا۔

خون ناقص اس وقت یه صار "کے معنی میں ہوگا اور ہوجانے کے معنی پر دلالت کرے گا۔ ترجمہ کرنے والے کے سامنے تو کے مسائل وقوا عدمتحضر ہوں تو وہ غور کرے گا کہ اس جگہ پبلامعنی مناسب ہے یا دوسرا؟ ظاہر ہے کہ مذکورہ ترجمہ میں پبلامعنی مراد لینے کی بناء پر

غلطی ہوئی ہے جب کہ اس جگہ دوسرامعنی مراد اور موزوں ہے اس لیے امام احمد رضا ہریلوی رحمہ اللہ تعالیٰ نے اس آیت کا ترجمہ اس طرح کیا ہے:

'' اور کافرول نے اپنے رسولول ہے کہا: ہم ضرور تہہیں اپنی زمین سے نکال دیں گے یا تم ہمارے دین پر آ جاؤ''۔ (کنز الایمان)

(2) قرآن پاک عربی زبان کا وہ شاہ کار ہے 'جومر تبه ٔ اعجاز پر فائز ہے 'کسی بھی مترجم کے لیے میمکن نہیں کہ وہ اس کا ترجمہ معجزانہ کلام سے کرے تا ہم علم معانی اور بیان کے مسائل ومباحث سے باخبراییا ترجمہ تو کرہی سکتا ہے جس سے اعجاز قرآنی کی جھلک

د کھائی دے۔اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے:'' ذلِك الْكِتَابُ لَا رَبِّبَ فِيْهِ ''(القرہ:۲)۔ عام طور پراس آیت کا ترجمہ کچھاس طرح کیاجاتا ہے کہ'' یہ کتاب اس میں کوئی شک نہیں ہے''۔

اس ترجع پر دوسوال وار ذہوتے ہیں:

کے '' ذٰلِک'' کی وضع بعید کی طرف اشارہ کرنے کے لیے ہے'اس لیے ترجمہ کرتے ہوئے '' وہ کتاب'' کہنا چاہیے تھانہ کہ'' یہ کتاب''۔

اں میں کوئی شک نہیں' واقع کے خلاف ہے' کیونکہ قر آن کریم میں بہت ہے لوگوں نے شک کیا ور آج بھی ایسے لوگوں کے شک کیا ور آج بھی ایسے لوگوں کی کوئی کمی نہیں ہے۔

امام احمد رضا ہریلوی رحمہ اللہ تعالیٰ کا ترجمہ دیکھئے' جواعجازِ قر آن کو واضح طور پر آشکارا کرتا ہے:'' وہ بلندر تبہ کتاب(قر آن) کوئی شک کی جگہ نہیں''(کنز الایمان)۔

- (۸) جس زبان میں ترجمہ کیا جائے 'اس کے اسلوب اور مزاج کو پیشِ نظر رکھا جائے 'اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے: '' وَ مَـر ْیَـمَ ابِنْتَ عِمْرَ انَ الّیّتِی اَحْصَنَتْ فَرْ جَهَا ''(التریم:۱۲) اس کا ترجمہ یوں کیا گیا ہے: '' اور مریم بیٹی عمران کی جس نے رو کے رکھاا پی شہوت کی جگہ کو 'یہ امر مختاج بیان نہیں ہے کہ اس ترجمہ میں اُردوز بان کی شائشگی اور مزاج کو لمحوظ نہیں رکھا گیا' اس کی بجائے یہ ترجمہ کتنا دکش ہے: '' اور عمران کی بیٹی مریم جس نے اپنی یارسائی کی حفاظت کی'۔
 - (٩) قرآن پاک میں بیان کردہ کسی بھی واقع کی واقعی تنصیلات ہے آگاہی ضروری ہے ورند ترجمہ کرتے وقت کہیں بھی غلطی واقع ہو عمق ہے۔ارشادِ باری تعالیٰ ہے: ''فَفَالَ اِنِسَی اَحْبَاتُ حُبَّ الْحَیْرِ عَنْ ذِکْرِ رَبِّی حَتَّی تَوَارَتَ بِالْحِجَابِ ٥ رُدُّوْهَا عَلَی فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوْقِ وَالْاَعْنَاقِ ٥ ''(صّ:٣٢-٣٣)۔

عامطور برمترجمين في 'توارَتَ بِالْحِجَابِ ' 'كاترجمه يه كياب:

'' سورج جھپ گیااور حضرت سلیمان علالیلااً کی نما زعصر قضاً ہوگئ انہوں نے گھوڑوں کو طلب کیااوران کی پنڈلیاں اور گردنیس کاٹ دیں'۔

اس ترجم يردوسوال وارد ہوتے ہيں:

حضرت سلیمان عللیسلاً گھوڑوں کو ملا حظہ فر مار ہے تھے کہ نماز قضا ہوگئ اس میں گھوڑوں
 کا کیاقصورتھا؟ کہ انہیں ہلاک کردیا گیا۔

ﷺ گھوڑوں کی گردنیں اور ٹائگیں کاٹ کر مال کے ضائع کرنے کا کیا جوازتھا؟ یہ بھی تو ہو
 سکتا تھا کہ تمام گھوڑ ہے خیرات کردیتے۔

امام بخاری رحمه الله تعالی نے اس آیت کی تفسیر کرتے ہوئے فر مایا ہے:

''عَنُ ذَكُو رَبِّی مِنْ ذِكُرِ طَفِقَ مَسْحًا يَمْسَحُ أَعْرَافَ الْخَيْلِ وَعَرَاقِيْبَهَا'' (امام محربن اساعیل بخاری صحیح بخاری ۲۰ ص ۱۰) یعنی 'عَن '' بمعنی ' مِسن '' ہے اور' طَفِقَ مَسْحًا '' كامعنی بیرے كه حضرت سليمان علايسلاً گھوڑوں كى ايال (گردن كے بالول) اوران كِخُول بر ہاتھ پھيرنے گئے۔

اس افتباس سے واضح ہو گیا کہ حفرت سلیمان عالیسلاً نے گھوڑ وں کو ہلاک نہیں کیا تھا' جب بیحقیقت ہی نظروں سے اوجھل ہوتو ترجمہ کیسے تھے ہوسکتا ہے؟ آ ہے تھے ترجمہ ملاحظہ فرمائیں:

'' تو سلیمان علالیلاً نے کہا: مجھےان گھوڑوں کی محبت پیند آئی ہے'ا پنے رب کی یاد کے لیے پھرانہیں چلانے کا حکم دیا' یہاں تک کہ نگاہ سے پرد ہے میں حجیب گئے' پھر حکم دیا نہیں میر سے پاس واپس لاؤ تو ان کی پنڈلیوں اور گردنوں پر ہاتھ پھیر نے گئے' (کنز الا یمان)۔ میر سے پاس واپس لاؤ تو ان کی پنڈلیوں اور لافانی کتاب کا ترجمہ کرنا ہر کس و ناکس اور ہرعالم کا کا منہیں ہے' مترجم کے لیے جو آمور ضرور کی ہیں' ان کا مخضر تذکرہ آپ کے سامنے ہیش کیا گیا ہے' اللہ تعالیٰ ہم سب کو قر آن پاک کے پڑھنے' اسے بچھنے اور اس کی تعلیمات پر میمل کرنے کی تو فیق عطافر ہائے۔

آمين بحرمة سيد المرسلين المُنْ الله والحمد لله وب العالمين.

لفظ انوں کا پروردگار ہے اور درود وسلام ہوتمام کی محمصلی اللہ علیہ وآلہ وسلم پراور آپ کی آل کے خرصلی اللہ تعالیٰ نے تمام کتب کومنسوخ فر ما کے ذریعے اللہ تعالیٰ نے تمام کتب کومنسوخ فر ما کے خوضاتم اللہ دیاں تھہرا۔



بيش لفظ

تمام تعریفیں اللہ تعالیٰ کے لیے جوتمام جہانوں کا پروردگار ہے اور درود وسلام ہوتمام سے اور درود وسلام ہوتمام سے رسولوں میں افضل ہمارے آتا ہے گا آل سے اللہ علیہ واللہ وسلم پر اور آپ کی آل سے یا ک اور تمام صحابہ یر۔

قرآن کریم وہ بلندر تبه کتاب ہے جس کے ذریعے اللہ تعالی نے تمام کتب کومنسوخ فرما دیا اور اللہ تعالی نے تمام کتب کومنسوخ فرما دیا اور اللہ تعالی نے اس کوالیے عظیم نبی پرنازل فرمایا جن کے ذریعے نبیوں کی آمد کاسلسلہ کمل اور ختم ہوا۔ آپ ایک ایسادین لے کرتشریف لائے جو خاتم اللادیان تھرا۔

قرآن حکیم مخلوق کی اصلاح کے لیے خالق کا دستور ہے۔زمین والوں کی ہدایت و رہنمائی کے لیے آفاقی قانون ہے اس کو نازل فرمانے کے ساتھ ہی اللہ تعالی نے تمام سابقہ شریعتوں کومنسوخ فرمادیا ہے۔

قرآن پاک میں اللہ تعالیٰ نے تمام ترتر تی کے داز ود بعت رکھ دیئے ہیں اور ہرتشم کی سعادت کا حصول قرآن ہی کے ذریعے ممکن ہے قرآن پاک رسول کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا بہت بڑا معجزہ اور آپ کی رسالت پر زبر دست دلیل ہے جو کہ ایک عالم کی زبانوں پر آپ صدافت و آپ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی رسالت پر شاہر آپ کی نبوت پر ناطق اور آپ کی صدافت و امانت پر ایک روشن دلیل ہے۔

قرآن مجید ہی دین اسلام کا وہ بلند قلعہ ہے 'جس کے حصار اور فراہم کروہ پناہ گاہ پر اسلام اپنے عقائد دنظریات 'عبادات اوران کی فلاسفی احکام وآ داب (قوانین وکلچر) 'قصص (اگلول کی داستانوں سے عبرت پذیری اور ماضی کی تاریخ کے آئینہ میں حال واستقبال کوسلجھانے ' سنوار نے کا وافر سامان) مواعظ اور علوم ومعارف سب امور میں کممل اعتاد اور بھروسہ کرتا ہے۔

قرآن مجيد

لغت عرب کی بقاءاورسلامتی کے لیے سنگ میل کی حیثیت رکھتا ہے۔ لغت عربی کے لیانی خطوط اور جہتوں کا تعین اور اس کی سمتوں کی استقامت ای بلنداور روشن مینار کی روشن میں کی جاتی ہے۔

علوم عربیه اپنی تمام تر انواع کثرت کے ساتھ قر آن مجید ہی کے مرہون منت ہیں۔ عربی علوم وفنون کواپنے نفس مضمون اور اسالیب میں قر آن پاک کی ہی بدولت دنیا بھر میں تمام عالمی زبانوں پرتفوق و برتری حاصل ہے۔

یمی کچھوہ وجوہ واسباب تھے کہ جن کی بنا پر قر آن مجید ٔ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم' صحابہ کرام' امت مصطفویہ کے سلف اور خلف کے مطالعہ اور توجہ کامحور ومرکز رہا۔

ہر دور میں ارباب علم وفضل اور اصحاب تحقیق نے مختلف شکلوں میں قرآن پاک کے ہر پہلو پر تحقیقی کام جاری رکھا ہے۔ بھی قرآن مجید کے الفاظ اور اس کی ادائیگی کے طریقوں پر تحقیق ہوئی تو بھی قرآن پاک کا اسلوب اور اعجاز مرجع التفات رہا۔

کوئی قرآن پاک کی کتابت اور رہم الخط کے طریقوں کو اپنا موضوع تحقیق بنا تا ہے تو کسی کا دظیفہ حیات اور شغل زندگی قرآن مجید کی تفسیر اور اس کی آیات کی شرح کرنے کی سعادت حاصل کرنار ہاہے' اس طرح اور بہت سے گوشوں پر تحقیقی کام ہوا۔

علائے امت نے قرآن مجید کے ہر پہلو پرالگ الگ تحقیق اور ریسرج کر کے مستقل کتابیں تالیف کی ہیں اور اس وسیع میدان کتابیں تالیف کی ہیں اور اس وسیع میدان میں بہت بلیغ کوششیں فرمائی ہیں اور بیسلف صالحین کی کوششوں ہی کا نتیجہ ہے کہ آج ان بزرگوں کی مساعی جمیلہ اور عظیم کارناموں کی بدولت نہایت قابل قدر سرمائی علمی سے ہمار برکت خانے مالا مال ہیں اور اس گراں قدر علمی سرمایہ پر ہمیں بجاطور پر ہمیش فخر رہا ہے اور اسلان کی اس علمی اور تحقیقی دولت و ثروت کے بل پر ہم اقوام عالم کوچیلنے کرنے اور ہر ملک اور ہرملت کے افراداغیار کو و ندان شکن اور مسکت جواب دے سکنے کی پوزیشن میں ہیں اور اس طرح علاء محققین کی کاوشوں سے آج ہمیں زندگی کے ہر شعبہ سے متعلق جملہ علوم وفنون پر قسانیف اور گرال بہا شروحات دستیاب ہیں۔

ایک قرآن مجیدی کو لے لیں اس کے متعلقہ علوم میں سے مثلاً علم قراءت علم تجوید سخ عثانی کاعلم علم تفییر علم ناسخ ومنسوخ علم غرائب القرآن علم اعجاز القرآن علم اعراب القرآن و عثم ناس کے متعلقہ علوم دینیہ اور علوم عربیہ کے جو واقعی لائق اعتبار ہیں اور تاریخ نے اس کوتمام کتب کی اصل یعنی قرآن پاک کی حفاظت کے لیے عمدہ گردانا ہے۔ ایسے ہم علم پر کتابیں کھی ہیں ان تمام علوم کی تدوین اور منصر شہود پران کی جلوہ گری اللہ تعالیٰ کی طرف سے ایک معجزہ کاظہور ہے۔ جو اللہ تعالیٰ کی طرف سے ایک معجزہ کاظہور ہے۔ جو اللہ تعالیٰ کے ارشادگرامی ' آنّا نہ خون فَرّ آنا اللّهِ کُورَ وَ إِنّا لَهُ لَهُ لَهُ فَاوَنَى ' نَنّ اللّهِ کُورَ وَ إِنّا لَهُ لَهُ لَهُ فَاللّهِ مِن ' کی الله بین کی الله بین ہیں کی اللہ بین ہیں کی اللہ بین ہیں کی اللہ بین کی اللہ بین کرنے والا ہے۔

پھران علوم مذکورہ کی کو کھ سے ایک نہایت عمرہ جدیدعلم نکلا 'جوان تمام علوم کا براہی عمرہ آمیزہ مرکب ہے اور بیف حوائے' المولدسر لابیہ 'ان جملہ علوم کے اغراض و مقاصداور اسرار و خصوصیات کا جامع ہے اور وہ' علوم القرآن' کے نام سے جانا جاتا ہے اور یہی ' علم نو' ، ماری اس زیر بحث کتاب کا موضوع ہے۔ تاہم ہم علوم القرآن پر عمرف انہی امور سے بحث مری گری گرائیوں میں کریں گئ جن کا تعلق براہ راست علم تفسیر سے ہے۔ تاکہ قرآن پاک کی گرائیوں میں اتر نے والوں کے لیے آسانی پیدا ہواور ہماری یہ کتاب تفسیر کے طالب علموں کے لیے کلیدی کرداراداکر نے اور کی بورڈ (Keyboard) کا کام دے۔

اس پہلو سے جائزہ لیا جائے تو'' علوم القرآن'' کی حیثیت تفییر پڑھنے والوں کے لیے وہی ہے' جو حدیث شریف پڑھنے کا ارادہ رکھنے والوں کے لیے علوم الحدیث کی حیثیت ہوتی ہے۔

علامہ جلال الدین سیوطی رحمة الله علیه اپنی کتاب "الاتقان فی علوم القرآن" کے خطبہ میں لکھتے ہیں:

'' میں زمانہ طالب علمی سے متقد مین کے اس وطیرے پر بڑا تعجب کرتا تھا کہ انہوں نے علوم قر آن پر کوئی کتاب تالیف نہیں گی' جس طرح سے کہ انہوں نے علوم حدیث کے متعلق کتابیں تصنیف فر مائی ہیں''۔

پس یہ چندفصلیں علوم القرآن سے متعلق ہیں اور یہ دراصل ہم نے امام جلال الدین

سیوطی رحمة الله علیه کی کتاب "الات قدان فسی علوم القر آن" کی تلخیص پیش کی ہے اور پھے
اضافی اور تحقیقی با تیس ہم نے اپنی طرف ہے بھی اس میں شامل کردی ہیں اور اس کا نام" زبد ة
الات قدان فسی علوم القر آن" رکھا ہے الله تعالی سے دعا کرتے ہیں کہ وہ اس کو بھی اصل کی
طرح نافع بنائے اور ہمارا نیک عمل الله تعالی کی جناب میں خالص لوجہ الله قرار پا جائے۔ آمین
(مولا کریم تو ایسا ہی کرد ہے!)

سیدمجمد بن سیدعلوی بن سیدعباس مالکی حسنی ۸رئیچ الاول ۲۰۰۱ ه





اصطلاحات تفسير (ازمترجم)

قرآن مجید کی تفسیر کا مطالعہ کرنے سے پہلے علم تفسیر کی اصطلاحات کا جاننا ضروری ہے ' قرآن مجید کی آیات کے معانی کا سمجھنا تفسیر کی اصطلاحات کے جاننے پر موقوف ہے 'لہٰدا قرآن مجید کی تفسیر پوری بصیرت کے ساتھ اور کما حقہ سمجھنے کے لیے اوّلاً مکی اور مدنی سورتوں کی معرفت اور ناسخ ومنسوخ اور اسباب نزول کا علم ضروری ہے۔ کیونکہ جو شخص ان امور کی معرفت حاصل کیے بغیر تفسیر قرآن میں غور وخوض شروع کر دیتا ہے 'وہ ورطہ جیرت میں مبتلا ہو جاتا ہے اور قرآن مجید کے معانی اور مطالب اس پرنہیں کھلتے ہیں' نتیجۂ تفسیر کے ساتھ اس کی دلچیبی ہی ختم ہوکر رہ جاتی ہے۔

بعض متقد مین کابیان ہے کہ قرآن کا نزول تمیں قسموں پر ہوا ہے ان میں سے ہرایک فتم دوسری قسم سے بالکل جداگانہ ہے ہیں جو شخص ان باتوں کی وجو ہات سے داقف ہو کر پھر دین میں کلام کرے گا ور اصول دین کے موافق زبان کھولے گا اور اصول دین کے موافق زبان کھولے گا اور اگر بغیران امور کی معرفت حاصل کیے دین میں کچھ زبان سے نکالے گاتو معلوم رہنا چاہیے کہ فلطی اس کے گردو پیش منڈلاتی رہے گی اور وہ چیزیں حسب ذیل ہیں جن کا جاننا مطالعہ تفسیر سے پہلے ضروری ہے مثلاً کی مدنی ناتے 'منسوخ 'محکم' منشا بہ نقدیم' تاخیر مقطوع' موصول' سب نزول' اضار خاص عام' نبی وعد' وعید' حدود' احکام' خراستفہام' اعذار' انذار جحت' احتجاج' مواعظ' امثال اور قسم جن کی تفصیل آگے آر بی ہے' مقدمہ میں مندرجہ ذیل امور پر روشی ڈائی مواعظ' امثال اور قسم جن کی تفصیل آگے آر بی ہے' مقدمہ میں مندرجہ ذیل امور پر روشی ڈائی موضوع اور غرض وغایت' فاکدہ وثمرہ' واضع تفسیر نسبت' استمداد' فضیلت وتی کی حقیقت' قرآن مجید کی تعریف' قرآن مجید کا تعریف' قرآن مجید کا تعریف' قرآن کی تاریخ' دائر اور تا ویل کی تعریف' قرآن کی تاریخ'

مفامین قرآن کا خاکدایک نظر میں۔ تفسیر اور تاویل کالغوی معنی

علامہ زبیدی لکھتے ہیں کہ ابن الاعرابی نے کہا: ' فسر ''کامعنی ظاہر کرنا اور بند چیز کو کھولنا ہے' بسیار میں ہے معنی معقول کو منکشف کرنا' نسر' ہے' نیز فسر کا معنی طبیب کا بیشا ب کا معائد کرنا ہے۔ '' نے فسو ق' 'اس بیشا ب کو کہتے ہیں' جس سے مریض کے مرض پر استدلال کیا جاتا ہے' اس کا طبیب معائد کرتے ہیں اور اس کے رنگ سے مریض کے مرض پر استدلال کرتے ہیں' تفییر اور تاویل دونوں کا ایک معنی ہے۔ یا تفییر مشکل لفظ کی مراد کے بیان کرنے کو کہتے ہیں اور تاویل دونوں کا ایک معنی ہے۔ یا تفییر مشکل لفظ کی مراد کے بیان کرنے کو کہتے ہیں۔ جو بظاہر میں اور تاویل دو احتمالوں میں سے کسی ایک احتمال کے ترجیح دینے کو کہتے ہیں۔ جو بظاہر عبارت کے مطابق ہو کسان العرب میں ای طرح ندکور ہے۔ ایک قول ہے ہے کہ قرآن مجید میں جو مجمل قصے ہیں' ان کی شرح کرنا اور مشکل الفاظ کے معانی بیان کرنا اور آیات کا شان نرول بیان کرنا تفیر ہے اور معانی متشابہ کو بیان کرنا تاویل ہے اور جن الفاظ کاغور وفکر کے بغیر خطعیت کے ساتھ معنی معلوم نہ ہو سکے وہ منشابہ ہیں۔

(تاج العروس ج ساص ٥٠ م مطبعه خيرية مصر ٢٠ ساه ؛ بحواله تبيان القرآن)

علامه ميرسيدشريف لكصة بين:

تفسیر کالغوی معنی ہے: کشف اور ظاہر کرنا۔

اصطلاحی معنی ہے: واضح لفظوں کے ساتھ آیت کے معنی کو بیان کرنا' اس سے مسائل مستنبط کرنا' اس کے متعلق احادیث و آثار بیان کرنا اور اس کا شانِ بزول بیان کرنا۔ (کتاب التعریفات ۴۸ 'بحوالہ تبیان القرآن)

تاویل کا لغوی معنی ہے: لوٹانا اور اصطلاح شرع میں ایک لفظ کو اس کے ظاہری معنی سے ہٹا کرایک ایسے معنی پرمحمول کرنا جس کا وہ احتمال رکھتا ہوا ور وہ احتمال کتاب اور سنت کے موافق ہو مثلاً اللہ تعالی نے فرمایا ہے: '' یہ خوج المدحق مِنَ الْمَیّتِ '' (الرم: ۱۹) وہ مرد سے سے زندہ کو نکالتا ہے۔ اگر اس آیت میں انڈے سے پرندے کو نکالنا مراد ہوتو تفسیر ہے اور اگر کا فرسے مومن کو پیدا کرنا یا جابل سے عالم کو پیدا کرنا مراد ہوتو یہ تاویل ہے۔

(كتاب التعريفات ص ٢٢ مطبعه خيرية مفرلا • ١٢ هـ)

تفسير كا اصطلاحي معنى علامه ابوالحيان اندلسي لكصته بهن:

تفسیر وہ علم ہے جس میں الفاظ قرآن کی کیفیت نطق ان کے مدلولات ان کے مفر داور مرکب ہونے کے احکام حالت ترکیب میں ان کے معانی اور ان کے تتمات سے بحث کی جاتی ہے۔ (ابھر الحیط نما ص۲۶ دارالفکر بیروٹ ۱۳۱۲ھ)

الفاظ قرآن کی کیفیت نطق ہے مرادعلم قراءت ہے الفاظ قرآن کے مدلولات ہے مراد
ان الفاظ کے معانی ہیں اوراس کا تعلق علم لغت ہے ہے مفرد اور مرکب کے احکام اس سے
مرادعلم صرف علم نحو (عربی گرائمر) اور علم بیان اور علم بدیع (فصاحت و بلاغت) ہے اور حالت
ترکیب میں الفاظ قرآن کے معانی ہے مرادیہ ہے کہ بھی لفظ کا ظاہری معنی مراد نہیں ہوتا اور
اس کو مجاز پر محمول کیا جاتا ہے اس کا تعلق علم معانی اور بیان سے ہے اور تتمات سے مراد ناشخ
اور منسوخ کی معرفت آیات کا شان زول اور مبہمات قرآن کا بیان ہے۔

علامها بن الجوزي لكصة بين:

سن چیز کو (جہالت کی) تاریکی ہے نکال کر (علم کی)روشنی میں لا ناتفسیر ہے اور کسی لفظ کو اس کے اصل معنی ہے نقل کر کے دوسر ہے معنی پرمحمول کرنا تاویل ہے۔جس کی وجہ ایسی دلیل ہو کہ اگر وہ دلیل نہ ہوتی تو اس لفظ کو اس کے ظاہر سے نہ ہٹایا جاتا۔

(زادالمسير ج٠١ص ٣ 'مطبوعه كمتب اسلامی 'بيروت'٤٠ ١٣٠ ه 'بحواله تبيان القرآن)

تفسيراور تاويل كافرق

 معنی ہے: بے شک آپ کا رب ضرور گھات میں ہے اور اس کی تاویل ہے ہے کہ وہ نافر مانوں کو دیکھے رہاہے اور اس سے ان کونافر مانی کرنے سے ڈرایا گیا ہے۔

تاویل میں دلیل قطعی سے بہ ثابت کیا جاتا ہے کہ یہاں لفظ کاحقیقی معنی مراونہیں ہے علامہ اصبہانی تغییر اور تاویل کا فرق بیان کرتے ہوئے اپنی تغییر میں لکھتے ہیں کہ تغییر کامعنی ہے: قرآن کے معانی کو بیان کرنا 'مجھی اس میں مشکل الفاظ کے معانی بیان کیے جاتے ہیں مثلاً بحیرہ 'سائبہ اور وصیلہ کے معانی اور بھی کسی قصہ کو متضمن ہوتا ہے اور اس قصہ کے بیان کے بغیر اس کلام کی معرفت نہیں ہوتی ۔ مثلاً '' إنّها النّسِسی عُونِیادَةٌ فِی الْکُفُو ''(التوبہ: ۲۷) تقدیم و تاخیر کفر میں زیادتی کے سوا بچھ نہیں ۔ یہ آیت اس قصہ کو متضمن ہے کہ کفارا بنی ہوائے نفس کی بناء یرمبینوں کو آگے ہیچھے کردیتے تھے۔

اور تاویل میں بھی لفظ کوعموم پرمحمول کیا جاتا ہے اور بھی خصوص پر مثلاً ایمان کا لفظ مطلقاً تصدیق کے لیے بھی استعال کیا گیا ہے اور تصدیق شری کے لیے بھی استعال کیا گیا ہے اور تصدیق شری کے لیے بھی استعال کیا گیا ہے اور تصدیق شری کے بیے بھی ایک لفظ جو کئی معنی میں مشترک ہوتا ہے اس کے سی ایک معنی کی تعیین کی جاتی ہے جیسے ''قروء'' یہ چیض اور طہر دونوں میں مشترک ہے۔

بعض علماء نے کہا: تفسیر کا تعلق روایت کے ساتھ ہے اور تاویل کا تعلق درایت کے ساتھ ہے اور تاویل کا تعلق درایت کے ساتھ ہے اور ابونصر قشیری نے کہا: تفسیر اتباع اور ساع میں منحصر ہے اور تاویل کا تعلق استنباط کے ساتھ ہے۔

مجدد گولز وی قدس سره لکھتے ہیں:

"بدال که تفسیر بالرانے جانز نیست بخلاف تاویل که آل درست است تفسیر آل رامے گویند که بغیر از نقل دانسته نشود مثل اسباب نزول وغیره و تاویل آنست که ممکن باشد ادراک او بقواعد عربیه" ـ (اعلا بالمیاشنی بان و ماال بایر التر مرمل شاه قدس ره)

ترجمہ:''معلوم ہونا جا ہے کہ تغییر بالرائے جائز نہیں اور تاویل بالرائے جائز ہے' تغییر اے کہتے ہیں جونقل یعنی روایت کے بغیر معلوم نہ ہو سکے' جیسے شانِ نزول وغیرہ اور تاویل وہ ہے' جوقواعدع بیہ کے ذریعے معلوم کی جاسکے''۔

نيز لکھتے ہیں:

(ترجمہ:)علامہ سلیمان الجمل نے جلالین شریف کے حاشیہ میں تحریفر مایا ہے کہ' تغییر کامنی کشف اور اظہار ہے اور تاویل کامنی رجوع یعنی لوٹانا ہے اور علم تغییر وہ ہے جس میں قرآن مجید کے احوال ہے انسانی طاقت کے مطابق بحث کی جائے اس حیثیت ہے کہ بیاللہ تعالیٰ کی مراد پر دلالت کرتی ہے 'چر بید دوشم پر ہے' اوّل تغییر جو بغیر تقل اور روایت کے معلوم نہ ہو سکے احراس بات کا راز کہ ہو سکے جیے اسباب نزول ' دوم تاویل جوع بی قواعد ہے معلوم ہو سکے اور اس بات کا راز کہ تاویل بالرائے درست نہیں ہے 'یہ ہے کہ تغییر میں انسان اللہ تعالیٰ پر گواہی دیتا ہے کہ اس لفظ ہے اللہ تعالیٰ جل مجدہ کی قطعی طور پر بہی مراد ہے اور بید چیز بغیر تو قیف (نقل و ساع) کے ناممکن اور ناروا ہے' اس لیے حاکم نے یقینی طور پر کہا ہے کہ حفرات صحابہ کرام علیم الرضوان کی تغییر مطلقا حدیث مرفوع کا درجہ رکھتی ہے اور تاویل بالرائے میں دوا حتالوں میں سے ایک کوغیر یقینی (طنی) طور پر ترجیح دے دینا ہے'۔
بالرائے میں دوا حتالوں میں سے ایک کوغیر یقینی (طنی) طور پر ترجیح دے دینا ہے'۔

علم تفسیر کا فائدہ قر آن مجید کے معانی کی معرفت ہے اور اس کی غرض و غایت سعادت رین سر

موضوع:اوراس کا موضوع کلام اللّہ لفظی ہے' کیونکہ موضوع وہ ہوتا ہے' جس کےعوارض ذاتیہ سےاس علم میں بحث کی جاتی ہےاورعلم تفسیر میں کلام لفظی کےعوارض ذاتیہ سے بحث کی جاتی ہے۔

تفسيرقرآن كي فضيلت يرعقلي ولائل

امام راغب اصفہانی نے اپنی تفسیر کے مقدمہ میں لکھا ہے کہ تمام فنون میں سب سے افضل فن قرآن مجید کی تفسیر اور تاویل ہے کیونکہ فن کی فضیلت یا تواس کے موضوع کے اعتبار سے ہوتی ہے جوتی ہے افضل ہے کیونکہ سنار کا فن د تباغ (رنگریز) کے فن سے افضل ہے کیونکہ سنار کا موضوع سونا اور جاندی ہے اور د باغ (کھال ریکنے والے) کا موضوع مردار کی کھال ہے یا فن کی فضیلت اس کی غرض کے اعتبار سے ہوتی ہے جسے طب کا فن جمعدار کے فن سے افضل ہے نکے کیونکہ طب کی غرض سے الخلاء کی صفائی ہے '

نیزفن کی فضیلت صورت کے اعتبار سے ہوتی ہے تلوار کافن بیزیاں بنانے کےفن سے افضل ہے۔

اورفن تفسیران تینوں جہات کے اعتبار سے تمام فنون سے افضل ہے کیونکہ اس کا موضوع اللہ تعالیٰ کا کلام ہے جو ہر حکمت کا منبع وسر چشمہ اور ہر صورت کا معدن ہے اور اس کی صورت اللہ تعالیٰ کے مخفی اسرار کا اظہار ہے اور تہ وین شریعت ہے اور یہ ہر صورت سے افضل ہے اور اس کی غرض سعادت حقیقیہ تک پہنچنا اور خیر کثیر کا حصول ہے جو ہر غرض سے افضل ہے قرآن میں کی غرض سعادت حقیقیہ تک پہنچنا اور خیر کثیر کا حصول ہے جو ہر غرض سے افضل ہے قرآن محمدت مجید میں ہے: ''و مَنْ یَوْتُ الْمِحْکَمَة فَقَدْ اُو تِنَی خَیرًا کَیْنِیرًا '' (ابقرہ: ۲۱۹) اور جے حکمت دی گئی تو بے شک اسے خیر کثیر دی گئی ایک قول یہ ہے کہ خیر کثیر سے مراد قرآن کریم کی تفسیر دی گئی تو بے شک اسے خیر کثیر سے مراد قرآن کریم کی تفسیر

تفسير قرآن كى فضيلت كے متعلق احادیث وآثار

علامها بن عطيه لكصة بين:

حضرت ابن عباس و فی الله سے روایت ہے کہ ایک شخص نے بی کریم طبق آیا ہے دریافت کیا کہ قرآن کا کون ساعلم افضل ہے؟ آپ ملٹی آیا ہم نے فرمایا: اس کی عربیت سوتم اس کو شعر میں تلاش کرو نیز نبی ملٹی آیا ہم نے فرمایا: قرآن مجید کے معانی کی فہم حاصل کرو اور اس کے مشکل الفاظ کے معانی تلاش کرو کیونکہ اللہ تعالی قرآن کریم کے معانی کی معرفت حاصل کرنے کو بہند کرتا ہے۔

قاضی ابومحمرعبدالحق رشختانلہ نے کہا: قر آن مجید کے اعراب شریعت میں اصل ہیں' کیونکہ اس کے ذریعے وہ معانی حاصل ہوتے ہیں' جوشرع میں مطلوب ہیں۔

حضرت علی بن ابی طالب کرم الله وجهدالکریم نے حضرت جابر بن عبدالله و حالته علم کی تعریف کی ان سے ایک شخص نے کہا: آپ برقر بان جاؤل آپ کا خود اتنا عظیم مقام ہے اور آپ حضرت جابر کی تعریف کرر ہے ہیں؟ حضرت علی کرم الله وجهد نے فر مایا: حضرت جابر کوقر آن مجید کی اس آیت کی تفسیر کاعلم ہے: '' إِنَّ اللّٰهِ فَ فَرَضَ عَلَیْكَ الْقُوْ الْ فَرَادُكَ الْسُونِ مِعَالَمْ اللّٰهُ وَ اللّٰهِ فَ مَعَالَمْ کی اللّٰهِ کی فَرَضَ کیاوہ آپ کولو نے کی جگہ اللّٰہ کی محافی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کی جگہ کے اللّٰہ کی محافی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کی محافی اللّٰہ کی اللّٰہ کی محافی اللّٰہ کی اللّٰہ کی محافی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کی محافی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ

شعبی نے کہا: مسروق نے ایک آیت کی تفسیر کے لیے بھرہ کا سفر کیا' وہاں پہنچے تو معلوم ہوا کہ جوشخص اس آیت کی تفسیر کرتا تھا' وہ شام چلا گیا ہے' پھروہ شام پہنچے اور اس شخص سے اس آیت کی تفسیر کاعلم حاصل کیا۔

ایاس بن معاویہ نے کہا: جولوگ قر آن کریم پڑھتے ہیں اوراس کی تفییر کونہیں جانتے 'وہ
ان لوگول کی مثل ہیں' جن کے پاس اندھیری رات میں بادشاہ کا مکتوب آیا ہواوران کے پاس
چراغ نہ ہواوران کوعلم نہ ہو سکے کہاس میں کیا لکھا ہے اور وہ اس وجہ سے پریشان اور مضطرب
ہوں' اور جولوگ قر آن مجید کی تفییر جانتے ہیں' ان کی مثال ان لوگوں کی طرح ہے' جن کے
پاس رات کے وقت بادشاہ کا مکتوب آیا ہواور اس کے پڑھنے کے لیے ان کے پاس چراغ
موجود ہو۔

مجاہد نے کہا: اللہ کے نز دیک اس کی مخلوق میں سب سے زیادہ پسندیدہ وہ مخص ہے' جس کوقر آن مجید کا سب سے زیادہ علم ہو۔

حضرت ابن عباس رضی الله اپنی مجلس میں پہلے قر آن پڑھتے' پھر اس کی تفسیر کرتے' پھر حدیث بیان کرتے' حضرت علی بن الی طالب رضی آللہ نے فر مایا: ہر چیز کاعلم قر آن میں ہے' لیکن انسان کی عقل اس کو حاصل کرنے سے عاجز ہے۔

وحي كالغوى اور اصطلاحي معنى

علامه مجدالدين فيروزآ بادي لكصة بين:

اشارہ' لکھنا' مکتوب'رسالہ'الہام' کلام خفی' ہروہ چیز جس کوتم غیر کی طرف القاء کرو'ا ہے اور آ واز کووحی کہتے ہیں۔(قاموں جے میں ۵۷۹)

علامه ابن اثير جزري لكصة بين:

صدیث میں دحی کا بکثرت ذکر ہے' لکھنے'اشارہ کرنے' کسی کو بھیجے' الہام اور کلام خفی پر ^ا دحی کا اطلاق کیا جاتا ہے۔(نبایہ ج ۳ ص ۱۲۳ مطبویہ مؤسمطبوعاتی 'ایران)

علامہ راغب اصفہانی لکھتے ہیں: وحی کا اصل معنی سرعت کے ساتھ اشارہ کرنا ہے یہ اشارہ کھی مرز اور تعریض کے ساتھ کلام میں ہوتا ہے اور بھی محض آ واز سے ہوتا ہے بھی اشارہ بھی دمز اور تعریض کے ساتھ کلام میں ہوتا ہے جوکلمات انبیاء اور اولیاء کی طرف اعضاء اور جوارح سے ہوتا ہے اور بھی لکھنے سے ہوتا ہے جوکلمات انبیاء اور اولیاء کی طرف

القاء کیے جاتے ہیں ان کوبھی دحی کہا جاتا ہے بیالقاء بھی فرشتہ کے واسطہ سے ہوتا ہے جو د کھائی دیتا ہے اور اس کا کلام سنائی دیتا ہے' جیسے حضرت جبرائیل علالیہ لااکسی خاص شکل میں آتے تھے اور بھی کسی کے دکھائی دیتے بغیر کلام سنا جاتا ہے جیسے حضرت موی علایسلاً نے اللہ تعالیٰ کا کلام سنا' اور بھی دل میں کوئی بات ڈال دی جاتی ہے جیسے صدیث شریف میں ہے: جبرائیل نے میرے دل میں بات ڈال دی اور اس کونفث فی الروح کہتے ہیں اور بھی یہ القاء' الہام کے ذر مع ہوتا ہے جیسے اس آیت میں ہے:

وَأُوْ حَيْسَنَا إِلْنِي أُمَّ مُوْسَنِي أَنَّ اور بم في موى كي مال كوالهام فرمايا كەان كودودھ يلاؤ_

أد ضعيه (القصص: ٤)

اور مجھی مدالقا تنجیر ہوتا ہے جیسے اس آیت میں ہے:

وَأُوْ حٰلَى رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَن اور آپ كرب نَے شہدكي كھى ك اوران چھپرول میں گھر بنا' جنہیں لوگ اونیجا

اتُّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ بُيُونًا وَّمِنَ الشَّجَرِ ول مِن بيرُ الاكه بِهارُ ول مين ورخون مين وَمِمَّا يَعُرِشُونَO(الْحَل: ١٨)

بناتے ہیں 0

اور بھی خواب میں القاء کیا جاتا ہے جبیبا کہ حدیث میں ہے: نبوت منقطع ہوگئی اور سے خواب باقی رو گئے ہیں۔(المفردات ص١٦٥-١٥٥ ملخصاً ' مكتبهمرتضوية ايران) علامه بدرالدین عینی نے وحی کا اصطلاحی معنی پیکھا ہے:

الله کے نبیوں میں ہے کسی نبی پر جو کلام نازل کیا جاتا ہے'وہ وحی ہے۔

(عمرة القاري خ اص سما)

ضرورت وحی اور ثبوت وحی

🖈 انسان مدنی الطبع ہے اور مل جل کر رہتا ہے اور ہرانسان کو اپنی زندگی گزار نے کے لیے خوراک کپروں اور مکان کی ضرورت ہوتی ہے اور افز ائش نسل کے لیے نکات کی ضرورت ہے ان چار کے حصول کے لیے اگر کوئی قانون اور ضا بطہ نہ ہوتو ہر زور آورایی ضرورت کی چیزیں طاقت کے ذریعہ کمزور سے حاصل کر لے گا۔ اس لیے عدل اور انصاف کو قائم کرنے کی غرض ہے کسی قانون کی ضرورت ہے اور پیر قانون اگر کسی

انسان نے بنایا تو وہ اس قانون میں اپنے تحفظات اور اپنے مفادات شامل کرےگا'
اس لیے بیقانون مافوق الانسان کا بنایا ہوا ہونا چاہے' تا کہ اس میں کسی جانب داری کا
شائبداور وہم و گمان نہ ہواور ایسا قانون صرف اللہ کا بنایا ہوا قانون ہوسکتا ہے۔جس کا
علم اللہ کے بتلا نے اور اس کے خبر دینے سے ہی ہوسکتا ہے اور اس کا نام وجی ہے۔

انسان عقل سے خدا کے وجود کومعلوم کرسکتا ہے عقل سے خدا کی وحدانیت کو بھی جان سکتا ہے تیامت کے قائم ہونے حشر ونشر اور جزاء اور سزا کو بھی عقل ہے معلوم کرسکتا ہے نیامت کے قائم ہونے حشر ونشر اور جزاء اور سزا کو بھی عقل سے معلوم کرسکتا ہو عقل ہے اللہ تعالی کے مفصل احکام کومعلوم نہیں کرسکتا ہو عقل ہے یہ بات جانسکتا ہے کہ اللہ کا شکر ادا کرنا اچھی بات ہے اور ناشکری پُری بات ہے کیاں وہ عقل سے بہیں جانسکتا کہ اس کا شکر کس طرح ادا کیا جائے اس کا علم صرف اللہ تعالیٰ کے خبر دینے ہے ہی ہوگا اور اس کا نام وحی ہے۔

اللہ تعالیٰ نے انسان کو دنیا میں عبث اور بے مقصد نہیں بھیجا بلکہ اس لیے بھیجا ہے کہ وہ ا اپنی دنیاوی ذمہ داریوں کو پورا کرنے اور حقوق اور فرائض ادا کرنے کے ساتھ ساتھ اللہ تعالیٰ کی عبادت کرے اور اس کی دی ہوئی نعمتوں پر اس کا شکر ادا کرئے بُرے کے کاموں اور بُری خصلتوں سے بچے اور اچھے کام اور نیک خصلتیں اپنائے اور اللہ تعالیٰ کی عبادات کیا کیا ہیں؟ اور وہ کس طرح ادا کی جا کیں۔ وہ کون سے کام ہیں 'جن سے بچا جائے اور وہ کون سے کام ہیں 'جن کو کیا جائے' اس کاعلم صرف اللہ تعالیٰ کے بتلانے اور خبر دینے سے ہی ہوسکتا ہے اور اس کانام وجی ہے۔

بعض چیز ول کوہم حواس کے ذریعے جان لیتے ہیں جیے رنگ آ واز اور ذاکقہ کو اور بعض چیز ول کوعقل سے جان لیتے ہیں جیے دو اور دو کا مجموعہ چاریا مصنوع کے وجود سے صانع کے وجود کو جان چان ہیں گئے ایس چیزیں ہیں جن کوحواس سے جانا جاسکتا ہے نہ عقل سے مثلا نماز کا کیا طریقہ ہے؟ کن ایام کے روز نے فرض ہیں؟ زکو ہ کی کیا مقدار ہے؟ اور کس چیز کا کھانا حرام ہے؟ غرض عبادات مقدار ہے؟ اور کس چیز کا کھانا حرام ہے؟ غرض عبادات اور معاملات کے کسی شعبہ کوہم حواس خمسہ اور عقل کے ذریعے نہیں جان سکتے اس کو جانے کا صرف ایک ذریعہ ہے اور وہ ہے وی !

بعض اوقات حواس غلطی کرتے ہیں مثلاً ریل میں ہیٹھے ہوئے مخص کو درخت دوڑتے ہوئے نظر آتے ہیں اور بخار زدہ مخص کو میٹھی چیز کڑوی معلوم ہوتی ہے اور حواس کی غلطیوں پر عقل تنبیہ کرتی ہے اس طرح بعض اوقات عقل بھی غلطی کرتی ہے مثلاً عقل یہ کہتی ہے کہ کسی ضرورت مند کو مال نہ دیا جائے مال کو صرف اپنے مستقبل کے لیے بچا کررکھا جائے اور جس طرح حواس کی غلطیوں پر متنبہ کرنے کے لیے عقل کی ضرورت ہے ای طرح عقل کی غلطیوں پر متنبہ کرنے کے لیے عقل کی ضرورت ہے۔

وجی کی تعریف میں ہم نے یہ ذکر کیا ہے کہ اللہ تعالیٰ نبی کو جو چیز بتلا تا ہے وہ وجی ہے اور نبوت کا ثبوت معجزات سے ہوتا ہے اب یہ بات بحث طلب ہے کہ وجی کے ثبوت کے لیے نبوت کیوں ضروری ہے؟ اس کا جواب یہ ہے کہ اگر نبوت کے بغیر وجی کا ثبوت ممکن ہوتا تو اس دنیا کا نظام فاسد ہو جاتا 'مثلا ایک شخص کسی کوئل کر دیتا ہے اور کہتا ہے: مجھ پر وجی اتری تھی کہ اس شخص کوئل کر دو۔ ایک شخص بر ورکسی کا مال اپنے قبضہ میں کر لیتا ہے اور کہتا ہے کہ مجھ پر وجی نازل ہوئی تھی کہ اس کے مال پر قبضہ کر لؤ اس لیے برکس و ناکس کے لیے یہ جا بر نہیں ہے کہ وہی کا دعویٰ کر رہے وجی کا دعویٰ صرف و ہی شخص کر سکتا ہے 'جس کو اللہ تعالیٰ نے منصب نبوت پر فائز کیا ہو۔ لہذا وجی کا دعویٰ صرف نبی بی کر سکتا ہے 'جس کو اللہ تعالیٰ نے منصب نبوت پر فائز کیا ہو۔ لہذا وجی کا دعویٰ صرف نبی بی کر سکتا ہے اور نبوت کا دعویٰ تب ثابت ہوگا 'جب وہ اس کے ثبوت میں معجزات پیش کر ہے گا۔

ایک سوال یہ ہے کہ جب نبی کے پاس فرشتہ وحی لے کر آتا ہے تو نبی کو کیسے یقین ہوتا ہے کہ یہ فرشتہ ہے اور یہ اللہ کا کلام لے کر آیا ہے امام رازی نے اس کا یہ جواب دیا ہے کہ فرشتہ نبی کے سامنے اپنے فرشتہ ہونے اور حامل وحی اللبی ہونے پر مجز و پیش کرتا ہے اور امام غزالی کی بعض عبارات سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ اللہ تعالی نبی کو ایسی صفت عطافر ماتا ہے جس سے وہ جن فرشتہ اور شیطان کو الگ الگ بہجانتا ہے۔

جیسے ہم انسانوں ٔ جانوروں اور نباتات اور جمادات کو الگ الگ پہچائے ہیں کیونکہ ہماری رسائی صرف عالم شہادت تک ہے اور نبی کی پہنچ عالم شہادت میں بھی ہے اور عالم غیب میں بھی ہے۔ میں بھی ہے۔

وحی کی اقسام

بنیادی طور پر دحی کی دونشمیں ہیں: وحی مثلواور وحی غیر مثلو۔ اگر نبی ملتی کی آلتی پر الفاظ اور معانی کا نزول ہوتو یہ وحی مثلو ہے اور یہی قرآن مجید ہے اور اگر آپ ملتی کی آلتی پر صرف معانی نازل کیے جا ئیں اور آپ ملتی کی آلتی اللہ اللہ معانی کواپنے الفاظ ہے تعبیر کریں تو یہی وحی غیر مثلو ہے نازل کیے جا ئیں اور آپ ملتی کی آلتی ہی نہیں کہتے ہیں۔ نبی ملتی کی آلتی پر نزول وحی کی متعدد صور تیں ہیں 'جن کا احادیث صحیحہ میں بیان کیا گیا ہے۔

امام بخاری روایت کرتے ہیں:

حضرت عائشہ ام المومنین و مختالہ بیان کرتی ہیں کہ حضرت حارث بن ہشام و مختالہ نے لکے رسول اللہ ملتی کیا ہے۔ اللہ ملتی کیا ہوئی ہے۔ اللہ ملتی کیا ہوئی ہے۔ اللہ ملتی کیا ہوئی ہے۔ اللہ ملتی کیا ہوئی ہے۔ اللہ ملتی کیا ہوئی ہے۔ اور یہ مجھ ہے؟ رسول اللہ ملتی کیا ہوئی ہے اور یہ مجھ ہے۔ اور کی طرح (مسلسل) آتی ہے اور یہ مجھ کی ہوئی ہے تو میں اس کو یاد کر چکا ہوتا ہوں اور بھی پر بہت شد ید ہوتی ہے وی (جب) منقطع ہوتی ہے تو میں اس کو یاد کر چکا ہوتا ہوں اور بھی میں ہے۔ کیا میں آتا ہے 'وہ مجھ سے کلام کرتا ہے اور جو بچھوہ کہتا جاتا ہے 'میں اس کو یاد کرتا جاتا ہوں۔ میں اس کو یاد کرتا جاتا ہوں۔

حضرت عائشہ رضی اللہ نے کہا: میں نے دیکھا ہے کہ شخت سردی کے دنوں میں آپ پروحی نازل ہوتی اور جس وقت وحی ختم ہوتی تھی تو آپ ملی آیاتہ کی پیشانی سے پسینہ بہہ رہا ہوتا تھا۔ (صحیح بخاری جاس۲)

اس صدیث پر بیسوال ہوتا ہے کہ نبی ملٹی آئیلم نے نزول کی دوصور تیں بیان کی ہیں اس کی کیاوجہ ہے؟

علامہ بدرالدین عینی نے اس کے جواب میں بیکہا ہے کہ اللہ تعالیٰ کی عادت جارہیہ یہ ہے کہ قائل اور سامع میں کوئی مناسبت ہونی چا ہے تا کہ تعلیم اور تعلم اور افادہ اور استفادہ مخقق ہو سکے اور یہ اتصاف یا تو اس طرح ہوگا کہ سامع پر قائل کی صفت کا غلبہ ہو اور وہ قائل کی صفت کا غلبہ ہو اور وہ قائل کی صفت کے ساتھ متصف ہو جائے اور (صلصلة المجوس) با نگ درا سے یہی پہلی قتم مراد ہے اور یا قائل سامع کی صفت کے ساتھ متصف ہو جائے اور بیدوسری قتم ہے جس میں فرشتہ انسانی شکل میں متشکل ہو کر آپ ملی آئی اللہ میں سے کلام کرتا تھا۔

حضرت ابو ہریہ و بی تالہ بیان کرتے ہیں کہ نبی کریم المقابلہ نے فر مایا: جب اللہ تعالی آسان پر کسی امر کا فیصلہ کرتا ہے تو فرشتے عاجزی ہے اپنے پرول کوجھڑ جھڑا تے ہیں 'جیسے پھر پر زنجیر ماری جائے اور جب ان کے دلول سے وہ ہیبت زائل ہوتی ہے تو وہ آپس میں کہتے ہیں کہ تمہارے رب نے کیا کہا؟ وہ کہتے ہیں: حق فر مایا اور وہ عظیم اور کبیر ہے اور اس حدیث میں ہم پر بیہ ظاہر ہوا ہے کہ وحی کی پہلی قسم دوسری سے شدید ہے اس کی وجہ یہ ہے کہ اس قسم میں ہم پر بیہ ظاہر ہوا ہے کہ وحی کی پہلی قسم دوسری سے شدید ہے اس کی وجہ یہ ہے کہ اس قسم میں نبی ملتی کی الیہ ہوتے کی حالت کی طرف منتقل ہوتے تھے 'پھر آپ ملتی کی البہ پر اس طرح وحی کی جاتی ہے اور بیہ آپ ملتی کی ایک پر اس طرح وحی کی جاتی ہے اور بیہ آپ ملتی کی البہ کے لیے مشکل تھا اور دوسری قسم میں فرشتہ انسانی شکل میں آتا تھا اور یہ شم آپ ملتی کی البہ ہے لیے مشکل تھا اور دوسری قسم میں فرشتہ انسانی شکل میں آتا تھا اور یہ شم آپ ملتی کی البہ ہے البہ کے لیے آسان تھی ۔ (عمدة القاری جاس میں مطبوعا دارہ الطباعہ لمنیز یہ مصر ۸ سے البہ بھرانہ ہوا نہ القرآن)

سیجی کہا جاسکتا ہے کہ گھنٹی کی آ واز میں ہر چند کہ عام لوگوں کے لیے کوئی معنی اور پیغام نہیں ہوتا کہاں ترق فی معنی اور پیغام ہوتا تھا جیسا کہاں ترق فی میں ہوتا کہاں ترق بیل ہوتا کہاں ترق بیل ہوتا کہاں ہوتا تھا ہوتا تھا ہوتا تھا کہاں ترق بیافتہ دور میں ہم دیکھتے ہیں 'جب ٹیلی گرام دینے کاعمل کیا جاتا ہے توا کہ طرف سے صرف تک کی آ واز ہوتی ہے اور دوسری طرف اس سے پورے پورے جملے بنا لیے جاتے ہیں 'ای طرح یہ ہوسکتا ہے کہ وحی کی بیآ واز بہ ظاہر صرف تھنٹی کی مسلسل ٹنٹن کی طرح ہواور نبی طرف ہیں ہے لیے اس میں پورے پورے بورے مواور نبی طرف جملے موجود ہوں۔

علامه بدرالدین عینی نے نزول وحی کی حسب ذیل اقسام بیان کی ہیں:

(۱) کلام قدیم کوسننا جیسے حضرت موی علایہ لاا نے اللہ تعالی کا کلام سنا ، جس کا ذکر آن میں مجید میں مجید میں ہے اور ہمارے نبی ملٹی کی آئے اللہ تعالی کا کلام سنا ، جس کا ذکر آنار صحیحہ میں

ے۔

- (۲) فرشته کی رسالت کے واسطہ ہے وحی کا موصول ہونا۔
- (٣) وحی کودل میں القاء کیا جائے جیسا کہ نبی ملٹی کیا ہم کا ارشاد ہے: روح القدس نے میرے دل میں القاء کیا۔ ایک قول میہ ہے کہ حضرت داؤد علالیسلاً کی طرف اس طرح وحی کی جاتی تھی اور انبیاء النلاً کے غیر کے لیے جووحی کا لفظ بولا جاتا ہے۔ وہ الہام یا تنخیر کے معنی میں ہوتا ہے۔

علامہ سہیلی نے الروض الانف (جا ص۱۵۳ مطبوعہ ملتان) میں نزول وحی کی بیہ سات صور تیں بیان کی ہیں:

- (۱) نبی ملته دیکی نیز میں کوئی واقعہ دکھایا جائے۔
- (٢) تھنٹی کی آواز کی شکل میں آپ ملٹی آیا ہم کے پاس وحی آئے۔
 - (٣) نبي مُنْ عُلِيبِهِ كَ قلب مِين كُوئي معنى القاء كياجائيد
- - (۵) حفرت جبرائیل آپ کے پاس اپنی اصلی صورت میں آئے 'اس صورت میں ان کے چھے۔ چھسویر تھے جن سے موتی اور یا قوت جھڑتے تھے۔
 - (۱) الله تعالیٰ آپ ملی الله علی میں بردہ کی اوٹ ہے ہم کلام ہو جیسا کہ معراج کی شب ہوا'یا نیند میں ہم کلام ہو جیسے جامع تر ندی میں ہے: الله تعالیٰ میرے یاس حسین صورت میں آیا اور فرمایا: ملاء اعلیٰ کس چیز میں بحث کررہے ہیں۔
 - (2) اسرافیل علایسلاً کی دی کیونکه معنی سے روایت ہے کہ نبی ملقی کی تحضرت اسرافیل علایسلاً کے سپر دکر دیا گیا تھا اور وہ تین سال تک نبی ملقی کی کی محصر ہے اور وہ آپ ملقی کی لیا اور مسند کے پاس وی لاتے تھے پھر آپ کو حضرت جبرائیل علایسلاً کے سپر دکر دیا گیا اور مسند احمد میں سندھیجے کے ساتھ معنی سے روایت ہے کہ نبی ملقی آئیل کو چالیس سال کی عمر میں

مبعوث کیا گیااور تین سال تک آپ مُنْ اللِّهم کی نبوت کے ساتھ حضرت اسرافیل رہے اور وه آپ مل المياليم كوبعض كلمات اور بعض چيزول كي خبر ديتے تھ اس وقت آپ مُلْتُوكِينِم بِرقر آن مجيد نازل نبيس ہوا تھا'اور جب تين سال گزر گئے تو پھر حضرت جبرائيل میں قرآن مجید نازل ہوا' دس سال مکہ میں اور دس سال مدینہ میں تریسٹھ سال کی عمر میں آ ب المُنْ اللِّهِ كَا وصال ہوا۔ البتہ واقدی وغیرہ نے اس كا انكار كيا ہے اور كہا ہے كہ حضرت جبرائیل عالیملاً کےعلاوہ آپ ملتی لیا کم کواور کسی فرشتہ کے سیر زنہیں کیا گیا۔

(عدة القاري ج اص • ۴ مطبوعه مع بحواله تبيان القرآن علامه غلام رسول معيدي دامت بركاتهم العاليه)

قر آ ن مجید کی تعریف اور قر آ ن مجید کے اساء

الله تعالیٰ کی حکمت کا تقاضا یہ تھا کہ سابقہ آسانی کتابوں کے مختلط محرف اور محوم و جانے کے بعد دنیا میں قیامت تک وحی الہی صرف قرآن مجید کی صورت میں باقی اور محفوظ رے ا گزشته شریعتیں شریعت مصطفوی ملت کیا ہم کے بعد منسوخ ہو گئیں ادر اللہ تعالی نے قیامت تک کے لیے صرف شریعت محدی اور دین اسلام کے واجب القبول ہونے کا اعلان فر ما دیا۔ اور دین اسلام اورشر بعت محمری کی اساس اور بربان قرآن مجید ہے اس میں اللہ تعالیٰ کی ذات اورصفات پر دلائل ہیں'انبیاءسابقین اورسید نا حضرت محمد ملتی نیسلم کی نبوت' رسالت اوران کی عظمتوں کا بیان ہے حلال اور حرام عبادات اور معاملات آواب اور اخلاق کے جملہ احکام کا بیان ہے معاد جسمانی وشرونشر اور جنت و دوزخ کا تفصیل سے ذکر ہے۔اور انسان کی بدایت کے لیے جس قدر امور کی ضرورت ہو عمق ہے۔اس سب کا قرآن مجید میں بیان ہے الله تعالی کاارشادے:

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتْبَ تِبْيَانًا ہم نے آپ براس کتاب کو نازل کیا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَمُعُدَّى وَّرَحْمَةً وَّبُشُرِى " بجو مر چيز كاروش بيان باور مدايت لِلْمُسْلِمِينَ. (انحل:۸۹) اوررحت ہے اور مسلمانوں کے لیے بشارت

علاءاصول فقد نے قرآن مجید کی پیتعریف کی ہے:

قرآن مجید الله تعالی کامعجز کلام ہے جو ہمارے نبی سیدنا حضرت محمد ملتی الله پر عربی زبان میں نازل ہوا 'یہ مصاحف میں لکھا ہوا ہے اور ہم تک تواتر سے پہنچا ہے اس کی ابتداء سورت فاتحہ سے ہے اور اس کا اختیام سورة الناس پر ہے۔

قرآن مجید کے ترجمہ پر قرآن مجید کا اطلاق نہیں ہوگا کیونکہ قرآن مجید الفاظ عربیہ میں ہے۔ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے: ' إِنَّ اَ اَنْوَلُنهُ قُرُهُ أَنَّا عَرَبِيًّا ''(یوسف:۲) ہم نے اس کتاب کو بہطور عربی قرآن نازل کیا۔

ای طرح قراءت شاذہ جوتواتر ہے منقول نہیں ہیں'ان پر بھی قر آن مجید کااطلاق نہیں۔ ہوگا۔

قرآن مجید کے نام

تفییر کبیراورتفیرعزیزی وغیرہ میں ہے کہ قرآن پاک کے ۲۳نام ہیں'جو کہ قرآن پاک میں نہ کور ہیں: (۱) قرآن (۲) فرقان (۳) کتاب (۴) ذکر وقذ کرہ (۵) تنزیل (۲) الحدیث (۷) موعظ (۸) تخکم 'حکمت' حکیم ' حکیم (۹) شفاء (۱۰) ہدی (۱۱) صراط متنقیم (۱۲) حبل (۱۳) مرحت (۱۲) روح (۱۵) تصص (۱۲) بیان تبیان (۱۷) بصائر (۱۸) فصل (۱۳) نبیم (۲۰) مثانی (۲۱) نعمت (۲۲) بر ہان (۳۳) بشیر ونڈیر (۲۳) قیم (۲۵) مہیمن (۲۷) ہوری (۲۷) مراک بیتمام (۲۷) ہوری وہ آئیس یا تو کسی حافظ سے معلوم کرلی جا کیں یا تفسیر ام قرآن کی مختلف آئیوں میں فہ کور ہیں'وہ آئیس یا تو کسی حافظ سے معلوم کرلی جا کیں یا تفسیر کبیر وعزیزی میں اسی مقام پرد کیھی جا کیں۔

نوٹ: حضرت علامہ قاری ظہور احمر فیضی صاحب نے اپنی کتاب (انوار العرفان فی اساء القرآن) میں قرآن مجید کے ایک سوچیس (۱۲۵) اساء مبارکہ ثابت کیے ہیں جن میں سے ایک سو (۱۰۰) اساء مبارکہ قدیث پاک سے اور پچیس (۲۵) اساء مبارکہ قدیث پاک سے ثابت کیے گئے ہیں۔

ان ناموں کی وجہ

حضرت عليم الأمت تفسير نعيى كمقدمه ميس لكھتے ہيں:

لفظ قرآن یا تو قرء سے بناہے یا قراء ق سے یا قرن سے۔ (تغییر بیر پارہ:۲) قرء کے معنی

جمع ہونے کے ہیں۔ابقر آن کوقر آن اس لیے کہتے ہیں کہ یہ بھی سارے اولین وآخرین کے علموں کا مجموعہ ہے۔ (تغیر بیرروح البیان پارہ:۲) دین و دنیا کا کوئی ایساعلم نہیں 'جوقر آن ہیں نہوائی لیے حق تعالی نے فرمایا کہ'' فَرْآلْفَا عَلَیْكَ الْکِتَابَ تِبْسَانًا لِکُلِّ شَیْءٍ ''(الحل: ۹۸) نیز یہ سورتوں اور آیوں کا مجموعہ ہے' نیز یہ تمام بھروں کو جمع کرنے والا ہے۔ ویکھو ہندی سندھی' عربی' مجمی لوگ' ان کے لباس' طعام' زبان طریق زندگی سب الگ الگ' کوئی صورت نہیں کہ یہ اللہ تعالیٰ کے بھرے ہوئے بندے جمع ہوئے 'لیکن قرآن مجمد نے ان سب کو جمع فرمایا اور ان کا نام رکھا مسلمان خود فرمایا: 'سَمْکُمُ الْمُسْلِمِیْنَ ''(ائی : ۹۷)' اللہ نے تہارا فرمسلمان رکھا ہے'۔

جیسے کہ شہد مختلف باغوں کے رنگ برنگے پھولوں کاری ہے گراب ان سب رسول کے مجموعہ کا نام شہد ہے اسی طرح " مسلمان "مختلف ملکوں 'مختلف زبانوں کے لوگ ہیں گران کا نام ہے مسلمان تو گویا یہ کتاب اللہ کے بندوں کو جمع فر مانے والی ہے۔ اسی طرح زندوں اور مردوں میں بہ ظاہر کوئی علاقہ باتی ندر ہاتھا۔ لیکن اس قر آن عظیم نے ان کو بھی خوب جمع فر مایا۔ مردے مسلمان زندوں سے فیض لینے لگے کہ اسی قر آن سے ان پر ایصال تو اب وغیرہ کیا جاتا ہے اور زندے فوت شدگان سے کہ وہ حضرات اسی قر آن کی برکت سے ولی قطب 'غوث ہے اور زندے فوت شدگان سے کہ وہ حضرات اسی قر آن کی برکت سے ولی قطب 'غوث سے اور زندے فوت شدگان سے کہ وہ حضرات اسی قر آن کی برکت سے ولی قطب 'غوث سے اور ان کا فیض بعد و فات حاری ہوا۔

(۲) اوراگریقراء ق سے بنا ہے تواس کے معنی ہیں: پڑھی ہوئی چیز' تواب اس کو تر آن اس لیے کہتے ہیں کہ اورا نہیاء کرام کو کتابیں یا صحفے حق تعالیٰ کی طرف سے لکھے ہوئے عطا فرمائے گئے۔لیکن قرآن کریم پڑھا ہوا اترا' اس طرح کہ جبرائیل امین حاضر ہوتے اور پڑھ کر سنا جاتے اور یقینا پڑھا ہوا نازل ہون' لکھے ہوئے نازل ہونے سے افضل ہے (جس کی بحث نزول کے باب میں آرہی ہے) نیز جس قدر قرآن کریم پڑھا گیا اور پڑھا جا تا ہے' اس قدر کوئی وینی ونیوی کتاب ونیا میں نہ پڑھی گئی۔ کیونکہ جوآ دی کوئی کتاب بنا تا ہے' وہ تھوڑے سے لوگوں کے پاس پہنچتی ہے اور وہ بھی ایک آ دھ دفعہ پڑھتے ہیں۔اور پھر پچھ زمانہ بعد ختم ہو جاتی ہے۔ اس طرح پہلی آ سانی کتابیں دفعہ پڑھتے ہیں۔اور پھر پچھ زمانہ بعد ختم ہو جاتی ہے۔ اس طرح پہلی آ سانی کتابیں کوئی خاص خاص جاعتوں کے پاس آئیں اور پچھ دن رہ کر پہلے تو گڑ یں پھرختم ہو گئیں'

لیکن قرآن کریم کی شان میہ ہے کہ سارے عالم کی طرف آیا اور ساری خدائی میں پہنچا۔
سب نے پڑھا' بار بار بڑھا اور دل نہ بھرا' اکیلے پڑھا' جماعتوں کے ساتھ پڑھا' اگر
کبھی تر اور کے کی جماعت یا شبینہ دیکھنے کا اتفاق ہوا ہوتو معلوم ہوگا کہ اس عظمت کے
ساتھ کوئی کتاب پڑھی ہی نہیں گئ' پر لطف بات میہ ہے کہ اس کومسلمان نے بھی پڑھا اور
کا فرنے بھی پڑھا۔

لطیفہ: ایک باررام چندر آریہ نے حضرت صدر الا فاضل سید تعیم الدین مراد آبادی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ ہے عرض کیا کہ مجھے قرآن کریم کے چودہ پارے یاد ہیں۔ بتایئے آپ کومیراوید (ہندؤوں کی کتاب کا نام) کتنایاد ہے؟ حضرت موصوف نے فرمایا: بیتو میر ہے قرآن کا کمال ہے کہ دوست تو دوست و شمنوں کے سینوں میں بھی پہنچ گیا' تو تیر ہے'' وید'' کی بید کمزوری ہے کہ دوستوں کے دل میں بھی گھر نہ کر سکا اور بقول تمہار ہے'' وید'' کو دنیا میں آئے ہوئے کہ دوستوں میں ہو چکے 'لیکن ہندوستان سے آگے نہ نکل سکا۔ گرقر آن کریم چندصدیوں میں کروڑ وں برس ہو چکے'لیکن ہندوستان سے آگے نہ نکل سکا۔ گرقر آن کریم چندصدیوں میں تمام عالم میں پہنچ گیا۔

(۳) اوراگرین قرن ' سے بنا ہے تو قرن کے معنی ہیں: ملنااور ساتھ رہنا ' اب اس کوقر آن اس لیے کہتے ہیں کہ تن اور ہدایت اس کے ساتھ ہے' نیز اس کی سورتیں اور آ بیتیں 'ہر ایک بعض بعض بعض کے ساتھ ہیں' کوئی کسی کے خالف نہیں ' نیز اس میں عقا کداور اعمال اور اعمال میں اخلاق ' سیاسیات' عبادات' معاملات تمام ایک ساتھ جمع ہیں نیز یہ مسلمان کے ہر وقت ساتھ رہتا ہے' ول کے ساتھ' ظاہری اعضاء کے ساتھ اور باطنی عضووں کے ساتھ' دل میں پہنچا' اس کو مسلمان بنایا' ہاتھ پاؤں ناک کان وغیرہ کو حرام کا موں کے ساتھ' دل میں مشغول کر دیا۔ غرضیکہ سرسے لے کر پاؤں تک کے ہر عضو پر اپنا رنگ جما دیا۔ پھر زندگی میں ہر حالت میں ساتھ' بچپن میں ساتھ' جوانی میں ساتھ' ربر حالے میں ساتھ' ہو انی میں ساتھ' محبد بر حالت میں ساتھ' ہو ہو گھر میں ساتھ' محبد میں ساتھ' آ بادی میں ساتھ' جنگل میں ساتھ' صوتے میں ساتھ' فرضیکہ ہر حال میں ساتھ' کہر مرتے وقت ساتھ کہ پڑھتے اور سنتے ہوئے مرے۔ قبر میں ساتھ کہ بعض ساتھ کہ بڑھتے اور سنتے ہوئے مرے۔ قبر میں ساتھ کہ بعض ساتھ کہ بڑھتے اور سنتے ہوئے مرے۔ قبر میں ساتھ کہ بعض ساتھ کہ بڑھتے اور سنتے ہوئے مرے۔ قبر میں ساتھ کہ بعض ساتھ کہ بطاقہ کہ بی ساتھ کہ بعض ساتھ کہ بعض ساتھ کہ بی حال میں ساتھ کہ بعض ساتھ کہ بی حالے میں ساتھ کہ بعض ساتھ ک

کہ گنہگار کو خدا ہے بخشوائے۔ بل صراط پر نور بن کرمسلمان کے آگے چلے اور راستہ دکھائے اور بتائے اور جب مسلمان جنت میں پنچے گا تو فر مایا جائے گا کہ پڑھتا جا اور بڑھتا جا اور بڑھتا جا اور بڑھتا جا اور بڑھتا جا۔ غرضیکہ یہ ممارک چزبھی بھی ساتھ نہیں چھوڑتی۔

الفرقان: اس کا دوسرانام فرقان ہے 'پیلفظ فرق سے بناہے' اس کے معنی ہے: فرق کرنے والی چیز' قر آن کو فرقان اس لیے کہتے ہیں کہ حق و باطل جھوٹ اور بچے مومن اور کافر میں فرق فرمانے والا ہے۔قر آن بارش کی مثل ہے 'دیکھوکسان زمین کے مختلف حصول میں مختلف بچ بو کر جھیا و یتا ہے' کسی کو پتانہیں لگتا کہ کہاں کون سا بچ بو یا ہوا ہے' مگر بارش ہوتے ہی جہاں جو بج فن تھا' وہاں وہی پودانکل آتا ہے' تو بارش زمین کے اندرونی تخم کو ظاہر کرتی ہے۔ای طرح ربت تعالیٰ نے اپنے بندوں کے سینوں میں ہدایت' مگراہی' سعادت' شقاوت' کفروایمان کے مختلف بخم' امانت رکھے۔نزول قرآن سے پہلے سب یکسال معلوم ہوتے تھے۔

صُدیق وابوجهل ٔ فاروق وابولهب میں فرق نظر نہیں آتا تھا' قر آن نے نازل ہو کر کھرا اور کھوٹاعلیجد و کر دیا' صدیق کا ایمان' زندیق کا کفر ظاہر فر ما دیا' لہٰذااس کا نام فرقان ہوا' یعنی ان میں فرق ظاہر کرنے والا۔

> يْاَيُّهَا الَّذِيْنَ الْمَنُّوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ. (البقره: ۱۸۳)

قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا (تَوْبِ:ا٥)

اے ایمان والو! تم پرروز ہ رکھنا فرض کیا گیا' جس طرح تم ہے پہلے لوگوں پر فرض کیا گیا تھا۔

آپ کے لیے ہمیں صرف وہی چیز پنچے گی جو ہمارے لیے اللہ نے مقدر کر دی

کتاب کالفظ بنانے اور شار کرنے کے معنی میں بھی آتا ہے قرآن مجید میں ہے:

"فَاكْتُهُنَّا مَعَ الشَّهِدِينَ" (آلعمران: ۵۳) سوگوای وینے والوں کے ساتھ ہمارا شار کر لے اللہ کی طرف سے ججت ثابتہ کے معنی میں بھی کتاب کا لفظ مستعمل ہے قرآن کریم میں ے: "أَمْ اللَّهُ عَلَيْهُمْ كِتَا لَيْ مِنْ قَيْلِه "(الزفرف:٢١) كيامم نے اس قرآن) سے پہلے انہيں كوئى جحت ثابته دی ہے؟

فَأْتُواْ بِكِتَبِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَلِيقِينَ. تماني جمت ثابته لي آوا الرتم سيح

(الصافات:١٥٧) هو_

كتاب كالفظ حكم كمعنى ميس بهي وارد ب قرآن مجيد ميس به:

(الانفال: ١٨) ہے)جو (فدید کا مال)تم نے لیا تھا، تمہیں

ال میں ضرور بڑاعذاب پہنچتا۔

ميعاديامدت' ولها كتاب معلوم'

علامہ راغب اصفہانی لکھتے ہیں: کتب کامعنی ہے: چیڑے کے دونکڑوں کوی کر ایک کو 📆 دوسرے کے ساتھ ملا دینا'اورعرف میں اس کامعنی بعض حروف کولکھ کربعض دوسرے حروف کے ساتھ ملانا (کمپوز (Compos) کرنا)اور بھی صرف ان ملائے ہوئے حروف پر بھی كتاب كا اطلاق ہوتا ہے اى اعتبار سے اللہ كے كلام كو كتاب كہا جاتا ہے۔اگر چہوہ كھے ہوئے ہیں ہیں۔

(م) ذكروتذكره كے معنى ہيں: ياد دلانا 'چونكه بيقر آن كريم الله اوراس كى نعمتوں كو اور میثاق کے عہد کو یا دولا تا ہے اس لیے اس کوذ کر ویڈ کرہ کہتے ہیں۔

(۵) تنزیل کے معنی ہیں: اتاری ہوئی کتاب چونکہ بی بھی رب کی طرف ہے اتاری گئی ہے اس کیے اسے تنزیل کہتے ہیں (٢) حدیث کے معنی ہیں: نئی چیزیا کلام اور بات چونکہ بمقابلہ تورات وانجیل کے بید نیامیں زمین پر بعد میں آیا'اس لیے بیرنیا ہے۔ نیزیہ پڑھا ہوا اترانہ کہ لکھا ہوا'اس لیے یہ بات ہے(۷)موعظہ کے معنی نصیحت کے ہیں اور یہ کتاب سب كونفيحت كرنے والى بأس لياس كانام موعظ ب(٨) حكمت عمم محكم ياتكم سے

ے ہیں'اس کے معنی ہیں:مضبوط کرنا'لازم کرنااوررو کنا'چونکہ بیقر آن یاک مضبوط بھی ہے' کوئی اس میں تحریف نہ کرسکا اور لازم بھی ہے کہ کسی کتاب نے اس کومنسوخ نہ کیا اور بُری باتوں ہے رو کنے والابھی ہے اس لیے اس کے بینام ہوئے (۹) شفاء اس لیے کہتے ہیں کہ یہ ظاہری اور باطنی بیاریوں سے سب کوشفا دینے والی کتاب ہے (۱۰)مدی مادی اس لیے کتے ہیں کہ بدلوگوں کو ہدایت کرتی ہے(۱۱)صراطمتنقیم' اس لیے کہتے ہیں کہ اس برعمل كرنے والا اپني منزل مقصود برآساني ہے پہنچ سكتا ہے (١٢)حبل اس ليے كہتے ہيں كه حبل معنی ہیں: رسی اورری سے تین کام لیے جاتے ہیں اس سے چند جھری ہوئی چیز وں کو باندھ لیتے ہیں' ری کو بکڑ کر نیجے ہے اوپر پہنچ جاتے ہیں' ری ہی کے ذریعے کشتی یارلگ جاتی ہے۔ چونکہ قرآن کے ذریعے مختلف لوگ ایک ہو گئے'ای طرح اس کی برکت ہے کفر کے دریا میں ڈو بنے سے نیج جاتے ہیں اور ری کے ذریعے سے حق تعالیٰ تک پہنچتے ہیں' ای لیے ری کو " حبل" كہتے ہيں (١٣) رحمت اس ليے كہتے ہيں كديم ہے اور جہالتوں اور گمراہيوں سے نکالنے والا سے اور علم حق تعالیٰ کی رحمت ہے (۱۴) روح 'حضرت جبرائیل عالیہ الا کے معرفت آئی اور یہ جانوں کی زندگی ہے اس لیے اس کوروح کہتے ہیں' نیز روح کے چند کام ہیں' جسم کو باقی رکھنا' بے جان جسم جلد سڑگل جاتا ہے' جسم کی حفاظت کرنا کہ بے جان جسم کو جانور کھا جاتے ہیں جسم پرروح کرنا کہ جسم کی ہرجنبش روح کے ارادہ سے ہوتی ہے۔قرآن شریف میں بھی مسلم قوم کی بقا کا ذریعہ ہے۔مسلمان کوشیاطین اور کفار سے بیجا تا ہے قوم مسلم برروح کرتا ہے کہ مسلمان کی ہرحرکت قر آ ن کے ماتحت ہے'لبذا یہ روح ہے۔

(۱۵) قصص قصے کے دومعنی ہیں: حکایت اور کس کے پیچھے چلنا چونکہ قرآن باک نے انبیاء کرام اور دوسری قوموں کے بیچے قصے بیان کیے اور لوگوں کا بیامام ہے کہ سب لوگ اس کے بیچھے چلتے ہیں اس لیے اس کا نام قصص ہے (۱۲) بیان نتبیان مبین ان سب کے معنی ہیں: ظاہر کرنے والا چونکہ بیقر آن سارے شری احکام کواور سارے علوم غیبیہ کو نبی ملتی این ہیں: ظاہر فرمانے والا ہے اس لیے اس کے بیام ہیں (۱۷) بصائر جمع بصیرت کی ہے بصیرت کی ہے بصیرت کی ہے جونکہ اس کے اس اس کے بیام ہیں (۱۷) بصائر جمع بصیرت کی ہے بصیرت کی ہے جونکہ اس کی دونوں ہو جیسے بصارت آ کھے کے نور کو کہا جاتا ہے جونکہ اس کتاب سے دلوں میں صد بانور بیدا ہوتے ہیں اس لیے اسے بصائر بھی کہاجا تا ہے (۱۸) فصل کے معنی ہیں:

فیصلہ کرنے والی یا جدا کرنے والی' چونکہ بیآ پس کے جھگڑوں کی فیصلہ کرنے والی بھی ہے اور مسلمانوں اور کفار میں فیصلہ فر مانے والی'اس لینےاس کانا مفصل ہے۔

(۱۹) نجوم نجم سے بنا ہے اس کے معنی تارے کے بھی ہیں اور حصہ کے بھی۔ چونکہ قرآن پاک کی آ بیتی تارول کی طرح لوگوں کو ہدایت کرتی ہیں اور علیحدہ علیحدہ آئیں اس لیے ان کا نام نجوم ہوا (۲۰) مثانی 'جمع ہے بٹی کی' مثنی کے معنی ہیں: بار بار' کیونکہ اس میں احکام اور قصے بار بارا آئے ہیں اور یہ کتاب خود بھی بار بارا تری ہے اس لیے اس کو مثانی کہتے ہیں (۲۱) نعمت کے معنی ظاہر ہیں (۲۲) بر ہان کے معنی ہیں: دلیل اور یہ بھی رب کی اور نبی طبق بیا ہے کہ اور تمام سابقہ انبیاء کرام کے صدق کی دلیل ہے اس لیے اسے بر ہان کہتے ہیں۔ طبق بیائی بیتی ہے کونکہ یہ کتاب خوشخری بھی ویتی ہے اور ڈراتی بھی ہے (۲۳) قیم کے معنی قائم رہنے والی یا قائم رکھنے والی ۔ اس لیے اللہ تعالیٰ کو قیوم کہتے ہیں ۔ قرآن پاک کواس لیے قیم کہتے ہیں کہ وہ خود بھی قیامت تک قائم رہے گا اور اس کے ذریعے سے دین بھی قائم رہے گا۔

(۲۵)مھیمن کے معنی ہیں: امانت داریا محافظ ٔ چونکہ یہ کتاب مسلمانوں کی دنیاو آخرت میں محافظ ہے اور رب تعالیٰ کے احکام کی امانت دار بنی ٔ امین پر اتری اور ان صحابہ کرام کے ہاتھوں میں رہی جو کہ اللہ کے امین تھے اس لیے اس کوھیمن کہا گیا ہے۔

(۲۷) ہادی کے معنی بالکل ظاہر ہیں۔

(۲۷) نور'اسے کہتے ہیں جوخود بھی ظاہر ہواور دوسروں کو ظاہر کرئے جس کا ترجمہ ہے: چمک یا روشیٰ چونکہ بیقر آن پاک خود بھی ظاہر ہے اور اللہ کے احکام کو انبیاء کرام کو توریت وانجیل وغیرہ سب کو ظاہر فرمانے والا ہے اس لیے اس کونور کہا' جن پیغیروں کے نام قر آن نے بتادیے وہ سب میں ظاہر اور مشہور ہو گئے اور جن کا قر آن کریم نے ذکر نہ فرمایا وہ قر آن نے بتادیے وہ سب میں ظاہر اور مشہور ہو گئے اور جن کا قر آن کریم نے ذکر نہ فرمایا وہ بالکل جھپ گئے۔ نیز بیقر آن کریم پل صراط پر نور بن کر مسلمانوں کے آگے آگے چلے گا بالکل جھپ گئے۔ نیز بیقر آن کریم پل صراط پر نور بن کر مسلمانوں کے آگے آگے ہیے گا بات بتا تا ہے جو کی طرف سے آیا ہے میاں کولایا' سے محمد ملٹ گئی ہے کہ ملٹ گئی ہے کی طرف سے آیا ہے میاں کولایا' سے محمد ملٹ گئی ہے کہ ملٹ گئی ہے کی طرف سے آیا ہے میاں کولایا' سے محمد ملٹ گئی ہے ہوئی ہا تا ہے۔ سے کی طرف سے آیا ہے میاں کولایا' سے محمد ملٹ گئی ہے ہوئی ہوئی ہے۔ سے تی اسے حق کہتے ہیں۔ بیاں۔

بے حماب ثواب دیتا ہے' اس لیے اس سے بڑھ کر تنی کون ہوسکتا ہے(اس) عظیم کے معنی ہیں: بڑا' چونکہ سب سے بڑی کتاب یہی ہے' اس لیے اس کوظیم فر مایا گیا ہے(س) مبارک کے معنی ہیں: بڑا' چونکہ اس کے پڑھنے اور اس پڑمل کرنے سے ایمان میں برکت' نیک عملوں' عزت چرے کے نور میں برکت ہے' اس لیے اس کومبارک کہتے ہیں۔

نزول قرآن کریم

نزول کے معنی ہیں: اور سے نیچے اتر نا' کلام میں اتر نا' کلام میں نقل وحرکت نہیں ہو سکتی'لہذااس کے اتر نے اور نقل وحرکت کی تین صورتیں ہوسکتیں ہیں یا توکسی چیز پر لکھا جائے اوراس چیز کونتقل کیا جائے 'جیسے کہ ہم کوئی بات خط میں لکھے کر بھیجے دیں تو وہ بذریعہ اس کا غذ کے منتقل ہوئی' ای طرح بہلی کتابوں کا نزول ہوا تھا ماکسی آ دمی سے کوئی بات کہلا کے بھیج دی حائے۔اس صورت میں حرکت کرنے والا وہ آ دمی ہوگا اور وہ کلام اس کے ذریعے سے حرکت كرے گا اور ما بغير كسى واسطے كے سننے والے ہے گفتگو كرلى جائے ور آن كريم كا نزول ان بچھلے دوطریقوں ہے ہوا یعنی جبرائیل امین آتے تھے اور آ کر سناتے تھے' بینزول بذریعہ قاصد ہوااور قرآن کریم کی بعض آیتیں معراج میں بھی بغیر واسطہ جبرائیل امین عطافر مائی تُمكُیں۔جبیبا کہ مشکلوۃ شریف باب المعراج میں ہے کہ سورہُ بقرہ کی آخری آیتیں حضور علالیلاً کومعراج میں عطا فرمائی گئیں کہذا قرآن یاک کا نزول دوسری آسانی کتابوں کے نزول ہے زیادہ شاندار ہے کہ وہ لکھی ہوئی آئیں۔ یہ بولا ہوا آیااور لکھنے اور بولنے میں بڑا فرق ہے' کیونکہ بولنے کی صورت میں بولنے کے طریقے سے اتنے معنی بن جاتے ہیں کہ جو لکھنے سے حاصل نہیں ہوتے' مثلا ایک شخص نے ہم کولکھ کر دیا کہ'' تم دہلی جاؤ گے' ہم لکھی ہوئی عبارت ہے ایک ہی مطلب حاصل کر سکتے ہیں' لیکن اس جملے کو اگر وہ بولے تو یا نج جھ طریقے سے بول کراس میں وہ یانچ جیم عنی پیدا کرسکتا ہے ایسے کہوں سے بول سکتا ہے کہ جس ہے سوال 'حکم' تعجب' تنسخروغیرہ کے معنی پیدا ہو جا 'نیں۔

قر آن مجید کے غیرتحریف شدہ ہونے کے متعلق علماء شیعہ کی تصریحات شخ ابوعلی فضل بن حن طری لکھتے ہیں:

اگرتم ہیسنو کہ روایات شاذہ میں ہے کہ قرآن مجید میں تحریف ہوئی اوراس کا بعض حصہ ضائع ہو گیا' تو ان روایات کا کوئی وزن نہیں ہے۔ بیروایات مضطرب اورضعیف ہیں اور بیہ روایات مسلمانوں کے مخالف ہیں۔

نيزشخ طبري لكھتے ہيں:

شخ المحدثین نے کتاب الاعتقاد میں کھا ہے کہ ہمارااعتقاد ہیہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے جس قر آن کو اپنے نبی مشی کی اللہ وہ اور جو ہماری طرف یہ منسوب کرتا ہے کہ ہم اس سے زیادہ قر آن کو وہ اس سے زیادہ قر آن کو میں ہے کہ قر آن مجید کو کم کردیا گیا ہے۔ ان کئی محمل مانے ہیں 'وہ جمونا ہے اور جن روایات میں ہے کہ قر آن مجید کو کم کردیا گیا ہے۔ ان کئی محمل میں شخ مغید نے فصل الخطاب کے اواخر میں لکھا ہے کہ قر آن مجید میں سے کوئی کلمہ کوئی آ یت مان شخ مغید نے فصل الخطاب کے اواخر میں لکھا ہے کہ قر آن مجید میں سے کوئی کلمہ کوئی آ یت معانی کی جو تغییر اور تا ویل ککھی ہوئی تھی اس کو حذف کردیا گیا 'سید مرتضیٰ نے کہا کہ قر آن مجید میں کوئی کی نبیر ہے کہا کہ قر آن مجید میں کوئی کی نبیر ہے کہا کہ قر آن مجید میں کوئی کی نبیر ہے کہا کہ قر آن میں کھا ہیں کوئی کی نبیر ہے کہا کہ قر آن میں کھا ہیں کہ کہ تو تغییر میں زیادتی اور گی کہ قول کرنا ہی مسلمانوں کے ذوا ہیں کھا میں میں زیادتی کے باطل ہونے پر اجماع ہے اور کی کا قول کرنا ہی مسلمانوں کے ذوا ہم ب کے مفید مجید میں زیادتی کے باطل ہونے پر اجماع ہے اور کی کا قول کرنا ہی مسلمانوں کے ذوا ہم ب کے مفید میں نیادہ کی کر نے کا ذر ہے کہ کہ تا ہم الروایات ہے البتہ بہت میں روایات میں نبیر ہیں اور ان سے اعراض کرنا ہم ہی میں دوایات اخبار آ حاد ہیں' بوعلم اور عمل کے لیے مفید نہیں ہیں اور ان سے اعراض کرنا ہم ہم ہیں اور ان سے اعراض کرنا ہم ہم ہیں۔ (ایسنا)

شيخ كاشانى لكھتے ہيں:

قرآن مجید جس طرح نازل ہوا تھا'ای طرح باتی ہے اور زیادتی اور کی ہے محفوظ ہے' تمام علماء اسلام عام ہوں یا خاص'اس پر متفق ہیں کہ قرآن مجید میں کوئی چیز زیادہ نہیں ہوئی' البتہ کی کے متعلق ایک جماعت کا عقیدہ ہے کہ قرآن مجید میں کی ہوئی ہے اور منافقین نے چند آیات کو حذف کر دیا ہے اور شیعہ فرقے کے اکثر علاء اور سی علاء اس پر متفق ہیں کہ قرآن مجید میں کوئی تغیر' تبدل' کمی اور زیادتی نہیں ہوئی۔ (الی ان قال) جن روایات سے بیوہم پیدا ہوتا ہے کہ قرآن مجید میں تحریف تبدیل خذف یا تغیر ہوا ہے۔ ان روایات کی تاویل اور تو جیہ کرنی جا دراگر ان روایات کی تاویل اور تو جیہ کرنی جا دراگر ان روایات کی تو جیہ نہ ہو سکے تو ان کو مستر دکر دینا جا ہیں۔

(منهج الصادقين ج اص ٨ ٣ _ ٢ ٧ خيابان ناصر خسر واريان)

جمع قرآن کے متعلق علماء شیعہ کا نظریہ

آیت الله مکارم شیرازی لکھتے ہیں:

ای جگدایک اہم مسئلہ یہ ہے کدایک گروہ کے درمیان بیمشہور ہے کدرسول اللہ ملٹی کی ایک کے زمانہ میں قرآن متفرق صورت میں تھا۔ اس کے بعد (حضرت) ابو بکریا (حضرت) عمریا (حضرت) عثمان وظفی کے زمانہ میں اس کو جمع کیا گیا' اس کے برعکس واقعہ یہ ہے کہ پیغمبر ملٹی کی آئی کے زمانہ میں قرآن اس طرح جمع کیا ہوا تھا' جس طرح آج جمع کیا ہوا ہے' اور اس کی ابتداء میں بہی سورت فاتح تھی' اور اس کی یہ وجہ نہیں ہے کہ یہ سورت سب سے پہلے نازل ہوئی تھی۔ اس پر متعدد دلائل ہیں کہ جس صورت میں آج قرآن ہمارے میا گیا تھا۔ سول اللہ ملٹی کی آئی کے زمانہ میں آبے مائی کی گیا ہے۔ اس کو اس طرح جمع کیا گیا تھا۔

پہلی دلیل میہ ہے کہ علی ابن ابراہیم نے امام صادق رضی تنہ سے نقل کیا ہے کہ رسول خدا ملی آئیہ کے دسول خدا ملی آئیہ کے دھزت علی رضی تنہ سے فر مایا: قرآن مجید ریشم اور کا غذو غیرہ کے فکروں میں متفرق ہے اس کو جمع کرو۔ پھر حضرت علی رضی تنہ اس مجلس سے اٹھے اور زردرنگ کے ایک کپڑے میں قرآن مجید کو جمع کر کے اس پرمہرلگادی۔

تیسری دلیل میہ کو اہل سنت کے مشہورا مام حاکم نیٹا بوری نے متدرک میں حضرت رید ابن ثابت سے میدروایت نقل کی ہے کہ ہم رسول الله ملتی دیا ہے کہ خدمت میں قرآن کو

متفرق مکڑوں سے جمع کر کے پیش کرتے تھے اور رسول اللہ ملٹی کی آپٹی کے نزدیک جس آیت کا جو مقام تھا' وہاں اس آیت کور کھنے کا حکم دیتے تھے' البتہ اس وقت بینوشتہ متفرق تھا (یکجانہ تھا)' بیغمبر مُلَّیْ لِیَآئِم نے حضرت علی سے کہا کہ اس کوایک جگہ جمع کریں' اور ہم کو اس سے خبر دار کرتے تھے کہ کہیں قرآن ضائع نہ ہوجائے۔

علاء شیعہ کے بہت بڑے عالم سیدمرتضٰی کہتے ہیں کہ جس صورت میں آج ہمارے پاس قر آن ہے ٔ رسول اللّٰہ مُنتَّجُ کِیْلِیْم کے زمانہ میں اس صورت میں موجود تھا۔

طبرانی اورا بن عساکر نے شعبی ہے روایت کیا ہے کہ چھانصاری صحابہ نے رسول اللہ ملی اللہ علیہ کے زمانہ میں قرآن مجید کوجمع کیا اور قیادہ روایت کرتے ہیں کہ میں نے حضرت انس سے بوچھا کہ رسول اللہ ملی کی نازم کی کہا: چار سے بوچھا کہ رسول اللہ ملی کی نازم کی کہا: چار سے انسار سے تھے: حضرت ابی ابن کعب مضرت زیدا بن ثابت وضرت معاذ اور حضرت ابوزید۔

قرآن مجید کوجع کیااور یہ بہت بڑی فضیلت ہے کوئی معمولی بات نہیں ہے۔ قرآن مجید کے بوسیدہ اور اق کو کیا کریں؟

علامہ شامی لکھتے ہیں: مجتبیٰ میں لکھا ہے کہ جب مصحف پرانا اور بوسیدہ ہوجائے تو اس کو وفن کرنا احسن ہے جیسے نبیوں اور رسولوں کو وفن کیا جاتا ہے اور باقی دین کتا ہیں جب بوسیدہ ہو جا کیس تو ان کا بھی یہی تھم ہے اور وفن کرنا تعظیم کے خلاف نہیں ہے کیونکہ انبیاء الناہ کو بھی وفن کیا جاتا ہے اور اس سے پڑھنا وشوار ہو وفن کیا جاتا ہوجائے اور اس سے پڑھنا وشوار ہو جائے تو اس کو آگ میں نہیں جلایا جائے گا'ام محمد نے اس طرح اشارہ کیا ہے اور ہم اس پڑھل وجائے اس کو تار اس کی لحد بنائی جائے گا۔ کو کہ اس کی قد بنائی جائے ہوں اور ہم اس پڑھل کے ہوں اس کی لحد بنائی جائے 'کیونکہ اگر حیل اس کی قبر بہطر بی شق بنائی گئ تو اس پرمٹی گر ہے گی اور اس میں ایک شم کی تحقیر ہے' ہاں! اگر حیست بنا کر پھرمٹی ڈالی جائے تو کوئی حرج نہیں ہے' اس طرح اگر کسی پاک جگہ قرآن مجد کو کہ دیا جائے 'جہاں نہ کسی بے وضو کا ہاتھ لگئے نہ گر دوغبار پڑے اور نہ اس کی تعظیم میں فرق آئے تو یہ بھی جائز ہے ۔ (ردالحتارج ۵ م ۲۰ سطحہ عنانیا سنبول ۲۰ سام

قرآن مجید پر نقطے اور اعراب لگانے کی تاریخ اور تحقیق

شروع میں جب قرآن مجید کولکھا جاتا تھا تو قرآن مجید کے حروف پر نقطے نہیں لگائے جاتے تھے اور ندرمو نے اوقاف تھے' کیونکہ اہل عرب اپنی زبان اور محاورہ کی مدد سے نقطوں اور حرکات' سکنات اور اعراب کے بغیر بالکل صحیح قرآن بڑھ لیتے تھے' اور نہ آئییں کسی فقرہ کو طلانے یا اس پر وقف کرنے کے لیے رمونے اوقاف کی ضرورت تھی' وہ اہل زبان تھے اور ان تمام چیزوں سے مستغنی تھے' حضرت عثمان غنی وی کا ترکرایا تھا' وہ بھی ان تمام چیزوں سے معری تھا' پھر جیسے جیسے اسلام غنی وی گااور غیر عرب اوگ مسلمان ہوتے گئے اور وہ اہل زبان نہ ہونے کی وجہ سے قراءت میں علامیاں کرنے لگے تو پھر قرآن مجید کی کتابت میں ان تمام چیزوں کا اہتمام اور التزام کیا غلطیاں کرنے لگے تو پھر قرآن مجید کے حروف پر نقطے لگائے گئے' پھر حرکات' سکنات اور اعراب گیا۔ سب سے پہلے قرآن مجید کے حروف پر نقطے لگائے گئے' پھر حرکات' سکنات اور اعراب لگائے گئے' پھر قرآن مجید کو چیز کے اور عام لگائے گئے' پھر قرآن مجید کے اور عام لگائے گئے' پھر قرآن مجید کے اور عام لگائے گئے' پھر قرآن مجید کے گئے اور عام لگائے گئے' پھر قرآن کی مہولت کے لیے قرآن وی پر رمونے اوقاف کولکھا گیا۔

علامه قرطبی لکھتے ہیں:

عبدالملک بن مروان نے مصحف کے حروف کومتشکل کرنے اوران پر نقطے لگانے کا تھم دیا'اس نے اس کام کے لیے تجاج بن یوسف کوشہر واسط میں فارغ کر دیا'اس نے بہت کوشش سے اس کام کو انجام دیا اوراس میں احزاب کا اضافہ کیا'اس وقت حجاج عراق کا گورز تھا۔اس نے حسن اور کیجیٰ ابن یعمر کے ذمہ یہ کام لگایا'اس کے بعد واسط میں ایک کتاب لکھی'جس میں قراءت کے متعلق مختلف روایات کوجمع کیا' بڑے عرصہ تک لوگ اس کتاب پڑمل کرتے رہے'ا حتیٰ کہا بہ نے قراءت میں ایک کتاب کھی۔

زبیدی نے کتاب الطبقات میں مبرد کے حوالے سے بیلکھا ہے کہ جس شخص نے سب سے پہلے مصحف کے حروف پر نقطے لگائے 'وہ ابوالا سود الدولی (متوفی ۲۹ ھے) ہیں اور بی بھی ذکر کیا ہے کہ ابن سیرین کے پاس ایک مصحف تھا' جس پر بچی ابن یعمر نے نقطے لگائے تھے۔ (تبیان القرآن)(الجامع لا حکام القرآن جاص ۱۳ 'مطبوعه اختثارات ناصر خسر واریان' ۱۳۸۵ھ)

علامه ابن خلكان لكصة بين:

ابوالاسود الدولی وہ پہلے تحض ہیں' جنہوں نے سب سے پہلے علم نحوکو وضع کیا' حضرت علی ویکٹند نے ان کو بتایا کہ کلام کی کل بین قسمیں ہیں: اسم' فعل اور حرف' اور فر مایا: اس پرتم قواعد تحریر کرو'ایک قول یہ ہے کہ ابوالا سود عراق کے گورز' زیاد کے بچوں کو پڑھا تا تھا۔ ایک دن وہ زیاد کے پاس گیا اور کہا: اللہ امیر کی خیر کرے' میں دیکھا ہوں کہ عربوں کے ساتھ ہے کثر سا مجمع تخلوط ہوگئے ہیں اور ان کی زبان متغیر ہوگئ ہے' کیا آپ مجھے اجازت دیتے ہیں کہ میں ان مجمع تخلوط ہوگئے ہیں اور ان کی زبان متغیر ہوگئ ہے' کیا آپ مجھے اجازت دیتے ہیں کہ میں ان سے لیے ایسے قواعد تحریر کر دول' جس کی بناء پر وہ درست طریقہ سے عربی بولیس؟ زیاد نے کہا: ' تبو فی ابونا و تو ک بنین' ہمارا باپ فوت ہوگیا اور نہیں' پھرا کیک دن ایک خص نے کہا: '' تبو فی ابونا و تو ک بنین' ہمارا باپ فوت ہوگیا اور اس نے کہا: ابو اس نے کہا: ابو کی میں گرائمر کی غلطی کی ۔ تب زیاد نے کہا: ابو الاسود کو بلاؤ' جب وہ آیا تو اس نے کہا: لوگوں کے لیے وہ قواعد تحریر کرد کہ جن سے میں نے اللہ وہ کیا تھا۔

ایک قول سے ہے کہ زیاد نے ازخود ابوالاسود سے اس علم کی فرمائش کی کین اس نے زیاد سے معذرت کرلی کچرایک دن ابوالاسود نے ایک شخص سے سنا 'وہ سور ہ تو ہد کی آیت غلط پڑھ

رہاہے:

علامه زرقانی لکھتے ہیں:

ایک عرصه تک حرکات اوراعراب کے لیے بیعلامات رائج رہیں'لیکن چونکہ ان علامات کانقطوں کے ساتھ اشتباہ تھا'اس لیے پھرز برزیراور پیش کے لیے'اس طرح کی علامات مقرر کردی گئیں۔(مناہل العرفان جاص ۲۰۰۱)

عبدالملک بن مروان ۲۲ ھ میں سریر آرائے سلطنت ہوااور ۸۷ ھ میں فوت ہوا'اورابو الاسود ۲۹ ھ میں فوت ہوا'اس کا مطلب سے ہے کہ ۲۷ ھاور ۲۹ ھ کے درمیان قر آن مجید پر نقطےاوراعراب لگائے گئے۔

قرآن مجيد بررموز اوراوقاف لگانے كى تاریخ كی تحقیق

قرآن مجید کو چی پڑھنے کے لیے ضروری ہے کہ دقف اور وصل کا صحیح علم حاصل کیا جائے وہوں کی جملہ کو دوسرے جملہ یا کس لفظ کو دوسرے لفظ کے ساتھ ملا کر پڑھنا ہے یا کس جملہ اور کو مت لفظ کو دوسرے جملہ اور لفظ سے جدا کر کے پڑھنا ہے اردو میں اس کی مثال ہے (روکو مت جانے جانے دو) اگر روکو پروتف کر لیا جائے تو اس کا معنی روکنا ہے اور روکو مت پروتف کر کے جانے دو پڑھا جائے تو اس کا معنی نہ روکنا ہے قرآن مجیدے اس کی حسب ذیل دو واضح مثالیں ہم پیش کررہے ہیں:

هُ إِلَّا اللَّهُ اور اس كى (آيات متشابهات كى)

وَمَسَا يَعْلَمُ تَسَاوِيْلَهُ إِلَّا اللَّهُ

وَ الرُّسِيخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ الْمَنَّا بِهِ. تاويل كوالله كسوا كوكي نبيس جانبا اور جو (آلعمران: ۷) لوگ علم میں پختہ ہیں'وہ کہتے ہیں: ہم اس پر ایمان لاتے ہیں۔

اس آیت میں اگر' إلا الله''پروقف کیا جائے تو یمی معنی ہوگا'جوہم نے لکھاہے اور اگر " وَالسرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْم " يروقف كياجائ تومعنى بدل جائ گااوراب يول معنى موكا: آيات متشابهات کی تاویل کواللہ اورعلماء راتخین کے سواکو کی نہیں جانتا۔

وَ اللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظُّلِمِينَ ٥ ﴿ اوراللَّهُ ظَالَم لُوكُول كُومِدايت نبيس ديتا الله کی اورائٹد کی راہ میں جہاد کیا۔

ٱلَّـٰذِيْنَ 'امَّنُواْ وَهَاجَرُواْ وَجُهَدُواْ فِي جَولُوكَ ايمان لائے اور جنہوں نے ہجرت سَبيل اللَّهِ. (التوبه:٢٠٠هـ)

اس آیت میں اگر' المقوم الطالمین''یروقف کیا جائے تو یمی معنی ہوگا'جوہم نے لکھا ہے اوراگراس پر وقف نہ کیا اور اس کو دوسری آیت کے ساتھ ملا کریڑھا جائے تو پھریہ معنی ہو گا: الله ان ظالم لوگول كو مدايت نہيں ديتا جوايمان لائے اور جنہوں نے ہجرت كي اور الله تعالى ک راہ میں جہاد کیااورا یسے لوگوں کو ظالم کہنا' قرآن مجید کی بہت ساری آیتوں کی تکذیب ہے اور قرآن مجید میں سیح جگہ پر وقف نہ کرنا' قرآن مجید کے معنی اور منشا کو بدل ویتا ہے اور بعض اوقات کفرتک پہنچادیتاہے۔

اہل عرب اپنی زبان دانی کی وجہ ہے جس طرح بغیراعراب کے قر آن مجید کو تھے پڑھنے يرقادر تھے۔اى طرح وہ قرآن مجيد كويڑھتے وقت سيح جگه يروقف كرتے تھے اوران سے معنی میں کوئی غلطی واقع نہیں ہوتی تھی' لیکن جب اسلام کا پیغام عرب کے باہر پہنچا اور عربی زبان ے ناواقف لوگوں نے قرآن مجید کویر مناشروع کیا تو معانی سے لاعلی کی وجہ ہے وہ غلط جگہ يروقف كرنے لكے اس ليے اس وقت كے علاء نے قرآن مجيدى آيات ير رموز اوقاف لكانے كى ضرورت محسوس كى -سب سے يہلے اس موضوع برامام احمد بن يحي التعلب الخوى المتوفى ۲۹۱ ھے نے کتاب الوقف والابتداء کے نام سے کتاب کھی۔ اس طرح تیسری صدی ہجری میں قرآن مجید کی آیات پررموز اوقاف لگائے گئے۔

قرآن مجيد كي آيات يروقف كرنے كي اصل بيرهديث ب:

امام طحاوی رحمه الله تعالی روایت کرتے ہیں:

حضرت عبداللہ بن عمر و خیاللہ نے فرمایا: ایک بڑے عرصہ تک ہمارایہ معمول رہا کہ ہم
میں ہے کوئی شخص قرآن پڑھنے ہے پہلے ایمان لے آتا تھا' سیدنا حضرت محمد ملٹی کی آئی پر کوئی
سورت نازل ہوتی' ہم اس سورت کے حلال اور حرام کاعلم حاصل کرتے اور اس چیز کاعلم
سامل کرتے کہ اس سورت میں کہاں کہاں وقف کرنا چاہیے' جس طرح تم آج کل قرآن کا
علم حاصل کرتے ہواور اب ہم یدد کھتے ہیں کہ لوگ ایمان لانے ہے پہلے قرآن کو بڑھ لیتے
ہیں' سورہ فاتحہ ہے لے کرآ خرتک قرآن پڑھتے ہیں اور ان میں ہے کسی کو یہ پتانہیں ہوتا کہ
قرآن نے کس چیز کا تھم ویا ہے اور کس چیز ہے منع کیا ہے اور نہ اس کو یہ پتا ہوتا ہے کہ قرآن
کی آتیوں میں کس کس جگہ وقف کرنا چاہے۔

(شرح مشكل الآ ثارج ٣٠ ص ٨٥ مطبوعه بيروت ١٥ ١٣ ها هـ)

وقف کی پانچ مشہور اقسام ہیں

وقف لازم ٔ وقف مطلق ٔ وقف جائز المرخص بوجه ادر المرخص ضروره ٔ ان کی تعریفات اور مثالیس حسب ذیل ہیں :

وقف لازم:اس کو کہتے ہیں کہ اگر اس جگہ وقف نہ کیا جائے اور ملا کر پڑھا جائے تو ایسا بھی لازم آئے گا'جواللہ کی مرادنہیں ہے۔اس کی مثال ہیہے:

وَمَا هُمْ بِمُوْمِنِينَ ۞ يُخدِعُونَ اللَّهَ. ﴿ وومنافَق)مومن نبيس مين ۞ وه الله

(القره:٩-٨) كودهوكادية بي-

اگراس جگه "بمومنین" پروقف نه کیاجائے اوراس کو" بحد عون الله" کے ساتھ ملا کر پڑھا جائے تو یہ عنی ہوگا: وہ منافق ایسے مومن نہیں ہیں جواللہ کو دھوکا دیں طالا نکہ مرادیہ ہے کہ وہ مطلقاً مومن نہیں ہیں۔

وقف مطلق: وہ ہے جس کوملائے بغیر ابتداءً پڑھنامتحسن ہواس کی مثال ہے ہے:

وَلَيْبَلِدِلَنَّهُمْ مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا اللهُ ان كَ خوف كَ بعد ان كَ بَعْدُدُوْنَنِيْ لَا يُشُوكُوْنَ بِي شَيْئًا. حالت كوضرورامن سے بدل دے كاوه ميرى (النور: ۵۵) عبادت كريں كے اور مير سے ساتھكى كو

شریک نہیں قرار دیں گے۔

پہلے جملہ میں اللہ تعالی کے فعل کا بیان ہے اور دوسرے جملہ میں بندوں کے فعل کا بیان ے اس لیے ان دونوں جملوں کو ملائے بغیرا لگ الگ پڑھنامستحسن ہے۔

وقف جائز: وہ ہے جس میں ایک جملہ کو دوسرے جملہ سے ملا کریڑ ھنااور پہلے جملہ پر وقف کر ك دوسر كوابتداءً يره صنادونو لطرح جائز بهؤاس كي مثال بيآيت ب:

وَ لَقَدُ هَمَّتُ بِهِ وَهَمَّ بِهَا لَوُ لَآ أَنْ اور بِے شکعورت نے اس کا ارادہ 🛴 کیااور دہ بھی اس کاارادہ کرتااگرایئے رب

رَّ البُرُّ هَانَ رَبَّهِ. (بوسف:۴۴)

کی دلیل نه دیکھ لیتا۔

اگر'' ہے بھا'' پر وقف کیا جائے تو معنی اس طرح ہوگا: عزیز مصر کی عورت نے پوسف کے ساتھ برے نعل کا قصد کیا اور پوسف نے اس عورت سے اجتناب کا قصد کیا' اگر پوسف نے زنا کی برائی پرایئے رب کی بر ہان کامشاہدہ نہ کیا ہوتا تو وہ اس برائی میں مبتلا ہو جاتے اور 🔽 اكر ' هم بها ' ك بعدوالے جملہ سے ملاكر ير هاجائے تومعنی اس طرح ہوگا:

عزیزمصر کی عورت نے پوسف کے ساتھ برے فعل کا قصد کیا' اگر پوسف نے اس فعل ا کی برائی پرالٹد کی بر ہان کا مشاہدہ نہ کیا ہوتا تو وہ بھی اس عورت کے ساتھ بُر نے فعل کا قصد کر

واضح رہے کہ ' هُمم '' کا درجہ عزم ہے کم ہوتا ہے " هُمم '' کامعنی ہے: کسی فعل کا قصد کیا جائے اوراس میں اس فعل کو نہ کرنے کا بھی پہلو ہواور عزم کامعنی ہے: کسی فعل کو کرنے کا پختہ قصد ہوا دراس میں اس فعل کونہ کرنے کا پہلو بالکل نہ ہو (اس کی وضاحت ' لَا تَعْفِرْ مُوّا عُقْدَةً ﴿ النِّكَاح ''(القره: ٢٣٥) كِتحت تفسير التبيان ج اص ٢٥٥ مين ملاحظ فرماية)_ المرخص بوجہ: جس میں ایک وجہ سے وقف کرنا اور دوسری وجہ سے ملا کر پڑھنا جائز ہواس کی مثال بدآیت ہے:

أُولْينكَ اللَّذِيْنَ اشْتَرَوا الْحَيوةَ يَهُ وَلَاكُ بِن جَنهول فِي آخرت کے عذاب میں تخفیف نہیں کی حائے گی۔

اللُّنْيَا بِالْأَخِرَةِ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ كَ بِرِلِهِ مِنْ لَى زند كَى خريرى فَيْ سوان الْعَذَاتُ (البقره:٨٧) " فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ" بيل جمل كي لي به مزله سبب اور جزاء به اوراس كا تقاضا ملاكريرُ هنا به اور لفظ فاء ابتداء كوچا به تاب اس لي بيل جمله بروقف كرك" فسلا يخفف" سے ابتداءً يرُ هنا بھي جائز ہے۔

المرخص ضرورہ: جولفظ یا جو جملہ پہلے لفظ یا جملہ ہے مستغنی نہ ہواوراس میں اصل ملا کر پڑھنا' لیکن مسلسل پڑھنے کی وجہ ہے انسان کا سانس ٹوٹ جائے اور وہ ملا کر پڑھنے کی بجائے تھہر جائے تو اس کی اجازت ہے اور دوبارہ ملا کر پڑھنے کی ضرورت نہیں ہے' اس کی مثال ہے آیت

اللّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا جَسَنَاتَ فَيْ مَهَارَ لِيَانَهُ وَاللّهُ مَا أَوْلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً. فرش اور آسان كوجهت بنايا اور آسان سے وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً. فرش اور آسان كوجهت بنايا اور آسان سے (البقرہ: ۲۲) ياني اتارا۔

"أنْنُولَ مِنَ السَّمَاءِ" مِين "انول" كَضمير" الذي "كَلَ طرف لوث ربى باس ليه يه جمله پهلے جمله سے مستغنی نہيں ہاوران كوملاكر پڑھنا جا ہے كئين اگرطول كلام كى دجه سے پڑھنے والے كاسانس ٹوٹ جائے اوروہ" والسماء بناء" پروقف كرے تواس كواجازت ہے كيونكه" والسماء بناء" كوالگ پڑھنے ہے بھى اس كامعنى سمجھ ميں آجا تا ہے۔

جس جگہ ملا کر پڑھنا ضروری ہے اور وقف کرنا جائز نہیں ہے ہیہ وہ کلام ہے جوشرط اور جزاء پر شمتل ہؤ شرط اور جزاء کو ملا کر پڑھنا ضروری ہے اور شرط پر وقف کرنا جائز نہیں ہے یا کلام مبتداء اور خبر پر شمتل ہوتو مبتداء پر وقف کرنا صحیح نہیں ہے ای طرح موصوف اور صفت کو ملاکر پڑھنا جا ہے اور موصوف پر وقف نہ کیا جائے اس کی مثال ہے ہے:

وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا الْفُسِفِينَ O اورالله صرف فاستوں و گراه كرتا ب O الله عِنْ بَعْدِ جوالله كعبدكو يكاكر في كا بعدتو رُوية الله عِنْ بَعْدِ جوالله كعبدكو يكاكر في كا بعدتو رُوية عِنْ الله عِنْ بَعْدِ بيل مِنْ الله عِنْ بَعْدِ بيل مِنْ الله عَنْ الله عِنْ بيل مِنْ الله عَنْ اللهُ عَنْ الله عَنْ ال

ال آیت میں 'اَلَّذِیْنَ یَنْفُضُوْنَ الفْسِقِیْنَ ''کی صفت ہے۔اس لیےان کو ملاکر پڑھا جائے۔

رموز اوقاف کی تفصیل حسب ذیل ہے:

م: وقف لازم

ط: وقف مطلق

سكته: ال طرح تشهرا جائے كه سائس نه تو ئے ايورے قرآن مجيد ميں صرف سات جگه ميہ علامت ہے' مذکورۃ الصدرعلامات پر وقف کرناضروری ہے۔

لا: جب۵اور ۵ کے بغیر'' لا''ہوتو ملا کریڑ ھناضروری ہے۔اس کی مثال بیآیت ہے:

وَ لَمَّا جَآءَ هُمْ كِتنَّ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ الدِّي اور جب ان كے پاس الله كي طرف

مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَهُمْ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ عَكَابِ آئَى جُواس كَ تَصَديق كرن والى ح یَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَی الَّذِیْنَ کَفَرُوْا. ہے جوان کے پاس (اصلی آسانی کتاب)

(البقره:۸۹) سے حالانکہ وہ (یہود)اس سے پہلے (اس

کتاب اور صاحب کتاب کے وسیلہ ہے) کفار کےخلاف فتح کی دعا کرتے تھے۔

'' و کیانیو ۱ من قبل'' کاجملهٔ سابقه جمله کی'' هیم''ضمیرے حال داقع ہور ہاہادر حال اور ذوالحال میں قصل نہیں ہوتا'اس لیے یہاں ملاکر پڑھنا ضروری ہے۔

حب ذیل مقامات پروصل کر کے پڑھنااولی ہے:

ز: وقف مجوز

ج: وقف حائز ومجوز

ق: وقف كا تول ضعيف ہے

صکی: وصل کر کے پڑھنااولی ہےاور جہاں وقف لکھاہؤاں کامعنی ہے: وقف کرنااولی ہے ۔

۵: اس کا مطلب ہے اس کے وقف یا وصل میں اختلاف ہے

O: وقف اوروصل دونوں جائز ہیں

ج: وقف كرناها زئے

ص: وقف کی رخصت ہے۔

قرآن مجيد مين جب ايكمضمون ختم موجاتا بيتو ومال ركوع كى علامت "ع"كمى

JarseNizami.MadinaAcademy.Pk

ہوتی ہے قرآن مجید میں کل ۵۵۸ رکوع ہیں میں معلوم نہیں ہوسکا کہ اس کی ابتداء کب اور کیسے ہوئی قرآن مجید میں سورتوں کے اساء اور آیتوں کی تعداد لکھنے کا بھی رواج نہیں تھا۔ حافظ ابن کثیر نے لکھا ہے کہ ہمارے زمانہ میں اس کا بہ کثر ت رواج ہے اور علماء سلف کی ابتاع کرنا اولی ہے۔ (تغییر القرآن جے ملاح ما ۵۵ مطبوعه اداره اندلس بیروت ۱۳۸۵ھ)

فآدی عالم گیری میں مذکور ہے: قرآن مجید میں سورتوں کے اساء اور آیوں کی تعداد لکھنے میں کوئی حرج نہیں ہے۔ ہر چند کہ بیا یک نیا کام ہے کیکن بیہ بدعت حسنہ ہے اور کتنے ہی کام نئے ہیں اور بدعت حسنہ ہیں اور کتنی چیز ول کا حکم زمان اور مکان کے اختلاف سے مختلف ہوجا تا ہے۔ (فآوی عالمگیری ج ۵ ص ۳۲۳ مطبوعہ بولاق مصر ۱۳۱۰ھ)



مضامین قرآن کا خاکه ایک نظرمیں

| | ۳. | | قرآن مجید کے پارے | 1 |
|------------|--------------|--------------------------|---------------------------------|----|
| | HĻ | | قر آن مجید کی سورتیں | ۲ |
| à | rirr | ایت کے مطابق | قرآن مجیدگی آیتی ابن عباس کی رو | ٣ |
| M | 1 • • • | | امر | ۴ |
| en | {*** | | نہی | ۵ |
| 0 | [• • • | | <i>,</i> 200 s | ۲ |
| Ö | 1 • • • | | وعيد | 4 |
| 9 | • • • | | فضص واخبار | ۸ |
| | [••• | | عبروامثال | 9 |
| <u>a</u> | ۵۰۰ | | حرام وحلال | ſ• |
| 2 | 1•• | | وعا | 11 |
| | IT | | منسوخ الحكم آيات (باعتبارشهرت) | 11 |
| يالا بهور) | فريد بك سٹال | (تبیان القرآن ج۱ 'مطبوء | , | |





کمی اور مدنی سورتوں کی شناخت

کی اور مدنی آیات اور سورتوں کے بارے میں (اہل علم) لوگوں کی تین اصطلاحیں ہیں۔ جن میں سے زیادہ مشہور اصطلاح یہ ہے کہ قرآن مجید کا جو حصہ ہجرت نبوی سے پہلے نازل ہوا وہ کی ہے اور ہجرت کے بعد جس قدر قرآن نازل ہوا (وہ مدنی ہے) خواہ مکہ میں ہوا ہو یا مہنہ منورہ میں فتح مکہ کے موقع پر ہو یا ججۃ الوداع کے موقع پریا کسی سفر کے دوران میں اس کا نزول ہوا وہ تمام صورتوں میں مدنی کہلائے گا۔

دوسری اصطلاح میہ ہے کہ کمی اس کو کہتے ہیں' جو مکہ میں نازل ہوئی خواہ ہجرت کے بعد ہی اس کا نزول کیوں نہ ہوا ہو۔

اور مدنی وہ ہے جس کا نزول مدینہ طیبہ میں ہوا۔ اس اصطلاح کے اعتبار سے ایک واسطہ ثابت ہو گیا کہ سفر کی حالتوں میں نازل ہونے والے حصہ پر کمی کا اطلاق ہو گا اور نہ مدنی کا۔

اور تیسری اصطلاح یہ ہے کہ کی وہ سورت یا آیت ہے جس میں اہل مکہ سے خطاب ہے اور مدنی وہ ہے جس کے مخاطب اہل مدین تھ ہرے۔

قاضی ابو بکرا پی کتاب ' انتهار' میں لکھتے ہیں: کمی اور مدنی کی معرفت میں صرف صحابہ کرام اور تابعین (رضی اللہ تعالی عنہم اجمعین) کے بیان کو ہی مدار بنایا جا سکتا ہے۔خود نبی کریم ملٹی آئی آئیم سے اس کے بارے میں کوئی قول وار دنہیں ہوا۔ کیونکہ آ پ ملٹی آئی آئیم من جانب اللہ اس پر مامور نہ تھے اور نہ اللہ تعالی نے اس چیز کاعلم امت کے فرائض سے قرار دیا ہے۔ اللہ اس پر مامور نہ تھے اور نہ اللہ تعالی نے اس چیز کاعلم امت کے فرائض سے قرار دیا ہے۔ اور اگر قرآن مجید کے بعض حصول کے متعلق علماء پر یہ معلوم کرنا واجب ہے کہ ان میں سے ناسخ کون ہے اور منسوخ کون؟ تو یہ بات رسول اللہ ملٹی آئیلم کے صریح ارشاد کے علاوہ اور

ذ رائع ہے معلوم کی جاسکتی ہے۔

کمی اور مدنی کی شناخت کے فوائد

کی اور مدنی کی معرفت کے بہت فوائد ہیں'ان میں سے ایک فائدہ یہ ہے کہ اس سے ناسخ اور منسوخ کاعلم حاصل ہوجا تا ہے۔

اور دوسرا فائدہ میہ ہے کہ نزول کے اعتبار سے قرآن کی ترتیب اورآیات کے متاخر و متقدم ہونے کاعلم حاصل ہو جاتا ہے اور بعض صحابہ جن میں سے حضرت علی' عبداللہ بن مسعود اور ابن عباس رضی اللہ تعالی عنہم اجمعین سرفہرست ہیں' اس چیز (کمی اور مدنی کی شناخت) کو بہت اہمیت دیتے تھے۔

کمی اور مدنی کی علامات

علماءکرام نے مکی اور مدنی سورتوں کی پہچان کے سلسلے میں پچھے علامات ذکر کی ہیں'ان میں ہے بعض درج ذیل ہیں:

ایک علامت سے ہے کہ جس سورت میں 'نیآیگها النّاسُ ''کے الفاظ کے ساتھ خطاب ہوا اور' نِنَایُّهَا الَّذِیْنَ 'امَنُوْا'' کے ساتھ نہ ہوؤہ کی ہے (البتہ سورت حج میں اختلاف ہے)۔ دوسری علامت سے ہے کہ جس سورت میں ''کلا'' وارد ہوا ہے'وہ کی ہے۔

اور تیسری علامت بہ ہے کہ جس سورت میں حضرت آ دم علایسلاً اور اہلیس کا ذکر ہوؤہ ہ کی ہے۔ ہے سوائے سورت بقرہ کے۔

اور چوتھی علامت ہے ہے کہ جس سورت میں منافقین کا ذکر ہو وہ مدنی ہے۔البتہ سورت عنکبوت اس ہے مشنیٰ ہے۔

اور ہشام بن عروہ اپنے باپ سے روایت کرتے ہیں انہوں نے بیان کیا ہے کہ جس سورت میں صدود اور فر انفن کا ذکر ہے وہ مدنی ہے اور جن سورتوں میں قرون سابقہ کا ذکر ہے وہ کی ہیں۔

فائدہ:قرآن مجید کی کل ایک سوچودہ سورتیں ہیں' جن میں سے انتیس سورتیں مدینہ منورہ میں نازل ہوئی ہیں اور باقی بچاسی سورتیں مکہ میں نازل ہوئی ہیں۔

مدینه منوره میں نازل ہونے والی سورتیں سے ہیں

سورت بقره ألم عمران سورت النساء سورت الماكده الانفال التوبه الرعد الحج النور الله النور التوبه الرعد الحج النور الاحزاب سوره محمد سوره محمد المحرات سوره حديد سوره مجادله سوره حشر سوره محمة المحرات سوره حديد سوره مجادله سوره حشر سوره مخته سورة زلزال موره جمعه سوره منافقون سوره تغابن سوره طلاق سوره تحريم سوره قيامه سورة زلزال سوره قدر سوره نفر سوره فلق سوره ناس -

ان مدنی سورتوں کےعلاوہ ہاقی تمام سورتیں کمی ہیں۔

حضری اور سفری آیات اور سورتوں کا بیان

حضري: وه آيات جن كانزول شهر مين موا-

سفری: وه آیات جوسفر میں اتریں۔

مثالیں: حضری آیات یعنی وہ آیتیں جورسول الله طق کی کہ یامہ یہ نہ قیام کی حالت میں اترین ان کی مثالیں چونکہ اصل ہونے کے اعتبار سے بہ کشرت موجود ہیں کلبندا توضیح کے لیے ان کی مثال پیش کرنے کی حاجت نہیں ہے البتہ سفری آیات کی مثالیں ذکر کی جاتی ہیں 'جو حسب ذیل ہیں۔

سفری آیات اورسور تیل یعنی وہ جو مکہ اور مدینہ کے علاوہ رسول کریم طبق اللہ پرکسی سفر کے دوران نازل ہو کیں ان میں ہے ایک سورت المائدہ میں واقع آیت تیم ہے ، جس ک ابتداء ' یَاتَیُّھا الَّذِیْنَ الْمَنُّواْ اِذَا قُمْتُمْ اِلَی الصَّلُوةِ ''(الایۃ) ہے ہوتی ہے سورہ المائدہ: ۱' اے ایمان والو! جب نماز کے لیے (کھڑے) ہونے کا (تبہارا ارادہ) ہو' یہ آیت ذوالحلیفہ کے مضافات میں ' ذات الجیش ''کے مقام پر نازل ہوئی اور ایک تول کے مطابق البیداء جوذ والحلیفہ ہی کا نام ہے کے مقام پر اتری اور یہ مقام مدینہ کے قریب مکہ ہے آتے البیداء جوذ والحلیفہ ہی کا نام ہے کے مقام پر اتری اور یہ مقام مدینہ کے قریب مکہ ہے آتے ہوئے راستہ میں پڑتا ہے۔ بہرصورت اس آیت کا نزول غزوہ ' السمریسیع '' سے والیسی پر اس وقت ہوا' جب لوگ مدینہ منورہ میں واغل ہور ہے تھے۔ سے کے روایت میں حضرت عائشہ رسیالہ سے اسی طرح مردی ہے۔

دوسری مثال سورہ الفتح ہے حاکم نے روایت کیا ہے کہ سورہ الفتح کا نزول مقام' کے راع المعمیم ''میں ہوا تھا' بیا یک وادی کا نام ہے'اس وادی اور مدینہ کے درمیان ایک سوسترمیل کا

فاصلہ ہے' جب کہ مکہ سے تقریباً تمیں میل اور عسفان سے تین میل کے فاصلہ پرواقع ہے۔

تنبيه تقسيم مزول قرآن

مکان کے اعتبار سے تشمیں: مکان کے اعتبار ہے نزول قر آن کی حسب ذیل بشمیں ہیں: کیک زیجہ: بریب بریہ

مکی ٔ مدنی 'حضری اورسفری

ز مان کے اعتبار سے قسمیں: زمانہ کے اعتبار سے آیات اور سورتوں کی قسمیں درج ذیل میں ایس میں میں میں میں اور میں اور میں اور سورتوں کی قسمیں درج ذیل

بین الیلی نہاری صفی شتائی۔

لىلى : جورات مىں نازل ہوئيں _

نہاری: جودن میں اتریں۔

صفی : جوموسم گر مامیں اتریں۔

شتائی: جن کا نزول سردیوں میں ہوا۔

مثالیں: نہاری کے امثلہ اصل ہونے کے ناطے بے شار ہیں جو محتاج بیان نہیں لیلی کی

مثالیں ذکر کی جاتی ہیں۔ چنانچدان میں ایک آیت تحویل قبلہ ہے۔

صْفِي كَى مثال: آيت كلاله به: "يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلْلَةِ (النع)"

(سوره النساء:١٤٦)' اے محبوب! تم سے فتوی پوچھتے ہیں تم فرمادو کہ اللہ تمہیں کلالہ میں فتویٰ دیتا

ے''۔اس آیت کے بارے میں صحیح مسلم میں ہے: حضرت عمر رضی اللہ بیان کرتے ہیں کہ

شَتَاكَى كَى مثال: سوره النور مين الله تعالى كايدار شاد ہے: '' إِنَّ اللَّهٰ فِينَ جَمَاءُ وَا بِالْإِفْكِ''

(النور:١١) ' بِ شك وه كه يه برا بهتان لائع بين 'الله تعالى كقول' وَدِرْقَ كويم من 'النور:

٢٦)''عزت كى روزى'' تك _حضرت عائشه رفيخالله سے مروى ہے انہوں نے بيان كيا ہے كه

ىيەموسىم سرماميس نازل ہوئی۔

(۱) النساء: ۱۷: آپ ہے تھم پوچھتے ہیں فرماد یجئے اللہ تمہیں تھم دیتا ہے کلالہ (کی میراث میں)۔ arseNizami.MadinaAcademy.Pk

سب سے پہلے قرآن مجید کا کون ساحصہ نازل ہوا

قرآن مجید کے سب سے پہلے نازل ہونے والے حصہ کے بارے میں مختلف اقوال بن ان میں سے پہلاقول اور یہی سے ہے کہ سب سے پہلے' اِفْسرَا باسْم رَبِّك ''(اعلق:١) نازل ہوئی۔امام بخاری مسلم اور دیگر محدثین نے ام المومنین حضرت عائشہ وی اللہ سے روایت کیا' آب بیان فرماتی میں کہ رسول اللہ ملٹی فیلیلم پر وحی کی ابتداء سیے خوابوں سے ہوئی' حضور ملتي يَلِيكم جوخواب ويكھتے اس كى تعبير روشن صبح كى طرح ظاہر ہو جاتى -

پھر حضور ملتی اللہ کے دل میں تنہائی کی محبت پیدا کی گئی اور حضور ملتی اللہ عار حراء میں حاکر تنبائی میں عمادت کرنے لگئے کئی کئی دن غار میں رہتے اور جتنے دن وہاں رہنے کا ارادہ ہوتا' اتنے دنوں کا سامان خوردونوش ساتھ لے جاتے (جب کھانے یینے کی چیزیں ختم ہو جاتیں) تو حضرت خدیجہ رضائلہ کے پاس آ کراور چیزیں لے جاتے' اسی دوران غارِحرامیں' اجاكة يماتُ يُلِيّم يروى نازل مونى فرشتے نے آكرآب ملتّ يُلِيّم على الله القراء "(يرصم) آپ نے فرمایا: ' میں پڑھنے والانہیں ہول' حضور ملٹی کیلیم نے بتلایا کہ پھر فرشتہ نے زورے كَلِّهِ لَكًا كُر مجھے تھكا ديا' كھر مجھے چھوڑ كركہا: يڑھئے' ميں نے كہاً: ميں بڑھنے والانہيں ہول' حضور فرماتے ہیں کہ فرشتہ دوبارہ مجھے بکڑ کر بغل گیر ہوا' حتیٰ کہ مجھے تھکا دیا' پھر مجھے چھوڑ کر کہا: یر ھئے میں نے کہا: میں بڑھنے والانہیں ہول مضور فرماتے ہیں: فرشتہ تیسری بار مجھے پکڑ کر بغل کیر ہوا' حتیٰ کہ مجھے تھا دیا' پھر مجھے چھوڑ کر کہا:

افْرا باسم رَبُّكَ الَّذِي خَلَق ٥ اين ربك نام عرف ع جوفالل سكھابا ۞ اورانسان كووه باتيس بتاكيں جووہ نہيں

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقِ 0 إِقُرا أُورَبُّكَ ٥ جِ ٢ جَسَ نَاسَانَ كُولُوسْت كَاوْهُ م الْاكْرَمُ 0 الَّذِي عَلَّمَ بَالْقَلَم 0 عَلَّمَ عَلَمَ عَيدا كيا 0 يُرْجَعُ آب كارب سب الْإِنْسَانَ مَالَمْ يَعْلَمُ (العلق: ٥١) سے زیادہ کریم ہے ٥ جس نے قلم سے لکھنا

جانتاتھا0

دومراقول سے کہ سب سے پہلے سورہ' یَآئیگا الْمُدَّتِّوْ ' (الدرُ:۱) نازل ہوئی ہے ہیں کہ میں نے حضرت جابر بن عبداللہ (وَئَنَلُہُ) سے روایت کی ہے' ابوسلمہ بیان کرتے ہیں کہ میں نے حضرت جابر بن عبداللہ (وَئَنَلُہُ) سے بو چھا کہ قر آن کا کون سا حصہ پہلے نازل ہوا؟ حضرت جابر وَئَنَلُہُ اللہ عَلَیْ اللّٰہ الل

يْاَيُّهَا الْمُدَثِّرِ ٥ فَمْ فَانْذِر ٥ اللهِ ١٥ كِيرُ الورْضِ والح ١٥ الله الور

(الدرز:١-١) لوگول كوژراؤن

علماء نے اس تعارض کے کئی جواب دیتے ہیں۔

زیادہ مشہور جواب یہ ہے کہ (حدیث جابر میں) یہاں اولیت سے تھم انذار (عذاب خدادندی سے ڈرانے) کی خاص اولیت مراد ہے 'بعض لوگوں نے اس کی تعبیراس طرح بھی کی ہے کہ'' نبوت' کے بارے میں سب سے پہلے'' اِقْداً بِاسْمِ دَبِّلُکُ'' نازل ہوئی ہے اور یو کی اور عدہ جواب '' رسالت' کے لیے سب سے پہلے'' یَسَاتُھا الْمُدَّیِّرُ '' نازل ہوئی ہے اور یہ وی اور عدہ جواب

بعض حضرات نے اس تعارض کا یہ جواب دیا ہے کہ سائل کا سوال کامل سورت کے نازل ہونے کے بارے میں تھا۔ لہذا حضرت جابر رضی اللہ کی حدیث کا مطلب یہ ہوا کہ پہلے پہل جوسورہ کمل نازل ہوئی 'وہ سورہ المدر تھی اوراس وقت تک سورہ ' اقراء' مکمل نازل ہیں ہوئی تھی کیونکہ سورہ ' اقراء' میں سب سے پہلے اس کا ابتدائی حصہ نازل ہوا ہے (لہذا سورہ مدر گی اولیت مطلقا اقراء کی اولیت کے معارض نہ ہوئی)اس قول کی تائید خود حضرت جابر کی ایک

arseNizami.MadinaAcademy.Pk

اور روایت سے ہوتی ہے۔ جس کو امام بخاری اور مسلم نے اپنی سی میں نقس کی ہے۔ حضرت جا ہر فیکنند بیان کرتے ہیں کہ رسوں القد من کا گئے۔ وی رک جانے کے زمانہ کا گذا کر دفرہ رہے ہیں۔ ایس من رہا تھا ای تک میں نے ایک وارش میں نے اس فی کر میں ہوئے۔ آپ من کی کیٹر نے ایک میں نے ایک میں نے اس فی کر دیکھی قو وہی فرشتہ جو میرے پاس غار جراء میں آپ تھا وہ سان اور زمین کے درمیان کیہ کرک پر بینے ہوا ہے۔ میں خوف زرو ہوگی اور گئی اور میں نے ایک میں نے ایک میں نے ایک فرند سے کرا ہوگئی کیا اور میں نے ایک فرند سے کرا ہوگئی کیا اور میں اور میں نے ایک فرند سے کرا ہوگئی کیا ہوا ہوگھ کیا اور میں اور میں ایک ایک میں اور میں ایک کیا ہوا ہے۔ ایک فرند سے کرا ہوگئی کا ایک میں اور میں اور میں ایک ایک کیا ہوا ہے۔ ایک کی کرا ہوگی کیا ہوا ہوگھ کیا ہوا ہوگھ کیا ہوا ہوگھ کیا ہی اور میں ا

اس نے رسوں اگر منتی کی تھی کہ ' ووفرشتہ جونا رحراء میں میرے پاک یا تھی اس بات پرصرت کولامت کرتا ہے کہ میں قصد بعد میں واقع ہوا اور خارجراء کا واقعہ جس میں آلفُور کراسیہ ریک '''' پڑھوا ہے کرب کے نام سے' کا نزول ہوا ہے کہیں کا واقعہ ہے۔مصنف کہتا ہے کہ مدجوا ہے اس ماہ میں دئیس کے حوالہ سے زیاد و درست ہے۔

اور بعض نے یہ جواب دیا ہے کہ حضرت جابر ویک نید نے یہ بات تی سے کی ہے رسوں کر پیم مشرفی کی ہے روایت نہیں ہے اس سے ام اعوامنین حضرت عائشہ میں کندن رویت حضرت جابر بینی کندگی بات پر مقدم سے اور بیاتی م جوابات میں خوبصورت جو ب ہے۔

تیسرا قول بیاب کے سب سے پہلے'' سورہ الفاتح''نازں ہونی' اس کی دیک وہ صدیت سے جس کواہ مہیمتی نے کتاب الدلائل میں روایت کر ہے' کیکن علاء نے اس کا بیاجواب دیا ہے کہ بیاصدیث مرسل ہے اور بیابھی احتمال ہے کہ اس میں'' سورہ الفاتحہ' کے'' قراما' ک سورت کے نزول کے بعدن زل ہونے کی خبردی گئی ہو۔

چوتھ قول میں ہے کہ سب سے پہلے ' پہشپہ اللّهِ الرّ خبینِ الرّ جینِہ' نازں ہوئی ہے۔

لیکن علامہ جلال الدین سیوطی رحمۃ القدعیہ نے اس کا میہ جواب دیا ہے کہ اس کو کیک

مستقل قول قرار دینا صحیح نہیں' اس لیے کہ کسی سورت کے نازل ہونے کے وقت میہ بات بھی
ضروری ہے کہ بسم اللّٰداس کے ساتھ ہی نازل ہو۔

سب سے پہلے نازل ہونے والی آیات کے بارے اور اقوال بھی ہیں'لیکن سند کے اعتبار سے ان میں شبوت بہم نہیں پنچتا اور اگر ان کی سند فراہم ہو جاتی ہے تو پھر اس کی تا ویل

یوں کی جائے گی کہاس میں لفظ' من' مقدر ہے تقدیر عبارت اس طرح ہوگی کہ' من اول ما نزل''۔

اوائل مخصوصه

ہی)

- (۱) مکه معظمه میں سب سے پہلے جوسورت نازل ہوئی'وہ' اِقْسِ اُ بِیاسُیم رَبِّكَ ''(اَعلق:۱) '' پڑھوا ہے رب کے نام ہے' ہے اور مدینہ طیبہ میں سب سے پہلے نازل ہونے والی سورت' البقرہ' ہے اور بعض نے کہا:'' وَیْسُلٌ لِّسَلُمُطَقِّفِیْنَ ''(اَمطففین:۱)'' ناپ تول میں کمی کرنے والول کے لیے شدید عذاب ہے' ہے۔
- (۲) اورسب سے آخری سورت مکہ میں نازل ہونے والی'' سورہ المومنون''ہے اور مدینہ میں سب ہے آخر میں'' سورہ براُ ق''نازل ہوئی ہے۔
- (۳) جنگ کی اجازت میں سب سے پہلے جوآیت کریمہ نازل ہوئی'وہ'' اُذِنَ لِلَّلِایْنَ یُفْتُلُوْنَ بِمَا لِّنَّهُمْ طُلِمُوْا''(الج:۳۹)'' پروانگی عطا ہوئی انہیں جن سے کافرلڑتے ہیں ان بناء پر کہ ان برظلم ہوا''ہے۔
- (۳) شراب کے بارے میں سب سے پہلے سورہ بقرہ کی آیت (نمبر:۲۱۹)نازل ہوئی' اللہ تعالیٰ فرما تا ہے: ''یسنَ لُوْلَكَ عَنِ الْعَمْرِ وَالْمَیْسِرِ ''(البقرہ:۲۱۹)''لوگ آپ سے شراب اور جوئے کے متعلق یوچھے ہیں''۔
- (۵) امام بخاری رحمة الله علیه نے روایت کی ہے کہ سب سے پہلے جس سورت میں آیت سجدہ نازل ہوئی'وہ'' النجم'' ہے۔
- (۲) کھانوں کے بارے ہیں سب سے پہلے مکہ ہیں (سورہ الانعام کی آیت: ۱۳۵)'' قُلُ اللہ اَجِدُ فِی مَا اُوْجِی اِلَیّ مُحَرَّمًا''نازل ہوئی''' فر ماد یجئے ہیں نہیں پاتا'اس وی میں جومیری طرف کی گئی کوئی حرام کی گئی چیز جووہ کھائے''اور مدینہ منورہ میں پہلے سورہ البقرہ کی آیت (نمبر: ۱۷۳)'' اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَیْکُمُ الْمَیْتَةُ''کانزول ہوا''اس کے سوا

DarseNizami. Madina Academy. Pk

تجینیں کاللہ تعالی نے تم پرحرام کیامردار''۔

سب سے ترمیں کون ساحصہ نازل ہوا؟

امام بخاری حظرت ابن عباس رصالله سے روایت کرتے ہیں له سب سے احرین بی کا امام بخاری حظرت ابن عباس رصالله سے روایت کرتے ہیں له سب سے احرین بی کا بیت کا نزول ہوا وہ آیت ' رہوا'' ہے اور آیت ' رہوا'' ہے اللہ تعالیٰ کا بیقول ' آیا تُھا کا بیقول اللّٰہ وَ ذَرُوا مَا بَقِی مِنَ الرِّبْوا' مراد ہے (البقرہ:۲۵۸)'' اے ایمان والو! اللہ تعالیٰ سے ڈرواور چھوڑ دوجو باتی رہ گیا ہے سود میں سے'۔

(٣) اوراكي قول يبهى بكرسب سے آخر ميں آيت 'وَاتَّ هُوْا يَوْمًا تُوْجَعُوْنَ فِيهِ إِلَى اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ كَاللهُ كَاللّهُ كَاللهُ كَاللّهُ كَاللّهُ كَاللّهُ كَاللهُ كَاللّهُ كَاللّ

(۳) سعیدابن المسیب بیان کرتے ہیں کہ' آیت دین' سب ہے آخر میں نازل ہوئی' امام سیوطی نے فرمایا: بیر مدیث مرسل اور سیح الا سناد ہے۔

الحملت لکم دینکم "(المائده:۳)" آج کون تمهارے لیے تمهارادین کامل کردیا" ججة الوداع کے سال عرفہ کے دن تازل ہوا تھا اور اس آیت کا ظاہر مطلب بھی بیہ ہے کہ اس کے نزول سے پہلے ہی جمع فرائض اوراحکام کی تکمیل ہو چکی تھی ٔ حالانکہ آیت " دبوا" آیت دین اور آیت کاللہ کے بارے میں آیا ہے کہ ان کا نزول اس آیت کے بعد ہوا ہے۔

علاء نے اس اشکال کورفع کرنے کے لیے اس کی بیتاویل بیان فر مائی ہے کہ اکمال دین سے مراد بیہ ہے کہ مسلمانوں کا دین ان کو بلدالحرام میں برقر ارر کھنے اور مشرکین کو وہاں سے جلاوطن کرنے کے ساتھ مکمل ہوا' حتی کہ مسلمانوں نے مشرکین کی شرکت اور خلط ملط کے بغیر فریضہ جج کی ادائیگی کی۔ اس بات کی تائیدا بن عباس وی نائد کے قول ہے بھی ہوتی ہے ' حضرت ابن عباس وی نائد کے قول سے بھی ہوتی ہے ' حضرت ابن عباس وی نائد بیان کرتے ہیں کہ پہلے مشرک اور مسلمان سب ایک ساتھ مل کر جج کیا کرتے سے ۔ پھر جس وقت سورہ براُ قاتری تو اس وقت مشرکوں کو بیت الحرام سے نکال باہر کیا اور مسلمانوں نے اس طرح مج کی ادائیگی کی کہ بیت الحرام میں کوئی مشرک ان کے ساتھ شریک مسلمانوں نے اس طرح مج کی ادائیگی کی کہ بیت الحرام میں کوئی مشرک ان کے ساتھ شریک میں بنانے والی تھی ' جیسا کہ اللہ رب العزت نے جی نہ تھا اور یہ بات انعام باری تعالیٰ کو کمل بنانے والی تھی ' جیسا کہ اللہ رب العزت نے گاظہار کیا ہے۔

'' وَ اَنْ مَمْتُ عَلَيْکُمْ مَنْعُمْتِیْ '' (المائدہ: ۳)'' اور تم پراپئی نعمت پوری کردی'' ارشا دفر ماکراس کا ظہار کیا ہے۔

نزول کے اعتبار سے آخری آیات اور سور توں کے متعلق دیگر اقوال کا بیان اور ان کا جواب

امام جلال الدین سیوطی رحمة الله علیہ نے ایسی آیات اور سورتوں کے بارے میں کہ جن میں ہرایک کے متعلق وارد ہوا کہ بیسب سے آخر میں نازل ہوئی ہے' بہت سے علماء کے اسابقہ اقوال کے علاوہ مزید) اور اقوال بھی ذکر کیے ہیں' ان اقوال میں سے ایک قول بیہ کہ سب سے آخر میں سورہ'' إِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ '' (انصر: ۱)'' جب اللّٰہ کی مدواور فتح آخر میں ہوا' آئے' نازل ہوئی ہے' دوسرے قول کے مطابق سورہ المائدہ کا نزول سب سے آخر میں ہوا' تیسراقول ہیہے کہ' لُقَدْ جَاءً کُم رَسُولٌ مِیں اُنْفُیسکُم '' (التوبہ: ۱۲۸)'' بے شک تمہارے تیسراقول ہیہے کہ' لُقَدْ جَاءً کُم رَسُولٌ مِیں اُنْفُیسکُم '' (التوبہ: ۱۲۸)'' بے شک تمہارے

پاس تشریف لائے تم میں سے وہ رسول''کی آیت سب سے آخر میں نازل ہوئی' چوتھا قول سورہ الفتح کے بارے میں اور پانچواں قول سورہ براُ ق کے سب سے آخر میں نازل ہونے کے متعلق ہے۔

جواب: امام بیمی فرماتے ہیں کہ اگر بیاختلاف صحیح ہوں تو ان کو باہم یوں جمع کر سکتے ہیں کہ مرحض نے اپنے ملم کے موافق جواب دیا ہے۔ مرحض نے اپنے علم کے موافق جواب دیا ہے۔

قاضي ابو بكر" الانضار" ميں لکھتے ہيں:

کہ مذکورہ اقوال میں سے کوئی قول بھی حضور ملٹی کیا ہم تک مرفوع نہیں ہے' بڑمخص نے جو کچھ کہاا پنے قیاس اور غلبہ طن کی بناء پر کہاہے۔

پھر یہ بھی ہوسکتاہے کہ ان لوگوں میں سے ہرشخص نے حضور طبق کی اہلے کے وصال کے دن یا آپ کے ایام علالت سے تھوڑا عرصہ پہلے جو چیز سب سے آخر میں بن اس کو بیان کر دیا اور دوسرے شخص نے رسول اللہ طبق کی آئے ہم سے اس کے بعد پچھاور سنا' جسے پہلے شخص نے شاید نہ سنا ہو۔

سبب نزول کی پیجان

نزول قرآن کی دوقتمیں ہیں' ایک قتم وہ ہے جو ابتداء (یعنی بغیر کسی سوال اور داقعہ کے) نازل ہوئی ہے اور دوسری قتم وہ ہے جو کسی واقعہ یا سوال کے بعد نازل ہوئی ہے۔
علاء مفسرین نے قتم ٹانی میں تبع کر کے خاص اس موضوع پر کتابیں کھیں ہیں' جن میں تلاش بسیار اور بڑی محنت و کاوش کے بعد ایسی آیات کہ جن کا نزول کسی سوال یا کسی واقعہ کے بعد ہوا' ان تمام آیات کو ان کے سبب نزول کے ساتھ بیان کردیا ہے۔ یوں تو آیات کے سبب نزول کے موضوع پر بہت می کتابیں کھی گئی ہیں' لیکن ان میں سے سب سے زیادہ شہرت نزول کے موضوع پر بہت می کتابیں کھی گئی ہیں' لیکن ان میں سے سب سے زیادہ شہرت حافظ سیوطی رحمۃ اللہ علیہ کی کتاب ' لباب المنقول فی اسباب المنزول'' کو حاصل ہوئی۔

سبب نزول کی معرفت کے فوائد

اس فن (معرفت اسباب نزول) کے بہت عظیم فوائد ہیں:

(۱) تھم کے مشروع ہونے کی حکمت کاعلم

(۲) معانی قرآن کے بیجھنے کے لیے ایک قوی طریقہ اسباب نزول کاعلم ہے کیونکہ سبب کے علم سے مسبب کاعلم حاصل ہونا ضروری ہے۔

سبب نزول کی معرفت کے بغیر قرآن کے معانی سیجھنے میں جوابجھن بیدا ہوتی ہے اور بعض تو سبب نزول کی معرفت کے بغیرآیت کی تفسیر کرسکنا نہ صرف ناممکن ہوتا ہے' بلکہ آدمی لغزش کا شکار ہو جاتا ہے' للہٰ اس فن کی اہمیت جاننے کے لیے یہاں دو واقعات ذکر کیے جاتے ہیں۔

مروان بن الحکم نے جب اللہ تعالیٰ کا بیقول' لَا تَسْحُسَبَنَّ اللّٰذِیْنَ یَفُو حُوْنَ بِمَلَ اَتَّوْا ''(اَل عَران :۱۸۸)'' ہرگزنہ بھینا انہیں جوخوش ہوتے ہیں اپنے کیے پڑ'پڑھا تو ان کو اس کامعنی تعین مشکل پیش آئی' انہوں نے خیال کیا کہ اس آیت کریمہ کامعنی تو یہ ہوا کہ اگر کوئی شخص اس چیز پرخوش ہو جو اس کوعطا ہوئی اور اس نے یہ پسند کیا کہ جو کام سز اکے قابل اس نے نہیں کیا ہے' اس پر بھی اس کی تعریف ہوتو ایسے تمام لوگوں کو ہم عذا ب دیں گے۔

مروان نے اس آیت کا جومطلب لیا' وہ آیت کے ظاہر کو دیکھنے سے اگر چہتی معلوم ہوتا ہے' لیکن اس کا حقیقی مفہوم اور ہے' جو حضرت ابن عباس و خیماللہ کے اس آیت کا شان خول بیان کرنے ہیں کہ یہ آیت کا شان خول بیان کرنے ہیں کہ یہ آیت اہل کر اس کے بار سے میں نازل ہو کی تھی' جب کہ حضور ملٹ کی لیا ہے ان سے کوئی چیز پوچھی تھی۔ کتاب کے بار سے میں نازل ہو کی تھی' جب کہ حضور ملٹ کی لیا تھا ہم کیا' جو پچھ آپ نے انہوں نے اصل بات چھپالی اور کوئی اور بات بتا دی اور آپ پر بیہ ظاہر کیا' جو پچھ آپ نے دریافت فر مایا تھا' وہی ٹھیک ٹھیک بتایا ہے اور اس طرح رسول اللہ ملٹ کی لیا تھا' وہی ٹھیک ٹھیک بتایا ہے اور اس طرح رسول اللہ ملٹ کی لیا تھا' وہی ٹھیک ٹھیک بتایا ہے اور اس طرح رسول اللہ ملٹ کی لیا تھا' وہی ٹھیک ٹھیک بتایا ہے اور اس طرح رسول اللہ ملٹ کی لیا تھا' وہی ٹھیک ٹھیک بتایا ہے اور اس طرح رسول اللہ ملٹ کی لیا تھا' وہی ٹھیک ٹھیک بتایا ہے اور اس طرح رسول اللہ ملٹ کی لیا تھا' وہی ٹھیک ٹھیک بتایا ہے اور اس طرح رسول اللہ ملٹ کی لیا تھا' وہی ٹھیک ٹھیک ٹھی اس روایت کو شیخین نے بیان کیا ہے۔

اگران کوآیت مذکور کا سبب نز ول معلوم ہوتا تو ہرگز ایسی بات نہ کہتے۔

اس آیت کاسب بزول بیتھا کہ پچھلوگوں نے شراب کی حرمت کا تھم نازل ہونے کے وقت کہا: '' ان لوگوں کا کیا حال ہوگا جوشراب کو باوجوداس کے نجس ہونے کے پیتے رہے ہیں اور اب وہ اللہ کے راستے میں جہاد کرتے ہوئے تل ہو گئے یا طبعی موت سے مر گئے ہیں'' چنا نچہان لوگوں کی تسکین خاطر کے لیے بیآ یت نازل ہوئی۔اس روایت کوامام احمد نسائی اور دیگرائمہ حدیث نے بھی نقل کیا ہے۔

اورای تبیل سے اللہ تعالیٰ کا یہ تول ' فَاَیْنَمَا تُولُوْ ا فَفَمْ وَجُهُ اللّٰهِ ''(ابقرہ:۱۵)'' توتم جدهرمنه کروادهروجه الله (خداکی رحمت تمہاری طرف متوجه) ہے'' بھی ہے'اس لیے کہا گرہم اس کولفظ کے ظاہر پرمحمول کریں تو اس کا مقتضی یہ ہوگا کہ نماز پڑھنے والے پرسفراور حضر کی حالت میں قبلہ کی طرف رخ کرناواجب ہی نہیں اور یہ بات خلاف اجماع ہے' پھر جب اس کا سبب نزول معلوم ہوا تو یہ واضح ہوا کہ یہ تھم باختلاف روایات سفر کے دوران میں نفل نماز کے متعلق ہے یااس محصوم ہونے کے باحث اپنی متعلق ہے یااس محصوم ہونے کے بارے میں ہے' جس نے سمت قبلہ نہ معلوم ہونے کے باعث اپنی رائے سے کام لے کرنماز اوا کرنی اور بعد میں معلوم ہوا کہ اس نے غلط سمت میں نماز پڑھی ہے۔ تو ان کے بارے ہے آیت نازل ہوئی کہان کی نماز درست ہوگئی۔

نص میں لفظ کے عام ہونے کا اعتبار کرنا جا ہیے پاسبب نزول کے خاص ہونے کا؟

سبب نزول کی بحث سے متعلق ایک اہم ترین مسئلہ یہ ہے کہ علاء اصول (فقہ)اس بارے میں اختلاف کرتے ہیں کہ نص میں کس امر کا اعتبار کرنا چا ہے' لفظ کے عموم کا یا سبب کے خاص ہونے کا؟ یعنی جب ہمیں ایک حکم شرقی پر مشمل آیت کا سبب نزول معلوم ہے تو دریافت طلب امریہ ہے کہ وہ حکم شرقی اس سبب کے ساتھ جس کے بارے میں اس کا نزول موا ہوا ہے خاص ہوگا یا کہ اس سبب کے علاوہ کو بھی وہ حکم شامل ہوگا؟ ای بات کو علاء اصول عموم لفظ اور خصوص سبب کے اسلوب سے تعبیر کرتے ہیں۔ تو اس کا جواب یہ ہے کہ مشہور اور زیادہ لفظ اور خصوص سبب کے اسلوب سے تعبیر کرتے ہیں۔ تو اس کا جواب یہ ہے کہ مشہور اور زیادہ

صحیح بات یمی ہے کہ عموم لفظ کا اعتبار ہوتا ہے اور حکم کاشمول سبب خاص کے علاوہ کو بھی معتبر ہو گا۔ کیونکہ ایسی بے ثار آیات ملتی ہیں 'جن کا نزول خاص اسباب میں ہوا۔

گرباتفاق علاءان کے احکام غیراسباب کی طرف بھی متعدی ہوتے ہیں' مثلاً'' آیت ظہار''سلمہ بن صحر کے متعلق نازل ہوئی تھی'' آیت لعان' کا نزول ہلال بن امیہ کے بارے میں ہوا تھا' اور'' حد قذف' کا شان نزول ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ رشی اللہ کو تہمت لگانے والوں کے بارے میں تھا' گر بعد میں بیا حکام اوروں کی طرف بھی متعدی ہو گئے اور جولوگ عوم لفظ کا اعتبار بی نہیں کرتے' وہ ان آیتوں کے بارے میں کہتے ہیں کہ بیاوران جیسی دیگر آیات میں بھی عموم کی اور دلیل کی وجہ ہے آیا ہے۔

حضرت حافظ سيوطي عليه الرحمه فرماتے ہيں:

عموم لفظ کومعتبر ماننے کی دلیل صحابہ کرام وٹائنڈینے کا مختلف واقعات میں ان آیات کے عموم سے ججت لا نا ہے۔ جن کے نزول کے اسباب خاص تھے اور پیطریقیہ استدلال ان کے یہاں شائع اور ذائع تھا۔

تنبيه

یہ بحث اس لفظ کے بارے میں تھی'جس میں کسی طرح کاعموم پایا جاتا ہے۔اب رہی وہ آیت جس کا نزول کسی خاص شخص کے بارے میں ہوااوراس لفظ میں کوئی عموم نہیں ہے تواس کا انحصار صرف ای شخص کے حق میں ہوگا'جسے اللہ تعالیٰ کا قول' وَ سَیْ جَنَبْهَا الْاَتْ فَی ٥ الَّذِی اللهٰ تعالیٰ کا قول' وَ سَیْ جَنَبْهَا الْاَتْ فَی ٥ الَّذِی یُوْ تِی مَالَمَهُ یَتَزَیّنی '(اللیل: ۱۸ ـ ۱۷)' اوراس ہے (بہت) دور رکھا جائے گا'جس ہے بڑا یہ بیڑا جربین گار جوا پنا مال (اللہ کی راہ) میں ویتا ہے'۔

اس آیت کے بارے میں اجماع ہے کہ بیامیر المومنین خلیفہ اول ابو بکرصدیق رشخاً لَلہ کی شان میں نازل ہوئی ہے۔

ایک اور وہم اور اس کا از الہ: اگر کوئی شخص اس آیت کو قاعدہ کے تحت میں لانے کی غرض سے یہ وہم کرے کہ اس کا حکم بھی ہر ایسے شخص کے لیے عام ہو گا۔ جو کہ حضرت ابو بکر صدیق رضی آلئہ کی طرح استحصے اور نیک کام کرے تو یہ استدلال غلط ہو گا کیونکہ اس آیت میں سرے سے کوئی صیغہ عموم کا ہے ہی نہیں۔ اس لیے" الف ولام" مفید عموم اس صورت میں ہوتا

ہے جب کہ وہ کی جمع کے صیغہ میں موصولہ یا معرفہ ہو۔ بعض لوگوں نے مفرد میں بھی مانا ہے مگر شرط یہ ہے کہ وہاں کی قتم کا عہد (ذہنی یا خارجی) نہ پایا جائے۔ اور ' اللا تقبی ''میں الف لام موصولہ اس لیے نہیں ہوسکتا کہ باجماع اہل لغت افعل الفضیل کا وصل کیا جانا صحیح نہیں۔ پھر '' اتقبی ''جمع کا صیغہ بھی نہیں بلکہ وہ مفرد ہے اور عہد بھی اس میں موجود ہے 'جس کے ساتھ ہی '' افعل ''کا صیغہ تمیز اور قطع مشارکت کا خاص فاکہ ہ دے رہا ہے 'ان وجوہ ہے عموم کا ماننا باطل مضہ تا اور خصوص کا یقین کامل حاصل ہوتا ہے اور آبت کے ابو بمرصد ایق رضی آلئہ ہی کے حق میں نازل ہونے کا انحصار کیا جاسکتا ہے۔

اسباب نزول سيمتعلق مفيدامور كابيان

اسباب نزول کے مصادر: قرآن عکیم کے اسباب نزول کی بابت سوائے ان لوگوں کی روایت اور سامی بیان کے جنہوں نے اپنی آئکھوں کے سامنے قرآن کو نازل ہوتے دیکھا اور اس کے اسباب نزول کے واقف تھے اور اس علم کی تحقیق کی ہے کوئی دوسری بات کہنا ہر گزروا نہیں۔

محمد بن سیرین بیان کرتے ہیں: میں نے عبیدہ سے قرآن پاک کی ایک آیت کے بارے میں پکھ پوچھا تو انہوں نے کہا: اللہ تعالی سے ڈرواور حق بات بیان کرو وہ لوگ گزر گئے جن کواس بات کاعلم تھا کہ اللہ تعالی نے کس کے متعلق قرآن کی کون می آیت اتاری ہے۔

صحابہ کرام میہم الرضوان کی روایت ہی کواوّل و آخر اسباب نزول کی شناخت کا دارو مدار قرار دیا جاسکتا ہے۔ کیونکہ انہیں اسباب نزول کی معرفت ان قرائن کے ذریعے معلوم ہوتی تھی جو کہ ان معاملات کے ساتھ وابستہ تھے میں کہنا ہوں: اس کے علاوہ صحابہ کرام کو جو حضور طلق کی اور آپ طلق کی اور آپ طلق کی آئے ہے حضور طلق کی آئے ہے کہ اور آپ طلق کی آئے ہے اور اس کی معرفت آیات کریمہ کے نزول کا بچشم خود مشاہدہ کرنا اور ان کی تحقیق اور تنج 'یہ سباعول کی معرفت آیات کریمہ کے نزول کا بچشم خود مشاہدہ کرنا اور ان کی تحقیق اور تنج 'یہ سباب نزول کی شناخت میں حضرات صحابہ کرام ہی کو مرجع قرار دیا جائے۔

قول صحابی 'نزلت هذه الایه فی کذا'' کی تحقیق'علاء کاس میں اختلاف ہے کہ آیا صحابی کا قول' نزلت هذه الایة فی کذا''اس حال میں کراس نے آیت کا سببزول

بیان کیا ہو مند کا قائم ہونا مانا جائے گا۔ یابیاس کی تفسیر کا قائم مقام ہوگا، جو کہ مندنہیں ہوتی ۔ ہے۔

امام بخاری رحمة الله علیه ایسے قول کومند کے زمرہ میں شامل کرتے ہیں اور دیگر محدثین اسے مند میں داخل نہیں کرتے اس اصطلاح کے اعتبار سے جس قدر قابل سند اقوال تسلیم ہول گئ ان میں سے اکثر مسانید کا وہی مرتبہ ہوگا 'جوامام احمد وغیرہ محدثین کی مسانید کا ہے۔ بخلاف اس صورت کے کہ جب صحافی نے کسی ایسے سبب کا ذکر کیا ہو 'جس کے بعد آیت کا نزول ہوا تھا تو اس کو با تفاق تمام علماء' مسند کا درجہ دیتے ہیں۔

اور دوسرا مسئلہ کہ صحابی کا قول مذکور نزول قرآن کا سبب بنانے کومفید ہے۔

وعن المسئله الثانيه وهي هل يفيد سببا النزول الايه

زركشي افي كتاب "البربان" مين لكهة بين:

صحابہ اور تابعین کی عادت سے یہ بات معلوم ہوتی ہے کہ جس وقت ان میں سے کوئی کہتا ہے: '' نزلت ہذہ الایہ فی گذا''یہ آیت فلال معاملہ میں نازل ہوئی ہے تواس سے مراد یہ ہوتی ہے کہ وہ آیت فلال عکم کوشامل ہے نہ یہ کہاس کی بتائی ہوئی وجہ آیت کا سبب نزول ہے اور صحابہ یا تابعین کا اس طرح کہنا آیت کے ساتھ تھم پر استدلال کرنے کے قبیل سے ہے نہ کہ سبب وقوع کو بیان کرنے کی قتم ہے۔

اگرایک ہی آیت کے کئی اسباب نزول بیان کیے گئے ہوں تو اس کے حکم کابیان

بعض اوقات ایسابھی ہواہے کہ مفسرین نے ایک ہی آیت کے نزول کے کی سبب بیان کردیئے 'پس ایس صورت میں کسی ایک قول پراعتاد کرنے کا طریق یہ ہے کہ واقعہ کی نوعیت کا جائزہ لیا جائے گا' پھراگر ایک راوی نے اس کا ایک سبب بیان کیا ہے اور دوسرے نے دوسرا سبب بتایا ہے اور سبب نزول کی تصریح نہیں کی ہے تو اس صورت میں دوسرا قول ہی غالب طور پر آیت کی تفییر ہے نہ کہ اس کا سبب نزول اور اس صورت میں اگر آیت کے الفاظ دونوں کو

شامل ہوں تو ان دونوں اقوال کے درمیان کوئی منافات نہ یائی جائے گی۔اگر ایک راوی نے کوئی صریح سبب بیان کردیا ہے اور دوسرے راوی نے اس کے بالکل برعکس سبب بتایا تو اس حالت میں پہلا قول قابل اعتماد ہوگا اور دوسرا قول استنباط تصور کیا جائے گا' مثلاً امام بخاری " تمہاری عورتیں تمہارے لیے کھیتال ہیں" کی آیت غیر فطری طریقے سے بیویول کے ساتھ صحبت کرنے کے بارے میں نازل ہوئی اورامام مسلم نے حضرت جاہر مِنْیَاتُلہ ہے روایت کی ہے'انہوں نے بیان کیا ہے کہ یہودی کہا کرتے تھے کہ جو شخص اپنی بیوی کے ساتھ اس کی پشت کی جانب ہے آ گے کے مقام میں وطی کرے گا تو اس کا بچہ بھینگا پیدا ہوگا'ان کی اس بات ك يترويد مين الله تعالى ني آيت كريمة نِسَاءُ كُمْ حَوْثٌ لَكُمْ" (البقره: ٢٢٣) نازل كي -حضرت جابر رضی آنته کی پیتصریح ابن عمر کے اس قول کے بالکل مخالف ہے تو اس موقع برحضرت جابر رہے تند کا بیان قابل اعتماد اور ابن عمر کا قول استنباط سمجھا جائے 'کیونکہ جابر کا قول نقل ہے اور ابن عمر کا قول استنباط ہے'لہذا حدیث کو قیاس پرتر جمح دی جائے گی اور اگر ایک شخص نے کچھ سبب بیان کیا ہے اور دوسرا اس کے علاوہ کوئی اور سبب بتاتا ہے تو ویکھا جائے گا کہ اسناد کس قول کے سیج میں' جس کے اسناد سیجے ہوں' وہی قابل اعتماد ماننا چاہیے۔اس کی مثال وہ صدیث ہے جس کوامام بخاری اورمسلم نے روایت کیا ہے کہ نبی کریم طبخ النائج کچھ بیار ہو گئے جس کی وجہ ہے آپ ایک یا دوراتیں قیام نفر ماسکے اس وقت ایک عورت نے آپ کے پاس آ کر (طنز أ) كہا: محمد (مُنتَّى اِيْلِمَ) میں دیمھتی ہوں كەتمہار بے شیطان نےتم كوچھوڑ دیا ہے۔

تواللہ تعالیٰ نے اس موقع پر' والضّحٰی واللّیٰلِ اِذَا سَجٰی اَمَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلْی ''(اضیٰ: ۱۰) نازل فرمائی'' قسم چاشت کی اور رات کی جب وہ (تاریکی کا) پردہ ڈالے آپ کے رب نے آپ کوئیس جھوڑ ااور نہ وہ (آپ ہے) بیزار ہوا آ'اور طبرانی کی روایت ہے کہ ایک کے کاپلا نبی پاک مُنْ اَلِیَا ہم کے گھر میں گھس آیا اور پلنگ کے طبرانی کی روایت ہے کہ ایک کے کاپلا نبی پاک مُنْ اَلِیَا ہم کے گھر میں گھس آیا اور پلنگ کے نیج جا بیشا اور وہاں مرگیا'اس کے بعد چاردن تک نبی کریم مُنْ اِلِیَا ہم پی کوئی' حق کہ جب گھر والوں کو اس بلے کے مرنے کی خبر ہوئی اور اس کو وہاں سے اٹھا کر باہر پھینکوایا تو اس کے بعد جبرائیل عالیہ لگا'' والے ضحی '' لے کرنازل ہوئے'ابن جمرشرح بخاری میں لکھتے اس کے بعد جبرائیل عالیہ لگا'' والے ضحی '' لے کرنازل ہوئے'ابن جمرشرح بخاری میں لکھتے

ىم:

بچے سگ کی وجہ سے جبرائیل علالیہ لاا کے وحی لانے میں دیر کرنے کا قصہ تو عام طور سے مشہور ہے کیکن اس قصہ کا کسی آیت کا سبب نزول ہونا عجیب وغریب قول ہے اور پھر اس حدیث کے اسناد میں ایک ایساراوی بھی ہو جومعروف نہیں۔اس لیے قابل اعتماد قول وہی ہے جو سیحین میں ہے۔

یہ بھی ممکن ہے کہ کسی آیت کا نزول دویا چنداسباب کے بعد ہوتو ایس صورت میں آیت
کا نزول ہرا یک سبب پرمحمول کیا جائے گا' کیونکہ تعدداسباب سے مانع کوئی چیز نہیں ہے'ایک
صورت یہ بھی ہوسکتی ہے کہ جب کئی اسباب کے لیے ایک آیت کا نزول تسلیم کرناممکن نہ ہوتو
جس آیت کے اسباب میں تعدد پایا جائے'اس کا نزول کئی بار اور مکر ربھی مان لیا جائے گا۔ اس
کی ایک مثال یہ ہے کہ نبی کریم مُنٹی ایکٹی 'حضرت حمز ہوئی آللہ کے شہید ہونے کے بعد ان کی لاش
کی گا کے مثال یہ ہے کہ نبی کریم مُنٹی ایکٹی مُنٹی مُنٹی کے شہید ہونے کے بعد ان کی لاش

حضور ملتی کیاتیم نے لاش سے خطاب کرتے ہوئے فر مایا: بے شک میں کفار کے سر آ دمی تمہار ہے عوض مثلہ کر دوں گا۔ ابھی حضور ملتی کیاتیم و ہیں کھڑے تھے کہ جبرائیل علالیہ الا سورہ '' المنحل'' کی آخری آیات لے کر آئے اوران میں ایک آیت یہ بھی تھی:

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا اوراً گرتم انہیں سزادوتوالی ہی سزادو عُوْقِبْتُمْ بِهِ. (انحل:۱۲۱) جیسی تمہیں تکلیف پہنچائی گئی۔

اس حدیث کوبیمی اور بزاز نے روایت کیا ہے۔

امام ترندی اور حاکم نے (انی بن کعب ہے) روایت کیا ہے کہ معرکہ احد میں مسلمانوں میں سے کا دوایت کیا ہے کہ معرکہ احد میں مسلمانوں میں سے کا ناصاری اور ۲ مہاجر شہید ہوئے تھے' انہی میں سے حضرت حمز ہ رشی آللہ بھی تھے' کی کو مشرکین نے مثلہ کر دیاتھا'انصاریہ منظرد کھے کر کہنے لگے:

"اگر ہم کفار پر کسی معرکہ میں فتح یاب ہوئے تو ان کے مقتولین کے ساتھ اس سے بدر جہابڑھ کر تخت سلوک کریں گے 'چنا نچہ فتح مکہ کادن آیا تو اللہ تعالی نے 'وان عاقبتم'' آیت نازل فرمائی۔ اس حدیث سے ظاہر ہوتا ہے کہ ان آیوں کے نزول میں فتح مکہ کے دن تک تا خیر ہوئی ہے اور قبل کی حدیث ان کا نزول معرکہ احد کے موقع پرعیاں کرتی ہے۔

ان حدیثوں کو جمع کرنے کا طریقہ اختیار کرتے ہوئے یوں کہا جائے کہ آخرسورہ النحل کا خزول قبل از ججرت مکہ میں ہو چکا تھا' کیونکہ وہ سورہ مکیہ ہے اور ای کے ساتھ سب آ بیتی نازل ہوئی تھیں۔ پھر دوبارہ ان آیات کا نزول معرکہ احد کے موقع پر ہوا اور سہ بار فتح مکہ کے دن جس مے مقصود یہ تھا کہ اللہ تعالیٰ اپنے بندوں کو یہ واقعہ بارباریا دولا نا جا ہتا ہے۔

متفرق آیتوں کے نزول کا ایک ہی سبب ہونے کا بیان

بیااوقات ایبابھی ہوا ہے'ایک ہی واقعہ کے بارے میں متعدد آیوں کامختلف سورتوں میں بزول ہوا ہے' اس کی مثال وہ روایت ہے' جس کو امام تر مذی اور حاکم نے حضرت ام سلمہ رغیاللہ ہیان کرتی ہیں' میں نے عرض سلمہ رغیاللہ بیان کرتی ہیں' میں نے عرض کیا: یارسول اللہ ملتی کیا جام الموسنین حضرت ام سلمہ رغیاللہ بیل عورتوں کا کچھ کیا: یارسول اللہ ملتی کیا بات ہے کہ میں اللہ تعالی کو جمرت کے معاملہ میں عورتوں کا کچھ بھی ذکر کرتے نہیں سنتی!

قرآن مجید کے ان حصول کا بیان جن کا نزول بعض صحابہ کی زبان پر جاری ہونے والے الفاظ کے مطابق ہواہے

ید در حقیقت اسباب نزول ہی کی ایک نوع ہے اور اسی باب میں دراصل حضرت عمر وضی تند کے موافقات کا بیان ہے یعنی وہ باتیں جوانہوں نے کہیں اور پھر انہی کے موافق قرآن

مجید کی آیات کانزول ہوااور بیموافقات حضرت عمر رضاللہ کے مشہور مناقب میں سے ہیں۔
امام تر مذی ابن عمر رضی اللہ سے روایت کرتے ہیں حضور ملی ایک اللہ جعل
الحق علی لسان عمر و قلبه "" بے شک اللہ تعالی نے عمر کی زبان اور ان کے دل کوخت کا مرکز بنایا ہے''۔

امام بخاری اور دوسرے محدثین نے حضرت انس رشی آللہ سے روایت کیا ہے انہوں نے فر مایا کہ حضرت عمر رشی آللہ فر ماتے تھے کہ میں نے تین باتوں میں اپنے رب (عزوجل) سے موافقت کی ہے:

- (۱) میں نے عرض کی: یارسول اللہ!''لو اتحدنا من مقام ابو اهیم مصلی. ''اگر ہم مقام ابر اهیم مصلی. ''اگر ہم مقام ابراہیم کومصلی (جائے نماز) بناتے تو کتنا چھا ہوتا اور ای وقت آیت کریمہ' و اتھے خِدُول مِن مَّنَقَامِ اِبْرُهُم مُصَلَّی ''(البقرہ:۱۲۵) نازل ہوئی اور (حکم دیا کہ) مقام ابراہیم کو نماز پڑھنے کی جگہ بنالو۔
- (۲) میں نے عرض کیا: یارسول اللہ! از واج مطہرات کے سامنے نیک اور غیرصالح ہرطرح کے لوگوں کی آمد درفت رہتی ہے'اس لیے آپ ان کو پر دہ کرنے کا حکم فر مادیتے تو بہتر ہوتا'اس وقت آیت حجاب نازل ہوئی۔
- (۳) حضور مُنَّ النَّهِ کَی تمام از واج پاک حضور کی بابت غیرت رکھنے میں ایک ہوگئیں تو میں نے ان سے کہا: ''عسب ربه ان طلقکن ان یبدله از واجا حیوا منکن ''لیخی اگر رسول الله مُنْ اَلِیْهِ بَم کوطلاق دے دیں گے تو قریب ہے کہ ان کا رب انہیں تمہارے بدلے میں تم سے انجھی بیویاں عطافر مادے گا۔اورای طرح پرقر آن کا بھی نزول ہوا۔ مضرت امام جلال الدین سیوطی رحمۃ الله علیہ نے ''موافقات عم'' کے موضوع پر ایک مستقل رسالہ تصنیف کیا ہے 'جس میں تمام موافقات کو جمع کر دیا ہے اور اس رسالہ کا نام مستقل رسالہ تصنیف کیا ہے 'جس میں تمام موافقات کو جمع کر دیا ہے اور اس رسالہ کا نام مستقل رسالہ تصنیف کیا ہے 'جس میں تمام موافقات کو جمع کر دیا ہے اور اس رسالہ کا نام مستقل رسالہ تصنیف کیا ہے 'جس میں تمام موافقات کو جمع کر دیا ہے اور اس رسالہ کا نام موافقات عمر''رکھا ہے۔اور میرے استاذگرامی حضرت علامہ غلام رسول سعیدی 'میں چھیا ہے۔

تكرارنز ول كابيان

متقدمین اور متاخرین علاء کی ایک جماعت نے ذکر کیا ہے کہ قرآن کریم کی بعض آپیتس اور سورتیں مکررنازل ہوئی ہیں اور اس تکرار نزول کی بے شار حکمتیں ہیں۔

قرآن کے حفاظ اور راویوں کا تعارف

امام بخاری رحمة الله علیه نے عبدالله بن عمرو بن العاص رضی الله سے روایت کیا ہے کہ میں نے نبی کریم طبق آلیہ کو یہ فرماتے ہوئے سنا ہے کہ قرآن کا علم چارشخصوں سے حاصل کرو: نبی کریم طبق آلیہ کی کو یہ فرماتے ہوئے سنا ہے کہ قرآن کا علم چارشخصوں سے حاصل کرو: (۱) عبداللہ ابن مسعود (رشی اللہ) اسالم (رشی آللہ) (سالم (رشی آللہ) معاذ (رشی آللہ) اور الی ابن کعب رشی آللہ۔

یعی قرآن کی تعلیم ان لوگوں سے حاصل کرو ان چاروں ندکورہ بالا اصحاب و التی تیم میں سے پہلے دو مہاجر ہیں اور باقی دو انصاری ہیں اور سالم ابن معقل و تی اند کے مولی ہیں اور معاذ سے حضرت معاذ بن جبل و تی اسراد ہیں۔ (اس سے مقصود ترغیب ہورنہ) حضور ملٹی ہی تی ہے کہ اس وقت ان چاروں صحابہ ورنہ) حضور ملٹی ہی تی ہے کہ اس وقت ان چاروں صحابہ کے علاوہ کوئی صحابی حافظ قرآن ندتھا بلکہ قرآن کے حفظ کرنے والے اس وقت ان کی طرح بہت سے صحابہ موجود تھے اور صحح حدیث ہیں غزوہ ہیر معونہ کے حالات ہیں ہے کہ اس غزوہ ہیر معونہ کے حالات ہیں ہے کہ اس غزوہ ہیر معونہ کے حالات ہیں ہے کہ اس غزوہ میں جس قدر قاری کے لقب ہے مشہور صحابہ کرام شہید ہوئے ان کی تعداد سر (۵۷) تھی۔ میں جس قدر قاری کے لقب ہے مشہور صحابہ کرام شہید ہوئے ان کی تعداد سر (۵۷) تھی۔ اس بخاری حضرت قادہ و تی انٹرول اللہ ملٹی لیکٹی کے عہد مبارک ہیں کن لوگوں نے قرآن کو جمع کیا تھا؟ حضرت انس و تی تی انہوں نے جو سب انصار میں سے تھا ابل بن کعب معاذ بن جبل زید بن قابت اور ابوزید و تی تھے؟ حضرت انس نے قرابا یہ بھی ہے اور ایک اور حدیث حضرت انس بی سے تھے؟ حضرت انس نے قرابا یہ بھی ہے اور ایک اور حدیث حضرت انس بی سے تھے؟ حضرت انس نے قرابا یہ بھی ہے اور ایک اور حدیث حضرت انس بی سے تھی خابت فرا بایہ میں کے دو تت ان جاب تی تھی تھی کے دو تر انس کے دو تان جاب تا ہوں تھی کے دو تان کی تھی کا بہت و تی تھی کی دو تر انس کے دو تان جابت و تی تانہ کی کھی کے دو تان کی تابہ تابہ کی کھی کے دو تان کی تابہ دو تابہ کی کھی کی کہ کہ کہ کو تابہ کی کو تاب کا بی کو تابہ کی کھی کے دو تاب کو دو تاب کے دو تاب کی کی دو تاب کا بھی کے دو تاب کی کھی کہ کہ کو تابہ کی دو تاب کا بھی کے دو تاب کی دو تابہ کی دو تابہ کی دو تابہ کی دو تابہ کی دو تابہ کی دو تابہ کی دو تابہ کی کہ کو تابہ کی کی دو تابہ

شخصوں کے سوااور کسی نے قرآن کوجمع نہیں کیا تھا: ابوالدردا معاذین جبل زید بن ثابت اور ابوزید رخالت کی حدیث سے مخالفت پائی جاتی ہے۔ ابوزید رخالت کی حدیث سے مخالفت پائی جاتی ہے۔ اقرال یہ ہے کہ صیغہ حصر کے ساتھ چارہی شخصوں کی تصریح کردی گئی ہے اور دوسری وجہ ابی بن کعب رضالتہ کی جگہ ابوالدرداء رضالتہ کا نام آیا ہے اور مفسرین کی ایک جماعت نے قرآن کے جمع کرنے کا انحصار محض چارہی شخصوں میں کردیے کا انکار کیا ہے۔

مازری کا قول ہے کہ حضرت انس و کا تقالہ کے قول سے بید لازم نہیں آتا کہ قرآن کو ان چارشخصول کے سواکسی اور صحابی نے جمع نہیں کیا ہو کیونکہ اس صورت میں مطلب بیڈ نکاتا ہے کہ حضرت انس و کا تنہ کو علم نہ تھا کہ ان چار صحابہ کرام کے علاوہ کسی اور صحابی نے بھی قرآن کو جمع کیا ہے ور نہ انہیں اس کا علم ہوتا تو انہیں بیعلم کیونکر حاصل ہوسکتا تھا جب کہ صحابہ کرام رضوان اللہ علیہم اجمعین کی جماعت بھی بہت بڑی جماعت تھی اور پھر متفرق شہروں میں پھیل چکے اللہ علیہم اجمعین کی جماعت بھی بہت بڑی جماعت تھی اور پھر متفرق شہروں میں پھیل چکے سے اس بات کا علم تو انہیں جب ہی ہوسکتا تھا کہ وہ ہر شخص سے ملے ہوتے اور پھر ہر شخص نے سے بارے میں بیہ تالیا ہوتا کہ اس نے عہد رسالت میں قرآن کو کمل جمع نہیں کیا تھا اور ایسا عادة ناممکن ہے۔

اوراگر ان کے قول سے مطلب ان کا ذاتی علم ہے تو اس سے بیدلازم نہیں آتا کہ نفس الامر میں بھی ایسا ہی واقع ہو۔

مازری لکھتے ہیں کہ:

حضرت انس رخی آند کے ای قول سے ملاحدہ کی ایک جماعت نے یہ دلیل پکڑی ہے کہ صحابہ کرام کے دور میں قر آن جمع نہیں تھا' حالا نکہ اس میں ان کے دلیل قائم کرنے کی کوئی وجہ منہیں پائی جاتی کیونکہ ہم اس قول کا اس کے ظاہری معنی پر محمول کرنا تسلیم ہی نہیں کرتے اور فرض کرو کہ ہم اس کے ظاہری معنی کو مان بھی لیس تو بھی وہ لوگ یہ بات کیسے ٹابت کرسکیں گے فرض کرو کہ ہم اس کے ظاہری معنی کو مان بھی لیس تو بھی وہ لوگ یہ بات کیسے ٹابت کرسکیں گے کہ واقع میں بھی ایسا ہی تھا اور اسے بھی تھوڑی دیر کے لیے تسلیم کر لیا جائے تو یہ کب لازم آتا کے کہ واقع میں بھی ایسا ہی تھا اور اسے بھی تھوڑی دیر کے لیے تسلیم کر لیا جائے تو یہ کب لازم آتا حافظ بھی نہ رہا ہو؟

اور تواتر کی کچھ میشرطنہیں کہ تمام صحابہ کرام رضوان الله علیہم اجمعین مکمل قرآن کے

حافظ رہے ہوں' بلکہ ان سب نے مل کر متفرق طور سے بھی کل قر آن کو حفظ کیا ہواور اتنا بھی تواتر کے ثبوت کو کافی ہے۔

علامه قرطبی لکھتے ہیں:

جنّ بیامہ میں ستر قاری شہید ہوئے اور رسول الله طلّ الله علی عہد مبارک میں غزوہ بیمعو نہ کے موقع پر بھی ای قدر حفاظ قر آن کام آئے تھے۔

اس لیے معلوم ہوتا ہے کہ حضرت انس رضی کلئے نے جن چارشخصوں کا خصوصیت سے ذکر فر مایا ، وہ ان سے اپ گہرے تعلق کی بنا پر ہے اور دوسروں سے اس قسم کا شدید تعلق نہ ہونے کی بناء پر ان کا ذکر نظر انداز کر گئے اور ایک وجہ یہ بھی ہوسکتی ہے کہ حضرت انس رشی آئنہ کے ذہن میں اسنے ہی لوگ آئے اور دوسرے اس وقت ذہن میں نہ ہول۔

قاضی ابو بکر الباقلانی کہتے ہیں کہ صدیث انس رضی آللہ کا جواب کنی طریقوں سے دیا جا سکتا ہے:

اوّل: اس قول کا کوئی مطلب ہی نہیں بنمآ' لبندا بیلز وم بھی نہیں پایا جاتا کدان چارشخصوں کے سواکسی نے قر آن کوجمع ہی نہ کیا ہو۔

دوم :اس سے مرادیہ ہے کہ قرآن پاک کوتمام ان وجوہ اور قراءتوں پرجن پراس کا نزول ہوا تھا' صرف انہی چارصحابہ کرام علیہم الرضوان نے جمع کیا۔

سوم: قرآن مجید میں ہے اس کی تلاوت کے بعد منسوخ شدہ اور غیر منسوخ حصول کی جمع و تدوین اور حفاظت میں ان چار صحابہ کے علاوہ اور کسی نے سعی نہیں گی۔

پنجم: ان چاراصحاب نے قرآن کی تعلیم و تدریس میں اپنازیادہ وفت صرف کیا اور بیمشہور ہو گئے اور دوسروں کوشہرت حاصل نہ ہوسکی' للبذا جن لوگوں کو ان چارشخصوں کا حال معلوم تھا اور دوسروں کے حال سے واقف نہ تھے'انہوں نے اپنے علم کے مطابق حفظ قرآن کا انحصارانہی چارصحابہ میں کردیا' جب کہ واقع میں ایسانہ تھا۔ ششم : جمع سے مراد کتابت ہے اس لیے حضرت انس کا بی قول اس بات کے موافق نہیں کہ اوروں نے قرآن کوصرف زبانی یاد کرنے اور دل میں محفوظ رکھنے پراکتفاء کیا ہو کیکن ان چار سحابہ نے اسے دل میں یادر کھنے کے علاوہ کتابت کی شکل میں بھی محفوظ کرلیا ہو۔ ہفتم : جمع قرآن سے بی مراد ہے کہ چار صحابہ کرام کے علاوہ کی نے بھراحت قرآن جمع کرنے کا یوں دعو کا نہیں کیا کہ اس نے رسول اللہ ملٹی کیا ہے عہد مبارک ہی میں حفظ قرآن کی محمل کرلیا تھا۔ کیونکہ دوسر سے صحابہ نے حفظ قرآن کی محمل کرلیا تھا۔ کیونکہ دوسر سے صحابہ نے حفظ قرآن کی محمل کرلیا تھا۔ لیونکہ دوسر سے صحابہ نے حفظ قرآن کی محمل کرلیا تھا۔ لیونکہ دوسر سے کہ اس آخری آیت کا نزول ہوا تھا۔ لہذا ممکن ہے کہ اس آخری آیت یا ای کے مشابہ دوسری آیات کے نازل ہونے کے وقت بھی چاروں صحابہ سب سے آیت یا ای کے مشابہ دوسری آیات کے نازل ہونے کے وقت بھی جاروں صحابہ سب سے پہلے ایسے موجود رہے ہوں 'جنہوں نے مکمل قرآن پاک بھی حفظ کرلیا تھا اور دوسر سے حاضرین پورے قرآن مجید کے حافظ نہ رہے ہوں۔

ہشتم :اس سے مراد قرآن حکیم کے احکام کی اطاعت کرنا اور اس کے موجبات پر عمل پیرا ہونا ہے۔ کیونکہ امام احمد رحمۃ اللہ علیہ نے کتاب الزبد میں ابوالزاھریہ کے طریق سے روایت کیا ہے کہ ایک شخص نے آ کر ابوالدر داء ہے کہا: میرے بیٹے نے قرآن کو جمع کرلیا ہے۔ ابوالدر داء رشی آللہ نے فرمایا: اے اللہ! اس شخص کو بخش دے کیونکہ جمع قرآن کا مطلب تو

یہ ہے کہ آ دمی اس کے امرونہی کی تعمیل بھی کرے۔

جوابات برتبصره

ابن حجر مذكوره بالاجوابات پرتبصره كرتے ہوئے لكھتے ہيں:

فذکورہ بالا احتمالات میں سے اکثر احتمال ایسے ہیں' جن میں خواہ مخواہ تکلف کیا گیا ہے۔
خصوصاً آخری احتمال تو سرا پا تکلف ہے' میر سے خیال میں ایک اور احتمال آتا ہے' جوممکن اور
درست ہے' وہ یہ ہے کہ حضرت انس رضی آللہ کی اس سے مراد صرف قبیلہ اوس کی قبیلہ خزرج پر
برتری ثابت کرنا ہے' اس واسطے یہ بات ان دونوں قبیلوں کے علاوہ مہاجرین وغیرہ کے حق
میں منافی نہیں کیونکہ حضرت انس رضی آللہ نے یہ بات اس وقت کہی تھی' جب اوس اور خزرج
دونوں قبائل کے لوگ باہم ایک دوسر سے پر تفاخر کا اظہار کرر ہے تھے' جیسا کہ ابن جریر نے بھی
بہی بات سعید ابن عروبہ کے طریق پر حضرت قادہ کے حوالہ سے حضرت انس رشی آللہ سے روایت

کی ہے کہ اوس اور خزرج کے دونوں قبیلوں نے باہم ایک دوسرے پر اپنی اپنی بڑائی جمانا شروع کی قبیلہ اوس کے لوگوں نے کہا: ہم میں سے چارشخص نہایت صاحب عظمت ہوئے ہیں'ایک وہ جس کے لیے عرش عظیم جھوم اٹھاتھا'اور وہ سعدا بن معاذر منجائلہ ہیں۔

دوسراوہ جس اسیلے کی شہادت دوشہادتوں کے برابر ہوئی اور وہ حضرت خزیمہ بن ثابت

بں۔

یں۔ تیسراوہ مخص جس کوفرشتوں نے شسل میت دیا اور وہ حضرت منظلمہ ابن ابی عامر میں اللہ علیہ ابن ابی عامر میں اللہ بو ی

اور چوتھاوہ شخص جس کی لاش کو بھڑ ول نے مشرکین کے ہاتھوں میں پڑنے سے بچایا اور وہ حضرت عاصم بن ٹابت یعنی ابن الی الا فلح تھے۔

فیبلہ خزر ج کے لوگ اس بات کوئ کر کہنے لگے: ہم میں سے چارا یسے خص ہوئے ہیں ' جنہوں نے قرآن کو جمع کیا اور ان کے سواکوئی مخص قرآن کو جمع کرنے کی سعادت حاصل نہیں کرسکا۔

پھر حضرت انس رضی آللہ نے ان چاروں صحابہ رظی ہے کا ذکر کیا 'ابن حجر لکھتے ہیں کہ:

ہر حضرت احادیث سے جو بات ظاہر ہوتی ہے وہ یہ ہے کہ حضرت ابو بکر رضی آللہ نے حضور ملتی ہیں ہے کہ حضرت ابو بکر رضی آللہ نے حضور ملتی ہیں ہے کے زمانہ حیات ظاہری میں قرآن مجید حفظ کر لیا تھا۔ کیونکہ سی حدیث میں ہے کہ انہوں نے اپنے مکان کے حن میں ایک مجد تعمیر کررکھی تھی اور اس میں قرآن پڑھا کرتے مھ

اوریہ صدیث اس بات پرمحمول ہے کہ جس قدر قر آن اس وقت نازل ہو چکا تھا' اے پڑھتے تھے۔

ابن حجر كہتے ہيں:

اس میں کوئی شک و شبہ کی مخبائش نہیں ہے کہ حضرت ابو بکر رضی اللہ کو حضور ملتی الیائی ہے قرآن سیھنے کا بے صد شوق تھا اور پھروہ اس کام کے لیے فارغ البال بھی تھے وقت تھا۔ مکہ میں رہنے کی صورت میں حضور ملتی الیائی ہے بہ کثر ت ملا قات رہتی اور دیر دیر تک مجلس نبوی میں روز انہ فیض یابی کا موقع ملتا ' یہاں تک کہ ام المونین حضرت عائشہ رضی اللہ ماتی ہیں:

حضور اکرم ملکی کی آبام ان کے باپ کے گھر روز انہ صبح وشام دونوں وقت تشریف لاتے سے اور پھر یہ بھی صبح حدیث ہے کہ نماز میں لوگوں کی امامت کے فرائض وہ شخص انجام دیے جو ان میں سے کتاب اللّٰہ کا سب سے بہتر قاری ہو۔

خودرسول الله ما آندا می این این این ایام علالت میں حضرت ابو بکر کومهاجرین اور انصار کا امام بنا کرنماز پڑھانے کا حکم دیا۔اس سے بھی اس امر کی دلیل ملتی ہے کہ حضرت ابو بکر رہنگی آللہ تمام صحابہ میں سب سے بہتر قرآن کے قاری تھے۔

ابوعبیدی نے کتاب القراءت میں اصحاب رسول اللہ ملتی آبیم میں سے جوحفرات قاری قرآن نظان کا ذکر اس طرح کیا ہے کہ مہاجرین میں سے (۱) خلفائے اربعہ (۲) حفرت ابن مسعود (۳) حفرت حذیفہ (۴) حفرت سالم (۵) حفرت ابو ہریرہ (۲) حفرت طلحہ (۷) حفرت عبد اللہ ابن مسعود (۳) حضرت عبد اللہ ابن عبد اللہ ابن عبد اللہ ابن عبد اللہ ابن عبد اللہ ابن عبد اللہ ابن عبد اللہ ابن عبد اللہ ابن عبد اللہ ابن عبد اللہ ابن عبد اللہ عنم اجمعین اور انصار میں سے حضرت عبادہ ابن الصامت معاذ جن کی کنیت ابوطیم تھی مضرت مجمع ابن جاریہ حضرت فضالہ ابن عبید اور حضرت مسلمہ ابن نلد حضرت ابوطیم تھی کے حضرت مسلمہ ابن نلد حضرت ابوطیم تھی کے حضرت مسلمہ ابن نلد حضرت ابوطیم تھی کے دور ایاد کیا تھا اور اس کی قراء توں سے واقف تھے)۔

نیز ابوعبید رشی اللہ نے یہ بھی تصریح کردی ہے کہ ان میں سے بعض صحابہ نے حفظ قر آن کی تکمیل رسول اللہ ملتی کی آئی کے وصال کے بعد کی تھی۔

صحابہ میں سے قرآن کے مشہور قاریوں کا ذکر

صحابه كرام ميں سے قرآن پر هانے والے سات صحابی مشہور ہيں:

حضرت عثمان حضرت علی حضرت ابی حضرت زید بن ثابت حضرت ابن مسعود حضرت ابن مسعود حضرت ابد الدرداء اور حضرت ابوموی الاشعری وظلی بیام علامه ذببی رحمة الله علیه نے اپنی کتاب طبقات القراء میں ایسا ہی بیان کیا اور کھا ہے کہ ابی وشی الله سے صحابہ کرام کی ایک جماعت نے قرآن پڑھا تھا' ان جملہ صحابہ میں سے حضرت ابو ہریرہ وضرت ابن عباس اور عبد الله ابن السائب ہیں۔

ا بن عباس من اللہ نے زید بن ثابت من اللہ سے بھی قراء ت سیمی ہے اور پھر ان صحابہ

کرام ہے بہ کثرت تابعین نے بھی قراءت سیکھی۔

مدینہ کے قراء تابعین: منجملہ قراء تابعین کے مدینہ میں پیچلیل القدر علماء تھے:

قراء مکه: مکه میں حضرت عبیدا بن عمیر' حضرت عطاء ابن ابی رباح' حضرت طاوُس' حضرت مجامد' حضرت عکر مهاورا بن الی ملیکه رضائلیجنیم تھے۔

قراء کوفه: کوفه میں حضرت علقمهٔ حضرت الاسودُ حضرت مسروقُ حضرت عبیدهٔ حضرت عمرو ابن شرجیل ٔ حضرت حارث بن قیس ٔ حضرت ربیع بن خیثم ، حضرت عمرو بن میمون ٔ حضرت ابوعبدالرحمٰن سلمی ٔ حضرت زرابن حبش ٔ حضرت عبیدا بن فضالهٔ حضرت سعیدا بن جبیر ٔ حضرت نخعی اور حضرت شعبی رضی اللّٰد تعالی عنبم اجمعین ۔

قراء بصره: بصره میں حضرت ابو عالیه ٔ حضرت ابور جاء ٔ حضرت عاصم رضی الله تعالیٰ عنهم اجمعین ' حضرت کیچیٰ ابن یعمر ' حضرت حسن' حضرت ابن سیرین اور حضرت قیاده ۔

قراء شام بین مغیرہ ابن الی شباب المحزومی 'جوحضرت عثان کے شاگردیتھے اور خلیفہ ابن سعد جوالی الدرداء کے شاگردیتھ' پھرا کیگروہ کثیر نے صرف قراءت ہی پرزیادہ زور دیا اور اس کی طرف آئی تو جہ کی کہ اپنے وقت کا امام فن مقتدائے خلائق اور مرجع انام بن گئے۔

اس طرح کے فن قراءت کے امام مدینہ میں ابوجعفریزید ابن القعقاع 'ان کے بعد شیبہ ابن نصاع اور پھر نافع ابن نعیم ہوئے۔

اور'' مکہ''میںعبداللہ این کثیر'حمیدا بن قیس الاعرج اور محمدا بن ابی محیض نامور قاری اور اپنے وقت کے امام فن مشہور تھے۔

'' کوفہ' میں کیلیٰ ابن وثاب عاصم ابن ابی النجو د اور سلیمان الاعمش (یہ تینوں ہم عصر سے) اور ان کے بعد حمزہ اور پھر کسائی کا دور دورہ رہا۔'' بصرہ' میں عبد اللہ ابن ابی اسحاق' عیسیٰ ابن عمرُ ابوعمروا بن العلاء اور عاصم البحدری' یہ جاروں ہم عصر تھے اور ان کے بعد یعقو ب

الحضرمي كاطوطي بولتا ربابه

"شام" (مشق) میں عبد اللہ ابن عام' عطیہ ابن قیس الکلا بی اور اسلعیل ابن عبد اللہ ابن عبد اللہ ابن عبد اللہ ابن المها جراور بھریجی ابن الحارث الذ ماری اور اس کے بعد شریح ابن یزید الحضری نامور قراء موسے اور انہی مذکورہ بالا اماموں میں سے حسب ذیل سات قاری فن قراءت کے امام کے طور پر پوری دنیا میں مشہور ہوئے ہیں:

(۱) نافع:انہوں نےستر تابعی قاریوں ہے قراءت کافن سیکھا'انہیں میں ہے ایک ابوجعفر ہیں۔

(٢) ابن كثير: انهول نے عبداللہ ابن السائب صحابی ہے قراءت كى تعليم حاصل كى تھى۔

(٣) ابوعمرو:انہوں نے صرف تابعین سے فن قراءت سیکھا۔

(۴) ابن عامر:انہوں نے ابو الدرداء ہے اور عثان کے شاگر دوں سے قراء ت کی تعلیم حاصل کی تھی۔

(۵) عاصم: انہوں نے تابعین ہی سے قراءت کی تعلیم یا کی تھی۔

(۲) حمزہ:انہوں نے عاصم اعمش اور سبیعی اور منصور بن المعتمر وغیرہ سے قراءت سیھی تھی۔

(۷) کسائی: انہوں نے حمز ہ اور ابو بکر ابن عیاش سے فن قراءت میں مہارت حاصل کی تھی۔ اس کے بعد فن قراءت چہار دانگ عالم میں پھیل گیا اور ہر دور میں بے شار اس فن کے ماہرا ورسر کر دہ لوگ پیدا ہوتے رہے۔

ساتوں ندکورہ بالا قراءت کے طریقوں میں سے ہرایک طریقہ کے دو دوراوی زیادہ مشہور ہوئے اور باقی کوشہرت دوام حاصل نہ ہوسکی۔

O چنانچہ نافع رشی آللہ کے شاگر دول میں قالون اور ورش ممتاز ہوئے 'جوخود نافع رشی آللہ ہے روایت کرتے ہیں ۔

ابن کثیر رضی اللہ کے طریقہ سے قنبل اور البزی زیادہ نامور ہوئے ہے دونوں ابن کثیر رضی اللہ کے دونوں ابن کثیر رضی اللہ کے داسطہ سے ان سے روایت کرتے ہیں۔

O ابوعمر ور منظم سے بدواسط بزیدر حمة الله الدوري اور السوى كى روایت شمره آفاق ہے۔

O ابن عامر رضی اللہ ہے بہواسطہ ان کے اصحاب ہشام اور ابن ذکوان متاز راوی ہوئے۔

عاصم مِنْ الله كَ خاص شا گردول میں ابو بكر ابن عیاش مِنْ الله اور حضرت حفص مِنْ الله دو

راویوں نے شہرت دوام پائی ہے۔

- حز ہ رضی اللہ کے سلسلہ روایت ہے بہواسطہ سلیم 'حضرت خلف اور حضرت خلا د دوراو یوں
 کومتاز مقام حاصل ہے۔
- اور کسائی کے شاگر دول میں الدوری اور ابوالحارث شہرت دوام اور قبول عام کے مرتبہ پیرفائز ہوئے۔

پھراس کے بعد جب اختلافات اور جھگڑے اس قدر بڑھ گئے کہ باطل اور حق میں فرق کرناد شوار ہو گیا تو ایسے میں امت مسلمہ کے روش دیاغ اور جیدعلاء نے نہایت بالغ نظری اور جدو جہد کے ساتھ قرآن کریم کے جملہ حروف اور قراء توں کو جمع کیا ہے 'وجوہ اور روایات کی سندیں واضح کیں۔

اور سیح مشہوراور شاذ قراءتوں کے اصول اورار کان مقرر کر کے ان کوایک دوسرے سے متازینایا اوران کوگڈیڈ ہونے سے بچایا۔

فن قراءت میں سب سے پہلے ابوعبید قاسم ابن سلام نے کتاب تصنیف کی اس کے بعد احمد ابن جبیر کوفی 'پھر اساعیل ابن اسحاق مالکی قالون کا شاگر دُ ان کے بعد ابوجعفر ابن جریر طبر کی بعد از ال ابو بکر محمد ابن احمد ابن عمر الدجونی اور پھر ابو بکر مجاہد گر مجاہد کے زمانہ میں اور ان کے بعد بھی بہ کثر ت علماء نے انواع قراء ت میں جامع' مفر دُ مختصر اور مطول ہر طرح کی کتابیں تصنیف کیں۔

فن قراءت کے اماموں کی اتنی تعداد ہے کہ ان کا احاطہ نہیں کیا جاسکتا۔ حافظ ملت مثمل الدین الذہبی اور حافظ القراء ت ابولخیر ابن الجزری ابوعبداللہ ' دونوں نے قاریوں کے تذکر ہے لکھے ہیں۔

> متواتر'مشہور'آ حاد'شاذ'موضوع اور مدرج قراءتوں کی تعریفات

قراءت کی تین قسمیں: متواتر' آ حاد اور شاذ' اس نوع میں سب سے خوبصورت کلام اپنے

ز مانہ کے امام القراء حافظ سیوطی علیہ الرحمہ کے استاد وں کے استاد ابوالخیر ابن الجزری نے کیا ہے ٔ ابن جزری رحمۃ اللّٰدعلیہ اپنی کتاب'' النشر'' کے شروع میں لکھتے ہیں:

ہرائیں قراءت جوعربی قواعد کے موافق ہو'خواہ کسی وجہ ہے بھی ہواور مصاحف عثانیہ میں سے کسی مصحف کے ساتھ خواہ اختالی طور پر بھی مطابقت رکھتی ہواور شیخ الا سناد بھی ہوتو الی قراءت شیخ اور قابل قبول ہے اور اس کے ماننے ہے انکار کرناروانہیں ہے بلکہ یہ قراءت انہی حروف سبعہ میں شامل ہوگی'جن پر قرآن کا نزول ہوا ہے اور لوگوں پر اس کا قبول کرنا واجب ہے۔ اس سے بحث نہیں کہ وہ سات یادس اماموں سے منقول یا ان کے ماسواد وسر سے اماموں سے مگر جس وقت ان تینوں فہ کورہ بالا ارکان میں سے کوئی رکن بھی مختل ہوگا تو اس قراءت کوشاذ' ضعیف اور باطل قراءت کہا جائے گا'خوہ اس کے راوی ائمہ سبعہ ہوں یا ان کے ماسواد وسر سے امام جو ان سے بھی برتر و بالا ہیں ۔ سلف سے لے کر خلف تک تمام ائمہ حققین نے اس بات کی صحت کو تسلیم کیا ہے۔

يحرابن الجزري لكصته مين:

ہم نے ضابط میں 'ولو ہو جہ ''کی قید سے ہرنحوی وجہ مراد لی ہے 'خواہ وہ افسے ہویا فصیح' متفق علیہ ہو یا مختلف فیہ' تاہم وہ اختلاف اس قتم کا ہو جوقراء ت کے (شائع اور ذائع یعنی) مشہور معروف ہونے اور ائمہ کے اس کی تعلیم سیح اساد کے ساتھ کرنے کی وجہ سے کوئی نقصان نہ پہنچا سکے' کیونکہ فن قراء ت کا سب سے بڑا اصول اور محکم ترین رکن یہی سیح الا سناد ہونا ہے' درنہ یوں تو بہت می قراء تیں ایسی پائی جاتی ہیں۔ جن کوبعض یا اکثر علماء نحاۃ نے قواعد کے حوالہ سے درست نہیں مانا ہے' لیکن ان کا بیا نکار قابل اعتبار نہیں ہے' مثلاً' باد نکم ''اور ''یامر کم ''کاساکن بنانا'' بار نکم ''اور'' یامر کم ''اور'' والار حام'' کو مجرور پڑھنا وغیرہ۔

قيد'' موافقت مصاحف'' كافائده

پھرابن الجزري لکھتے ہيں كه:

کسی ایک مصحف کی موافقت سے ہماری بیمراد ہے کہ جوقر اءت مختلف مصاحف میں سے کسی ایک میں بھی ثابت ہو مثلاً ابن عامر رہی اللہ کا دائے۔ قال اتحد الله ''بغیرواؤکے

سورہ البقرہ میں اور''ب الزبو و بالکتاب'' دونوں میں اثبات (ب) کے ساتھ بیشا می صحف میں ثابت ہے یا جس طرح سورہ برا ق کے آخر میں ابن کثیر رحمۃ اللّٰہ علیہ' نَہ جُورِی مِنْ تَحْیَهَا اللّٰہ علیہ'' تَہ جُورِی مِنْ تَحْیَهَا اللّٰہ علیہ'' میں حرف'' من ''کوبڑھا کر پڑھا ہے اور بیقر اءت کی مصحف میں ثابت ہے یا ای طرح کی اور مثالیں ہیں۔

پس اگراس تسم کی قراء تیں مصاحف عثانیہ میں ہے کسی مصحف میں نہ تابت ہوں تو وہ شاذ کہلاتی ہیں' کیونکہ وہ متفق علیہ رسم الخط کے خلاف ہیں۔

قيد وصح سندها "كافاكره

ابن الجزري لكصة بين:

ہمارایہ قول کہ'' قراءت کی اسناد سے ہموں''اس سے مرادیہ ہے کہ اس قراءت کی روایت عادل اور ضابط راویوں نے اپنے ہی جیسے دیگر راویوں سے کی ہواور'' از ابتداء تا انتہا''تمام سندیں اسی طرح کی ہوں اور پھر اس کے ساتھ ہی وہ فن قراءت کے اماموں کے نز دیک مشہور قراءت ہواور دہ لوگ اسے غلط یا بعض قاریوں کی شاذ قراءت قرار نہ دیں۔

قراءت كى انواع

علامہ سیوطی رحمۃ اللہ علیے فرماتے ہیں: امام ابن الجزری نے اس فصل کو بڑی تفصیل سے اور نہایت ملل طریق پرتحریر کیا ہے اور امام ممدوح کے بیانات سے ہی معلوم ہوا کہ قراءت کی سندہ سطور میں بیان کی جاتیں ہیں۔

اوّل: متواتر' وہ قراءت ہے' جس کوایک ایسی کثیر جماعت نے نقل کیا ہو' جس کا جھوٹ پر متفق ہونا ناممکن ہواورتمام ناقلین کا سلسلہ اوّل سے آخر تک ایسا ہی رہا ہو' بیشتر قراء تیں ایسی ہی ہیں۔

ثانی بمشہور'وہ قراءت جس کی سند سیحے ہواور وہ درجہ تواتر تک تو نہ پنچی ہولیکن عربیت کے موافق اور صحف کے رسم الخط کے مطابق ہو' قراء کے نزد کیے مشہور ہو' غلط ثار ہوئی ہواور نہ ہی شاذ اور اس کی قراء ت بھی ہوتی ہو' حبیبا کہ جزری نے کہا ہے' اس کی مثال وہ قراء تیں ہیں' جن کا سات قاریوں سے منقول ہونے میں سندوں میں اختلاف پایا جاتا ہے کہ پچھنے اس کو

روایت کیا ہے' کچھ نے نہیں کیا' قراءت کی کتابوں میں جہاں پراختلاف حروف کی فہرشیں دی گئیں' اس کی مثالیں بہ کثرت مل جاتی ہیں' جیسا کہ متواتر کی مثالوں کی کمنہیں ہے' قراءت کے موضوع پرتھنیف ہونے والی کتب میں سے زیادہ مشہور کتابیں حسب ذیل ہیں:

(۱) التيسير 'جوالدانی کی تصنیف ہے (۲) قصیدہ شاطبی (۳) اوعیہ النشر فی القراءت العشر (۳) اورتقریب والنشر 'پیدونوں کتابیں ابن جزری کی تصنیف کردہ ہیں۔

العشر (٣) اورلقر یب والنشر نید و نول کتابین ابن جزری کی تصنیف کرده بین ۔

ثالث: وه قراءت که جس کی سند توضیح ہے لیکن ان میں عربیت یاریم الخط کی مخالفت پائی جاتی ہے یا مذکورہ بالا قراءت کے جرابر مشہور نہیں اور نہ اس کی قراءت کی جاتی ہے امام ترمذی بے اپی جامع میں اور حاکم نے مستدرک میں ایسی قراءتوں کے بیان کے لیے الگ باب قائم کیا ہے اور اس باب میں بہت می صحیح الا سناد روایتین نقل کی بین اس میں سے ایک حاکم کی وه روایت ہے اور اس باب میں بہت می صحیح الا سناد روایتین نقل کی بین اس میں سے ایک حاکم کی وه روایت ہے کہ نوایت ہے کہ بین اس میں ہے ایک حاکم کی ده نوایت ہے کہ می آئی ہے کہ بین اور خوش کو بصورت چا ندنیوں پر اور حضرت ابو ہریرہ رہی آئی تھے ہوئے ہی ہے کہ رسول اللہ میں گئی تنہ ہے کہ خوش و تعبقی کہم میں گوئے ہی نوایت کیا ہے کہ حضور سے کہ کہ دوایت کیا ہے کہ حضور سے کہ کہ میں گئی تو ہی گئی کہ ہی کہ میں ہے کہ دوایت کیا ہے کہ حضور سے کہ کہ میں ہے دوایت کی ہے کہ دوایت کی ہی کہ دوایت کی ہے کہ دوایت کی ہے کہ دوایت کی ایک دوایت فی می کیا تھے دوایت کی میں نائی دوایت کی میں نائی دوایت کی میں نائی دوایت کی میں نائی دوایت کی میں نائی دوایت فی میں نائی دوایت کی میں نائی دوایت فی میں نائی دوایت کی دوایت کی میں نائی دوایت کی دوایت کی میں نائی دوایت کی دوا

رابع: شاذ'یہ ایک قراءت ہے جس کی صحیح سند ٹابت نہ ہو'اس کے بیان کے لیے مستقل کتا ہیں تالیف ہوئی ہیں'شاذ کی مثالیں''ملیكِ یَوْمِ اللّذِیْنِ ''(الفاتحہ:۳)''روزِ جزا کا مالک'' کی قراءت ہے'جس میں''مَسلکُ ''صیغہ ماضی اورلفظ''یَـوْمُ ''نصب کے ساتھ پڑھا گیا ہے اورای طرح'' إِیَّاكَ یُعْبَدُ'''' خاص تیری ہی عبادت کی جاتی ہے' میں صیغہ مجہول کے ساتھ

قراءت ہے۔

خامس: جیسےالخزاعی کی قراءتیں ہیں۔

اس کے علاوہ ایک اور قتم ہے جو حدیث کی انواع سے مشابہ ہونے کے باعث مدرج

میں درج کی جاسکتی ہے بیالی قراءت ہے جودوسری قراءتوں میں تفییر کے طور پرزیادہ کردی میں درج کی جاسکتی ہے بیاسی قراءت 'وله اخ او اخت من ام' ہے بیسعید بن منصور ہے مروی ہے اور حضرت ابن عباس جنہا کہ قراءت 'کیس علیکم جناح ان تبتغوا فضلا من ربکم فی مواسم المحج' (بخاری)۔

اور حضرت ابن زبير رض الله كافراءت ولتكن منكم امة يدعون الى الخير ويامرون بالمعروف وينهون عن المنكر ويستعينوك بالله على ما اصابهم "عمرورهمة الله تعالى كمت بن:

مجھے نہیں معلوم ہوسکا کہ آیا ہوان کی قراءت تھی یا نہوں نے تفسیر کی ہے۔ یہ بھی سعیدابن منصور کی روایت ہے۔

اور ابن الا نباری نے بھی اس کوروایت کیا ہے اور انہوں نے یقین کے ساتھ یہ بات کمی ہے کہ بیزیادتی تفسیر ہی ہے۔

اورحسن رحمه الله عمروى م كهوه پرها كرتے تف وان منكم الا واردها الورود الدخول "انبارى نے كہا كه سن رحمه الله تعالى كاقول" الورود الدخول "خورحسن كى طرف علائق دورود" كمعنى كى تفيير م اوركسى راوى نے غلطى سے قرآن كے ساتھ لاحق كرديا ہے۔

تنبيهات

امام فخرالدين رازي لكھتے ہيں كه:

بعض قدیم کتابوں میں حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ کے بارے میں منقول ہے کہ وہ سورہ الفاتحہ اور معو ذ تین کو خارج از قرآن مانتے تھے اس پرایک شخت اشکال وارد ہوتا ہے کہ اگر ہم کہیں کنقل متواتر کا صحابہ کے زمانہ میں پایا جانا ثابت ہے تو فاتحۃ الکتاب اور مُعَوَّ ذُتَیٰن کے واخل قرآن ماننے کا انکار موجب کفر ہوتا ہے اور اگر یہ کہا جائے کہ تواتر کا وجود صحابہ کے زمانہ میں نہیں تھا تو اس سے یہ لازم آئے گا کہ قرآن اصل میں متواتر نہیں ہے امام رازی اس اشکال سے چھٹکا را حاصل کرنے کے طریق پر تنہیہ کرتے ہوئے فرماتے ہیں: طن غالب یہ اشکال سے چھٹکا را حاصل کرنے کے طریق پر تنہیہ کرتے ہوئے فرماتے ہیں: طن غالب یہ

ے کہ حضرت ابن مسعود رضی اللہ ہے اس قتم کی روایت کانقل کرنا ہی سرے سے باطل ہے اس طرح اس پھندے ہے گلوخلاصی ممکن ہے۔

قاضی ابو بکر رحمہ اللہ بھی یہی کہتے ہیں کہ ابن مسعود رضی اللہ سے فاتحہ اور معوذ تین کا قرآن سے ہونے کا انکار صحح طور پر ثابت نہیں ہے اور نہ ہی اس مشم کا کوئی قول یاد آتا ہے۔ انہول نے ان سورتوں کو اپنے مصحف سے مثادیا تھا' جس کی وجہ پیتھی کہ وہ ان سورتوں کا لکھنا درست نہیں سمجھتے تھے۔

نہ یہ کدان کے قرآن ہونے کے منکر تھے۔ بات یہ ہے کہ حضرت ابن مسعود رخیماللہ کے خیاللہ کے خیاللہ کے خیاللہ کے خیال میں مصحف کے لکھنے میں سنت یہ تھی کہ جس چیز کے بار سے میں حضور طبق لیا تیم نے اس میں کھنے کا حکم دیا ہے وہ تو اس میں لکھی جائے اور اس کے علاوہ کسی چیز کا لکھنا جا کز نہیں ہے چونکہ انہوں نے فاتحہ اور معوذ تین کونہ تو کہیں لکھا ہوا پایا اور نہ حضور ملتی لیا تیم کوان کے لکھنے کا حکم دیے سنا'اس لیے انہوں نے ان کوا ہے مصحف میں درج نہیں کیا ہے۔

امام نووی نے کہا: ابن مسعود رخی اللہ کا جو قول نقل ہے وہ باطل ہے جے نہیں ہے۔ ابن حجر رحمہ اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں کہ جب بیہ ثابت ہو چکا ہے کہ ابن مسعود رضی اللہ کے انکار کی نسبت جس قدرروایتیں آئی ہیں' وہ سب صحیح ہیں تو جو شخص کہتا ہے کہ بی عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ برغلط الزام لگایا گیا ہے' اس کی بات قابل قبول نہیں۔ کیونکہ بغیر کسی دلیل اور اسناد کے صحیح روایات پر طعن کرنا مقول نہیں ہوسکتا' بلکہ عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ کے انکار کی نسبت جتنی روایتیں آئی ہیں' وہ سب صحیح ہیں اور ان میں تاویل کرنا ایک احتمالی امر ہے۔

ابن قتيبه ابني كتاب "مشكل القرآن" مين لكصة بين كه:

حضرت ابن مسعود رشخاللہ نے مید گمان کیا کہ معوذ تین قر آن میں داخل نہیں ہیں اور اس کی وجہ بیہ ہوئی کہ انہوں نے حضور ملٹی کیا ہے گوان دونوں سورتوں کے ساتھ اپنے نو اسوں حسن اور حسین رضخاللہ کے لیے تعویذ کرتے دیکھا تھا'ای لیے وہ اپنے گمان پر قائم رہے۔

ہم یہ نہیں کہتے کہ حضرت ابن مسعود رضی اللہ کا موقف درست تھا اور باقی مہاجر اور انصار صحابہ رطانیۃ نیم صحیح قول برنہیں تھے۔

دوسرى تنبيه:حضور مُنْ اللِّهِ كَل حديث مبارك كه ان القرآن انزل على سبعة احرف"

قرآن سات حرفوں پر نازل کیا گیا ہے اس سے مرادیہ ہے کہ قرآن مجید کوایسے طریقہ پر نازل کیا گیا ہے اس سے مرادیہ ہے کہ قرآن مجید کو ایک لفظ کو کئی طریقوں سے اداکرنے کی وسعت آسانی اور گنجائش رکھی گئی ہے کہ لیکن اس کے باوجود کہ ایک لفظ کو مختلف وجوہ اور کئی طریقوں سے اداکر نا جائز ہے ' تاہم بیا ختلاف وجوہ سات کے عدد سے متجاوز نہ ہوگا۔

تىسرى تنبيد: امام كى رحمداللد كتي بين:

وہ خص جو یہ گمان کرتا ہے کہ حضرت نافع اور عاصم وغیرہ قاریوں کی قراء تیں ہی حدیث میں ذکور حروف سبعہ ہیں سخت غلطی پر ہے اور پھراس سے میں خرابی لازم آتی ہے کہ جوقراءت ان ساتوں اماموں کی قراء ت سے خارج ' مگر دوسر سے ائمہ قراء ت سے ثابت اور رسم خط مصحف کے مطابق ہوائی کوقر آن میں نہ مانا جائے اور میہ بہت بڑی غلطی ہے۔

رہا یہ سکلہ کہ باوجود یک فن قراءت کے امامول میں قراء سبعہ سے کہیں بڑھ کرصاحب
رتبہ اور ستندیا انہی کے مرتبہ کے لوگ بہ کثر ت موجود تھے تو پھرانہی سات قاریوں کی قراء ت
پراکتفاء کیوں کرلیا گیا؟ تواس کا سبب یہ بنا کہ جب دیکھا گیا کہ طالبان میں فن کی ہمتیں تمام
راویوں سے قراءت کا ساع کرنے سے بست ہوتی جارہی ہیں کوگوں نے محض انہی قراء توں پر
اکتفا کرلیا، جو مصحف کے رسم الخط کے موافق تھیں تا کہ ان کے حفظ میں سہولت رہا دراس کی
قراءت کا ضبط بخو بی ہوسکے پھر انہوں نے ایسے اٹمہ قراءت کی تلاش کی جو ثقابت امانت اور
کنمشق ہونے کی صفات سے متصف تھے اور اخذ قراءت کے سلسلہ میں غیر متناز عشخصیت
کے حامل تھے اس لیے بلادا سلامیہ کے ہرا کی مشہور شہر ہے۔

ایک ایک امام نتخب کرلیا اورای کے ساتھ ان قراء توں کانقل کرنا بھی ترک نہیں کیا' جو ان کے علاوہ دوسرے اماموں مثلاً یعقوب' ابوجعفر اور شیبہ دغیرہ سے منقول تھیں' سندوں کے لحاظ سے امام نافع رحمة الله علیہ اورامام عاصم رحمة الله علیه کی قراء تیں زیادہ صحیح ہیں اور فصاحت کے اعتبار سے ابوعمر واور کسائی کی قراء تیں اعلیٰ درجہ کی ہیں۔

سات مشہور قراءتوں کے علاوہ دوسری قراءتوں کا حکم

شيخ تقى الدين لكصة بي:

جوقراءت سات مشہور قراءتوں سے خارج ہے اس کی دوشمیں ہیں۔

پہلی قتم وہ ہے جومصحف کے رسم الخط کے مخالف ہے ایسی قراءت کا نمازیا غیرنماز کسی حالت میں بھی پڑھنا ہرگز جا ئزنہیں ہے۔

اور دوسری قتم وہ ہے جومصحف کے رسم النظ کے تو مخالف نہیں لیکن غیر مشہور ہے اور
ایسے غریب طریقے سے وار دہوئی ہے جس پراعتا ذہیں کیا جاسکا تواس طرح کی قراءت کے
پڑھنے کی ممانعت بھی ظاہر ہے 'بعض قراء تیں اس قتم کی ہیں 'جن کوفن قراءت کے سلف ادر
طف سب انمہ نے پڑھا ہے اور وہ ان کے نام سے مشہور ہیں 'اس طرح کی قراء توں سے
ممانعت کی کوئی وجہ ہیں ہوسکتی 'یعقوب وغیرہ کی قراءت ای قبیل سے ہے۔
چوتھی تنبیہ: قراء توں کا اختلاف احکام میں بھی اختلاف کا باعث بنتا ہے ای وجہ سے فقہاء
کرام نے 'کہ مستم ''کڑھا جائے تواس صورت میں صرف کمس کرنے والے کا وضوٹو نے گا
ورنہ 'لامستم ''کڑھا جائے تواس صورت میں صرف کمس کرنے والے کا وضوٹو نے گا
ورنہ 'لامستم ''کڑھا جائے تواس صورت میں صرف کمس کرنے والے کا وضوٹو نے گا
گا درای طرح حائضہ عورت کے بارے میں '' کا اختلاف قراء ت خون کے بند

قرآن کے خل کی کیفیت

قرآن كريم كِحْل كى دوصورتيں ہيں:

(۱) استاد کے روبروخود پڑھنا

(۲) استادی زبان ہے روایت کے الفاظ کی ساعت کرنا

استاد کے سامنے قراءت کرنے اور پڑھنے کا طریقہ سلف سے لے کرخلف تک رائج چلا آ رہا ہے ' مگر قرآن کی قراءت بھی خاص استاد کی زبان سے ن کریاد کرنے کا قول اس مقام پر محض ایک اختالی امر ہے ' کیونکہ صحابہ کرام علیہم الرضوان نے تو بے شک قرآن پاک کو حضور ملتی ہی کی زبان اقد س سے س کریاد کیا اور اس کی تعلیم پائی تھی' لیکن قراء میں ہے کسی ایک کا بھی اسے رسول اللہ ملتی ہی آئی ہے اس طرح پر حاصل کرنا ثابت نہیں ہوتا اور اس کی ممانعت کا ہونا' اس سے ظاہر ہے کہ یہاں کیفیت ادام تقصود ہے اور ایسا ہونا ممکن نہیں کہ ہر شخص

استاد کی زبان سے من کرقر آن کوای ہیئت پرادابھی کر سکے جس کیفیت کے ساتھ استاد نے ادا کیا تھا۔ بخلاف حدیث کے کہ اس میں اس خصوصیت کا لحاظ اس لیے نہیں ہے کہ اس میں مطلوب معنی یالفظ کو یاد کر لیتا ہے ان ادا کی ہیئٹوں کے ساتھ نہیں 'جوادا کیگی قر آن میں معتبر

یں۔ اور صحابہ کرام رہنائی میں چونکہ فصیح اللسان اور سلیم الطبع تصفق میہ بات ان کوقر آن کے اس طرح اوا کرنے برقاور بناویتی ہے جس طرح انہوں نے حضور ملتی کی لیا ہم کی زبان مبارک سے ساعت کیا تھااوراس کی وجہ یہ بھی تھی کہ قرآن خاص ان کی زبان میں اتر اتھا۔

استادے سامنے قرآن پڑھنے کی دلیل کا ثبوت اس امرے بھی بہم ملتا ہے کہ ہرسال رمضان مہارک کے مہینے میں حضور ملتی تیلیج قرآن (منزل) کو جبرائیل علایسلاً پر پیش کرتے اوران کو سنایا کرتے تھے اوران کے ساتھ دور فر مایا کرتے تھے۔

بیان کیا جاتا ہے کہ جب شیخ شمس الدین ابن جزری قاہرہ (مصر) میں آئے تو ان سے قراءت سکھنے کے لیے ختل خدا کا آنااز د جام ہو گیا کہ سب کے لیے الگ الگ وقت دینا مشکل ہو گیا 'چنانچ شیخ موصوف نے بیطریقہ اختیار کیا کہ وہ ایک آیت کی قراءت کرتے جاتے تھے اور تمام سامعین استھا کی کرای آیت کو پھرلوٹا دیتے تھے۔ انہوں نے صرف قراءت مراکتفا نہیں کیا۔

ہ استاد کے سامنے اس حالت میں قراءت کرنا بھی جائز ہے جب کہ کوئی دوسرا شخص ای استاد کے پاس الگ پڑھ رہا ہو گر شرط یہ ہے کہ استاد پر ان تمام قاریوں کی حالت واضح رہے اور کسی کا پڑھنا اس پر مخفی ندر ہے۔

شیخ علم الدین سخادی رحمة الله علیہ کے سامنے ایک ہی وقت میں مختلف مقامات سے دو دو تمین تین اشخاص الگ الگ قراءت کیا کرتے تھے اور شیخ ان میں سے ہر شخص کو بتاتے جاتے سے ۔ اسی طرح شیخ کے دوسرے مشاغل مثلاً لکھنے یا مطالعہ کرنے میں مصروف ہوتے ہوئے ہمی ان کے سامنے قراءت کی جا مکتی ہے۔

ابرہی یہ بات کہ زبانی قراءت کی جائے تو یہ کوئی شرط نہیں ہے بلکہ صحف ہے دیکھ کر بھی قراءت کرلینا کافی ہے۔

قراءت کے تین طریقے

اقال بیختیق : یعنی مید کد کے اشاع ، ہمزہ کی تحقیق ، حرکات کو پوری طرح ادا کرنا اظہار اور تشدیدوں کی ادائیگ میں پورا اعتماد ہونا ، حروف کو واضح طور پر ایک دوسر سے سے الگ الگ کرنا ، بعض حرف ، سکت ، ترتیل وغیرہ میں بعض سے جداگانہ طور پر مخرج سے نکالنا ، دوسر سے حرف کی حد سے خارج بنا نا اور بغیر کسی قصر اور اختلاس کے اور متحرک کوساکن بنانے یا اس کو مدف کی حد سے خارج بنا نا اور بغیر کسی قصر اور اختلاس کے اور متحرک کوساکن بنانے یا اس کو مدف کی حد سے خارج بنا نا اور بغیر کسی قصر اور اختلاس کے اور حق کے ساتھ ادا مدف کرنا ۔ بید باتیں زبان کی ریاضت اور الفاظ کی درتی اور استقامت سے حاصل ہوتی ہیں ۔ کسی معتملین کو ان امور کا سیکھنامت جے گرساتھ ہی میہ خیال رکھنا بھی ضروری ہے کہ اس معتملین کو ان امور کا سیکھنامت جے ہا گرساتھ ہی میہ خیال رکھنا بھی ضروری ہے کہ اس سالم میس حد سے تجاوز نہ کریں اور بید نہ کریں کہ حرکت کی ادائیگی میں افراط کر کے آواز پیدا کرلیں ، راکو مکر ربنا دین ساکن کو متحرک کر دیں اور نون کے غنہ میں مبالغہ کر کے غنغنائے لگ

چنانچہ امام حمزہ نے ایک شخص کو ان باتوں میں مبالغہ کرتے سناتو اس سے فر مایا: کیا تم اس بات کونہیں جانتے ہو کہ حد سے بڑھی ہوئی سفیدی برص اور پھلبہری ہوتی ہے اور بالوں میں حد سے زیادہ نیج و تاب کا ہو جانا اس کو کا کل مرغوب سے مرغولہ بنادینا ہے ای طرح قراءت بھی حد سے بڑھ جائے تو اس سے کراہت ہو جاتی ہے۔

دوم: قراءت کی دوسری کیفیت حدر ہے اور'' حدر' الی قراءت کو کہتے ہیں جو تیزی ہے پڑھی جائے اور اس میں روانی ہواور اس کے اندر قصر' اسکان' اختلاس' بدل' ادغام' کبیر اور تخفیف ہمزہ وغیرہ امور میں جو روایت صحیح سے ثابت ہیں۔ عجلت کی جاتی ہے' لیکن اس کے ساتھ اعراب کی رعایت اور الفاظ کی صحت ادا کی محافظت نیز حروف کو ان کی جگہوں پر برقر اررکھا جاتا ہے' یہ نہیں کہ حرف مدکی کشش جھوڑ دین یا حرکات کا اکثر حصہ ظاہر کرنے سے گول کر جاتی ہا غنہ کی آ داز کو بالکل اڑا دیں یا ان امور میں اس قدر تفریط اور کمی کریں کہ قراءت کا حلیہ بگاڑ کررکھ دیں اور اس کی صحت ہی جاتی ہے۔

سوم: قد ویر قراءت کی بیشم بچیلی دونوں اقسام بعنی شخفیق اور حدر کے مابین توسط کرنے کا نام ہے ا اکثر ائمہ جنہوں نے ہمزہ منفصل میں مدکیا ہے اس میں اشباع کی حد تک مبالغہ نہیں کیا ان کا یہی نہ ہب ہے نیز باقی قاریوں کا بھی یہی مختار مذہب ہے اور اہل ادا بھی اس کو پسند کرتے ہیں۔ تبحو پیدالقرآن

قرآن مجید کی تجوید نہایت اہم مسکہ ہے یہی وجہ ہے کہ بہت سے لوگوں نے اس موضوع پرمستقل اور مبسوط کتابیں لکھی ہیں۔ انہی مصنفین میں سے ایک ابوعمر و الدانی ہیں ، جنہوں نے حضرت عبداللہ بن مسعود رہی اللہ سے روایت کی ہے کہ انہوں نے فر مایا: ' جَسوِّ دُوا اللّٰهُوْلُ انَ ''قرآن یاک کو تجوید سے پڑھا کرو۔

تجوید قراءت کازیور ہے اس کے معنی میہ ہیں کہ تمام حروف کوان کا پورا پوراحق وینا اور ان کوان کی ترتیب سے رکھنا 'ہر حرف کواس کی اصل اور مخرج کی طرف لوٹا نا اور اس لطف اور خوبصورتی کے ساتھ اس کو زبان سے اوا کرنا کہ اس کی اصل صورت بلاکسی مشم کی کمی بیشی اور تکلف کے عیاں ہوجائے 'حضور ملتی کی آئی ہے اس کی طرف اشارہ کرتے ہوئے فرمایا:

'' مَنْ اَحَبُّ اَنْ يَقُواً الْقُرُ انَ عَضَّا كَمَا النّزِلَ فَلْيَقُواَهُ عَلَى قِرَاءَ قِ الْبِ الْمِ عَبْدِ ' جو خص قرآن کوای خوبی کے ساتھ پڑھنا چاہے جیسے اس کا نزول ہوا تو اس کو ابن ام عبدیعی عبداللّہ بن مسعود کی قراءت کا اتباع کرنا چاہیے اس میں کوئی شک نہیں کہ جس طرح مسلمانوں کے لیے قرآن مجید کے معانی کا مجھنا اور اس کے احکام پڑمل کرنا ایک عبادت ہے اور بیان پر فرض قرار دیا گیا ہے 'ای طرح ان پرقرآن کے الفاظ کا صحیح طور پر پڑھنا اور اس کے حروف کو ای طرز پرادا کرنا بھی لازم اور فرض ہے 'جس طرز پران حروف کو ادا کرنا 'فن قراءت کے امامول نے رسول اللہ طرف آئے آئے می مقسل سند کے ساتھ ثابت کیا ہے۔

علماءِفر ماتے ہیں: تجوید کے بغیرقراءت کرنا'' لمحن'' (غلطی) ہے۔

فصل قراءتوں کےالگ الگ اور جمع کر کے پڑھنے کےطریقوں کا بیان

بإنجوي صدى ججرى تك سلف صالحين كاليطريقدر باكه وهقرآن مجيد كامرايك ختم ايك

ہی روایت کے مطابق کیا کرتے تھے اور ایک روایت کو دوسری روایت کے ساتھ بھی نہیں ملاتے تھے کیکن پھرایک ہی ختم میں تمام قراءتوں کو اکشے پڑھنے کا روائ پڑگیا اور اس پڑل مونے کا روائ پڑگیا اور اس پڑل مونے کا روائ پڑگیا اور اس پڑل مونے کا روائ پڑگیا اور اس پڑل کا تاہم اس کی اجازت صرف ان قاریوں کو دی جاتی تھی جو الگ الگ تمام قراءتیں پڑھ کر انہیں یا دکر چکے ہوتے تھے اور وہ ان کے طریقوں سے بخوبی واقف ہو چکے ہوتے تھے اور انہوں نے ہرایک قاری کی قراءت کے مطابق ایک بارالگ بھی ختم کرلیا ہوئ حتی کہ اگر شخ سے دوخض روایت کے مطابق بھی اگر شخ سے دوخض روایت کے مطابق بھی اگر شخ سے دوخض روایت کے مطابق بھی قادر مانے جاتے تھے اور بچھ لوگوں نے سہل انگاری سے کام لیتے ہوئے اس کی بھی اجازت قادر مانے جاتے تھے اور بچھ لوگوں نے سہل انگاری سے کام لیتے ہوئے اس کی بھی اجازت نے اور خزہ کے گر اء سبعہ میں سے ہرایک قاری کا صرف ایک ختم پڑھنا ہی کافی ہے سوائے نافع اور حزہ کی گر اء سبعہ میں سے ہرایک قاری کا صرف ایک ختم پڑھنا ہی کافی ہے سوائے نافع اور حزہ کی گر وایت کے چارختم پورے کرنا لازی تھا کیفی قالون ورش خلف نافع اور حزہ کی گر وایت کے جارختم پورے کرنا لازی تھا کیفی قالون ورش خلف اور خلا د چاروں راویوں کے ان کی روایتوں سے الگ الگ ختم کرنا ضروری تھی اس کے بعد اور خلاد کو چاروں راویوں کے ان کی روایتوں سے الگ الگ ختم کرنا ضروری تھی اس کے بعد کسی شخص کو تمام قراءتوں کے اکٹھے پڑھنے کی اجازت ملی تھی گی۔

البتة اگر کوئی شخص کی معتبر اور مشتند شخ سے علیجد و علیجد و اور اجتماعی طور پرتمام قراءتوں کی تعلیم حاصل کر چکا ہواور پھروہ نُجاز ہوکراس بات کا اہل بن گیا ہوتو اس کوایک ختم میں تمام قراءتوں کو استرضے کی اجازت ہے اور کوئی ممانعت نہیں 'کیونکہ وہ اختلا فات سے واقف ہے۔

قراءتوں کو یکجا کر کے پڑھنے کا طریقہ

قراءت کے جمع کرنے میں قاریوں کے دوطریقے ہیں:

اق ل: جمع بالحرف ہاوراس کی صورت اس طرح ہے کہ قراءت شروع کی اور جب کسی ایسے کلمہ پر پہنچ جس میں اختلاف ہے تو تنہا ای کلمہ کو ہر ایک روایت کے مطابق بار بار اعادہ کر کے تمام وجوہ کو کمل کر لے بھر اگر وہ کلمہ وقف کے صالح اور اس کے لیے موزوں ہے تو اس پر وقف کے تمام وجوہ کو کمل کرتے ہوئے جہال وقف وقف کر لے اس جگہ وقف کر کے تمام وجوہ اختلاف کو منفصل کا تاہے اس جگہ وقف کر رے تمام وجوہ اختلاف کا احاطہ کرے اور احتلاف وکلموں سے تعلق رکھتا ہے 'جیسے مرمنفصل کا اختلاف تو ایک صورت میں دوسر رے کلمہ پر وقف کر کے تمام وجوہ اختلاف کا احاطہ کرے اور

پھراس کے بعدوالی آیت شروع کی جائے میطریقداہل مصر کا ہے۔

روم: دوسراطریقہ جمع بالوقف ہے وہ اس طرح ہے کہ پہلے جس قاری کی قراءت شروع کی جہا ہے۔ اسے مقام وقف تک پڑھا جائے اور دوسری دفعہ اس آیت کو کسی اور قاری کی قراءت کے مطابق پڑھنا شروع کریں اور اس انداز ہے ہرایک قاری کی قراءت یا وجہ کو باربار آیت کی مطابق پڑھنا شروع کریں اور اس انداز ہے ہرایک قاری کی قراءت یا وجہ کو باربار آیت کی محرار کر کے اواکر تے رہیں جتی کہ سب قراء توں سے فارغ ہو جا کیں نیواہل شام کا ند ہب ہو اور بیطریقہ استحضار کے لیے بہت بہتر ہے اور اگر چہ وقت تو بہت کھا تا ہے کیکن عمدہ ہے اور بیطریقہ استحضار کے لیے بہت بہتر ہے اور اگر چہ وقت تو بہت کھا تا ہے کیکن عمدہ

ابوالحن تبحاطی اپنے تصیدہ کی شرح میں لکھتے ہیں کہ قراءتوں کوجمع کر کے پڑھنے والے قاری کے لیے سات شرطوں کالحاظ رکھنا ضروری ہے جن کا لب لباب حسب ذیل پانچ امور

ين:

- (۱) حسن الوقف
- (٢) حسن الاتبداء
- (٣) حسن الابتداء
- (س) دم الترکیب' یعنی جب کوئی قاری ایک قراءت شروع کرے تو اس کو کمل کیے بغیر دوسرےقاری کی قراءت کی طرف ختقل نہ ہو۔
- (۵) رعایہ الترتیب بیخی قراءت میں ترتیب کالحاظ رکھنا 'اس طرح کہ پہلے ای قراءت سے ابتداء کرنے جس کونن قراءت کی کتابیں تالیف کرنے والے علماء نے اپنی کتابوں میں پہلے بیان کیا ہے چنانچہ پہلے نافع پھر ابن کثیر 'اس کے بعد قالون اور از ان بعد ورش کی قراءت بڑھے۔

گرابن الجزری رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ سے کہ یہ کوئی شرط نہیں ہے بلکہ مستحب ہے باقی رہا ہے مسلمہ کرا ہوں ا ہے باقی رہا ہے مسلمہ کہ قراءت سکھنے کے زمانے میں سبق کے دوران میں کتنی مقدار قرآن پڑھنا ماسر ج

اس سلسلہ میں بات یہ ہے کہ صدراوّل کے علماء نے بھی اور کسی شخص کو دس آیتوں سے زیادہ ایک نشست میں نہیں پڑھائیں البتہ صدراوّل کے بعد اساتذہ اور مشائخ نے پڑھنے

والے کی حسب طافت جس قدروہ یا د کرسکتا تھا'ا تناہی زیادہ یا کم سبق دینا شروع کر دیا تھا۔

فائدهاولي

ابن خیرنے کہا کہاس امریر تمام علاء کا اجماع ہے کہ جب تک کسی شخص کوروایت کرنے کی سند حاصل نہ ہو اس وقت تک وہ رسول اللّٰہ ملی اُللّٰہِم کی حدیث روایت کرنے کا مجاز نہیں۔ ہے۔

اب سوال یہ ہے کہ آیا قر آن کے بارے میں بھی یہی تھم ہے کہ جب تک کسی شخص ہے قر آن کی قراءت نہ سیکھ لی ہو'اس وقت تک کسی شخص کوایک آیت کا بھی نقل کرنا جائز نہیں ہے؟

علامہ سیوطی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: میری نظر سے ایسی کوئی روایت نہیں گزری لہذا اس کی بیدوجہ بجھ میں آتی ہے کہ گوقر آن کے الفاظ ادا کرنے میں حدیث کی بہنست بہت ہی زیادہ احتیاط کی گئی ہے کیونکہ حدیث میں روایت باللفظ شرط ہیں اور قر آن میں لازمی ہے اس کی وجہ بیہ ہے کہ حدیث میں روایت کے لیے اجازت کی شرط لگائی گئی ہے اس لیے ضرورت کی وجہ بیہ ہے کہ حدیث میں روایت کے داخل ہونے کا خوف ہے کہ کہیں لوگ رسول اللہ ملٹی لیا بیا کہ اس میں موضوع اقوال کے داخل ہونے کا خوف ہے کہ کہیں لوگ رسول اللہ ملٹی لیا کے داخل ہونے کا خوف ہے کہ کہیں لوگ رسول اللہ ملٹی لیا کے داخل ہونے کا خوف ہے کہ کہیں لوگ رسول اللہ ملٹی لیا کے داخل ہونے کا خوف ہے کہ کہیں لوگ رسول اللہ ملٹی لیا کے داخل کی شرت سے پائے جائیں گے اور اس طرح وہ متداول رہے گا۔

قائدہ: قراءت سکھانے اور لوگوں کو تعلیم قرآن سے فائدہ پہنچانے کے لیے شخ کی اجازت ا حاصل کرنا ضروری ہے جو شخص اپنے آپ کواس بات کا اہل سمجھتا ہو کہ وہ لوگوں کو قرآن پڑھا ا سکتا ہے خواہ کی شخ سے اجازت یا فتہ ہو یا نہ ہواس کو پڑھانا جائز ہے صدراق ل کے اسلاف اور صلحاء کا یہی دستور رہا ہے اور یہ بات بچھ قراءت ہی کے لیے مخصوص نہیں بلکہ ہم علم کے لیے عام ہے کیا پڑھانے میں اور کیا فتو کی دینے میں بعض غجی لوگ جنہوں نے اجازت اور سند کو شرط قرار دے دیا ہے نیدان کامحض تو ہم ہے اور عام طور سے لوگوں نے سند کی اصطلاح اس لیے مقرر کی ہے کہ اکثر مبتدی لائق اساتہ ہ کوئیں جانتے بہتا نے ہیں گرشا گردی کرنے سے پہلے استاذکی اہلیت اورعلمی قابلیت کا پایا معلوم کر لینالازمی امر ہے'اس لیے کہ اجازت یا سند ایک شہادت اورعلامت ہے' جوشنخ کی طرف سے قابل اجازت طلباء کودی جاتی ہے اور وہ اس کے ذریعے سے اورلوگوں پراپنی اہلیت ٹابت کر سکتے ہیں۔

قرآن پاک کوبه کثرت پڑھنے کا استجاب

کشرت سے قرآن مجید کی قراءت اور تلاوت کرنامتحب ہے اللہ تعالیٰ نے قرآن پاک کا تلاوت کرنے والوں کی تعریف کرتے ہوئے فرمایا: ''یَفَلُونَ 'ایْتِ اللّٰهِ 'انَآءَ اللَّیْلِ'' (آل عمران: ۱۳)'' اللہ کی آیتیں تلاوت کرتے ہیں رات کی گھڑیوں میں 'صحیح بخاری اور مسلم میں ابن عمر رضی اللہ کی حدیث ہے کہ'' دو شخصوں کے سواکسی کے حق میں حسد کرنا جائز نہیں'' ایک میں آئی کی حدیث ہے کہ'' دو قرآن کا علم عطافر مایا ہے اور وہ شب وروز قرآن کا ملم عطافر مایا ہے اور وہ شب وروز قرآن کا ملک کا تلاوت کرتا ہے۔

امام ترندی 'حضرت ابن مسعود رضی الله سے روایت کرتے ہیں کہ' جوشخص کتاب الله کا ایک حرف بھی پڑھے گا'اس کو ہرا کی حرف کے بدلہ میں ایک نیکی کا ثواب ملے گا جو دس نیکیوں کے برابر ہے' ۔حضرت ابوسعید رضی آلله نے روایت کی ہے کہ حضور ملٹی لیکٹی نے فر مایا: رب سجانہ و تعالی فر ما تا ہے: جس شخص کو قرآن اور میراذ کر مجھ سے مانگنے سے روک لے گا'میں اس کو مانگنے والوں کی یہ نسبت بہتراجرعطافر ماؤں گا۔

اور کلام الله کی فضیلت باقی کلامول پرالیی ہے جیسی کداللہ تعالیٰ کی اپنی تمام مخلوق پر۔ امام مسلم نے ابوامامہ سے روایت کی ہے کہ''تم لوگ قرآن کو پڑھو' کیونکہ وہ قیامت کے دن اینے پڑھنے والوں کی شفاعت کرےگا''۔

امام بیمقی ام المومنین حضرت عائشہ رفتی اللہ ہے روایت کرتے ہیں انہوں نے فر مایا کہ "
" جس گھر میں قرآن پاک پڑھا جاتا ہے وہ آسان والوں کواس طرح روشن نظرآتا ہے جیسے زمین والوں کوتارے دکھائی دیتے ہیں'۔

حضرت انس رشی الله بیان کرتے ہیں کہ:

نَوِّرُوْا مَنَاذِلَكُمْ بِالصَّلُوةِ وَقِرَاءَ قِ اپْ گُرول كونماز اور قرآن ك الْقُرُّانِ. برُجنے دوش كرو_

حضرت نعمان بن بشير رضی الله وايت کرتے ہيں "افضل عِبَادَةِ اکْتِنَی قِوَاَهُ الْقُوْانِ" "
"ميری امت کی بهترين عبادت قرآن پاک کی قراءت ہے"۔ حضرت سمرہ بن جندب بيان کرتے ہيں: ہردعوت دینے والے کی دعوت پرلوگوں کا آنا ضروری ہے اور اللہ تعالیٰ کی دعوت دعوت قرآن ہے الہٰ اللہ تعالیٰ کی دعوت دعوت قرآن ہے الہٰ دائم اس خوانِ نعمت کومت جھوڑو۔

قرآن پاک پڑھنے کی مقدار میں اسلاف کامعمول کیا تھا؟

قرآن پاک کی قراءت کی مقدار میں سلف صالحین کامعمول اور طریقہ مختلف ادوار میں مختلف رہائے نیادہ سے زیادہ ان کے قرآن پڑھنے کی مقداریة کی ہے کہ بعض توایک دن اور ایک رات میں آٹھ بار قرآن پاک ختم کر لیتے تھے چار ختم دن میں اور چار ختم رات میں 'پھر ان کے بعدا یسے لوگ تھے جورات اور دن میں چار ختم کیا کرتے تھے وو دن میں اور دورات میں اور ان کے بعد تین ختم اور پھر دو اور پھر ایک ختم قرآن اور کہا گیا کہ اس کے علاوہ بھی میں اور ان کے بعد تین ختم اور پھر دو اور پھر ایک ختم قرآن اور کہا گیا کہ اس کے علاوہ بھی لوگوں کا معمول رہا ہے اور ام الموشین عائشہ رہیں انڈسے منقول ہے کہ ایسا طریقہ اچھا نہیں ہے۔ ابن الی داؤد نے مسلم بن مخراق سے روایت کیا ہے وہ بیان کرتے ہیں کہ میں نے ام الموشین حضرت عائشہ رہی اند سے عرض کی کہ کچھ مردا کی رات میں دویا تین قرآن ن ختم کرتے ہیں 'تو ام الموشین نے فرایا: وہ پڑھیں یا نہ پڑھیں' میں تو رسول اللہ ملی آئی آئی کہ کے ساتھ پوری رات قیام کرتی تھی اور آپ ملی قرآئی ہم سورہ بقرہ 'سورہ آلی عمران اور سورہ نساء پڑھتے تھے' گر رات قیام کرتی تھی اور آپ مائی بیشارت کی آبیت آئی تو دعا کرتے اور اس میں رغبت ظاہر کرتے اور اس طرح کہ جہال کوئی بشارت کی آبیت آئی تو دعا کرتے اور اس میں رغبت ظاہر کرتے اور اگرخون کی آبیت آئی تو دعا کرتے اور اس میں رغبت ظاہر کرتے اور اگرخون کی آبیت آئی تو دعا کرتے اور اس میں رغبت ظاہر کرتے اور اگرخون کی آبیت گردی تی تو دعا کرتے اور اس میں رغبت ظاہر کرتے اور اس کی کرتے ہوں کی آبیت گردی کی آبیت گردی کی آبیت گردی کی آبیت آئی تھے۔

اس کے بعدوہ دور آیا' جس میں لوگ دوراتوں میں ایک قر آن پاک ختم کرتے تھے' ازاں بعد لوگوں کا تین راتوں میں ایک قر آن کممل ختم کرنے کا معمول رہا اور بیرعمدہ اور خوبصورت طریقتہ ہے۔

بہت ی جماعتوں نے تین راتوں ہے کم میں قرآن پاک ختم کرنا مکروہ قرار دیا ہے اور ان حضرات نے ترندی اور الوداؤ د کی اس صدیث سے دلیل پکڑی ہے جسے ان دونوں اماموں نے صحیح قرار دیتے ہوئے حضرت عبداللہ بن عمر دفخ اللہ سے مرفوعاً روایت کیا ہے عبداللہ بن عمر

بيان كرتے ہيں:

بین سکی است بی است کی میں قرآن بیر ہے جو میں دن ہے کم میں قرآن بیر ہے گا یہ فقہ من قرآن بیر ہے گا کہ میں قرآن بیر ہے من فکلاث بیں مجھاور فقاہت حاصل نہیں کرسکتا۔

ابن ابوداؤ د اورسعید بن منصور ابن مسعود و مناللہ سے موقو فا روایت کرتے ہیں انہوں نے فر مایا کہ ' لا تقور افر ان فی افکا مِنْ فکلاث ' قرآن تین دن سے کم میں نہ پڑھو۔
ابوعبید ' حضرت معاذبن جبل و مناللہ سے روایت کرتے ہیں ' حضرت معاذر مناللہ تین دن سے کم میں قرآن کا پڑھنا کمروہ قرار دیتے تھے۔

احدادر ابوعبید نے سعید بن المنذر سے (ان سے صرف یہی ایک حدیث مروی ہے)
روایت کی ہے کہ انہوں نے فرمایا: میں نے رسول الله ملتی فیلیم سے عرض کیا کہ آیا میں تین دن
میں ایک پورا قرآن پڑھ لوں؟ تو حضور ملتی فیلیم نے ارشاد فرمایا: ہاں! اگر تو اتن طاقت رکھتا
ہے۔

اور پھرای درجہ کے لوگ بھی تھے جو چار پانچ 'چھادرسات دن میں ایک ختم کیا کرتے تھے اور پیطریقہ متوسط اور زیادہ خوبصورت ہے اکثر صحابہ کرام اور تابعین رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین کا بہی معمول رہا۔

فر مایا: پھراسے ایک جمعہ (بعنی سات دن) میں پڑھلیا کرؤاس کے بعد آٹھ دن پھر دی دن کور ان کے بعد آٹھ دن پھر دی دن کور ان کور ایک ماہ اور پھر دو ماہ میں ختم کرنے والوں کا دور ہے۔ ابن ابی داؤر نے حضرت کمحول سے روایت کی ہے انہوں نے فر مایا ہے کہ صحابہ کرام میں زیادہ پڑھنے والے بھی قرآن کوسات دن میں ختم کرتے تھے اور بعض ایک مہنے میں بعض دومہینوں میں اور بعض اس سے بھی زیادہ وقت میں ختم کرتے تھے۔ ابواللیث نے ابستان میں کہا ہے کہ وہ زیادہ نہیں تو ایک سال میں قاری کو دومر تبدقر آن یاک ختم کرنا چاہیے۔

اورحسن بن زیاد نے حضرت امام اعظم ابوحنیفه رخی تندکایہ قول مبارک نقل کیا ہے' انہوں نے فر مایا کہ جوشخص سال بھر میں دومر تبہ قرآن پاک ختم کر ہے گا' وہ اس کاحق ادا کر دے گا' کیونکہ حضور ملق کی آئم کی جس سال وصال ہوا' اس میں دومر تبہ جبرائیل علایسلاً کے ساتھ قرآن مجید کا دور فر مایا تھا۔

امام نووی شافعی رحمۃ اللہ علیہ اپنی کتاب'' الاذ کار'' میں لکھتے ہیں: مختار مذہب ہہے کہ ختم قرآن کی مدت لوگوں کے حالات کے اعتبار سے مختلف ہے' چنانچہ جن لوگوں پر دفت نظری سے اورخوب غور دفکر کر کے پڑھنے سے قرآن کے لطا کف اور علوم ومعارف عیاں اور منکشف ہوتے ہیں' ان کو اتنی مقدار ہی قرآن پاک پڑھنا چاہیے' جس سے تلاوت شدہ حصہ کو خوب اچھی طرح سمجھنا ممکن ہو۔

ای طرح جولوگ علم دین کی اشاعت مقد مات کے فیصلوں یا ای نوعیت کے اہم ترین
د بنی مشاغل میں مصروف اور عام دنیاوی دہندوں میں مشغول رہنے ہیں ان کے لیے اس قدر
تلاوت کر لینا کافی ہے 'جو ان کے فرائض منصی اور مصروفیات میں مخل نہ ہواور جن لوگوں کو
فرصت کے لمحات میسر ہوں اور دنیا کے جممیلوں سے فارغ البال ہوں' انہیں جس قدر ممکن ہو
اتن تلاوت کریں' مگریہ خیال رہے کہ پھر بھی ای حد تک کہ جس سے نہ تھکاوٹ ہواور نہ زبان
میں بڑھتے ہوئے کسی قسم کی رکاوٹ پیدا ہونے لگے۔

قر آن مجید کی تلاوت کے آ داب

اور مدیث کر ہے اور مدیث کے لیے وضو کرنامستحب ہے کیونکہ وہ بہترین ذکر ہے اور مدیث

میں آیا ہے کہ حضور ملٹی کی آئی کی حالت میں اللہ تعالیٰ کا ذکر کرنا نا پیندفر ماتے تھے۔

ہ قرآن مجید پاک صاف جگدیں پڑھنامسنون ہاوراس کے لیے سب سے بہتر جگد محد ہے۔ ہے۔ بہتر جگد محد ہے۔ بہت سے علماء نے حمام اور راستوں میں قرآن پاک پڑھنے کو کروہ قرار دیا ہے۔

تلاوت کے وقت قبلہ کی طرف منہ کرنا' سر جھکا کر سکون اور خشوع وخضوع سے بیٹھنا مسنون ہے۔ مسنون ہے۔

تعظیم قرآن اور منه کی صفائی اور پاکی کے ارادہ سے مسواک کرنا بھی سنت ہے۔ امام ابن ماجہ نے حضرت علی کرم اللہ وجہدالکریم سے موقو فا اور بزاز رحمہ اللہ تعالیٰ نے بھی انہی ہے جید سند کے ساتھ مرفو غاروایت کیا ہے:

لَفُوْانِ تمہارے مندقر آن کی گزرگا ہیں ہیں ' لہذاان راستوں کومسواک کے ذریعے صاف ستھرے کرکے رکھا کرو۔

إِنَّ اَفْوَاهَكُمْ طُّرُقٌ لِللَّهُ وَالرِّانِ فَطَيِّبُوْهَا بِالسِّوَاكِ.

جبقر آن پڑھنے کا ارادہ کروتو تلاوت کے شروع میں 'اعو ذب اللّٰہ ''پڑھناسنت ہے۔ اللّٰہ تعالٰی کا ارشاد ہے:

فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرُّانَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطُنِ الرَّجِيْمِ. (الحَل: ٩٨)

﴿ المام نووى رحمة الله عليه فرمات بين: "اعوذ بالله"ك بارك مين صفت مخار" اعوذ بالله من الشيطن الرجيم" بيان كى گئ ہے۔

- اورسلف صالحین کی ایک جماعت سے "السمیع العلیم" کا اضافہ بھی منقول ہے۔
- اعوذ بالله القادر من الشيطن الغادر "كاقول مروى بـ الميطن الغادر" كاقول مروى بـ
- ابوالسمال في اعوذ بالله القوى من الشيطن الغوى "منقول في العض كا تول في أعود أعود بالله العقيم من الشيطن الرّجيم "اور بعض دوسرول في أعُودُ دُو بالله العقيليم من الشّيطن الرّجيم إنّه هُو السّميع الْعَلِيم "منقول في تعوذ مين السّميع الله من السّميع العليم "منقول في تعوذ مين السلام كي اوراقوال بحى واردين -

طوانی اپنی کتاب الجامع میں لکھتے ہیں:

'' استعاذہ کی کوئی ایسی حدنہیں ہے' جس سے تجاوز کرناممنوع ہو' جس کا دل جا ہے اس میں کمی یازیادتی کرسکتا ہے''۔

اس بات کا لحاظ رکھنا بھی ضروری ہے کہ سورہ براُ ق کو چھوڑ کر ہر سورہ کے شروع میں

''بسہ اللّٰہ الرحمن الرحیم ''بڑھے اور بسم اللّٰہ کا پڑھنا اس لیے لازم ہے کہ اکثر
علاء کے نزدیک بیمستقل آیت ہے لہٰڈ ااگر وہ سورت میں داخل بھی جائے گی تو اس کا
تارک علاء کے نزدیک ختم قرآن میں سے ایک حصہ کا تارک ہوجائے گا'ورنہ بصورت
دیگر اگر وہ بسم اللّٰہ کو سورت کے وسط میں بھی پڑھ لے گا تو بھی مناسب ہوگا' جیسا کہ
امام شافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ نے بھی اس بات برصاد کیا ہے۔

امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ نے حضرت انس رئی آٹھ سے روایت کی ہے کہ ان سے حضور ملتی آلیا ہم کی قراء ت کے بارے میں دریافت کیا گیا تو انہوں نے بتایا کہ رسول اللہ ملتی آلیا ہم قراء ت آ واز تھینج کر فرماتے تھے۔ پھرانہوں نے ''بسہ الملہ الموحمن الموحیم '' بسہ الملہ الموحمن الموحیم '' بسہ وا واز کی کشش کے ساتھ پڑھا۔ پڑھ کر سائی اور' اللہ ' الموحمن 'اور' الموحیم '' سب کوآ واز کی کشش کے ساتھ پڑھا۔ کیا مصحح بخاری اور سلم میں ابن مسعود رضی آٹھ سے مروی ہے کہ ان سے کسی محف نے کہا: میں مفصل (قرآن) کو ایک ہی رکعت میں پڑھا کرتا ہوں۔ حضرت ابن مسعود رضی اللہ نے فرمایا: جیسے شعروں کو جلد جلد پڑھتے ہیں؟ بے شک بعض لوگ ایسے ہیں' جوقرآن کو پڑھتے میں اثر تا ۔کاش!اگرقرآن دل میں اثر تا بڑھتے ضرور ہیں' مگروہ ان کے حلق سے نیخ ہیں اثر تا ۔کاش!اگرقرآن دل میں اثر تا علامہ آجری حملۃ القرآن میں لکھتے ہیں:

حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ سے مروی ہے انہوں نے فر مایا: نہتم اسے باد بان مشکی کی طرح بھیلا و اور نہ اشعار کی طرح سمیٹو اس کے عجائب پررک کرسو چواور دلوں کوجھنجھوڑ واور آخرسورت تک بہنچنے کی فکر نہ کروائی راوی نے حضرت ابن عمر رضی اللہ سے مرفو عاروایت کی ہے کرقر آن مجید پڑھنے والے سے قیامت کے دن کہا جائے گا: پڑھتا جا' چڑھتا جااور جس طرح دنیا میں ترتیل سے پڑھتا تھا' اس طرح یہاں بھی مخمر مخمر کر پڑھ' بے شک بہشت میں تیری منزل وہاں ہوگی' جس جگدتو آخری آیت کی قراءت کرے گا۔

آجری کی شرح مہذب میں ہے کہ علاء نے کھا ہے کہ زیادہ تیزی سے قرآن مجید پڑھنا الا تفاق کروہ ہے نیز علاء فرماتے ہیں کہ ایک پارہ ترتیل کے ساتھ پڑھنا 'اتنے ہی وقت میں دو پارے بغیر ترتیل کے پڑھ لینے سے افضل ہے۔ علاء کا یہ بھی قول ہے کہ ترتیب کے ساتھ قرآن پڑھنااس وجہ سے مستحب ہے کہ اس سے قرآن پڑھنے والے کوغور وفکر کرنے کا موقع ماتا ہے علاوہ ازیں تھم کھم کر پڑھنا عظمت اور تو قیر کی علامت ہے اور اس سے دل میں اثر بھی زیادہ ہوتا ہے۔ اس بارے میں اختلاف ہے کہ آیا ترتیل کے ساتھ تھوڑی مقدار پڑھنا زیادہ فضیلت رکھتا ہے یا تیز تیز زیادہ مقدار پڑھنا افضل ہے؟

ہمارے علماء نے اس کا بہت خوبصورت جواب دیا ہے وہ فرماتے ہیں کہ ترتیل کے ۔ حاتھ قراءت کا ثواب تعداد میں ۔ حاتھ قراءت کا ثواب درجہ کے اعتبار سے زیادہ ہے اور زیادہ مقدار پڑھنے کا ثواب تعداد میں زیادہ ہے کیونکہ ہرحرف کے بدلے میں دس نیکیاں ملتی ہیں۔

زرکشی کی کتاب البر ہان میں لکھاہے:

تر تیل کا کمال بیہ ہے کہ اس کے الفاظ پُر کر کے ادا کیے جائیں اور ایک حرف کو دوسرے سے جدا کر کے پڑھا جائے اورکسی حرف کو دوسرے میں داخل نہ کیا جائے۔

بعض نے کہا ہے کہ یہ تو ترتیل کا اونیٰ درجہ ہے'اس کا اعلیٰ درجہ یہ ہے کہ قرآن مجید کی قراءت اس کے مقامات ِنزول کے لحاظ ہے کی جائے' یعنی جس مقام پر دھمکی دی گئی ہے اور خوف دلایا گیا ہے' وہاں اسی طرح کی آ واز پیدا کی جائے اور جس جگہ تعظیم کا موقع ہے' وہاں پڑھنے والے کے لب ولہجہ سے عظمت وجلالت کا انداز مترشح ہو۔

قرآن پاک پڑھتے وقت اس کے معانی میں تدبر کرنا اور اس کے مطالب کو بجھنے کی

کوشش کرنا بھی سنت ہے' کیونکہ قر آن پڑھنے کا مقصد عظیم اور اہم ترین مطلوب اس کے مفہوم کو سمجھنا ہے' اس سے شرح صد در ہوتا ہے اور قلوب میں نور پیدا ہوتا ہے۔

الله تعالى فرما تا ہے: "كِتْبُ اَنْزَلْنَا اللهُ اللهُ مَبْرُكَ لِيَدَّبَرُوْ آ اللهِ "(ص:۲۹)" (يه قرآن) بركت والى كتاب ہے جوہم نے آپ كی طرف نازل فرمائی تا كه وه اس كی آيوں ميں غور كريں "دوسرى آيت ميں فرمايا: "أفكر يَشَدَبَّوُوْنَ الْقُورِ "انَ "(النه:۸۲) پس كيابيد لوگ قرآن ميں غورنيس كرتے۔

تد برکا مطلب یہ ہے کہ جوالفاظ تلاوت کر رہا ہے' ان کے معانی میں ول سے غور وَکُر کرے اور اس کرے اور اس کرے اور اس کرے اور اس کرے اور اس کرے اور اس کے معنی کو مجھ کر گزرے قرآن کے اوامر و نواہی میں تامل کرے اور اس بات پر یقین رکھے کہ بیتمام احکام قابل تسلیم ہیں' نیز گذشتہ زمانے میں جو کوتا ہی ہوگئی ہو' اس سے معذرت کرتے ہوئے بخشش مائے 'کسی رحمت کی آیت پر سے گزر ہو تو خوش ہوا ور سوال و دعا کرے اور عذا ہے تو ڈرے اور پناہ مائے 'اللہ تعالیٰ کی تنزیبہ کا ذکر آئے تو اس کی عظمت اور تقدیس کو بیان کرے اور دعا کا مقام آئے تو عاجزی کے ساتھ اپنی حاجات اس کی عظمت اور تقدیس کو بیان کرے اور دعا کا مقام آئے تو عاجزی کے ساتھ اپنی حاجات اللہ کی بارگاہ میں بیش کرے اور اس سے مراد طلب کرے۔

امام سلم رحمة الله تعالی علیہ نے حضرت حذیفہ رضی کنٹہ سے روایت کی ہے وہ فر ماتے ہیں کہ ایک رات میں نے رسول الله ملی آئی آئیم کے ساتھ نماز پڑھی 'آپ نے سورہ بقرہ شروع فر مائی اور فر مائی اور فر می ناور پوری پڑھ لی 'چرسورہ النساء شروع کی اور فر مائی اور پوری پڑھ لی 'چرسورہ النساء شروع کی اور ختم کی 'آ پ تر تیل کے ساتھ پڑھتے تھے 'جب کسی ایسی آ بیت پر پہنچتے جس میں شہیج باری تعالی کاذکر ہوتا تو سجان اللہ کہتے 'سوال و دعا والی آ بیت آتی تو خدا کی بناہ میں آنے کی دعا کرتے ۔

تدبر کی ایک صورت به ہے کہ قرآن پڑھنے والا اس کے حسب تقاضا اس کی نداء کا جواب دے اس بات کی طرف حدیث میں بھی اشارہ ہے جیسا کہ ابوداؤد اور ترندی نے روایت کیا ہے کہ جو شخص سورہ ' وَ التّیْبُ وَ النّزیْتُ وَ نِ ' (التین: ۱)' قتم انجیر کی اور زیتون کی ' آخر تک پڑھے تواسے اختام سورت پر کہنا چاہیے: '' بَد لٰی وَ آنَا عَلٰی ذَالِكَ مِنَ الشّاهِدِیْنَ ' اور جو شخص سورہ ' لَا اُقْسِمُ بِیَوْمِ الْقِیَامَةِ '' (القیام: ۱)' میں شم فرما تا ہوں قیامت کے دن اور جو شخص سورہ ' لَا اُقْسِمُ بِیَوْمِ الْقِیَامَةِ '' (القیام: ۱)' میں شم فرما تا ہوں قیامت کے دن

كَن كو يرشهاور آخريعن "أليس فلك بيقادر على أن يُتُحيى الْمَوْتَى "(القيام: ٥٠)
"كياده مرد انده كرن پرقادر نبين "ك يرشه توده كه: "بلى "(يعني كيول نبيس بلاشبه الله تعالى مردول كوزنده كرن پرقادر به) اور جوشخص سوره والمرسلات كو فباي حديث بعدة و يُوْم و يُوْم و يُوْن "(الرسلات: ٥٠)" بهركون ي بات براس (قرآن) كه بعدوه ايمان لا ميسك "كوف يرشي الله يرسي الله يرسي الله يرسي الله يرسي الله "لعن بم الله برايمان لائے "

امام احد اور ابوداؤ دحضرت ابن عباس و في الله على "روايت كرتے بيل انہول نے فر مايا كر حضور مل الله الله الله على "(الاعلى: ١)" باكى بيان فر ماية الله على "روايت كرتے تو فر ماتے تھے: "سبحان دبى الاعلى" " مرب كى جوسب سے بلند ہے" كى قراءت كرتے تو فر ماتے تھے: "سبحان دبى الاعلى" " ماك ہے مير ارب جو بلند ہے" -

امام ترندی اور حاکم حضرت جابر و بی آند سے روایت کرتے ہیں انہوں نے فر مایا کہ ایک مرتبہ رسول اللہ ملٹی آئی ہم صحابہ کے ساتھ تشریف لے گئے اور ان کو سورہ الرحمٰن اوّل سے آخر تک پوری پڑھ کرسائی محابہ کرام س کرچپ رہے تو حضور ملٹی آئی ہم نے ان کی خاموثی کود کی کر مایا: میں نے یہ سورت جب جنات کی قوم کے سامنے تلاوت کی تو انہوں نے اس کا تمہاری بنسبت بہت اچھا جواب دیا تھا' جب بھی میں آیت مبارکہ' فَبائِی 'الآءِ دَبِّکُ مَا تُکلِّدِ بَانِ 'نَو اے جن وانس! تم اپ رب کی کن کن نعمتوں کو جمثلاؤ گئے' پر پہنچا تو جن رازمن: "ان کہ بنجا تو جن میں آیت مبارکہ فلک الْحَمَدُ 'اے بہارے رب کریم! بم تیری نعمتوں میں سے کی نعمت کی تکذیب نہیں کر سکتے ' تیراشکر ہے' سب تعریفیں تجھ کی کوزیب ہیں۔

ابن مردویهٔ دیلی اورابن افی الدنیانے کتاب الدعاء میں ایک نہایت ضعیف سند کے ساتھ حضرت جابر رشی اللہ ہے۔ دوایت کی ہے کہ حضور ملی کی آئی ہے آیت مبارکہ 'وَإِذَا سَالَكَ عِبَادِیُ عَبَادِیُ عَبَادِیُ عَبَادِیُ عَبَادِیُ عَبَادِی فَاتِیْ فَوِیْبُ ''(البقرہ:۱۸۱)' اور (اے حبیب!) جب میرے بندے میرے بارے میں آپ سے دریافت کریں تو (آپ فرمادیں کہ) بے شک میں (ان کے) قریب ہوں' پر میں اوراس کے بعد اللہ کی جناب میں عرض کیا:

اےمیرے اللہ! تونے دعا کرنے کا

ٱللُّهُمَّ اَمَرُتَ بِاللُّهُعَاءِ وَتَكَفَّلْتَ

بِالْإِجَابَةِ لَبَيَّكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ لَاشُويْكَ امرديا اورايية ذمه كرم يرليا كهاس كوقبول لَكَ لَبَيْكَ إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ فَرمائ كَا مِن حاضر مول الا الله! مِن فَرْدٌ أَحَدٌ صَمَدٌ لَمْ تَلِدُ وَلَمْ تُولَدُ وَلَمْ فَوْلَدُ وَلَمْ فَعْت اور شكر تيرك لي بي اور تيري بي يَكُنْ لَكَ كُفُوًا أَحَدٌ وَأَشْهَدُ أَنَّ وَعُدَكَ الدات الله عَمْ تيراكوني ساجهي نبين مين شهاوت حَتْ وَالسَّاعَهُ اليَّكَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا اورنه بينا اوركوئي تيرا بمسرنهين بي مين وَإِنَّكَ تَبُعَثُ مَنْ فِي الْقُبُورِ.

وَ الْمُلْكَ لَا شَوِيْكَ لَكَ أَشْهَدُ آنَكَ عاضر مول تيرا كوئى شريك نبيس به شك حَتَى وَلِلْقَائِكَ حَقٌ وَالْجَنَّةُ حَقٌّ وَالنَّارُ ويتا مول كه تو ايك ہے ، تو نه كى كا والد ہے ا شہادت دیتا ہوں کہ تیرا دعدہ سیا ہے جنت اور دوزخ حق ہیں اور قیامت آنے والی ہےاوراس میں شک کی کوئی گنجائش نہیں ہے کہ تو ضرور قبروں ہے مردوں کوزندہ فر ماکن اٹھا۔ ئے گا۔

ابوداؤ داور دوسر ہے محدثین وائل بن حجر ہے حدیث نقل کرتے ہیں' انہوں نے بیان کیا' ے كديس نے رسول كريم ملتَّ وَيَتِهِم كوسنا أَبِ ملتَّ وَيَتَهِم فِي يَرْها: "ولا البضالين" اوراس كے بعد آ یا نے کشش صوت کے ساتھ'' آمین'' فر مایا اور قر آن کی نداء کا جواب دینے کے یہی معنی ہیں۔

طبرانی کی روایت میں' فَالَ 'امِینَ ثَلَاتُ مَوَّاتٍ ''کے الفاظ میں کینی آپ مِنْ مُیْلِیمُ نے تین مرتبہ آمین فرمایا۔

اورامام بیمق سے یک حدیث فیال رَبّ اغْفِرْلِی آمین "" کہا: اے میرے ربال میری مغفرت فرما' آمین' کے الفاظ کے ساتھ مروی ہے۔

علامه نووي شافعي رحمة الله عليه فرمات بين:

تلاوت قرآن كآداب الكبات يبي كدجب آيت مباركة وقالب النهود عُنوَيْرٌ وَابْنُ اللَّهِ "(التوبه: ٣٠)" اور يبود في كها: عزير الله كابينا ب "اورآيت" وقللت الْيَهُودُ دُيدُ اللّهِ مَغْلُولَهُ" (المائدة: ١٣) أوريبوديون في كما: الله كاماته بندها موات عنا اس قتم کی دیگر آیات کی قراءت کرے تو قاری کو چاہیے کداپی آواز پست اور آہتہ کرے۔ چنانچہ امام نخی رحمۃ اللہ علیہ ایسے موقع پرایسا ہی کرتے تھے۔

تلاوت قرآن مجید کے وقت (مناسب جگه) رونامتخب ہے اور جس شخص کو رونا نہ آئے تو زبردتی رونی صورت بنالے سوز وگداز اور حزن و ملال کا اظہار بھی ٹھیک ہے۔
اللہ تعالی فرما تا ہے: '' وَ یَسِخِوْنُ لَلْاَذْ فَعَانِ یَبْ کُوْنَ '' (بی اسرائیل:۱۰۹) اور وہ گریہ گناں منہ کے بل گریڑتے ہیں۔
گناں منہ کے بل گریڑتے ہیں۔

- امام بیہ قی نے اپی کتاب "شعب الایمان" میں حضرت سعد بن مالک سے مرفوعاً حدیث نقل کی ہے کہ بے شک بیقر آن پاک رنج اورغم کے ساتھ نازل اورائے اس لیے جب تم اس کی تلاوت کروتو گریے زاری کرواور اگر گریے طاری نہ ہوتو رو نے والے جیسی صورت بنالواور اس کتاب میں عبد الملک بن عمیر سے بیصد یث مرسلاً روایت کی گئی ہے کہ حضور ملتی فیل آئی ہے نے فر مایا: میں تمبارے سامنے ایک سورت کی تلاوت کرتا ہوں 'جوخص اسے من کرروئے گا'اس کے لیے جنت ہے'اگرتم کورونا نہ آئے تو جت کلف رونی شکل بنالو۔
- ان پڑھتے ہوئے مگین ہوجایا کرو کیونکہ قرآن پڑھتے ہوئے مگین ہوجایا کرو کیونکہ قرآن پڑھتے ہوئے مگین ہوجایا کرو کیونکہ قرآن پڑھتے ہوئے مگین ہوجایا کروکیونکہ قرآن پڑھتے ہوئے مگین ہوئے ہوئے کہ تو اس کروکیونکہ تو ہوئے کہ تو اس کروکیونکہ تو اس کروکیونکہ تو ہوئے کہ تو ہوئے کہ تو ہوئے کہ تو ہوئے کہ تو ہوئے کہ تو ہوئے کہ تو ہوئے کہ تو ہوئے کہ تو ہوئے کہ تو ہوئے کہ تو ہوئے کہ تو ہوئے کہ تو ہوئے کر تو ہوئے کہ تو ہوئے کر تو ہوئے کہ تو ہوئے کہ تو ہوئے کہ تو ہوئے کہ تو ہوئے کہ تو ہوئے کہ تو ہوئے کہ تو ہوئے کہ تو ہوئے کر تو ہوئے کر تو ہوئے کہ تو ہوئے کہ تو ہوئے کر تو ہوئے کہ تو ہوئے کر تو ہوئے کر تو ہوئے کہ تو ہوئے کر تو
- ہے۔ طبرانی کی روایت میں ہے کہ حسن قراءت سیہ ہے کہ قاری قراءت در دناک اورغم ناک لہجہ میں کرے۔
- شرح مہذب میں کہا گیا کہ رونے کی قدرت حاصل کرنے کا طریقہ یہ ہے کہ تہدید

 (دھمکی) وعیدشد ید (عذاب کی خبر) اور عہد و میثاق والی آیات کی تلاوت کرتے وقت

 ان میں غور وفکر کرے اور سوچ کہ مجھ سے کہاں کہاں کوتا ہی ہوئی اور اگر ان تہدیدات '

 (دھمکیوں) اور اُخبار عذاب پر بھی اسے رونا نہیں آتا تو پھر اس کواپنی اس سنگ دلی اور

 بر بختی پر پھوٹ پڑنا جا ہے کہ میں تو پھر سے بھی گیا گزرا انسان ہوں ' واقعی یہ بڑی

مصیبت ہے کہ انسان اور رونانہ آئے۔

خوبصورت آواز سے قرآن پڑھناسنت ہے۔ قراءت قرآن میں تحسین صوت اور لہجد کی تزیمن و آرائی پردلیل کے طور پر بیحدیث پیش کرنا کافی ہے جے ابن حبان اور دوسرے محدثین نے روایت کیا ہے۔ حدیث میں فرمایا گیا ہے کہ ذیّت و الْقُوْ ان بِاصُو اَتِکُمْ " محدثین نے روایت کیا ہے۔ حدیث میں فرمایا گیا ہے کہ ذیّت و الْقُوْ ان بِاصُو اَتِکُمْ " مروی ہے قرآن کوزینت دو۔ سنن دارمی میں بیروایت بالفاظ ' حسنو االْفُو ' ان باصُو اَتِکُمْ ' مروی ہے قرآن کواپی آواز سے حسن بخشو۔ کیونکہ خوبصورت آواز سے قرآن کا حسن دو چند ہوجاتا ہے۔ ' فَانَ الْصُوْتَ الْحَسَنَ يَزِیدُ الْقُوْ ان حُسنًا '' ، فرآن کا حسن دو چند ہوجاتا ہے۔ ' فَانَ الْصُوْتَ الْحَسنَ يَزِیدُ الْقُوْ ان حُسنًا '' ، خوبصورت آواز (سے پڑھنا) قرآن کی دیث ' حُسنُ الْصُوْتِ زِینَهُ الْقُوْ ان '' ' خوبصورت آواز (سے پڑھنا) قرآن کی زینت ہے ' کے الفاظ میں روایت کی ہے 'اس کے متعلق اور بھی بہ کثرت احادیث صحیحہ وار دہوئی ہیں۔

اور اگر کوئی شخص خوش آواز نہ ہوتو جس قدر ہو سکے آواز میں خوش الحانی پیدا کرنے کی سعی کرئے مگراس حد تک نہ جائے کہ گاتا نغمہ سرائی کرتا ہوا معلوم ہو۔

خوش الحان طریقے پر قرآن پڑھنے کے متعلق ایک حدیث میں یوں آیا ہے: (ترجمہ:)
تم لوگ قرآن کو عرب کے لیجول اوران کی آواز میں پڑھا کرواوراہل کتاب (یبودونساریٰ)
اور فاسقوں کے لیجہ سے پر ہیز کرواور عنقریب زمانہ میں بہت سے لوگ ایسے ظاہر ہوں گئے جو
قرآن کورا ہوں اور گویوں کی مانند پڑھیں گے اور قرآن ان کے حلق سے پنچ نہیں اترے گا'
ان کے دل خوش فہمی میں مبتلا ہوں گئ اس طرح ان لوگوں کے دل بھی جوان کی حالت پرخوش
ہوئے ہوں گئے دہ بھی دھو کا میں مبتلا ہوں گئے۔ (طبرانی وییق)

علامه نو وی فر ماتے ہیں:

حدیث تیجے کی رو سے خوش آ واز قاری سے قراءت کی درخواست کرنا اور اسے دھیان سے سننامستحب ہے' ایک جماعت کا قراءت میں اجتماع اور دور کے ساتھ قراءت کرنا'ان دونوں باتوں میں کوئی مضا کقہ نہیں۔ دوریہ ہے کہ پچھلوگ ایک حصہ پڑھ لیں' پھر دوسر بعض لوگ باقی پچھ حصہ کی قراءت کرلیں تواس میں کوئی حرج نہیں ہے۔

الله قرآن پاک "تفخیم" کے ساتھ پڑھنامتحب ہے اس کی دلیل حاکم کی ہے حدیث ہے کہ انول القرآن بالتفحیم" قرآن کا نزول 'تفخیم" کے ساتھ ہوا ہے۔

علیم "تفخیم" کامغہوم واضح کرتے ہوئے لکھتے ہیں:

اس کامعنی ہے ہے کہ قرآن پاک مردوں کی طرح پڑھے اس میں عورتوں کے کلام جیسی لوچدار آ واز نہ نکالے اور اس امر میں'' امالہ'' کی کراہت کا کوئی داخل نہیں' جو کہ بعض قراء کا مختار ہے اور ممکن ہے کہ قرآن کا نزول'' تہ فی حیم ''بی کے ساتھ ہوا ہوا ور بعد میں اس بات کی رخصت دے دی گئی ہو کہ جس لفظ کا امالہ کرنا قراء ت میں اچھا ہو'اس کا امالہ کرلیں۔

اونجی آواز ہے قراءت کرنے کا بیان

الی احادیث به کثرت آئی ہیں'جواس امر کی متقاضی ہیں کہ قراءت بلند آواز ہے کرنا متحب ہے'اور دوسری طرف بعض حدیثوں ہے آ ہتہ آواز میں قراءت کرنے کا استجاب ثابت ہوتا ہے۔

پہلے امر کے متعلق سیح بخاری اور مسلم کی بید حدیث ہے: اللہ تعالیٰ کسی شے کواس طرح نہیں سنتا 'جس طرح خوش آ واز نبی کے خوش الحانی کے ساتھ بلند آ واز میں قر آ ن پڑھنے کوسنتا ہے دوسرے امر کے متعلق ابوداؤ د'تر ندی اور نسائی کی بید حدیث بہ طور دلیل پیش کی جاتی ہے کہ بلند آ واز میں قر آ ن پڑھنے والا علانیہ صدقہ دینے والے کی مثل ہے اور آ ہستہ قراءت کرنے والا یوشیدہ طور پرصد قہ کرنے والے کی طرح ہے۔

امام نووی رحمة الله علیه فرماتے ہیں: مذکورہ بالا ان دوحدیثوں میں تطبیق یول ممکن ہے کہ جس جگه ریا کاری کا اندیشہ ہو' وہاں آ ہت قراءت کرنا افضل ہے یا بلند آ واز میں پڑھنے سے نمازیوں یاسونے والوں کواذیت پہنچی ہوتو وہاں آ ہت پڑھنا بہتر ہے۔

اور جہر (بلند آواز) سے پڑھنا'اس کے علاوہ صورتوں میں ہے کیونکہ عمل اس میں زیادہ ہوتا ہے کھرخود قاری کا قلب بھی بیدار ہوتا ہے کھرخود قاری کا قلب بھی بیدار ہوتا ہے اور اس لیے بھی کہ اس کی توجہ جمع رہتی ہے اور اسے اپنی قراءت سننے کی مصروفیت نیند نہیں

آنے دیں اوراس کی چستی بڑھتی رہتی ہے۔ان دونوں حدیثوں کو جمع کرنے اوران کے مابین تطبیق دینے کے عمل کی تائیداس حدیث سے ہوتی ہے جس کو ابوداؤ دیے تھے سند کے ساتھ حضرت ابوسعید رہی آئید سے روایت کیا ہے کہ رسول اللہ ملٹی کیا ہے مسجد میں اعتکاف کی حالت میں تھے کہ آپ نے گھلوگوں کو بلند آواز میں قراءت کرتے سنا اس پر آپ نے پردہ اٹھا کر ارشاد فر مایا: سنو! تم میں سے ہر آدی اپنے رب سے مناجات کرنے والا ہے کہذا ایک دوسرے کو اذیت نہ دواور قراءت میں ای آ وازیں اونجی نہ کرو۔

بعض علاء کا قول ہے کہ متحب طریقہ یہ ہے کہ پچھ قرآن پاک کا حصہ آہتہ اور پچھ
حصہ بلندآ واز سے پڑھ لیا جائے 'اس کا فائدہ یہ ہوگا کہ آہتہ پڑھنے والا بعض اوقات
پریشان ہو جاتا ہے اور وہ بلند آواز سے پڑھنا پبند کرتا ہے 'ای طرح بلند آواز میں
پڑھنے والا جب اکتاب محسوس کرتا ہے تو وہ چاہتا ہے کہ داحت حاصل کرے اور اس
طرح پڑھنے کی کیفیت بدل کرآ رام حاصل کیا جاسکتا ہے۔

مصحف میں دیکھ کریڑھنے کابیان

حفظ کی بناء پرزبانی پڑھنے کی نسبت قرآن پاک میں سے دیکھ کر پڑھناافضل ہے کیونکہ قرآن پاک کا دیکھنا بھی ایک عبادت مقصودہ ہے۔ امام نو وی شافعی فرماتے ہیں:

ہمارے اصحاب (شوافع) کا یہی قول ہے اور سلف صالحین بھی یہی کہتے تھے' میں نے نہیں دیکھا کہ کسی کہتے تھے' میں نے نہیں دیکھا کہ کسی نے بھی اس بارے میں اختلاف کیا ہو' علامہ نو وی کہتے ہیں اور اگریوں کہا جاتا تو زیادہ اچھا ہوتا کہ اس بارے میں لوگوں کے مختلف ہونے کی وجہ مختلف تھم ہیں۔ جس شخص کا خشوع اور تد برمصحف میں دیکھ کر پڑھنے کی حالت میں اور حفظ کی بناء پر زبانی پڑھنے کی حالت میں دونوں طرح سے مکسال رہتا ہے۔ اس کے لیے قرآن پاک سے دیکھ کر پڑھنا مضل ہے۔

اورجس شخص کے خشوع وخضوع میں زبانی پڑھنے میں دیکھ کر پڑھنے کی ہنبت زیادتی اور اضافہ ہوتا ہے'اس کے لیے زبانی پڑھنا ہی افضل ہے اور تطبیق کا پیطریقہ بہت اچھا ہے۔

علامه سيوطي رحمة الله عليه فرمات يين:

مصحف میں دیکھ کر پڑھنے کا ثواب زیادہ ہونے کی دلیل وہ حدیث ہے جس کوطبرانی اور امام بیبلق نے'' شعب الایمان''میں اوس انتقلی سے مرفوعاً نقل کیا ہے کہ زبانی پڑھنے کا ثواب ایک ہزارور ہے اور قرآن پاک میں دیکھ کرقراءت کرنے کا اجروثواب دو ہزار درج

ابوعبید نے ایک کمزورسند کے ساتھ روایت بیان کی ہے کہ'' مصحف میں و کھے کرقر آن کے پڑھنے کوزبانی قرآن پڑھنے پروہی فضیلت حاصل ہے جوفرض کونفل پر ہوتی ہے'۔امام بہتی نے حضرت ابن مسعود رفی کا تشہ ہے مرفو عاروایت کی ہے کہ' مَنْ سَسرؓ ہُ اَنْ یُسِجِبُّ اللّٰهُ وَرَسُولٌ لُهُ فَلْیَقْرَا فِی الْمُصْحَفِ ''جس شخص کا دل اللہ اور رسول کی محبت سے خوش ہوتا ہے' اس کو جا ہے کہ دکھے کرقر آن پڑھے۔ بہتی نے کہا کہ بیصدیث مسکر ہے۔

پر بیہ قی ہی نے ایک حسن سند کے ساتھ انہی ہے موقو فاروایت بیان کی ہے:

أَدِيْمُو النَّظُرَ فِي الْمُصْحَفِ. بميشمصحف مين د كمير راها كرو-

اور آ داب قراءت میں سے ایک بات بیہ سی ہے کہ جب قاری پڑھتے پڑھتے گھراکر بھول جائے اوراس کو بھے نہ آ رہی ہو کہ اس کے بعد کون می آ یت پڑھنی ہے 'پھر وہ اس مقام کے بارے میں کسی دوسر شخص سے پو چھے تو اس شخص کوا دب سے بتا نا چاہیے 'کے ذکہ ابن مسعود نخعی اور بشیر بن ابی مسعود سے مردی ہے 'وہ فر ماتے ہیں کہ جب تم میں سے ایک شخص اپنے بھائی سے کسی آ یت کے متعلق سوال کر ہے تو اس کو چاہیے کہ اس سے بہلی آ یت پڑھ کر چپ ہو جائے اور بینہ کہے کہ فلال فلاں آ یت کیے ہیں؟ کیونکہ اس طرح کہنے ہے اس کو اشتہاہ گھے گا۔

قراءت کے آ داب میں ہے ایک بات یہ بھی ہے کہ ترتیب کے مطابق قر آ ن کو پڑھا جائے۔ شرح المہذب میں یہ قول ہے کہ صحف کی موجودہ ترتیب حکمت پر بہنی ہے 'لہذا اس ترتیب کا کھا ظرکھنا چا ہے اور سوائے ان حالتوں کو جو شرعاً ثابت ہیں' کسی صورت میں بھی ترتیب کا کھا ظرکھنا چا ہے اور سوائے ان حالتوں کو جو شرعاً ثابت ہیں' کسی صورت میں بھی ترتیب کو چھوڑ نا در ست نہ ہوگا' جیسے مثلاً جمعہ کے دن فجر کی نماز میں سورہ'' الکے میں تو نیو گئا آئی ''پڑھنا اور اس طرح کی اور بھی مثالیس ہیں' اس لیے کہ اگر

سورتوں میں تفریق کردی جائے یاان کو برعکس پڑھا جائے تو بیہ جائز تو بے شک ہے گر افضل طریقے کا ترک لازم آتا ہے۔

نیز لکھتے ہیں کہ رہی ہے بات کہ ایک ہی سورت کو آخر کی جانب سے اوّل کی طرف الٹا پڑھنا' تو یہ بالا تفاق سب کے نزدیک ممنوع ہے کیونکہ اس انداز پر پڑھنے سے قرآن حکیم کا اعجاز اور ترتیب آیات کی حکمت فوت ہو جاتی ہے۔

صاحب شرح المهذب فرماتے ہیں: میں کہتا ہوں کہ اس کے متعلق ایک'' اڑ'' بھی وارد ہے' جس کو علامہ طبرانی نے '' سند جید' کے ساتھ حضرت عبداللہ بن مسعود رفخاللہ ہے روایت کیا ہے: '' اِنّهُ سُئِلَ عَنْ رَّجُلٍ یَفُوا الْقُورُ اَنَ مَنْکُوسًا قَالَ ذَاكَ مَنْکُوسُ الْقُلْبِ'' حضرت ابن مسعود رفخاللہ ہے ایک ایسے مخص کے متعلق سوال کیا گیا' جوقر آن پاک کو تر تیب کے خلاف النی طرف کو پڑھتا ہوتو انہوں نے جواب دیا کہ اس محض کا قلب بہک گیا ہے کہ جیک کو جا تا ہے (یعنی وہ دل کا اندھا ہے کہ اوندھا چلا ہے)۔

اورا یک سورت کو دوسری سورت کے ساتھ مخلوط کر کے پڑھنے کا کیا تھم ہے؟ تواس کے بارے میں صلیمی کا قول یہ ہے کہ اوب بہی ہے کہ اس انداز کوترک کردے اس کی دلیل وہ صدیث ہے جس کو ابوعبید نے حضرت سعید بن المسیب سے روایت کیا ہے کہ ایک مرتبہ حضور مُلِیَّ کیلیا ہے کہ ایک مرتبہ حضور مُلِیَّ کیلیا ہے کہ ایک سے گزرے اس وقت حضرت بلال وہی الله سے گزرے اس وقت حضرت بلال وہی الله می کہا ہے اس سورت سے لیے تھے اور پچھ وہی کہ کھا اس سورت سے لیے تھے اور پچھ دوسری سورت سے اس کے بعد آ ہے می ایک ارشا دفر مایا:

اے بلال! میں نے گزرتے ہوئے تہیں ایک سورت کے حصہ کو دوسری سورت کے حصہ سے خلوط کر کے قراءت کرتے ہوئے سناتھا' بلال نے عرض کی: یارسول اللہ! میں ایک پاکیزہ چیز کو پاکیزہ چیز کے ساتھ ملاتا ہوں' حضور ملٹی آئیل نے فر مایا:'' اِقْ رَاءَ اللّٰہ وَرَةَ عَلَى وَجْهِهَا اُوْ قَالَ عَلَى نَحْوِهَا' بیرحدیث مرسل اور سی ہے۔ ابوداؤد کے نزدیک بید صدیث حضرت ابو ہریرہ وشی اللہ سے سوائے آخری حصہ کے موصول حدیث ہے۔

ابوعبید نے اس حدیث کی تخ تا ایک اور طریقه پرعفرہ کے مولی عمر سے بھی کی ہے کہ

توابن سیرین نے جواب دیا کہم میں سے ہر مخص کولاشعوری طور پر بھی اس قتم کے بڑے گناہ سے بچنا جا ہے۔

کہ حضرت ابن مسعود رضی اللہ ہے مروی ہے انہوں نے فر مایا: جب تم کوئی سورت پڑھنا شروع کرؤ پھراس کوچھوڑ کرکسی دوسری سورت کی طرف منتقل ہونے کا ارادہ ہوتو سورہ ''فُلُ هُوَ اللّٰهُ اَحَدُ '' (الاخلاص:۱)'' آ ہفر ماد یجئے: وہ اللّٰہ ہُوَ کہا'' کی طرف پھر جاواور جب سورہ اخلاص:) کوشروع کروتو پھراس کو کممل کیے بغیر کسی اور سورت کوشروع نہ کروتو

ابن ابی الحذیل سے بیروایت کی ہے کہ ان کا قول ہے: صحابہ کرام علیہم اجمعین اس بات کونا پند کرتے تھے کہ کوئی شخص آیت کا بعض حصہ پڑھ کر باقی حصے کوچھوڑ دے۔

ابوعبیدنے کہاہے کہ ہمارے نزدیک مختلف آیات کی قراءت کے مکروہ اور نابہند ہونے کا معاملہ ای طرح ہے جیسا کہ حضور ملی لیکنے ہے بلال پرایسا کرنے سے انکار فر مایا اور ابن میرین نے بھی اس کونا بہند قرار دیا ہے۔

علامه جلال الدين سيوطى رحمة الله عليه فرمات بين:

حضرت عبدالله بن مسعود رضی الله کی ندکوره بالا حدیث کی توجیه میرے زدیک بیہ ہوسکتی ہے کہ کسی شخص نے ایک سورت پڑھنا شروع کی اورائے پورا کرنے کا ارادہ بھی کیا تھا' لیکن درمیان میں ایک اور سورت کے پڑھنے کا خیال آ گیا تو اس کے لیے بیتھم دیا گیا ہے کہ وہ سورہ'' قُلُ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ'(آپفر مادیجے: وہ اللّٰہ ہے کیا) پڑھ لے۔

لیکن اگر کوئی شخص قراءت شروع کرنے کے بعد ایک آیت ہے دوسری آیت کی طرف پھر جانے کا ارادہ کرتا ہے اور قرآن پاک کی آیات کوترک کرنے کا مرتکب ہوتا ہے تو ایسائمل

کی بے علم مخص ہے ہی متوقع ہوسکتا ہے کیونکہ اگر قرآن حکیم کی آیات کو ایک ترتیب پر نازل کرنے کا کوئی فائدہ نہ ہوتا تو اللہ تعالی قرآن کو ای بے ترتیمی کے انداز پر نازل فر ما دیتا' ترتیب کالحاظ نہ فر ماتا۔

کے حلیمی کا قول ہے کہ ہراییا حرف جس کوفن قراءت کے امام قاری نے قراءت میں ٹابت کیا ہے اس کا پورا پوراحق ادا کرنامسنون ہے تا کہ قراءت کرنے والا اس چیز کو جوقر آن ہونے میں شامل تصور ہوتی ہے اس کا ادا کرنے والا قرار یا سکے۔

ابن الصلاح اورنو وی رحمهما الله تعالی دونوں کا بیان ہے کہ جب قر آن پاک پڑھنے والا مشہور قراء میں سے کسی ایک کی قراءت شروع کرے تو اس کو چاہیے کہ جب تک کلام کا ربط قائم رہے' اس وقت تک برابر وہی ایک قراءت پڑھتا جائے اور جب ربط کلام ختم ہو جائے تو پھر پڑھنے والے کواختیار ہے کہ اگر وہ چاہے تو دوسری قراءت شروع کردے' لیکن افضل یہی ہے کہ جب تک ای مجلس میں ہے پہلی قراءت پر ہی مداومت کرے۔

ہے۔ جب قرآن کی تلاوت ہور ہی ہوتو مسنون طریقہ یہ ہے کہ دھیان سے قرآن کو سنے اور اس دوران شور فل اور باتیں نہ کرئے اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرُ انَ فَاسْتَمِعُوا لَـهُ جب قرآن پڑھا جائے تو غور سے

وَ أَنْصِتُواْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ. (الاعراف:٢٠٨) سنواور خاموش رجوتا كرتم بررهم كياجائي

🖈 آیت مجدہ کی قراءت کے وقت مجدہ کرناسنت ہے۔

علامه نووي شافعي رحمة الله عليه فرمات بين:

قر آن پاک پڑھنے کے لیے پہندیدہ اوقات میں سے سب سے بہتر اوقات وہ ہیں جو نماز کے لیے ہوتے ہیں' پھر رات کا وقت' پھر صبح کا پہلا پہر'موزون ہے' مغرب وعشاء کے درمیان قراءت بہت پہندیدہ اور دن میں افضل وقت صبح کے بعد کا وقت ہے' ویسے تو قرآن کی تلاوت کی وقت بھی مکر وہ نہیں ہوتی۔

باقی ابن ابی داؤد کا وہ قول جو انہوں نے معاذبن رفاعہ کے واسطہ سے ان کے مشاکخ سے نقل کیا ہے کہ وہ لوگ نماز عصر کے بعد قرآن پڑھنے کا مکر وہ جانتے تھے اور فر ماتے تھے کہ اس وقت پڑھنا یہود کامعمول رہا ہے قریدا یک غیر مقبول بات ہے اس کا کوئی سرپیز نہیں ہے۔ قراءت قرآن کے لیے سال کے دنوں میں سے عرفہ کا دن پھر جمعہ پھر پیر' پھر جمعرات کا دن پینر بدہ دن ہیں۔
کا دن پیند بدہ دن ہیں۔

اور آخری دس دنوں میں سے رمضان المبارک کا آخری عشرہ اور ذوالحجہ کا پہلاعشرہ اورمہینوں میں ہے رمضان المبارک کامہینہ افضل اور مختار ہے۔

قرآن پڑھنے کی ابتداء کرناجمعۃ المبارک کی شب اورختم قرآن پاک کے لیے جمعرات
کی شب بہتر ہے کیونکہ ابن ابی داؤد سے عثان بن عفان رشخاند کا یہی معمول منقول ہے۔
ختم قرآن شریف دن یا رات کے اقل حصہ میں افضل ہے اس لیے کہ دار می نے سند
حسن کے ساتھ حضرت سعد بن ابی وقاص رشخاند سے روایت کی ہے انہوں نے فر مایا کہ اگر
قرآن پاک کاختم آغاز شب میں ہوتو فرشتے قرآن ختم کرنے والے کے حق میں صبح تک
دعائے رحمت کرتے رہتے ہیں اور اگرون کے اقل حصہ میں ختم کرے قرثام تک فرشتے اس

احیاءالعلوم میں یہ قول بھی ہے کہ دن کے آغاز کاختم القرآن فجر کی دورکعتوں میں کیا جائے اوراوّل شب کاختم قرآن نمازمغرب کی دورکعت سنت میں کرنا بہتر ہے۔

ختم قرآن کے دن روزہ رکھنامسنون ہے اس بات کو ابن ابی داؤر نے تابعین رطانی کی کی ایک جماعت سے نقل کیا ہے۔ ختم قرآن پاک میں اہل خانہ اور دوستوں کوشریک دعوت کرنا فضل ہے۔ امام طبر انی نے حصرت انس رضی تند کی نسبت حدیث بیان کی ہے کہ ان کامعمول تھا کہ جب قرآن پاک ختم کر نتے تو ختم شریف میں اپنے اہل قبیلہ کا اجتماع منعقد کرتے اور ان کے لیے دعا ما نگتے تھے ابن ابی داؤد نے تھم بن عتبہ سے روایت کیا ہے انہوں نے کہا کہ مجھے مجاہد نے مدعو کیا میں گیا تو ان کے پاس ابن ابی الی امامہ محمی تھے مجاہد اور ابن ابی امامہ دونوں نے مجھے سے کہا کہ ہم نے آپ کو اس لیے مدعو کیا ہے کہ آج ہمارے یہاں ختم قرآن پاک کا پروگرام ہور ہا ہے اور ختم قرآن کے وقت دعا قبول ہوتی ہے۔

مجاہد ہی سے روایت ہے وہ فر ماتے ہیں کہ ختم قر آن پاک کے موقع پر حضرات صحابہ کرام مظافیہ نے اجتماع منعقد کرتے تھے اور انہی کا قول ہے کہ ختم قر آن کے وقت اللہ کی رحمت

نازل ہوتی ہے۔

اہل مکہ کے سورۃ الضحیٰ سے آخر قر آن تک ہرسورہ کے ختم پر'' تکبیر'' کہنا مستحب ہے' اہل مکہ کے نزدیک قراء قر آن کا ای طرح معمول ہے۔

امام بیمق نے کتاب '' شعب الایمان ' میں اور ابن خزیمہ نے ابن ابی برہ کے طریق سے بیان کیا ہے کہ میں نے عکرمہ بن سلیمان سے سنا' وہ بیان کرتے سے کہ میں نے اسلیمال سے سنا' وہ بیان کرتے سے کہ میں نے اسلیمال بن عبداللہ المکی کے سامنے قراءت کی 'جس وقت میں سورہ الفتیٰ پر پہنچا تو انہوں نے کہا: یہاں سے تکبیر کہو' حتیٰ کہ قر آن پاک ختم کرو۔ میں نے عبداللہ بن کثیر کے ساتھ قراءت پڑھی تھی' انہوں نے جھے انہوں نے جھے انہوں نے جھے انہوں نے جھے ای طرح تھم دیا تھا اور فر مایا تھا کہ میں نے جام ہوسے قراءت کے تعلیم پائی تو ابن عباس نے انہیں ای بات کی ہدایت کی تھی اور فر مایا تھا کہ میں نے قراءت کی تعلیم پائی تو ابن عباس نے انہیں ای بات کی ہدایت کی تھی اور فر مایا تھا کہ میں نے ابی بن کعب رضافتہ کے پاس قراءت کی تھی تو انہوں نے جھے اس کا امر دیا تھا' بیصدیث ہم نے ابی بن کعب رضافتہ کی ہدایت کی تھی دوسر سے طریق پر ابن ابی برہ ہی ای طرح موقو فاروایت کی ہے اور اس حدیث کو ای میں ہے دیث کو عنی مرفو عا کی متدرک میں بیصدیث بیان کی ہے اور اس حدیث کو تحق قرار دیا ہے' اس حدیث کے بزی سے اور بھی بہ کثر ت طرق بیان کی ہے اور اس حدیث کو تحق قرار دیا ہے' اس حدیث کے بزی سے اور بھی بہ کثر ت طرق بیان کی ہے اور اس حدیث کو تحق قرار دیا ہے' اس حدیث کے بزی سے اور بھی بہ کثر ت طرق بیان کی ہے اور اس حدیث کو تحق قرار دیا ہے' اس حدیث کے بزی سے اور بھی بہ کثر ت طرق بیان کی ہے اور اس حدیث کو تحق قرار دیا ہے' اس حدیث کے بزی سے اور بھی بہ کثر سے موقول ہیں۔

مویٰ بن ہارون کا قول ہے انہوں نے کہا ہے کہ مجھ سے بزی نے یہ بیان کیا ہے کہ مجھ سے بزی نے یہ بیان کیا ہے کہ مجھ سے حضرت امام شافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ نے فر مایا کہ اگر تو نے تکبیر کو چھوڑ دیا تو حضور ملڑ میں آئے گیا ہم کی ا ایک سنت کا چھوڑ نے والا ہوگا۔

حافظ عماد الدین ابن کثیر رحمة الله علیه فر ماتے ہیں کہ حاکم کا بیقول اس بات کا تقاضا کرتا ہے کہ انہوں نے اس حدیث کوضیح قر ار دیا ہے۔

کے قراءت قرآن میں سنت یہ ہے کہ جب ایک ختم ہوتو اس کے ساتھ ہی دوسرا شروع کر دیاں لیے کہ امام تر مذی اور دیگر محدثین نے بید حدیث بیان کی ہے:

اَحَبُّ الْاَعْمَالِ اِلَى اللهِ الْحَالُ جَبَولَ هُمْ قَرْآن بِاكُواوَّل الْمُرْتَحِلُ اللهِ عَلَى اللهِ الْحَالُ اللهِ الْحَالُ اللهِ اللهِ الْمُرْتَحِلُ اللهِ عَلَى يَضْرِبُ مِنْ أَوَّلِ الْقُرْ انِ سَا تَرْتَك بِرُحْتَا مِ اور جب اختام كو الْمُرْتَحِلُ اللهِ عَنْ يَضْرِبُ مِنْ أَوَّلِ الْقُرْ انِ سَا حَرَتَك بِرُحْتَا مِ اور جب اختام كو

اللی 'اخِوِم کُلَّمَا حَلَّ اِرْ تَعَلَ. پنچتا ہے تو پھر دوبارہ اس کوشروع کر دیتا ہے' ایساطریقہ اللہ تعالی کو بہت زیادہ پیندے۔

دارمی نے سند حسن کے ساتھ بواسطہ حضرت ابن عباس و شکاللہ حضرت ابی بن کعب و شکاللہ حضرت ابی بن کعب و شکاللہ سے روایت کیا ہے کہ حضور ملے آئی آئی جب فی ل آغو ڈ بر ب الناس ان ان تم کہو میں اس کی بناہ میں آیا جوسب لوگوں کا رب ہے 'پڑھ لیتے تو الحمد سے شروع فر مادیتے 'پھراس کے بعد سورہ البقرہ سے بھی ' و اُولئیک می المفلے کوئی ' (البقرہ: ۵)' اوروہ ی مراد کو بہنچنے والے ' تک بڑھے 'پھر آخر میں ختم قرآن شریف کی دعا کر کے مجلس برخاست فر ماتے۔

کسی غیر سے گفتگو کرنے کے لیے قراءت کو بند کرنا مکروہ ہے کیونکہ اللہ کے کلام پر کسی غیر کے کلام کوتر جیح دینا مناسب نہیں ہے۔ بیمق نے اس امر کی تا ئید میں صحیح بخاری کی یہ حدیث پیش کی ہے کہ حضرت ابن عمر رشی اللہ جب قرآن کی تلاوت میں مشغول ہوتے متصوتو فارغ ہونے تک کسی سے بات چیت نہیں کرتے تھے اسی طرح تلاوت کے دوران میں ہنا' عبث کام کرنا اور الیسی چیز کی طرف د کھنا جس سے ذہن قراءت سے فافل ہوجائے الیس سب یا تیں مکروہ ہیں۔

غیر عربی زبان میں محض ترجمہ قرآن مجید پڑھنا (جس کے ساتھ عربی نہ ہو) مطلقا ناجائز ہے چاہے آ دمی عربی زبان کو اچھی طرح جانتا ہو یا نہ جانتا ہو نماز کے اندر ہویا نماز سے خارج 'بہر حال ناجائز ہے۔

🖈 شاذقراءت کاپڑھنا ناجائز ہے۔

ابن عبدالبرے منقول ہے کہ اس پراجماع ہے گرموھوب الجزری نے نماز کے علاوہ اس کا جائز ہونا ذکر کیا ہے وہ قراءت شاذ کے جواز کوحدیث کے روایت بالمعنی جائز ہونے پر قیاس کرتے ہیں۔

🖈 قرآن مجید کوذر بعید معاش بنانا مکروہ ہے۔

آ جری نے عمران بن حمین کی حدیث سے مرفو عاروایت کیا ہے کہ جوشخص قر آن پاک پڑھے'اس کے وسیلہ سے اللہ تعالیٰ سے سوال کرے' کیونکہ قریب ہی ایک زمانہ آئے گا'جب ایسے لوگ ظاہر ہوں گے جوقر آن پڑھ کراس کولوگوں سے مانگنے کا ذریعہ بنالیس گے۔

ایما کہنا مکروہ ہے کہ میں فلاں آیت بھول گیا ہوں ' بلکہ یوں کہنا جا ہے کہ مجھے بھلادی گئے ہے۔ گئی ہے۔ صحیح بخاری اور مسلم کی حدیث میں ایما کہنے کی ممانعت آئی ہے۔

🖈 قرآن پاک یاد کر کے بھلادینا گناہ کبیرہ ہے۔

ابوداؤ داور دوسرے محدثین نے بیر حدیث نقل کی ہے کہ حضور ملتی کی آئی فر ماتے ہیں: میر سے سامنے میری امت کے گنا ہول کو پیش کیا جاتا ہے اور میں نے اس سے بڑا کوئی گناہ نہیں دیکھا کہ ایک آ دمی نے قرآن حکیم کی کوئی سورت یا آیت حفظ کی پھریا وکرنے کے بعداس کو بھلادیا۔

اقتباس كابيان

ں قتباس: کسی شعر یا عبارت میں آیت مبار کہ یا حدیث پاک کا حوالہ دیئے بغیر کوئی آیت یا۔ حدیث یاان کا کچھ حصہ تضمین کر لینے کوا قتباس کہتے ہیں۔

ا قتباس کا حکم: مالکیہ کامشہور تول ہیہ ہے کہ قر آن سے اقتباس کرنا حرام ہے اور انہوں نے اقتباس کرنے والے شخص کو بہت سخت ست کہا ہے۔

متاخرین کی ایک جماعت نے شخ عزالدین عبدالسلام سے اقتباس کے متعلق سوال کیا تو انہوں نے جواب دیا کہ یہ جائز ہے اوراس کے جواز پرشخ ان احادیث نبویہ سے استدلال کرتے ہیں جن میں حضور سلٹی کیا تماز میں مثلاً' وجہت وجہی '''' میں متوجہ ہوتا ہول' (آیت) اوراسی طرح دعا کے اندر قرآن سے اقتباس کرتے ہوئے'' اللّٰهُمَّ فَالِقَ الْاَصْبَاحِ وَ جَمَاعِلَ اللّٰیلُ سَکُناً وَ الشَّمْسِ وَ الْقَمَرِ حِسْبَاناً اِقْضِ عَنِی الدِینَ وَ اَغْنِنِیْ مِنَ الْفَقْرِ ''کا قول کیا ہے۔

اقتباس كى قتميس

ابن جه کی شرح بدیعیه میں ہے کہ اقتباس کی تین قسمیں ہیں:

مقبول مباح اورمر دوديه

(۱) مقبول: وه اقتباس ہے جومواعظ خطبات اور فرامین اور عہد ناموں میں کیا گیا ہے۔

(٢) مباح: وه اقتباس ہے جوغز لوں قصوں اور خطوط میں ہو۔

(٣) اوراقتباس کی شم ثالث یعنی مردود کی آ کے پھر دوشمیں ہیں:

اوّل: اس کلام کا اقتباس کرنا جس کی نسبت الله تعالیٰ نے اپنی ذات کی طرف فر مائی ہے' کوئی بشراس کوانی ذات کی طرف نسبت کر کے بیان کرے (نعوذ باللہ) جیسا کہ بنوامیہ کے ایک حکمران کے متعلق کہا گیا ہے کہاس نے ایک عرضداشت پرجس میں اس کے کارندوں کی شکایت کی تھی' یہ جواب لکھا تھا:

اِنَّ اِلْيُنَا إِيَابِهُمْ ٥ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بِعُرْف ان كاللِمُنا حِسَابَهُمُ ٥ (الغاشيد:٢٥-٢٥) عَ كِهر فِي شَكَ مِم بَي يران كا حساب عـ

دوم: اور دوسری شم اقتباس مردود کی بیہ ہے کہ کسی آیت کی'' ھے ل '' کے مضمون میں تضمین کی جائے (نعوذ بالله من ذلك) جبیا كد سى وابيات شاعر كا قول ب:

ارخى الى عشاقه طرفه هيهات هيهات لما توعدون

وردف ينطق من حلفه لمثل ذا فليعمل العاملون

شیخ تاج الدین سبکی نے اپنی طبقات میں امام ابومنصور عبد القاهر بن الطاہر المیمی البغدادی 'جوشا فعیہ کے بہت جلیل القدر بزرگ ہوئے ہیں' کے حالات میں ان کے شعرنقل

کے ہیں:

یامن عدی ثم اعتدی ثم اقترف ثم انتهی ثم ارعوی ثم اعترف ابسسر بقول الله في آياته ان ينتهوا يغفر لهم ما قد سلف

(۱) ترجمہ: اے وہ شخص جس نے حدیے تجاوز کیا اور پھراس میں بہت بڑھ گیا اور پھر گناہ کا ارتکاب کرلیا'اس کے بعدوہ رک گیا اور نادم ہوکرایے گنا ہوں کا اعتراف کیا۔

(٢) توالله تعالى كاس قول سے بشارت عاصل كر جواس نے اپنى آيوں ميس فرمايا ہے: اگروہ لوگ باز آ جائیں گے تو اللہ تعالیٰ گذشتہ گناہوں میں ان کی مغفرت فر مادے گا۔

حافظ سيوطي عليه الرحمة الله فرماتے ہیں:

بد دونوں اشعار اقتباس کے قبیل سے نہیں ہیں کیونکہ اس میں شاعر نے'' بقول اللہ'' کہدکر کلام البی ہونے کی تصریح کر دی ہے اور یہ بات ہم پہلے بتا چکے ہیں کہ اس طرح کی صراحت کر دینے کے بعد وہ کلام اقتباس کے زمرہ سے خارج ہو جاتا ہے ورع اور تقویٰ کا تقاضا یمی ہے کہ ایسی تمام باتوں سے اجتناب کیا جائے اور اللہ اور اس کے رسول مل اللہ کے اللہ کا کہ کام کو ان باتوں سے باک اور منزہ رکھا جائے 'اگر چہاس کا استعال بڑے بڑے جلیل القدر امام ول سے ثابت ہے جسیا کہ امام ابو القاسم رافعی رحمۃ اللہ علیہ نے اپنے اشعار میں کلام شارع سے اقتباس کرنے کوروار کھا ہے:

(۱) الملك لله الذي عنت الوجوه له و ذلت عنده الارباب "
" بادشا الله الذي عنت الوجوه كي من كسامنے چېرول كے رنگ اڑ جاتے ہيں اور جس كے حضور بڑے بڑے ارباب اقتدار سرا فكنده ہيں "

(۲) متفرد بالملك والسلطان قد خسر الذين تجاذ بوه وخابول

'' وہ اکیلا ہی ملک اورسلطنت کا بلاشرکت غیرے ما لک ہے اور جواس سے اقتدار میں کشاکشی کا تصور بھی کرتے ہیں' منہ کی کھاتے اور خائب وخاسر ہوکرلو مٹے ہیں''

(٣) دعهم وزعم الملك يوم غرورهم فسيعلمون غداً من الكذاب

'' آج وہ دھوکے میں ہیں' توان کو بادشاہی کے گھمنڈسمیت چھوڑ دے' کل قیامت کے دن خود بخو دہی کھل جائے گا کہ کون جھوٹا تھا''۔

امام بیہ قی رحمة الله علیه شعب الایمان میں اپنے استاد ابو عبد الرحمٰن سلمی رضی اللہ ہے روایت کرتے ہیں'ان کا بیان ہے کہ میں احمد بن یزید نے اپنے اشعار سائے:

(۱) سل الله من فضله واتقه فان التقي خير ما تكتسب (۱)

'' اللّٰہ ہے ڈراوراس کافضل ما نگ کیونکہ اللّٰہ (کےغضب وقہر) کا اندیشہ اچھا پیشہ ہے''

(٢) ومن يتق الله يصنع له ويرزقه من حيث لا يحتسب

'' جوشخص الله تعالی (کی ناراضی) ہے ڈرتا ہے' تو الله تعالیٰ اس کے کام بنا تا ہے اور اس کوالی جگہ سے رزق پہنچا تا ہے' جہاں ہے اس کوسان گمان بھی نہیں ہوتا''۔

قرآن حکیم کے غریب (غیر مانوس) الفاظ کی شناخت

غرائب قرآن کاعلم حاصل کرنا نہایت ضروری ہے اور اس پر انتہائی توجہ کی ضرورت ہے اور اس کی انتہائی توجہ کی ضرورت ہے اور اس کی اہمیت کا اندازہ اس سے ہوتا ہے کہ امام بیہقی نے حضرت ابو ہر پر ہوئی اُللہ سے

arseNizami.MadinaAcademy.Pk

مرفوعاً روایت کیا ہے:

اَعْرِبُوا الْقُرْ ٰانَ وَالْتَمِسُوْا غَوَائِسَةُ.

قرآن کے معانی کی تفتیش کرو اور غرائب القرآن تلاش كرو ـ

اسی طرح ایک حدیث عمرو بن مسعود ہے بھی موقو فا مروی ہے اور ابن عمر رضی اللہ ہے بھی ا مام بیم قل رحمة الله علیه نے مرفوعاً روایت کی ہے کہ:

مَنْ قَرّاً الْقُرْ انَ فَاعْرَبَهُ كَانَ لَهُ جَسَّخُص فِي آن ياك يرهااور بكُلّ حَرْفِ عِشْرُوْنَ حَسَنَةً وَمَنْ قَرَأَهُ اللَّ عَرْيبِ الفاظ كَمعاني كَ تَحْقِق كَ بِغَيْرٍ إِعْوَابِ كَانَ لَهُ بِكُلِّ حَرْفٍ عَشُرٌ لَوَاسِ بِرِحن كَ بدليس نيكيال مليس گی اور جو مخص قر آن یاک کومعانی کی محقیق اور شاخت کے بغیر پڑھے گا' اس پر ایک حرف کے بدلے میں دس نیکیاں عطاکی جا کیں گی۔

حَسَنَاتِ.

اعراب القرآن ہے کیا مراد ہے؟

اعراب القرآن کے معنی یہ ہیں کہ اس کے الفاظ کے معانی کی معرفت حاصل کرنا۔ نحو یوں کی اصطلاح میں اعراب کے جومعنی ہوتے ہیں وہ یہاں مرادنہیں ہیں' کیونکہ نجا ۃ کے نز دیک تو اس ہے کن کے مقابل یعنی صحت الفاظ مراد ہوتی ہے' وہ مراد لینا درست نہیں' اس لیے کہ صحت الفاظ کے فقدان کی صورت میں تو نہ قراءت صحیح ہوتی ہے اور نہ ثوا ب ملتاً

غرائب القرآن میںغوروخوض کرنے والے خص پرمستقل مزاجی ہے کام لینا اور اہل فن کی اس موضوع پرلکھی ہوئی کتابوں کی طرف رجوع کرنا ضروری ہے اور اس سلسلہ میں ا قیاس آرائی اور رائے زنی کو بالکل دخل نہیں ہے۔ کیونکہ صحابہ کرام خاص عرب کے باشندے تصفی عربی جانبے والے اور اہل لسان تھے' پھر قر آن کا نز ول بھی انہی کی زبان میں ہوا تھا' اگرا تفاق ہےان پربھی کسی لفظ کے معنی ظاہر نہ ہوتے تو وہ قیاس آ رائی اور ظن وتخیین ہے کام ہرگزنہیں لیتے تھے بلکہ تو تف فر ماتے اور سکوت اختیار کر لیتے تھے۔

ابوعبید نے " کتاب الفضائل" میں ابراہیم حمیمی ہے دوایت کی ہے حضرت ابو بکرصدیق رضَ الله كاقول ' وَفَا كِهَةً وَآبُها ' (العبس ٣١١) ' اورميو الدومويشيول كاجاره' كامعنى يوجها گیا تو انہول نے فرمایا:'' ای سماء تظلنی وای ارض تقلنی ان انا قلت فی کتاب الله ما لا اعلم" كون ساآ سان مجھ برساية آن رب كااوركون ي زمين مجھے برداشت كرے كى اگر میں نے کتاب اللہ میں ایس بات کہددی کہ جس کا میں علم نہیں رکھتا۔

حضرت انس مِن تله بیان کرتے ہیں کہ حضرت عمر بن الخطاب فاروق اعظم مِن اللہ نے برسرمنبرالله تعالى كابيقول' وَ فَا كِحَهَةً وَّأَبَّا '' (العبس:٣١) يرْحِها اورفر مايا: بيرْ فا كههة'' كامعني تو جمیں معلوم ہے گر'' ابا'' کیا چیز ہے؟ پھرخود ہی فرمانے گئے:'' ان ھذا لھو الکلف یا عمر!"اےعمرایہ بردامشکل معاملہ ہے۔

حضرت ابن عباس رضی اللہ کا قول ہے:

كنت لا ادرى ما فاطر السموات حتى اتانسي اعرابيان يختصمان في يهال تك كدابك دفعه ايبا مواكرميرے بئر فقال احدهما انا فطرتها يقول انا۔ ياس دوديهاتي آئے ان كا آپس ميں كنوس 🗖 ابتداتها.

مجھے''ف اطر'' کے معنی معلوم نہ تھے' کا جھگڑا تھا۔ اُن میں ہے ایک نے بیان کیا:

''ان فيطرتها'' ميسنے پہلےاس کو کھودنا شروع کیا تھا(تب فاطر کے معنی کا انکشاف

ابن جریر نے سعید بن جبیر رضی اللہ ہے روایت کی یہ کہان ہے اللہ تعالیٰ کے قول' وَ حَنَانًا مِّتْ لَّـُدُنَّا ''(مریم: ۱۳)'' اوراین طرف سے مہر بانی'' کامعنی یو چھا گیا توانہوں نے فرمایا: میں 🔻 نے حضرت ابن عباس رضی اللہ سے اس کامعنی دریافت کیا تھا تو انہوں نے اس کا مجھے کوئی جواب نہیں دیا۔

حضرت عکرمہ کی روایت ہے کہ حضرت ابن عیاس ریخ الله فرماتے تھے کہ میں تمام قرآن کا عالم بول مرحيار الفاظ كم معانى كالمجهيم بيس إوروه جار الفاظ بيربين: "غسلين حناناً" اواه''اور' الرقيم''۔

ابن ابی عاتم نے حضرت قادہ سے روایت کیا' وہ بیان کرتے ہیں کہ حضرت ابن عباس رفیناللہ فرماتے ہیں کہ حضرت ابن عباس رفیناللہ فرماتے تھے: مجھے اللہ کے قول' رَبَّنا الْحَسْحُ بَیْنَنا''(الاعراف:۸۹)' اے ہمارے رب! ہم میں فیصلہ کر''کامعنی معلوم نہیں تھا' یہاں تک کہ میں نے ذی یزن کی بیٹی کا یہ مقولہ سنا: "تعال افاتحک تر اخاصمک'' یعنی آ ہے ہم یہ جھگڑ انمٹا ہی لیں۔

امام بیمق نے مجاہد کے طریق پر حضرت ابن عباس میں اللہ سے یہ حدیث نقل کی ہے' انہوں نے فرمایا کہ میں نہیں جانتا'' غسلین'' کیا چیز ہے؟ لیکن میرا گمان یہ ہے کہ بیز قوم (یعنی تھو ہڑ) کو کہتے ہیں۔

فصل:مفسر کے لیے کس کس فن سے داقف ہونا ضروری ہے۔

کتاب البر ہان میں بیان کیا گیا ہے کہ غرائب القرآن کی شخفیق کرنے والاعلم لغت کا محتاج ہوتا ہے اور اس کے لیے اساء افعال اور حروف کی معرفت ضروری ہے اور حروف چونکہ نبتا قلیل ہیں' اس لیے علم ء نحو نے اس کے معانی بیان کر دیئے ہیں' للبذاحروف کاعلم ان کتابوں ہے معلوم کیا جا سکتا ہے' لیکن اساء اور افعال کاعلم لغت کی کتابوں سے حاصل کرنا ضروری ہے۔علامہ جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ علیہ کھتے ہیں:

غرائب القرآن کی دریافت کے لیے سب سے بہتر طریقہ یہ ہے کہ ان امور کی طرف رجوع کیا جائے جوحضرت ابن عباس جنہا اللہ اور ان کے تلاندہ سے ثابت ہیں کیونکہ ان سے جوروایات منقول ہیں ایک تو وہ صحیح الا سناد ہیں اور اس کے ساتھ وہ غرائب القرآن کی تفسیر کا احاط بھی کرتی ہیں اور حضرت ابن عباس رہی اللہ سے منقول روایتوں میں سب سے زیادہ صحیح وہ روایات ہیں جوانی طلحہ کے طریق پر مروی ہیں۔

علامہ سیوطی علیہ الرحمہ نے ان الفاظِ غریبہ کی تشریح نہایت عمدہ طریقے سے جامع انداز میں سورتوں کی ترتیب کے لحاظ سے کسمی ہے ان میں سے چندالفاظ مع تشریح یہاں درج کیے حاتے ہیں:

يومنون: يصدقون

يعمهون: يتمادون

مطهرة: من القدز والاذي

الغاشعين: المصدقين بما نزل الله

وفي ذلكم بلاء: نعمته

وفومها: الحنطة

الا اماني: احاديث

فائدہ قرآن مجید میں الفاظ غریبہ کوشامل ماننے پر ایک سخت دشواری پیپش آتی ہے کہ قرآن کھیں فضیح ترین کلام پر مشتمل ہے 'جس کے لیے غرابت سے خالی ہونا ضروری ہے 'کیونکہ فصاحت کلام کی شرائط میں سے ایک شرط میر بھی ہے کہ وہ غرابت سے پاک اور سلامت ہو۔ اس کا جواب دیا گیا ہے کہ غرابت کے دومعنی ہیں:

اقل: یہ ہے کہ غیر مانوس اور وحثی لفظ کو کلام میں استعمال کرنا اور یہ فصاحت میں بے شک خلل انداز ہوتا ہے۔

دوم: غرابت کا دوسرامعنی میہ ہے کہ کلام میں ایسے الفاظ کو استعال کرنا' جن کے معانی کے انگشاف اور تفتیش میں قیاس اور رائے کو پچھ دخل نہ ہو غرابت کی اس نوع کا وقوع قرآن حکیم میں ہوا ہے' اس میں اہل فن کے بیان کی حاجت ہوتی ہے' لیکن یہ فصاحت میں مخل نہیں۔ فصل: ابو بکر ابن الا نباری کہتے ہیں:

صحابہ کرام اور تابعین رضی اللہ تعالی عنہم اجمعین نے قر آن کے غریب اور مشکل الفاظ پر (شعراء جاہلیت کے)اشعار سے بہ کثریت استدلال کیا ہے۔

حضرت ابن عباس (ضیالله) فر ماتے ہیں:

"الشعر ديوان العرب" اشعار الله عرب (كعلوم وفنون تواريخ اورزبان) كا انسائيكلوپيديا ہے۔

اور جب بھی جھی قرآن پاک کا کوئی لفظ ہم پر مخفی ہوتا تو اس کے معنی کی تلاش کے لیے ہم اہل عرب کے دیوان کی طرف رجوع کرتے 'کیونکہ اللہ تعالیٰ نے قرآن مجید کو اہل عرب کی زبان میں نازل فرمایا ہے۔

پھر ابن الا نباری نے عکر مہ کے طریق پر ابن عباس رہی اللہ سے روایت کی ہے کہ انہوں نے فر مایا: اگرتم مجھ سے قرآن پاک کے غریب الفاظ کے بارے میں دریا فت کرنا جا ہے ہوتو

اے اشعار میں ڈھونڈ و کیونکہ شعرعرب کا دیوان ہے۔

ابوعبیدنے اپنی کتاب'' الفضائل''میں اپنی سند کے ساتھ حضرت ابن عباس کی روایت بیان کی ہے' ان ہے اگر قرآن پاک کے معانی کے معانی کی رہایت ہے۔ رلیل میں شعر پڑھ کر سنادیتے تھے۔

ابوعبید کہتے ہیں:اس کا مطلب میہ ہے کہ حضرت ابن عباس اس لفظ کی تفسیر پر بہ طور استشہاد شعر پیش کرتے تھے۔علامہ سیوطی علیہ الرحمہ لکھتے ہیں:

ہم نے ابن عباس رہنگاللہ سے اس طرح کی بہ کثرت روایات بیان کی ہیں'ان روایتوں میں سب سے بڑھ کر جامع اور کمل نافع بن الازرق کی سوالات والی روایت ہے'جس کا پچھ حصہ ابن الا نباری'' کتاب الوقف' میں اور پچھ حصہ طبرانی نے اپنی کتاب'' المجم الکبیر' میں درج کیا ہے' انہی میں سے حضرت نافع کا بیقول ہے' جس میں انہوں نے حضرت ابن عباس وشخ کا بیقول ہے' جس میں انہوں نے حضرت ابن عباس وشخ کا بیقول ہے' جس میں انہوں نے حضرت ابن عباس وشخ کا بیقول ہے' جس میں انہوں میں انہوں کے حضرت ابن عباس میں انہوں میں مجھے بتا ہے کہ اس کا کیام مفہوم میں اور بائیں گروہ کے گروہ' میں' عزین' کے بارے میں مجھے بتلا ہے کہ اس کا کیام مفہوم ہے ؟

معنی میں ہے۔ اس عباس طِنگائد نے جواب دیا کہ العزون حلق الرفاق ''کے معنی میں ہے۔ العنی ساتھیوں اور ہم سفروں کا حلقہ بنالینا اور کسی کے اردگر دجمع ہوجانا۔

نافع کہنے لگے: کیااہل عرب کے ہاں بیمعنی معروف ہے؟

ابن عباس طِعْبَالله نے فر مایا: ہاں! کیاتم نے عبید بن الابرص کا شعرنبیں سنا ہے؟ وہ کہتا

- ج

فجاؤوا يهرعون اليه حتى يكونوا حول منبره عزينا

'' وهاس كى طرف دوڑتے ہوئ آئ تاكماس كے منبر كے اردَّر دحلقه بناليں'

نافع نے كہا: مجھے بتلا يئ كماللہ تعالى كے قول' وَ ابْتَ غُو آ اِلْيَهِ الْوَسِيلَةُ '' (المائده:

(۳۵) كے كيامعنى ہيں؟ حضرت ابن عباس وَ عنماللہ نے فر مايا: اس ميں وسيلہ كامعنى حاجت ہے۔

حضرت نافع ہے كہا: كيا المل عرب كنز ديك بيلفظ اس معنى ميں معروف ہے؟

حضرت ابن عباس وَ عَنماللہ نے فر مايا: مال! كيا تم نے عنتر ہ كابيشع نہيں سن ركھا' وہ كہتا

إِنَّ الرَّجَالَ لَهُمُ إِلَيْكَ وَسِيلَةٌ ﴿ أَنْ يَّأْخُذُولِ تَكَحُّلِي وَتَخْفَى '' بے شک مردوں کو تیرے حاصل کرنے کی حاجت ہے (جس سے وہ تیری طرف راغب ہیں) تو سرمہاورمہندی لگا''۔

قرآ ن کیم میں غیر عربی زبان کے الفاظ کابیان

قر آن مجید میںمعرب الفاظ کے وقوع میں ائمہ لغت کا اختلاف ہے جمہورائمہ جن میں امام شافعی' ابن جریر' ابوعبیدہ' قاضی ابو بکر اور ابن فارس بھی ہیں' ان کی رائے یہ ہے کہ قر آ 🖰 یاک میں عربی زبان کے علاوہ کسی زبان کا کوئی لفظ واقع نہیں ہوا' کیونکہ اللہ تعالیٰ کا فرمان

اوراگر ہم اس کو عجمی زبان کا قرآ ن لَوْ لَا فُصِّلَتْ اللَّهُ ءَ أَعُجَمِتْ وَعَرَبِيُّ. بناتے تو وہ ضرور کہتے: اس کی آپتیں کیوں (خم اسجده: ۴۴) مفصل کی گئیں' کیا کتاب عجمی زبان میں اور نی کی زبان عربی۔

وَلَوْ جَعَلْنَهُ قُرْ انَّا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا

زیان کے الفاظ کے وقوع کا قائل ہے۔

ابوعبیدہ نے کہا: قرآن مجید صرف اور صرف قصیح عربی زبان میں نازل کیا گیا ہے'اس لیے جو شخص میہ کہتا ہے کہ اس میں غیر عربی زبان کے الفاظ بھی ہیں' وہ بلاشبہ (یُری) بات کہتا ہے اور جو تحض میہ کہتا ہے کہ ' محمد اما ''نبطی زبان کا لفظ ہے اس نے بھی برد ابول بولا ہے۔اس کے مدمقابل قائلین جواز کا کہنا ہیہ ہے کہ کچھالفاظ جواصل میں عربی تھے کیکن جب اہل عرب نے اسینے اشعار اور محاورات میں ان کو استعمال کیا تو اس طرح وہ معرب الفاظ صبح عربی کلمات کے قائم مقام ہو گئے اور ان میں بھی بیان کی صفت جوعر بی زبان کا خاصہ تھی پیدا ہوگئ ۔ پس ای تعریف کے لحاظ سے قرآن کا نزول ان کلمات کے ساتھ ہوا۔

دوسرے بعض علاء لغت کا بیان ہے کہ بیتمام الفاظ خالص عربی زبان کے الفاظ ہیں۔

گربات یہ ہے کہ عربی زبان ایک بہت وسیج زبان ہے اوراس کے متعلق جلیل القدر علاء اور اللہ کے متعلق جلیل القدر علاء اور ماہرین لسانیات کو بھی اس کے بعض الفاظ کاعلم نہ ہو' بعید از قیاس نہیں۔ چنانچہ حضرت ابن عباس مین اللہ پرلفظ'' ف اطو'' اور'' ف اتح'' کے معنی مخفی رہے تھے' بعد از ال منکشف ہوئے۔ حضرت امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ ''الرسالہ'' میں لکھتے ہیں:

زبان کا احاط صرف نبی بی کرسکتا ہے۔

لا يحيط باللغة الانبي.

ابوعبید القاسم ابن اسلام غیر عربی زبان کے الفاظ کے قرآن پاک میں وقوع یا عدم وقوع کے اختلاف کا ذکر کرنے کے بعد اپنا تجزیدا درعندید پیش کرتے ہوئے لکھتے ہیں:

میرے نزدیک وہ ندہب حق وصواب ہے جس میں دونوں قولوں کی تصدیق کی جاتی

ہے اور وہ ندہب سے۔

' سیس میں شک نہیں کے علماء لغت کے بیان کے مطابق ان الفاظ کی اصل بجمی زبانیں ہیں ' جیسا کہ ماہرین زبان نے کہاہے' لیکن میر بھی حقیقت ہے کہ جب ان کلمات کے استعمال کی ضرورت اہل عرب کو پڑی تو انہوں نے ان کلمات کو مُعَرِّبُ بنا کراپی زبان سے اداکر نے کے قابل بنالیا۔ پھر مجمی الفاظ کی صورت سے ان کی صورت بھی بدل دی اور میدالفاظ ایک طرح سے عرفی ہی بن گئے۔

جنانچہ جب قرآن حکیم نازل ہوا تو اس وقت بیالفاظ عربی کلام میں ایسے مخلوط ہو گئے سے کہ ان کے درمیان خط املیاز کھنچنا دشوار تھا۔للبذا اس لحاظ سے جوشخص بیہ کہتا ہے کہ بیعربی الفاظ میں 'وہ بھی اور جوان کی عجمیت کا قائل ہے وہ بھی' دونوں ہی اپنی اپنی جگہ درست کہتے ہیں' کسی کو بھی جھٹلا بانہیں جاسکتا۔

الجوالیقی' ابن الجوزی اور دوسرے بہت سے علماء لغت کا ای قول کی طرف میلان ہے۔ ایسے الفاظ کی چندمثالیں بہطور مشتے نمونہ ازخروارے ذیل میں پیش کی جاتی ہیں:

| تفصيل | معنی | لفظ |
|---|----------------|--------|
| العالى نين فقد اللغه "ميل بيان كيا بك | لوٹے ٔ حچما گل | اباريق |
| فارس لفظ ہے جوالیق نے کہا:"ابسریق"كا | | |
| لفظ فاری سے معرب بنایا گیا ہے اس کامعنی | | |

| | | 1 |
|--|---------------------|---------|
| پانی کاراستہ یا آہتہ آہتہ پانی انڈیلنا ہے۔ | | |
| بعض نے کہا کہ اہل مغرب کی زبان میں اس | گھاں چارہ | اب |
| کامعنی'' گھاس''ہے۔ | | |
| ابن ابی حاتم نے وہب ابن منبہ کے حوالہ | تو نگل جا | ابلعی |
| ے بیان کیا ہے کہ اللہ تعالی کے قول ' اہلعی | | |
| مائك ''مين' ابلعى ''جبش كى زبان كالفظ | | |
| ہےاوراس کامعنی نگلنا ہے۔ | | |
| واسطى نے "الارشاد" میں لکھا ہے کہ عبرانی | جھک گیا'مائل ہو گیا | اخلد |
| زبان مين أخلد الى الارض "كامحاوره | | |
| فیک لگا نا کے معنی میں استعال ہوتا ہے۔ | | |
| ابن الجوزي" فنون الافنان" ميں لکھتاہے كہ حبثى | صونے 'تخت | الارائك |
| زبان میں پہلفظ تخت کے لیے بولتے ہیں۔ | | |
| بن الی حاتم نے ضحاک سے روایت کی ہے کہ | موثاريثم | استبرق |
| يے مجمی زبان میں موٹے ریشم پر بولا جاتا ہے۔ | , | |
| داسطی نے'' کتاب الارشاد'' میں کہا ہے کہ | | اسفار |
| سرياني زبان مين اس كااطلاق'' كتابون' بر | • | |
| ہوتا ہے۔ | - † | |
| بوالقاسم نے'' لغات القرآ ن'' میں بیان کیا | | اصری |
| ہے کہ نبطی زبان میں بید لفظ'' عہد'' کے معنی ا | | |
| کے لیے آتا ہے۔ | | |
| ان الجوزی نے بیان کیا ہے کہ یہ '' تبطی'' ان معہ ''کی میں ''ک تا ہ | | اكواب |
| بان میں'' کوزوں'' کو کہتے ہیں۔ مناب کی مدینہ میں مردد کر | 70. | -1-1 |
| ل مغرب کی زبان میں اس کامعنی ہے: کسی برین کرد | . | اناه |
| ز کا بکنا۔ | | |

| | | 017 13 0000183 |
|------------------------------------|-------|----------------|
| نخ ابن حبان نے عکرمہ کے طریق پر | | او اه بهت رجور |
| ت ابن عباس رخی اللہ ہے روایت کی ہے | حضر | |
| او ۱۵ ''حبشه کی زبان میں صاحب | | |
| شخص کو کہتے ہیں ۔) | ايقال | |

چندا ہم قواعد کا بیان جن کا جاننامفسر کے لیے ضروری ہے ضمیروں کے متعلق قاعدہ

ضمير كامرجع

صمیرے لیے ایک مرجع کا ہونا ضروری ہوتا ہے جس کی طرف وہ لوٹتی ہے۔

یاضمیر کا مرجع سابق لفظوں میں مذکور ہوتا ہے اورضمیر کی دلالت مرجع پرمطابقی طور پر
 ہوتی ہے جیسا کہ ان مثالول میں ہے:

" وَنَا دُى نُوْحُ ابْنَهُ ". (هود: ٣٢)" اورنوح نے اپنے بیٹے کو پکارا " " وَعَطَى ادَهُ رَبَّهُ " (طُنا ١٢١)" اور آدم سے اپنے رب کے حکم میں لغزش واقع ہوئی " " اِذَ آ اَخْرَجَ يَدَهُ لَمْ يَكُذُ يَوَ اهَا " (النور: ٣٠)" جب اپناہاتھ نکا لے تواسے دیکھند سکے "یاضمیر کی دلالت مرجع پرضمنی طور پرہوتی ہے جیسے " اِعْدِلُو اللّه وَ اَقْرَبُ " (المائده: ٨)" انصاف کرووه زیاده قریب ہے "کی مثال میں ہے ۔" هو "ضمیر کا مرجع وه" عدل " ہے جس پرصیغة" اعدلوا "ضمنی طور پردلالت کررہا ہے۔

یاضمیر کی دلالت مرجع پرالتزامی طور پرہوگئ جیسے 'انسان انسان نساہ ''میں' ''ضمیر کامرجع '' قرآن' ہے' جس پرنازل کرنا التزامی طور پردلالت کرتا ہے'ای طرح'' فَسَنْ عُفِی کَلَهٔ مِسْ اَجْدِهِ شَنْی فَاتِبًاعٌ بِالْمَعُرُّ وَفِ وَادَآ ءُ اِلَیْهِ ''(ابقرہ:۱۵۸)'' تو جس کے لئہ مِسْ اَجِیه شَنْی فَاتِبًاعٌ بِالْمَعُرُّ وَفِ وَادَآءُ وَالَیْهِ ''(ابقرہ:۱۵۸)'' تو جس کے لیے اس کے بھائی کی طرف سے کچھ معافی ہوئی تو بھلائی سے تقاضا ہواور اچھی طرح ادا' اللہ تعالیٰ کے اس تول میں ''عفیی ''کالفظ ایک عافی لیعنی معاف کرنے والے پر لاز ما دلالت کررہاہے اوروبی ''الیہ ''کی'' ''ضمیر کامرجع قرارہا تا ہے۔

کے یاضمیر کا مرجع اس سے لفظی اعتبار سے متاخر ہوگا (گررتبہ کے لحاظ سے اس کو تقدم حاصل ہوگا) اور خمیر مرجع کے مطابق ہوگی جیئے 'فاؤ جَسَ فِی نَفْسِه جِیفَةٌ مُّوْسلی'' (طُن ۱۷۲)'' تو اپنے جی میں مولی نے خوف پایا''۔' و لَا یُسْنَلُ عَنْ ذُنُوبِهِمُ الْمُحْوِمُونَ O'(القصص ۱۸۵)'' اور مجرموں سے ان کے گناہوں کی چھوٹ نہیں'' اور 'فیومُنیڈ لَا یُسْنَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَآنٌ''(الرحمٰن ۱۹۹)'' گناه گار کے گناه کی پوچھ نہ ہوگی آ دمی اور جن سے' کی مثالوں میں ہے۔

اور بھی ضمیر مذکورلفظ پر بغیراس کے معنی کے راجع ہوئی ہے جیئے' وَ مَا یُعَمَّرُ مِنْ مَّعَمَّرِ ﴾ وَ اَور بُھی ضمیر مذکورلفظ پر بغیراس کے معنی کے راجع ہوئی ہے معمر کی عمر سے پچھے کم نہیں کیاجا تا۔ وَ لَا یُنْفَصُ مِنْ عُمُو ہِ ''(الفاطر:۱۱) لیعنی دوسرے معمر کی عمر سے پچھے کم نہیں کیاجا تا۔ ﷺ اور بھی ضمیر ایک شے کی طرف راجع ہوتی ہے' مگر اس سے اس شے کی جنس مراد ہوتی

دونوں کی جنس پر دلالت کرتے ہیں' در نہ اگر ضمیر مشکلم کی طرف راجع ہوتی تو واحد لا کی ۔ ، ت

اور بھی ضمیر تثنیہ کی ہوتی ہے' گروہ راجع دو مذکور چیز دل میں سے ایک کی طرف ہوتی ہے' کے ایک کی طرف ہوتی ہے' جیسے اس کی مثال ہیہے:'' یَخُوجُ مِنْهُمَا اللَّوْلُو الْمُوجَانُ''(الرحن: ۲۲)'' ان سے موتی اور مونگا نکلتا ہے'۔'' و انسما یخوج من احد هما'''' حالانکہ وہ صرف شیسے یانی والے سمندرسے نکلتے ہیں گھاری ہے''۔

اور یہی استخدام کاباب ہے۔ '' صنعت استخدام'' کی تعریف اور ایک آیت کا تیج ترجمہ

صنعت استخدام یہ ہے کہ ایک لفظ کے دومعنی ہوں 'ایک معنی اس لفظ سے مراد لیے جائیں اور دوسرے معنی اس ضمیر سے مراد لیے جائیں' جواس کی طرف راجع ہے' جس کی مثال جربر کا یہ مشہور شعر ہے:

اذا نزل السماء بارض قوم رعیناه وان کانوا غضابا "جب کسی قوم کی زمین میں بارش ہوتو ہم اس سے پیدا ہونے والے سزه کو چرا لیتے ہیں'اگر چہ وہ لوگ غضب ناک ہی کیوں نہ ہول''

لفظ "سماء" كدومجازى معنى بين أيك بارش ومرابارش سے بيدا ہونے والاسبزه ماع "كدومجازى معنى بين أيك بارش وومرا بارش سے بيدا ہونے والاسبزه مرادلی ہے اور "دع بونے والی میں منصوب سے بارش سے پیدا ہونے والاسبزه مرادلیا "بید" صنعت استخدام" ہے۔

حضرت غزالی زمان سیداحمد سعید کاظمی قدس سره ایخ ترجمه قرآن کے مقدمه میں لکھتے ہیں: بعض مترجمین قرآن نے آیکریمہ 'وَمَوْیَمَ ابْنَتَ عِمُوانَ الَّتِی ٓ اَحْصَنَتُ فَوْجَهَا فَیُهُ خَمَا فِیْهِ مِنْ دُوْجِمَا '(التحریم: ۱۲) کا انتہائی شرم ناک الفاظ میں حسب ذیل ترجمه کیا ہے: ''اور مریم بیٹی عمران کی جس نے رو کے رکھا اپی شہوت کی جگہ کؤ پھر ہم نے پھوک دی اس میں ان طرف سے جان' ۔ (ترجمه مولا نامحمود الحن دیوبندی)

امام ابل سنت قدس سره فرماتے ہیں:

یہ غلط ہے کہ حضرت مریم کی شہوت کی جگہ میں جان چھونگی گئے۔ کیونکہ یہ بات نہایت شرم
ناک اور حضرت مریم کی عزت وعظمت کے قطعاً خلاف ہے حضرت جبرائیل نے اللہ تعالیٰ
کے تھم سے حضرت مریم کے چاک گریبان میں جان چھونگی۔ (تغییرابن کیٹر جسم سے مہم نے ترجمہ میں شرم وحیا اور مضرت مریم کی عزت وعظمت کو تحوظ رکھتے ہوئے جمہور
مفسرین کے مطابق '' صنعت استخدام' سے کام لیا اور اس کے مطابق ہم نے لفظ'' فرح''
سے اس کے مجازی معنی عفت مراد لیے اور 'فیم '' میں اس کی طرف راجع ہونے والی ضمیر مجرور
سے لفظ' فرج'' کے دوسرے مجازی معنی '' حیا گریبان' مراد لیے اور اجلہ مفسرین کے مطابق

حسب ذیل ترجمه کیا: '' اور عمران کی بیٹی مریم (کی مثال بھی) جس نے اپنی عفت کی (ہر طرح) حفاظت کی تو ہم نے (بہ واسطہ جبریل اس کے) جپاک گریبان میں اپنی (طرف کی)روح پھوک دی''۔ (مترجم عفی عنہ)

اورای سے ہاللہ تعالی کا یہ قول: 'لا تَسْالُوْا عَنْ اَشْیآءَ اِنْ تُبْدَلُکُمْ تَسُوْ کُمْ'' (المائدہ:۱۰۱)' ایسی باتیں نہ پوچھوجوتم پرظاہر کی جائیں تو تمہیں بُری لگیں'' پھرفر مایا:' قد سالھا'' یعنی دوسری چیزیں جو کہ سابق میں لفظ اشیاء سے مفہوم ہوتی ہیں۔

اور بھی ضمیراس شے کے ملابس اور ہم شکل کی راجع ہوتی ہے جس کے واسطے وہ ضمیر آئی
 ہے۔ جیسے بیمثال ہے: ' إلَّا عَشِيتَهُ أَوْ صُبْحَاهَا '' (النازعات: ۳۱) لغنی اس شام کے
 دن کی چاشت 'نہ کہ خود شام کی چاشت کہ وہ تو ہوتی ہی نہیں ہے۔

قاعده

جمع ذوی العقول کی طرف ضمیر بھی غالب طور پر جورا جع ہوتی ہے وہ بصیغہ جمع ہی لائی جاتی ہے۔ عام ازیں کہ وہ جمع 'جمع قلت ہویا جمع کثرت' جیسے' وَ الْمُو الْلِدَاتُ یُرُ ضِعْنَ '' (البقرہ: ۲۳۳)'' اور مائیں دورھ پلائیں' اور'' وَ الْمُطَلَّقَاتُ یَتَوَبَّصْنَ ''(البقرہ: ۲۲۸)'' اور طلاق یافتہ تھہری رہیں' میں گر'' ازواج مسطھرہ'' میں پینمیروا حدلائی گئی ہے' کیونکہ اللہ تعالیٰ نے'' مطھرات ''نہیں فرمایا۔

کے مگر غیر ذوی العقول کی جمع کی صورت میں اکثر وغالب طور پریہ ہوتا ہے کہ جمع کثر ت ہوتو اس کے لیے واحد کی ضمیر لاتے ہیں اور جمع قلت ہوتو اس کے لیے ضمیر جمع لانا معمول ہے۔

ازقول باری تعالی: ' إِنَّ عِدَّةَ الشَّهُورِ عِنْدَ اللهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا '' تا' مِنْهَآ اَرْبَعَةً الشَّهُورِ عِنْدَ اللهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا '' تا' مِنْهَآ اَرْبَعَةً الشَّهُورِ عِنْدَ اللهِ اثْنَا عَشَرَ اللهِ مِهِيْ بِينِ اللهٰ کَ کتاب بين جب سے اس نے آسان اور زمین بنائے ان میں چار حرمت والے بین 'میں دونوں طرح کی ضمیرول کا اجتماع ہوگیا ہے کہ' شہور' جوجمع کثرت ہے'اس کی طرف' منها' والی واحد کی ضمیر دانع ہو قیا ہے کہ' شہور' جوجمع کثرت ہے'اس کی طرف' منہ کروان میں' اور سمیررا خع ہے اور پھر فر مایا: ' فَلَا تَظْلِمُواْ فِیهِنَّ ' (التوبہ: ٣١)' پھرظم نہ کروان میں' اور اس میں جمع کی ضمیر لائی گئی ہے' جوار بعدم کی طرف راجع ہواوروہ جمع قلت ہے۔

arseNizami.MadinaAcademy.Pk

قاعده

جب ضائر میں لفظ اور معنی دونوں کی رعایت مجتمع ہوجا کیں تو الی صورت میں ابتداء کفظی رعایت ہے کی جانی چاہیے اور پھر معنی کی رعایت ہو کیونکہ قرآن مجید میں بہی طریقہ ہے اللہ تعالی نے فرمایا: ' وَمِنَ النّاسِ مَنْ یَقُولُ ' ' (البقرہ: ۸) ' اور پجھ لوگ کہتے ہیں ' اس کے بعد فرمایا: ' وَمَا هُمْ بِمُوْمِنِیْنَ ' (البقره: ۸) ' اور وہ ایمان والے نہیں ' و پھے! اس میں پہلے بعد فرمایا: ' وَمَا هُمْ بِمُوْمِنِیْنَ ' (البقره: ۸) ' اور وہ ایمان والے نہیں ' و پھے! اس میں پہلے لفظ ' من ' کے فظی رعایت کے پیش نظر مفرد کی ضمیر لائی گئی ہے پھر معنی کی رعایت کرتے ہوئے ضمیر بصیغہ جمع ذکر فرمائی ' ای طرح ' وَمِنهُم مُنْ یَسْتَمِعُ اللّه فِی الْفِدَنَةِ سَقَطُولُ ان التوبہ وَ اللّه عَلَی قُلُوبُهِمْ مَنْ اللّه فِی الْفِدَنَةِ سَقَطُولُ ان ' (التوبہ وہ می ' اور ان میں سے کوئی وہ ہے جو تہاری طرف کان لگا تا ہے' اور ' وَمِنهُمُ مَنْ اللّه فِی الْفِدَنَةِ سَقَطُولُ ان ' (التوبہ وہ می ' اور ان میں سے کوئی تھی سے یوں عرض کرتا ہے کہ مجھے رخصت دیجئے فتنہ میں نہ ڈالئے' سن لو! وہ فتنہ ہی میں پڑے' میں ہیں جے میں بیڑے' میں ہیں جے کہ میں ہیں ہی ہیں ہے۔

شخ علم الدین عراقی کا قول ہے کہ قرآن مجید میں معنی پرمحمول کر کے صرف ایک ہی جگہ ابتداء کی گئی ہے اس کی کوئی دوسری مثال قرآن میں نہیں ملتی اور وہ جگہ اللہ تعالی کا فر مان ہے: "وَ قَالُوْا مَا فِی بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ خَالِسَةٌ لِّذُ کُوْدِ نَا وَ مُحَرَّمٌ عَلَی اَزُوَاجِنَا" (الانعام: ۱۳۹)" اور بولے جوان مولیثی کے بیٹ میں ہے اور نرا ہمارے مردول کا ہے اور ہماری عورتوں پرحرام ہے "اس میں" ما" کے معنی پرمحمول کر کے" خالصه" کو بصیغہ مونث لایا گیا ہے اور پھر لفظی رعایت کے پیش نظر" محرم" بصیغہ مذکر بیان ہوا ہے۔

معرفهاورنكره كےقواعد

واضح رہے کہ معرفہ اور نکرہ میں سے ہرایک کے لیے بعض ایسے خصوص احکام ہیں 'جوان میں سے دوسرے کے لائق اور مناسب نہیں ہوتے ہیں' تنکیر یعنیٰ نکرہ لانے کے کئی اسباب ہیں۔

> (۱) وحدت كااراده مؤجيے مثلاً: ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُرَكَاءُ

الله نے ایک غلام کی مثال بیان فر ماکی'

مُتَشْكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُل. جس میں کئی آ دمی شریک ہیں' جو آپس میں (الزمر:٢٩) سخت اختلاف ركھتے ہیں اور ایک غلام ایبا

ہے جو بوراایک ہی آ دمی کی ملک میں ہے۔

(٢) نوع مراد مؤجیے مثلًا'' هذا ذکر ''لین 'نوع من الذکر ''ذکری ایک نوع ہے۔ وَعَلَى أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ (القره: اورايك عجيب نوع كايرده جولوگول

 ای نوع غریب من الغشاوة میں معروف بھی نہیں اور وہ آئکھوں کو اس ولا یتعارفه الناس بحیث غطی طرح ڈھانپ لیتا ہے کہ ہرفتم کے پردوں

مالا يغيطه شئى من الغشاوة. اور جالول ميں سے كوئى بھى اس طرح نہيں

وْھانب سکتا_{يہ}

'' وَلَتَ حِدَنَّهُمْ أَخْرَصَ النَّاسِ عَلَى حَيَاةٍ ''(القره:٩٦)' اوربِ ثُكَتْم ضرورً انہیں یاؤ گے کہ سب لوگوں سے زیادہ جینے کی ہوس رکھتے ہیں' بینی ایک نوعیت کی زندگی پر وہ لوگ بہت زیادہ حریص ہیں اور وہ ہے ستقبل میں لمبی عمر کی خواہش کیونکہ حال اور ماضی میں تو زیادتی عمر میں حرص و آ زمکن نہیں ہے۔

اوربھی وحدت اورنوعیت ایک ساتھ بھی ہو سکتے ہیں' جیسے اللہ تعالیٰ کے اس قول' وَ اللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دُآبَةِ مِّنْ مَّآءِ ''(النور:٥٨) ميس ہے اس كامفہوم بيہ كه الله تعالى نے چو پاؤں کی انواع میں ہے ہرا یک نوع کو یانی کی انواع میں سے ایک نوع کے ذریعے 🏿 سے پیدافر مایا ہےاور چو یاؤں کے افراد میں ہے ہرایک فردکوافر ادنطفہ میں ہے ایک نطفہ ہے پیدا کیا۔

(۳) تعظیم مراد ہو' بایں معنی کہ جس شے کی بابت کچھ کہا جار ہاہے' وہ اتن عظیم ہے کہ اس کی تعریف یا تحسین کرناممکن نہیں جیتے 'فاذنوا بحرب یعنی بحرب ای حرب ''کا مطلب يد إلى الني برى جنك كداس كاتم انداز فبيس لكاسكتے مؤار

(٣) تكثير (كثرت بيان كرنامقصود مو) جيسي أنِينَ لَنَا لَاجُواً " (الشعراء:١١) أي وافوا جسزيلا "ليعني بهت سااجروثواب تعظيم اورتكثير دونوں كااحمال ايك ساتھ بھي ممكن ہے جےاس مثال 'فقد كذبت رسل ''يس ب مطلب يہ ب كربر برا برا برا برا

جن کی تعداد کثیرتھی' وہ بھی جھٹلائے گئے۔

(۵) تحقیر مراد ہو'بایں معنی کہ کسی چیز کی شان اس صد تک گرجائے اور اس کا مرتبہ اس صد تک گفتیا ہوکہ وہ کم ترین ہونے کی وجہ ہے معروف نہ ہوسکے جیسے'' اِنْ نَسْطُنُّ اِلَّا ظَسَّا''
(الجاثیہ: ۳۲)'' ای ظنا حقیر الا یعبابه''یعنی معمولی سانا قابل ذکر گمان۔

(٦) تقلیل (کی ظاہر کرنا) مراد ہو جیسے 'ورضو آنٌ مِّنَ اللّٰهِ اکْبَرُهُ' '(الوب: ٢) یعنی اللّٰه تعالیٰ کی قلیل می رضامندی اور خوشنو دی بھی ساری جنتوں سے بڑھ کر ہے 'کیونکہ اللّٰہ کی رضامندی ہی ہر سعادت کی اصل ہے وہ حاصل ہوگئ تو سب کچھل گیا۔

"اللهم انا نسئلك رضاك ونعوذبك من عذابك وسخطك".

اے اللہ! ہم تیری رضائے منگتے ہیں اور تیرے عذاب اور ناراضگی سے پناہ مانگتے ہیں۔
(آمین مترجم)

قلیل منك یکفینی ولکن قلیلك لایقال له قلیل "تیری ذرای نظر کرم،ی میرے بھاگ جگانے کے لیے کافی ہے کیکن تیری تھوڑی ی عنایت کو بھی تھوڑا کہنا جائز نہیں ہے "

تعریف (معرفه) کے بھی کئی وجوہ اور اسباب ہوتے ہیں:

- (۱) ضمیرلانے کے ساتھ اس لیے کہ اس کا مقام متکلم یا خطاب (مخاطب) یا غیبت (غائب) کا مقام ہوتا ہے۔
- (۲) علیت کے ساتھ تا کہ اس کو ابتداء ہی ایسے اسم کے ساتھ جو اس کے لیے مخصوص بے بعینہ سامع کے ذہن میں حاضر کر سکیں جیئے ' قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ' (الا فلاس: ۱)' تم فر ماؤ وہ اللّٰہ ہے وہ اللّٰہ ہے وہ اللّٰہ ہے اور ' مُحَمَّدٌ رَّسُولٌ اللّٰهِ ' (الفَّہ: ۲۹)' محمد اللّٰہ کے رسول ہیں ' کی مثالوں میں ہے۔

یا تعظیم یا اہانت کے لیے اور یہ اس موقع پر ہوتا ہے 'جہاں اس کاعلم ان باتوں کا تقاضا کرتا ہو 'تعظیم کی مثال حضرت یعقوب علایہ لاا کا' اسرائیل' کے لقب کے ساتھ ملقب ہونا کہ اس میں مدح اور تعظیم ہے 'کیونکہ وہ سری اللہ یاصفوہ اللہ ہیں۔ اور اہانت کی مثال جیسے اللہ تعالی کا یہ قول' تَبَّتْ یَدَا آ آبی لَهَب' (اللہب: ا)' تباہ ہو

جائیں ابولہب کے دونوں ہاتھ' اس میں ایک اور نکتہ بھی مضمر ہے وہ سے کہ'' ابسی لھب'' کہنے میں اس کے جہنمی ہونے سے کنا یہ بھی ہے۔

(٣) اشارہ کے ساتھ تا کہ معرف کومحسوں طور پر سننے والے کے ذہن میں حاضر کر کے پوری طرح مُيّز كرديا جائ جيئ هذا خَلْقُ اللهِ فَأَرُونِني مَاذَا خَلَقَ اللَّذِيْنَ مِنْ دُونِهِ" (لقمان:۱۱)'' بيتو الله كابنايا مواہب مجھے وہ دكھاؤ جواس كےسوااوروں نے بنایا'' اور كبھی اس سے سامع کی غماوت اور کند ذہنی کی طرف تعریض اور اشارہ کرنامقصود ہوتا ہے کہ 🗅 سامع اتناموٹے د ماغ کا ہے کہ وہ حسی اشارہ کے بغیر کسی شے کی تمیز ہی نہیں کر سکتا'ای ندکورہ بالا آیت ہے اس کوبھی سمجھا جا سکتا ہے'الگ مثال کی ضرورت نہیں ہے۔ اور بھی اسم اشارہ قریب کے ذریعہ مشار ٔالیہ کی تحقیر مقصود ہوتی ہے جیسے کفار کا قول ' أَهْلَذَا الَّذِي يَذْكُو ْ 'الِهَتَكُمْ ''(الانبياء:٣٦) (كيابيه بين وه جوبهار ع خداؤل كوبُرا كت بن" " أهلذًا اللَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا" (الفرقان: ٣١) " كيابه بين جن كوالله نے رسول بنا كر بھيجا' اور 'مَاذَآ أَرَادَ اللَّهُ بِهِذَا مَثَلَّا ' (القره:٢٦)' الله في الي مثال بي كيااراده كيا؟" با جي الله تعالى كاارشادٌ و مَما هذه الْحَيْو ةُ الدُّنْيَ آلَا لَهُ الْمُ وَّ لَمِعِبٌ ''(العنكبوت: ٦۴)'' دنيا كي زندگي تونهيس مَّر كھيل كود'' بھي اسم اور بھي اشار واسم بعيد ے مشارالیہ کی تعظیم مقصود ہوتی ہے مثلاً " ذلك الْكِتَابُ لَا رَیْبَ فِیْهِ " (القره: ۲) '' وہ بلند درجہ کتاب کوئی شک کی جگہ نہیں'' اس کے درجہ کی دوری کی طرف جاتے

(۳) اسم موصول کے ساتھ معرف لانڈ بیاس وقت ہوتا ہے جب اسم خاص کے ساتھ اس کا ذکر ناپند یدہ تصور کیا جاتا ہوا وراس کی پردہ داری مقصود ہو یا اہانت وغیرہ دیگر اسباب کی بناء پر جیسے'' وَ اللَّذِی فَالَ لِوَ الِدَیْهِ اُفْتِ لَکُمَا''(الاحقاف: ۱۷)'' اور وہ جس نے ایک ماں باپ سے کہا: اُف' اور'' وَ رَ اوَ دَتُهُ الَّتِی هُوَ فِی بَیْتِهَا''(یوسف: ۲۳)'' اور وہ جس عورت کے گھر میں تھا اس نے اسے لبھایا''۔

اور بھی یتعریف بالموصول عموم مراد لینے کی غرض ہے ہوتی ہے جیئے 'اِنَّ الَّلَّذِیْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا''(خم اسجدہ: ۳۰)'' اوروہ جس نے کہا: ہمارارب اللہ ہے پھر

اس پرقائم رہے' الا ہداور' وَ الَّذِيْنَ جَاهَدُوْ الْفِينَا لَنَهْدِينَهُمْ سُبِلْنَا' (العنبوت: ١٩)' اور جنہوں نے ہماری راہ میں کوشش کی ضرورہم انہیں اپنے رہتے دکھادیں گے' اور' إِنَّ اللَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدُخُلُونَ جَهَنّم' (الومن: ١٠)' وہ جومیری عباوت ہے کبرکرتے ہیں عقریب جنم میں جا کیں گے ذلیل ہوکر' یا خصار کی غرض ہے موصول ہے معرفدلا یا جاتا ہے۔ جینے' لَا تَکُوْنُوْ اللَّهُ مِمّا قَالُوْ ا' (الاحزاب: ١٩)' ان جیسے نہ ہونا جنہوں نے موک کوستایا تواللہ فرق اللّٰهُ مِمّا قَالُوْ ا' (الاحزاب: ١٩)' ان جیسے نہ ہونا جنہوں نے موک کوستایا تواللہ خورے موک علائے اس قول ہے کہ حضرے موکی علائے لگا کو آور کی بیاری ہے اللہ تعالی نے ان کی برائے کا اظہار فر مادیا اس میں اختصاریوں ہوا کہ اگر ان کے ناموں کی فہرست گنوائی جاتی تو بات طول پکڑ جاتی۔ اور یہ مثال عمومیت کی اس لیے نہیں ہوسکتی' کیونکہ تمام بنی اسرائیل نے تو موکی علائے لگا اور یہ مثال عمومیت کی اس لیے نہیں ہوسکتی' کیونکہ تمام بنی اسرائیل نے تو موکی علائے لگا اور یہ مثال عمومیت کی اس لیے نہیں ہوسکتی' کیونکہ تمام بنی اسرائیل نے تو موکی علائے لگا اور یہ مثال عمومیت کی اس لیے نہیں ہوسکتی' کیونکہ تمام بنی اسرائیل نے تو موکی علائے اللہ کے حق میں یہ بیاری کا عیب لگانے والا قول نہیں کیا تھا۔

تعریف و تنکیر کے متعلق ایک اور قاعدہ

جب کسی اسم کاذ کردوبار ہوتو اس کے حیار احوال ہوتے ہیں:

(۱) دونوں معرفہ ہوں (۲) دونوں نکرہ ہوں (۳) اول نکرہ ٹانی معرفہ (۳) اس کے برمکس' (یعنی اوّل معرفہ اور ٹانی نکرہ) اگر دونوں اسم معرفہ ہوں تو اس صورت میں غالب طور پر ٹانی عین اوّل ہوتا ہے اور اس کی وجہ سے اس معبود پر ولالت کرتا ہے جو لام یا اضافت میں اصل ہے۔ جسے:

وَقِهِمُ السَّيِّاتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاتِ. اور اَنهيں برائيوں (كے وبال) سے اور اَنهيں برائيوں (كے وبال) (المون: ٩) بچاؤاوراس دن توجے برائيوں (كے وبال)

ہے بچائے۔

اوراگر دونوں نکرہ ہوں تو ٹانی غیراؤل ہوگا اور ایسا اکثر اور غالب طور پر ہے کیونکہ اگر ٹانی کواؤل سے جدا کوئی دوسرااسم قرار نہ دیں تو پھر تو وہی تعریف اس کے مناسب تھی'اس بناء پر کہ وہ اسم ٹانی معہود سابق ہے' جیسے: قوت عطا فر مائی' پھر قوت کے بعد ضعف اور

الله الله الله على خَلَقَكُم مِنْ ضُعْفِ ثُمَّ الله ع جس في تمهيل مزوري كي جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ طالت میں پیداکیا کھر تہیں کروری کے بعد بَعْدِ قُوَّةِ ضُعْفًا وَّشَيْبَةً. (الروم: ٥٣)

بڑھایادیا۔

اس میں اول' صعف' سے مراد نطفہ ہے اور ثانی ' صعف' سے بچین اور' ضعف'' ثالث ہے بڑھایامراد ہے۔

اللَّهُ تَعَالَى كَا قُولُ ' فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۞ إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۞ ' (الانشراح:١-٥٥) '' تو بے شک دشواری کے ساتھ آ سانی ہے 0 دشواری کے ساتھ آ سانی ہے' میں دونوں ہی قتمیں جمع ہوگئی ہیں' چنانچہ دوسرا''عسر'' وہی ہے جو کہ پہلا' عسر''ہے مگر دوسرا''یسس یہلے''یسسر'' کاغیر ہے'اں بات کی تائید حضور ملتی نیاتی کے اس فر مان ہے بھی ہوتی ہے'آ ہے ا نِ فَرِ مایا: ' لَمُنْ یَغُلِبَ عُسْرٌ یُسُویْن ''ایک عُسر (تنگی) دویُسُروُں (آسانیوں) پر غالب نہیں ' ہوسکتی۔

ا کم شاعر کہتا ہے: _

إِذَا اشْتَدَّتْ بِكَ الْبُلُواي فَفَكِّرُ فِي أَلَمْ نَشُرَحُ فَعُسْرٌ بَيْنَ يُسْرَيْنِ إِذَا فَكُورْتَهُ فَافْرَحُ

(٣) اگریبلااسم نکرہ اور دوسرامعرفہ تو عہد پرخمل کرتے ہوئے ٹانی اسم بعینہ اسم اوّل قرار بائے گا۔

" بهم نے فرعون کی طرف رسول بھیج تو فرعون نے اس رسول کا تھم نہ مانا"۔" فیٹھا مِصْباً کُ ٱلْمِصْبَاحُ فِي زُجَاجَةِ ٱلزُّجَاجَةُ" (النور:٣٥)" السيس حِراغ بوه جِراغ ايك فانوس مين بـ " ـ " إلى صِرَاطٍ مُسْتَقِيْم صِرَاطِ اللهِ " (الثوري: ٥٢ ـ ٥٢) "سيرهي راهالله كي راه '_' مَا عَلَيْهِمْ مِنْ سَبِيلِ وَإِنَّمَا السَّبِيلُ ''(الثوري:٣١-٣١)' ان ير کچھمواخذہ کی راہ نہیں بے شک مواخذہ''۔

(٣) اگراول اسم معرفه مواور ثانی اسم نکره موتو مطلق طوریر کچھنہیں کہا جا سکتا بلکه قرائن پر مدار

ہوگا ؛ چنانے بھی دونوں اسموں کے باہم مغائر ہونے پر قرینة قائم ہوگا ؛ جیسے 'وَیَوْمَ تَفُوْمُ السّاعَةُ '(الردم: ۵۵)' اور قیامت کے دن ہم مغائر ہونے سّاعَةِ '(الردم: ۵۵)' اور قیامت کے دن ہم مقسم الْمُجْوِمُوْنَ مَا لَبِثُوْا غَیْرَ سَاعَةِ '(الردم: ۵۵)' اور قیامت کے دن ہم مقسم کھا کیں گئے کہ ندر ہے تھے گرایک گھڑی 'اور بھی دونوں اسموں کے متحد ہونے پر قرینہ پایاجا تا ہے۔ جیسے 'لِلنّاسِ فِی ھٰذَا الْقُرْ انِ مِنْ کُلِّ مَثَلِ لَعَلَقُهُم مِن کُلِ مَثَلِ لَعَلَقُهُم یَن کُلُون کے لیا اللہ کھنے کہ کو وُن کَ فُوْن انّا عَرَبِیّا '(الزم: ۲۸۔ ۲۷)' بے شک ہم نے لوگوں کے لیے اس قرآن میں ہرفتم کی مثالیں بیان فر مائی ہیں' تا کہ دہ فسیحت قبول کریں (ہم نے انہیں) عربی (زبان کا) قرآن (عطافر مایا)'۔

نبیہ: شیخ بہاؤالدین نے'' عروس الافراح'' میں بیان کیا ہے اور دوسرے حضرات کا بھی کہنا ہے کہ یہ فدکورہ بالا قاعدہ' مشحکم اور مکمل نہیں معلوم ہوتا یا یوں کہ لیس کہ یہ قاعدہ کلمنہیں ہے کہ فیکہ بہت می آیات ہے اس پرنقص وار دہوتا ہے۔

میں دونوں کا متغائر ہونا) میں جو قاعدہ بیان کیا گیا ہے۔اس پراللہ تعالیٰ کے قول'' وَ هُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَّهُ وَكِي الْأَرْضِ إِلْهُ" (الزخرف: ٨٨) أوهذات آسان ميس معبود إورزمين مين معبود بـ 'اوراى طرح الله تعالى كقول' يَسْ أَلُوْ نَكَ عَنِ الشَّهْوِ الْحَرَامِ قِتَالِ فِيهِ قُلْ قِنَالٌ فِيهِ كَبِيْرٌ "(القره: ٢١٤)" تم سے يو چھتے ہيں ما وحرام ميں الرنے كا حكم تم فرماؤاس میں لڑنا بڑا گناہ ہے'' سے نقض وار دہوتا ہے کہ دوقول میں ہر دواسم نکرہ ہیں' حالا نکہ دونوں قولوں

میں دوسرے دوسرے قول سے پہلااسم ہی مراد ہے مغایرت نہیں یائی گئی۔

اورقاعده كى تتم ثالث مين الله تعالى كقول "أنْ يُنصلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا وَالصُّلْحُ خَيرٌ ''(النياء:١٢٨)'' كه آپس ميں صلح كرليں اور صلح خوب ہے''۔'' وَيُوْتِ كُلَّ ذِي فَضْلَ فَصْلَهُ '' (هود: ٣)' اور برفضيلت واليكواس كافضل پنجائكًا'' يـ و يَمو ذكم فُوَّهُ إلى فُوْ نِهِ كُمْ '' (هور: ٥٢)' اور برُ هادے گاته ہیں قوت میں تمہاری پہلی قوت ہے'۔' لِيَزْ دَادُوْل إِيْهُ مَانًا مَّعَ إِيْمَانِهِمْ ''(الْتِحَ: ٣)' تا كهوه اور برُه جائين (قوت)ايمان مين اينے (يہلے) ا يمان كماته'' ـ ' ز دْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ '' (الحل: ٨٨)' بم في عذاب يرعذاب برُ هايا'' _' وَ مَا يَتَبِعُ ٱكْتُرُهُمْ إِلَّا ظَنَّا إِنَّ الظَّنَّ ''(يِنس:٣٦)' اوران ميں اكثر تو نہيں جلتے مگر گمان پر بےشک گمان' 'آیات ہے نقض وار دہوتا ہے کیونکہان میں ثانی غیراؤل ہے۔ علامه سيوطى قدس سره العزيز فرماتے ہيں:

ا گرغور وفکر ہے کا م لیا جائے تو ثابت ہو جاتا ہے کہ ان مثالوں میں ہے کسی مثال ہے بھی قاعدہ ندکورہ بالا پرنقض واردنہیں کیا جاسکتا' کیونکہ'' الاحسان''میں جیسا کہ ظاہر حال ہے معلوم ہوتا ہے'الف لام جنس کا ہے اور اس حالت میں وہ معنی کے لحاظ سے اسم نکر ہ کی طرح ہوتا ے بہی حالت النفس اور الحركي آيت كى ہے۔

بخلاف آیت العسر کے کہاس میں الف لام عہد یا استغراق کے لیے آیا ہے جیسا کیا حدیث یاک ہے معلوم ہور ہاہے۔

ای طرح آیت الظن میں (جو قاعدہ سوم کے تحت پیش کی گئی ہے) ہم یہ تسلیم نہیں كرتے كه يهاں دوسرا'' ظن' بيليظن كا مغائر بئ بلكه وة قطعي طورير بيلے كاعين ہے اس ليے کہ ہر'' ظن'' (گمان) مرموم نہیں ہے اور ایسا ہو بھی کیونکر سکتا ہے کیونکہ قطعیات کو چھوڑ کر zami.MadinaAcademy.Pk

شرعیت کے باقی تمام احکام خودظنی ہیں تو کیا پھر ہر گمان کو بُر ا گمان کرنا بُر انہ ہوا؟

اورای طرح" آیے المصلح" میں کوئی امراس بات سے مانع نہیں کہ دوسری صلح سے وہی نہ کورہ سابقہ سلح مراد ہواور یہ وہ صلح ہے 'جومیاں ہوی کے درمیان ہوتی ہے۔ پھرتمام معاملات میں صلح کامستحب ہونا سنت سے ماخوذ ہے اور اس آیت سے قیاس کے طور پر'لیکن اس کے ساتھ آیت میں عموم کا قول کرنا جائز نہیں ہے اور یہ نہیں کہنا جا ہے کہ ہرایک سلح اچھی ہے 'کیونکہ جوصلے کسی حرام کو حلال یا کسی حلال کو حرام قرار دیتے ہوؤہ وہ یقینا ممنوع ہے۔

" آیت قال" کی بھی یہی حالت ہے کہ بے شک اس میں " قت ال" نانی قال اوّل کا عین نہیں ہے' بلکہ دونوں سے الگ الگ مرادوہ جنگ ہے جو کہ بجرت کے دوسرے سال ابّن الحضر می کے سریہ میں ہوئی تھی اور دہی جنگ اس آیت کا سبب نزدل ہے اور دوسرے" قتال" سے جنس قال مراد ہے نہ کہ بعینہ وہی پہلاقال اور رہی آیت کریمہ" وَهُو الَّذِی فِی السَّمَاءِ اللّٰه عالیہ نے یہ دیا ہے کہ یہ ایک امرزا کہ کافا کہ ہ دینے کے لیے تکریم کے باب سے ہے۔ اللّٰہ علیہ نے یہ دیا ہے کہ یہ ایک امرزا کہ کافا کہ ہ دینے کے لیے تکریم کے باب سے ہے۔ اللّٰہ علیہ نے یہ دیا ہے کہ یہ ایک امرزا کہ کافا کہ ہ دینے کے لیے تکریم کے باب سے ہے۔

اس کا دلیل میں ہے کہ اس سے پہلے اللہ تعالی نے اپنے قول "سب بحان رَبِّ السّمون وَ وَالْاَرْضِ رَبِّ الْسَعُونِ وَالْاَرْضِ رَبِّ الْسَعُونِ وَالْاَرْضِ رَبِّ الْسَعُونِ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ الله عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُو

قاعده (دربیان مفرد وجمع)

مفرداورجمع لانے کے قواعد میں سے ایک 'السماء''اور' المارض''کامفرداورجمع ہونا ہے' قرآن پاک میں جہال کہیں بھی''ارض''کالفظ آتا ہے' مفردی آیا ہے' جمع کے سیغہ کے ساتھ واقع نہیں ہوا' بخلاف' السموات''۔

"ارض" کی جمع ندآنے کی وجداس کا تقیل ہونا ہے کی وکداس کی جمع ہے:"ارضون" اوراس لیے جہال تمام زمینوں کا ذکر مقصود ہوتا ہے وہال اللہ تعالی نے" وَمِنَ الْاَرْضِ مِشْلُهُنَّ"

فر مایا ہے' کیکن ساء کسی جگہ صیغہ جمع کے ساتھ اور کہیں صیغہ مفرد کے ساتھ ذکر کیا گیا ہے' موقع محل کے مطابق ہرایک میں کوئی نہ کوئی نکتہ ہوتا ہے' جواس مقام کے مناسب ہوتا ہے۔

افرادجمع کی ایک مثال'' المویع '' ہے' یہ لفظ واحداور جمع دونوں طرح ندکور ہوتا ہے' جس مقام پراک سے مراد'' رحمت'' ہو' وہاں جمع اور جہال'' عذاب'' کے سیاق میں واقع ہو'اس جگہ واحد ذکر کیا ہے۔

ابن الى حاتم اور دوسر علماء نے حضرت الى بن كعب ضَالله سے روايت بيان كى ہے' انہوں نے فرمايا كه' السوياح' بھيند جمع قرآن ميں جہال بھى آيا ہے وہ رحمت (كے ليے) ہے اور جہال کہيں' السويع ''آيا' وہ عذاب (كے ليے) ہے' اس ليے حديث مبارك ميں آيا ہے۔'' اَللّٰهُمَّ اَجْعَلْهَا رِيَاحًا وَلَا تَجْعَلْهَا رِيْحًا''ا ہے اللہ! تواس ہوا كو' رياحًا'' (رحمت) بنااور' ريح' عذاب نہ بنا۔

ال کی حکمت میہ بیان کی گئی ہے کہ بادِرحمت کے مختلف فوائد' خصوصیات' تا ثیرات اور منافع ہوتے ہیں' لہذا جب ان میں سے کوئی تندو تیز ہوا چلتی ہے تو اس کے مقابل دوسری ہوا ایسی چلا دی جاتی ہے' جو پہلی ہوا کی طوفان خیزی اور آفت انگیزی کا زور تو ڈکر اس میں ایک قتم کی لطافت اور خنگی پیدا کر دیت ہے' جو حیوانات اور نبا تات کے لیے یکسال طور پر مفید ثابت کی لطافت اور خنگی پیدا کر دیت ہوائیں ہوئیں اور عذاب کی حالت میں وہ (ہوا) ایک ہی طرح سے چلتی ہے اور اس جھکڑ اور آندھی کے مقابل اور اس کو دفع کرنے والی دوسری ہوائیں طرح سے چلتی ہے اور اس جھکڑ اور آندھی کے مقابل اور اس کو دفع کرنے والی دوسری ہوائیں

ہوتی 'مگراللہ تعالیٰ کا قول جوسور ہ پونس میں ہے:

"وَجَوَيْنَ بِهِمْ بِوِيْحٍ طَيِّبَةٍ" (ينس: ٢٢)" ادرلوگول كول كرموافق ہوا كے ساتھ چليں" وہ اس زير بحث قاعدہ سے اس ليے خارج ہوگيا ہے كداس ميں" ريسے" كو باوجود يكه رحمت كے معنی ميں ہے مفرد لايا گيا ہے۔

اوراہے مفردلانے کی دووجہیں ہیں:

(۱) ایک وجد فظی ہے اور وہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کے قول ' وَ جَاءَ تُھا دِیْتُ عَاصِفٌ ' (ینس: ۲۲)' ان پر آندھی کا جھونکا آیا' میں جولفظ' دیسے ' آیا ہے وہ مفرد ہے۔ لہذا

اس کے مقابلہ میں واقع ہونے کی وجہ سے مشاکلت لفظی کا لحاظ رکھتے ہوئے اس میں

بھی مفرد لے آئے' کیونکہ بہت می چیزیں ایک ہوتی ہیں' جو مستقل طور پر تو جائز نہیں

ہوتیں مگرمقابلہ کی صورت میں ان کا جواز ثابت ہو سکتا ہے۔

جیسا کہ اللہ تعالیٰ کے اس ارشاد' و مُکرو و او مُکر الله ''(آل مران: ۵۳)' اور کافرول نے مرکیا اور اللہ نے خفیہ تد ہیر کی 'میں ہے کہ کافرول کے' مہر ''کے مقابلہ میں اللہ تعالیٰ نے اپنے عمل سزا جوان کے مروفریب پر مرتب ہوتا ہے' کو بھی مقابلہ کے طور پر ای لفظ' مکو '' سے تعییر فر مادیا اور مقابلہ سے الگ کر کے دوسری حالتوں میں بالاستقابال و یکھا جائے تو معاذ اللہ اللہ سبحانہ و تقدس کی طرف' مکو '' کی نبیت ناجا کڑے وہ ایسے عیوب سے پاک ہے' دوسری وجہ معنوی ہے' وہ یہ ہے کہ اس مقام پر رحمت کا اتمام کو عبوب سے پاک ہے' دوسری وجہ معنوی ہے' وہ یہ ہے کہ اس مقام پر رحمت کا اتمام کو المال' (یح " کی وصد سے بی حاصل ہوتا ہے' نہ کہ اس کے اختلاف سے نبیس چل سکتا' بلکہ مختلف المال' (یح جہاز) صرف موافق ہوا ہی ہے چلتا ہے' بو مخالف سے نبیس چل سکتا' بلکہ مختلف ہواؤں کے جمیلوں اور تھیٹر وں سے اس کی بلاکت اور تبابی ہو جاتی ہوائی ہے' الغرض یہاں ایک ہی ہواؤں کی ہوا مطلوب ہے' اس لیے اللہ تعالیٰ نے اس' ریح " کو' طیب ہو ہوائی کا اللہ تعالیٰ کا ایک ہی نوع کی ہوا مطلوب ہے' اس لیے اللہ تعالیٰ نے اس' دوری تا عدہ میدنہ پر اللہ تعالیٰ کا قول' آئی تیشُن یُسْرِین الرِیْح فَی طُلُلُن دَو ایک دُ' (الثوریٰ: ۳۳)' وہ چا ہے تو ہوا تھا دے کہ کھری موجود ہے۔ دے کہ طری رہ دو انہیں'' بھی موجود ہے۔ دے کہ طری رہ دو انہیں'' بھی موجود ہے۔ دے کہ طری رہ دو انہیں'' بھی موجود ہے۔ دے کہ طری رہ دو انہیں'' بھی موجود ہے۔ دے کہ طری رہ دو انہیں'' بھی موجود ہے۔ دے کہ طری رہ دو انہیں'' بھی موجود ہے۔

مرابن المنيرن كها ہے كنبيس بيآيت مذكورة الصدر قاعدہ برآئى ہے كيونكه ہوا كاساكن

ہو حانا' جہاز والول پرعذاب ومصیبت ہوتا ہے۔

افراد وجمع کی مثالوں میں سے ایک'' نور اور ظلمت'' کی مثال ہے۔

"نور"كو بميشه مفرداور" ظلمات"كوبصيغة جمع لايا كيائ اسيطرح" سبيل الحق" كومفرداور' سبل الباطل" كوجمع ذكركيا كياب أس كى مثال الله تعالى كاي تول ولا تتبعوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ "(الانعام:١٥٨)" نه چلوكه وه رابين تمهين (الله كي راه) ہے حدا کردیں' ہے۔

اس کی وجہ یہ ہے کہ حق کا راستہ ایک ہی ہے اور باطل کے راستے شاخ در شاخ اور متعدد ہیں اور'' ظلمت'' به منزلهٔ طُرُقِ باطل اور'' نور'' به منزلهٔ طُرُقِ حق ہے' بلکه وہ دونوں بالكل ان دونول كي طرح ہيں۔اوراسي قاعدہ ير'' ولمي المومنين'' (مسلمانوں كے دوست) کووا حداور'' او لیساء السکفار ''(کفار کے دوستوں) کو بہصیغہ جمع اس وجہ سے ذکر کیا ہے کہ 🖔 ان کی تعداد کثیر ہے جنانجہ اللہ تعالی فرما تا ہے:

اَللَّهُ وَلِيٌّ الَّذِينَ 'امَنُوْا يُخْرِجُهُمْ الله مددگار بِ ايمان والول كا' نكاليا مِّنَ الظُّلُمْتِ إِلَى النُّوْرِ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِهِ أَبِينِ تاريكيون سے روشیٰ كی طرف اور أُولِينَّهُمُ الطَّاغُونُ يُخْرِجُونَهُمْ مِّنَ النَّوْرِ جَنهوں نے کفر کیا ان کے دوست شیطان ہیں' وہ انہیں روشنی ہے تاریکیوں کی طرف

إِلَى الظُّلُّمٰتِ (البقره:٢٥٧)

نكالتے ہیں۔

ای اصول یر''نساد''جہاں کہیں بھی آیا ہے'مفر دذ کر ہوا ہے اور'' جسندہ''واحداور جمع د دنو ل صیغوں کے ساتھ واقع ہواہے' کیونکہ'' جسنان'' باغ مختلف الانواع ہیں'لہذاان کی جمع لا نامستحسن تھااور'' ناد'' آتش ایک ہی مادہ ہے دوسری وجہ پیہ ہے کہ جنت رحمت ہے اور'' ناد' ' آ گ عذاب اس ليے ' رياح ' اور' ريح ' كى تعريف كے مطابق جنت كوب صيغه جمع اور ناركو [بهصیغه وا حدبیان کرنا مناسب تظهرابه

'' المصديق'' كو بيصيغه مفردلانے اور' الشافعين '' كوجمع لانے ميں بھي وہي قاعدہ كارفر ما إلى الله تعالى كاقول ب: 'فَهَالَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ ٥ وَلَا صَدِيقِ حَمِيْمِ ٥ ' (الشراء: ۱۰۱ ـ ۱۰۰)'' اور اب ہمارا کوئی سفارشی نہیں 0 اور نہ کوئی غم خوار دوست 0 ''اور اس کی حکمت یہ ہے کہ عاد تأشفاعت چاہنے والوں کی کثر ت اور سپچ دوست کی کمی ہوتی ہے۔

زخشر ی کہتا ہے کہ کیاتم نہیں و کیھتے ہو کہ جب کوئی شخص کسی ظالم کےظلم کا شکار ہوا وراس
کے جوروستم میں مبتلا ہوتا ہے تو اس کے کتنے ہی اہل وطن کہ ان میں سے اکثر کی اس سے جان
پہچان بھی نہیں ہوتی 'اس کی محض جذبہ خیر سگالی اور رحم دلی کے تحت سفارش کے لیے اٹھ کھڑ ہے
ہوتے ہیں' لیکن مخلص اور سپچ دوست کا ملنا اونٹی کا انڈہ واور دودھ کا دریالا نے کی مانند کار دشوار

مفرداورجمع لانے کی مثالوں میں ایک 'سمع ''اور' بصر '' ہے۔' سمع ''مفرداور ''بصر '' بصیغہ جمع'' ابسصار ''آیا ہے'اس کی وجہ یہ ہے کہ' سمع '' پرمصدریت عالب ہے'لہذااس کومفرد لایا جاتا ہے اور اس کے برخلاف' بصر '' کہ وہ اعضاء جارحہ لیعنی ظاہری اعضاء میں مشہور ہے اور اس لیے بھی سمع سے اصوات (آوازیں) کا تعلق ہے'جوایک ہی حقیقت رکھتی ہیں جبکہ'' بصر '' کا تعلق رنگوں اور کا کنات کی دیگر اشیاء ہے ہے'جوایک ہی حقیقتیں ہیں۔

سوال وجواب كابيان

جواب میں اصل میہ ہے کہ سوال کے مطابق ہو۔

لیکن بعض اوقات اس امر پر تنبیہ کرنے کے لیے کہ سوال یوں نہیں بلکہ یوں کرنا چاہے تھا' سوال کے تقاضول سے تجاوز کرتے ہوئے بھی جواب دے دیا جاتا ہے۔ یعنی یہ بات سمجھانے کے لیے کہ سائل کا سوال غلط ہے' اس کو جواب کے انداز پر سوال کرنا مناسب تھا' سمجھانے کے لیے کہ سائل کا سوال غلط ہے' اس کی بجائے پچھاور جواب دے دیا جا تا ہے اور سوال کے مطابق جو جواب دینا چاہے تھا' اس کی بجائے پچھاور جواب دے دیا جا تا ہے اور علامہ سکا کی اس انداز جواب کو اسلوب تھیم کا نام دیتے ہیں۔

اور ہرسوال میں چونکہ اس بات کی حاجت ہوتی ہے کہ اس کا جواب سوال کی بہ نبیت
 زیادہ عام ہو للہذا جواب زیادہ عام بھی ہوتا ہے اور بعض اوقات مقتضائے حال کے مطابق جواب سوال کی نبیت ہے بہت زیادہ ناقص بھی آتا ہے۔

ادراس سوال وجواب کی مثال کہ جس میں سوال کے مقتضی سے عدول کر کے سائلین کو کھوادر جواب دیا جاتا ہے۔ اللہ تعالیٰ کا بیقول ہے: ' یَسْنَدُلُوْ نَکَ عَنِ الْاَهِدَلَةِ قُلْ هِی کَھُوا وَقَتِ مَنَ لِلنَّاسِ وَ الْمُحَجِّ ' (البقرہ:۱۸۹)'' تم سے نئے جاند کو پوچھتے ہیں 'تم فر مادووہ وقت کی علامتیں ہیں لوگوں اور نجے کے لیے' لوگوں نے ہلال کے بارے میں سوال کیا' وہ شروع کی علامتیں ہیں دھاگے کی طرح باریک سا دکھائی ویتا ہے' پھر رفتہ رفتہ بڑھتا ہے جتی کہ ماہ کامل شروع میں دھاگے کی طرح باریک سا دکھائی ویتا ہے' پھر رفتہ رفتہ بڑھتا ہے جتی کہ ماہ کامل بن جاتا ہے' ایسا کیوں ہوتا ہے۔ ایسا کیوں ہوتا ہے۔ ایسا کیوں ہوتا ہے؟

مگراس سوال کے جواب میں ان لوگوں کو چاند کے گھٹے بڑھنے کی حکمت بتادی گئی ہے۔ اس کی علّت نہیں بتلائی گئی تو اس کی وجہ یہ ہے کہ انہیں اس امر پرمتنبہ کرنامقصود تھا کہ تمہیں جو جواب دیا گیا ہے ہم کوسوال ہی اس چیز کے بارے میں کرنا چاہیے تھا اور تم لوگوں نے جوسوال کیا' وہ غیر ضروری سوال ہے۔

لیکن بیساری تقریراس صورت میں ہے جب ان کا سوال کرنا ایسا ہی ہوجیا کہ ہم نے بیان کیا' اس لیے کہ بیجھی تو ممکن ہے کہ ان کا سوال ہی اس بارے میں ہوکہ وہ اس کی حکمت

دريافت كرنا جائة مول تواس صورت مين چرسوال اور جواب مين مطابقت كا بإيا جانا ظاهر

اورجواب میں سوال سے زیادتی کرنے کی مثال اللہ تعالیٰ کا یہ قول ' یُنہ جیٹے کُم مِنها وَمِنُ کُولِ مَن کُولِ کَرِف ' (الانعام: ۱۳۳)' (اللہ ہی) تہمیں اس سے اور ہر کتی سے بچاتا ہے ' ہے کیونکہ یہ قول ' مَن یُنہ جی کُم مِن طُلُمَاتِ الْبُرِ وَ الْبُحْدِ ' (الانعام: ۱۳۳)' کوئ تہمیں نجات دیتا ہے فضی اور دریاؤں کی تاریکیوں میں ' کے جواب میں آیا ہے اور موی علایہ الله کا قول ' هی عَصَای آتو تحوا عکی ہا و اُهش بِها عَلی غَنمِی ' (طند ۱۸۱)' یہ میراعصا ہے میں اس پر فیک لگاتا ہوں اور اس سے بریوں کے لیے بے جھاڑ لیتا ہوں' بھی ای طرح کا ہے کیونکہ اللہ تعالیٰ نے موی علایہ اللہ سے مرف یہ فرمایا تھا کہ' وَ مَا تِلْكَ بِیَمِیْنِكَ یَا مُوْسٰی ' کیونکہ اللہ تعالیٰ نے اللہ تعالیٰ سے مرف یہ فرمایا تھا کہ' وَ مَا تِلْكَ بِیَمِیْنِكَ یَا مُوْسٰی ' کے مرک کیا ہے؟'' مگر موی علایہ اللہ نے اللہ تعالیٰ سے ہم کامی کی لذت وہر ورمیں جواب دراز کردیا۔

ای طرح قوم ابراہیم کا جواب 'نَ عَبُدُ اَصْنَامًا فَنَظُلُّ لَهَا عَاکِفِیْنَ ''(الشراناء)
''ہم بتوں کی عبادت کرتے ہیں تو ہم انہی کے لیے جم کر بیٹے رہتے ہیں' بھی اصل سوال' مَا
تَعَبُدُونَ ''(الشران ک)' تم کس کی عبادت کرتے ہو' سے زائد ہے'اس کی وجہ یہ ہے کہ انہوں
نے بتوں کی برستش میں اپنے مسرت محسوس کرنے اور بت پری پرڈ ٹے رہنے کا اظہار کرنے
کی غرض ہے جواب کو طول دیا ہے تا کہ سوال کرنے والے کو غیظ میں جلائیں اور اس کے
غضب کو بڑھکا کمیں۔

وجوه اور نظائر کی شناخت

وجوه

وه مشترك لفظ جوكئ معانى مين استعال مؤجس طرح كه لفظ امة "بــــ

نظائرُ

مترادف اورہم معنی الفاظ کونظائر کہتے ہیں' بعض علماء نے اس کومعجز اتقِر آن کی انواٹ

سے شار کیا ہے کیونکہ قرآن پاک کا ایک ہی کلمہ بیں یا اس سے کم وبیش وجوہ اور طریقوں پر جاری وساری ہوتا ہے اور ایسا بندے بشر کے کلام میں نہیں پایا جا سکتا۔

ابن سعداور دیگرمحدثین نے حضرت ابوالدرداء ہے موقو فأروایت کیا ہے:

''لا یَسفَقَهُ الرَّجُلُ کُلَّ الْفِقْهِ حَتَّی یَری لِلْقُرُ ان وُجُوهًا کَشِیرَ وَ الْعَیٰ کوئی خُصُ اس وقت تک کامل فقیہ نہیں ہوسکتا جب تک وہ قرآن کیم کی بہت می وجوہ پرنظر ندر کھتا ہو۔

بعض علماء نے کہا ہے کہ اس حدیث کی مراد اشارات باطنی کا بھی استعال کرنا ہے اور بیرند کیا جائے کہ صرف ظاہری تفییر پر ہی اقتصار کرلیا جائے۔ ابن سعد نے حضرت عکر مہ کے طریق پر حضرت ابن عباس ویجنا تھ ہے دوایت کی ہے کہ حضرت علی بن ابی طالب کرم اللہ وجہہ الکریم کے خضرت ابن عباس ویجائے تھے وقت فر مایا تھا: تم خوارج کے نے حضرت ابن عباس ویجائے تھے وقت فر مایا تھا: تم خوارج کے پاس جا کرمباحثہ کرنا 'کیونکہ وہ بہت می وجوہ کا احمال رکھتا ہے بلکہ ان کے ساتھ صنت کے ذریعے مقدمہ لڑنا 'اس قتم کے چند خاص الفاظ کا یہاں ذکر کیا جا تا ہے۔

"الهدى" يالفظستره معانى كے ليے آتا ہے

- (١) ثبات (الهدنا الصِّراط الْمُسْتَقِيْمَ "(الفاتحة ٥) مسيرهي راه جِلا" _
- (۲) بیان' اُولَیْكَ عَـلْی هُـدًّی مِّنْ رَّبِّهِمْ ''(الِقره:۵)' وہی لوگ اینے رب کی طرف سے ہدایت پر ہیں'۔
- (۳) دین' اِنَّ الْهُداٰی هُدَی اللَّهِ ''(آلعران:۲۷)' ہدایت تو وہی ہے جواللہ کی طرف (۳) سے ہدایت ہو''۔

 - (۵) دعاء 'وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ '(الرعد: ٤)' اور برقوم كے ليے آب بادى بين '۔
 '`وَجَعَلْنَهُمْ أَنِمَّةٌ يَّهَدُّوْنَ بِأَمْرِ نَا ''(الانبياء: ٢٤)' بهم نے ان کو پیشوا بنایا وہ ہمارے تھم سے ہدایت کرتے ہیں '۔
 - (١) رسول اور كتب اللي 'فَالِمَّا يَأْتِينَكُمْ مِّينِي هُدَّى ''(البقره:٣٨)' توميرى طرف سے

تمہارے یاس کوئی رسول آئے''۔

(2) معرفت' بَهِإِن'' وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُونَ ''(أنحل:١٦)' اورستارول سےوہ معرفت يائے ہیں''۔

(٨) جَمعَىٰ نِي مُنْ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللللَّهِ اللَّهِ اللَّمِلْمَا الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ ال

(۹) قرآن 'وَلَقَدْ جَآءَ هُمْ مِّنْ رَّبِهِمُ الْهُدْى ''(النجم: ۲۳)' حالانكه بـ شكان ك پاس ان كرب كى طرف سے ہدايت آئی''(يعنی قرآن پاک)۔

(۱۰) توراة: ' وَلَـقَدُ 'اتَيْنَا مُوْسَى الْهُداى ' (غافر: ۵۳)' بِ شكبهم نے مول كوتورات عطاكي'۔

(١١) اسرَ جاع: "وَأُولْئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ " (البقره: ١٥٧) أوريكي لوك بدايت برين "-

(۱۲) ججت: ' وليل' ' ' لَا يَهْدِى الْفَوْمَ الطَّلِمِيْنَ ' (آل عمران: ۸۱) ' بدايت نبيس دينا (الله) ظالم لوگول كؤ' (يعني دليل و حجت كاعلم) _

بعرقول تعالى 'ألَم تَوَالِي اللّذِي حَآجَ إِبْرَاهِمَ فِي رَبِّهَ ''(البقره:٢٥٨) اى لا يهديهم حجه ''_

(۱۳) توحید: '' إِنْ نَتَبِعِ الْهُدای مَعَكَ ''(القصص:۵۵)'' اگر ہم تمبارے ساتھ توحید کے پیروکار بنیں''۔

(۱۳) سنت: '' فَبِهُدْهُمُ اقْتَدِهُ ''(الانعام: ٩٠)'' توتم انہیں سنت کی پیروی کرو'۔ '' وَإِنَّا عَلَى الْهِرِهِمُ مُنْهَتَدُونَ ''(الزخرف: ۲۲)'' اور ہم انہیں کی سنت پرچل رہے ہیں''۔

(۱۵) اصطلاح: ' وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِى كَيْدَ الْخَآئِنِينَ ''(يوسف: ۵۲)' اور يقينا الله تعالى كامياب نهيں ہونے ويتاد غابازوں كى فريب كارى كؤ'۔

(١٦) الهام: 'أعْطَى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدْى ''(ط:٥٠)' اى المهد المعاش ''_

(١٤) توبه: 'إِنا هُدُنَا إِلَيْك ''(الاعراف:١٥١)' بشك بم تيرى طرف رجوع لائے '-

(١٨) ارشاد: "أَنْ يَهْدِيمَنِي سَوَآءَ السَّبِيْلِ "(القصص: ٢٢)" (ميرارب) مجصے سيدهي راه

يتائے"۔

"السوء" بيجى كئ وجوه برآتاب

(١) شد: 'يُسُو مُوْنَكُمُ سُوءَ الْعَذَاب ''(القره:٩٩)_

(٢) عقر: كونچيس كاننا'' وَلَا تَمَسُّوْهَا''(الاعراف: ٢٣)'' است باتھ نه لگاؤ''۔

(۳) زنا(بدکاری)''مّا جَسزَآءُ مَسنُ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوءً ا''(بوسف:۲۵)'' كياسزا ب اس كى جس نے تيرى بيوى سے بدى جابى''۔

' مَا كَانَ أَبُولِكِ امْرَا سَوْءٍ '' (مريم:٢٨) ' تيراباب بدكار نبيس تها ''_

(٢) برص: سفيد داغ: ''بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ ''(القصص:٣٢)'' سفيد چِكمّا بِعيب''۔

(۵) شرک:''مَا کُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْءٍ ''(الحلٰ:٢٨)'' ہم تو پچھ بُرائی (شرک) نہیں کرتے میں''۔

(٢) قَلَ اورشَكَت ' لَمْ يَمْسَسْهُمْ مُودَةٌ ' (آلعمران: ١٧٣)'' نه چھواان كوكسى برائي نے''

(۷) عذاب:'' إِنَّ الْمُخِوزِي الْيَوْمَ وَالشَّوْءَ عَلَى الْكُلِفِرِيْنَ''(الخل:٢٧)'' آج سارى رسوائى اورعذاب كافرول يربح'۔

"الصلوة" يبجى كئ وجوه يرآتا ہے

(١) يا يَجْ نمازي: "يُقِيْمُوْنَ الصَّلُوةَ "(البقره: ٣) " نماز قائم ركيس".

(٢) نماز عصر: ''تَـخبِسُونَهُمَا مِنْ بَعْدِ الصَّلُوةِ ''(المائده:١٠٦)' ان دونول كونماز عصر كے بعدر وكو''۔

(٣) نماز جمعه: ' إِذَا نُوْدِي لِلصَّلْوِةِ ''(الجمعه:٩)' جبنمازِ جمعه كي اذان هؤ' ..

(٣) جنازہ:'' وَ لَا تُسْصَلِّ عَلَى اَحَدٍ مِّنْهُمْ ''(التوبه:٨٨)'' اوران میں ہے کسی کی میت پر مجھی نماز جنازہ نہ پڑھنا''۔

(۵) دعاء: "وَصَلِّ عَلَيْهِمْ" (التوبه: ۱۰۳) اوران كے ليے دعا خيركرين" ـ

(٢) دين: 'أَصَلُوتُكُ تَأْمُوكُ ''(حود: ٨٥)' كياتمبارادين تهبيل يحكم ديتا ہے '_

(4) قراهُ: 'وَلَا تَجْهُرْ بِصَلَاتِكَ ''(الاسراء:١١٠)' اورنه توبلند آواز عقراءت كر''

(٨) رحمت واستغفار: 'إِنَّ اللَّهُ وَمَلْنِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ''(الاحزاب:٥٦)' بِشَك

الله اوراس كفرشته درود بصح بين نى مكرم پر'-'' أَلَرَّ حُمَهُ وَ رَدَتْ عَلَى أَوْجُهِ '' (رحمت بھى كئى وجوه پر آتا ہے)

(۱) اسلام: "يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَّشَاءُ" (آلعران: ۲۵)" اين وين اسلام عضاص كرتا بجي حالي "-

(٢) ايمان: أو التليني رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِه "(هود:٢٨)" اوراس نعطافر مايا مجهايمان اين جناب سئ"-

(٣) جنت: "فَفِيلَى رَحْمَةِ اللهِ هُمْ فِيْهَا خَالِدُونَ "(آلعران: ١٠٤)" وه الله كار رحمت (جنت) مِن بين اوروه بميشه الله مين ربيل كئا-

(٣) بارش: ' بُشْرًا بَيْنَ يَدَى رَحْمَتِه ' (الاعراف: ٥٤)' خوش خبرى سات ہوئا بى رحت (بارش) سے يہلے '۔

''الَّفِيْ اللهُ وَرَدَتْ عَلَى آوْجُهِ ''(لفظ فتنكَى وجوه كے ليے آتا ہے)

- (۱) شرك: "وَاللَّفِتْ لَهُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ" (البقره:١٩١) أوران كا فتنه (شرك) توقتل سے بھی سخت ہے '۔
 - (٢) گراه كرنا: "إِبْتِغَآءُ الْفِتْنَةِ" (آل عران: ٤) "گراهى چائےكو"-
 - (٣) قَلَ: 'أَنْ يَفْتِنَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوا ' (الساء:١٠١) ' كَيْكَافْرَمْهِينَ قُلْ كَردِي كَنْ -
- (٣) معذرت: "ثُمَّ لَمُ تَكُنْ فَتَنتَهُمْ" (الانعام: ٢٣) فيران كاكولى بهانه (معذرت) نه هوگا"-
 - (۵) قضاء: ' إِنْ هِي إِلَّا فِتْنَتُكَ ''(الاعراف:١٥٥)' وهُبيل مَكرتيري قضا''۔
- (١) مرض: ' يُفْتَنُونَ فِني كُلِّ عَام ''(التوبه:١٢١)' برسال مرض ميں مبتلا كيے جاتے ہيں''۔
 - (2) عبرت: "لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَهُ" (بِين ٨٥) " بمين عبرت نه بنا" _

"الرَّوْحُ وَرَدَ عَلَى أَوْجُهِ" (روح كَلُ وجوه كے ليے آتا ہے)

- (١) امر: (تَكُم) "وَدُوْحٌ مِّنْهُ" (النماء:١٤١) "اوراس كى طرف سے ايك تَكم".
- (٢) وَكَ: " يُنَزِّلُ الْمَلْئِكَةَ بِالرُّوحِ " (الحل: ٢) فرشتون كوالله اتارتا بوحى در كر" ـ
- (٣) قرآن: 'أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ أَمْرِنَا ''(الشوريُ: ٥٢)' أورجم في تمهاري طرف

قرآن بھیجااپنے حکم ہے'۔

(٣) جريل: 'فَارُسُلْنَا اللَّهَا رُوْحَنَا ''(مريم:١٥)' تواس كى طرف بم نے اپنافرشتہ (جریل) بھیجا''۔

(۵) روح بدن: 'وَيَسْنَلُوْنَكَ عَنِ الرَّوْحِ" (الاسراء:۸۵)'' اورتم ہےروح كو يو چھتے ہيں'۔ '' الذكر '' (كئي وجوه كے ليے آتا ہے)

(۱) ذكر لسان: ' فَاذُكُورُوا اللَّهُ كَذِكُوكُم البَاءَ كُمْ ' (البقره: ۲۰۰)' توالله كاذكر كروجيك السيخ بايدادا كاذكر كريجيك الشيخ المين

(٢) حفظ (یادکرنا):'' وَاذْ کُورُوْا مَا فِیلِهِ ''(الِقرہ: ٦٣)'' اوراس کے مضمون یادکرو''۔

(٣) طاعت اور جزاء:'' فَاذْ كُرُو ْ نِنِي ۚ أَذْ كُو ْ كُمْ ''(القره:١٥٢)''تم ميرى اطاعت كرو ميں تنهميں اچھی جزاء پرطور پرتمهارا چرچا كروں گا''۔

(°) بات: ''اَذُكُورُ نِـی عِـنْدَ رَبِّكَ ''(یسف: ۴۲)'' اینے رب (بادشاہ) کے پاس میری بات کرنا'''' اَیْ حَدِّنْهٔ بِحَالِیْ '''' میراحال ان ہے کہنا''۔

(۵) قرآن:'' وَمَنْ أَغُوطُ عَنْ فِهِ نُحْدِیْ ''(طاً:۱۲۳)'' اورجس نے میرے ذکر (قرآن) سے منہ پھیرا''۔

(٢) شرف (عزت): 'وَإِنَّهُ لَذِ كُو ٌ لَكَ ''(الزفرف:٣٣)' اور بِهِ شك وه شرف بيتمهار بِهِ لَكَ '' النفرف الله ال

(4) عيب:'' أَهْلُذَا الَّذِي يَذُكُرُ 'الِلهَتَكُمْ''(الانبياء:٣٦)'' كيابيه بين جوتمهار بے خداؤل كاعيب نكالتے اوران كوبُرا كہتے ہيں''۔

(٨) لوح محفوظ: ' مِنْ بَعْدِ اللِّهِ كُورِ ''(الانبياء:١٠٥)' نصيحت كے بعد'۔

(٩) ثناء: ' وَ ذَكَرَ اللَّهُ كَثِيْرًا ' (الاحزاب:٢١) الله كوبهت يادكر ي' ...

(١٠) نماز: '' وَلَذِ كُو ُ اللَّهِ الْحَبَوُ '' (العنكبوت: ٥٥) '' اور بے شك الله كاذكرسب سے برا''۔

فوائد: ابن فارس في "كتاب الافراد" مين بيان كياب:

قرآن مجيد مين تمام مقامات پرلفظ "الأسف" "رنج اورغم كے معنى مين استعال ہوا ہے مكر ایک جگہ "فیل مقامات پرلفظ" الأسف عن بین: "اغیضبونا" بعنی انہوں نے ہمیں مگرایک جگہ "فیل ما اسفونا" میں اس کے معنی بین: "اغیضبونا" بعنی انہوں نے ہمیں

غضب ناك كمااورغصه دلايا_

اورلفظ' بسروج' قرآن پاک میں جہاں بھی ذکر ہوا ہے اس سے کواکب (ستاروں کے برج) مراد ہیں سوائے' وکو گئٹٹم فیٹی بڑوج مشید ہو' (النساء: ۵۷)'' اگر چہتم مضبوط قلعوں میں ہو' کہاس میں بروج کے معنی مضبوط اور عالی شان کل ہیں۔

ٔ''بروبحر''

قرآن پاک میں جہاں بھی بحروبر کا ذکر آیا' خشکی اور دریا کے معنوں میں استعال ہوئے ہیں' مگر'' ظَلَهَ رَ الْفَسَادُ فِی الْبَدِّ وَالْبُحْدِ ''(الردم: ۳۱)'' صحرااور بستیوں میں فساد بھیل گیا''میں ان سے صحرااور بستیاں مراد ہیں۔

"بعل": به لفظ عام طور پرشو ہر کے معنی میں استعال ہوتا ہے مگر' اُتَدْعُوْنَ بَعْلًا "میں استعال ہوتا ہے مگر' اُتَدْعُوْنَ بَعْلًا "میں استعال ہوتا ہے مگر اللہ بت کا نام ہے۔

" أَلْدَحْضُ": قرآ ن مجيد مين بيلفظ جهال بهي آيا باس مراد باطل ليا گيامًر فكانَ مِن الْمُدْحِضِينَ" مين اس كمعنى بين: جوقر عداندازي مين نكلے بين -

'' السوجيم'': رجم كالفظ برجگه' قتل'' كمعنى مين استعال بوائح مَرُ' لا د جسنك' مين اس كامعنى كالى گلوچ ہے اور' رَجْمَاً مِيالْ عَيْبِ'' كى مثال مين اس سے ظن اور انكل بچوك معنى مراد ہيں۔

"شهید" مقتولوں کے ذکر کے ساتھ آنے کے علاوہ دیگر جہاں بھی کہیں"شهید" کالفظ قر آن پاک میں ذکر ہوا ہے اس سے لوگوں کے معاملات میں گواہی دینے والا تخص مراد ہے گر" وَادْعُوْا شُهدَ آءَ کُم " (البقرہ: ۲۳) میں اس سے مراد ہے کہا ہے تثریکوں کو بلاؤ۔ " اُسْتَحَابُ النّارِ ": اس سے ہر جگہ اہل دوزخ مراد میں گر" وَ مَا جَعَلْنَا اَصْحَابَ النّادِ اِلّا مَلَيْكَةً " (المدرّ: ۳۱)" اور ہم نے دوزخ کے دارو غہ نہ کے گرفرشتے "میں دوزخ کے حالو فظ و گران فرشتے مراد ہیں:

"نباء":قرآن مجيد مين 'نباء" كالفظ مرجكه بمعنى خبرآيا بالمرد فعميت عَلَيْهِمُ الْأَنْكَءُ" (القصص: ١٦) "نواندهى موجائيس كى (نظرنبيس آئيس كى) ان پرخبري (دليس) "ميس اس سے دلائل اور حجتيں مرادليا گيا ہے۔

''بعد'': ابن فالویه کابیان ہے کہ قرآن پاک میں لفظ' بعد'' بمعیٰ'' قبل' صرف ایک مقام پر استعال ہوا ہے اور وہ ہے:''و لَقَدُ كُتَبُنّا فِی الزّبُورِ مِنْ بَعْدِ الذِّحُو' (الانبیاء: ١٠٥) '' اور بے شک ہم نے زبور میں نصیحت کے بعد لکھ دیا' مغلطائی نے'' کتاب المیسر''میں کہا ہے کہ ہم نے ایک جگہ اور بھی دریافت کیا ہے وہ ہے تولہ''و الارْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دُحَاهَا نَ اللّٰهِ عُدِ مَن اللّٰ مُعَن ہے۔ (النّز عُت : کتاب المغیث' میں کہا ہے (النّز عُت : کتاب المغیث' میں کہا ہے کہ اس جگہ' بعد''کامعیٰ ہے۔

''قبیل'':اس کی وجہ یہ ہے کہ اللہ سبحانہ وتعالیٰ نے زمین کودودن میں پیدافر مایا' پھر آسانوں کی تخلیق کا قصد فر مایا (یاان کو درست فر مایا)' سواس اعتبار سے زمین کی تخلیق آسانوں کی تخلیق سے قبل (پہلے) ہوئی ہے۔ (ختم شد)

نی کریم طبخ آیتی منابداور تا بعین طبخ نیم سے اس موضوع پر پچھ با تیں منقول ہیں۔
 چنا نچہ امام احمد نے اپنی مسند میں اور ابن ابی حاتم وغیرہ نے دراج کے طریق پر بہوا سط ابوالہیثم حضرت ابوسعید خدری و کئے آئند سے روایت کی ہے وہ بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ مستح کی آئی ہے۔
 نے فر مایا:

قر آن مجید میں جہاں کہیں'' قنوت'' کا ذکر ہواہے'اس سے اطاعت (عبادت)

كل حرف في القرآن يذكر فيه القنوت فهو الطاعه.

مرادہے۔

اس صدیث کی سندجید ہے اور ابن حبان نے اسے مجے قرار دیا ہے۔

ا بن الی حاتم نے عکرمہ کے طریق پر حضرت ابن عباس بینماند سے روایت کی ہے کہ

قر آن پاک میں لفظ' الیم ''جہاں بھی کہیں آیا ہے'اس کامعنی ہے: موجع بعنی دردناک۔ فند کر سے است

میں کلمہ ' د جو ''ہر جگہ عذاب کے معنی میں آیا ہے۔

سعد بن جبیر' حضرت ابن عباس منگاللہ سے روایت کرتے ہیں' انہوں نے بیان کیا کہ قرآن مجید میں ہرجگہ' تسبیعے'' سے نماز مراد ہے اورلفظ'' مسلطان'' جہال بھی آیا ہے' قرآن میں اس سے مراد دلیل وجمت ہے۔ ابن ابی حاتم' عکرمہ کے طریق پر ابن عباس سے روایت کرتے ہیں' انہوں نے بیان فرمایا:'' دین'' کالفظ قرآن میں ہرجگہ' حساب' کے معنی میں استعال ہوا ہے۔

ابن ابی حاتم وغیرہ نے حضرت ابی بن کعب سے روایت کیا ہے انہوں نے فر مایا کہ قرآن مجید میں ' ربیع '' کالفظ ہر جگہ عذاب کے معنول میں آیا ہے۔

ابومالک ہے روایت ہے کہ قرآن مجید میں ''وداء'' کالفظ ہر جگہ'' امام' 'یعنی آگے اور سامنے کے معنی میں آیا ہے' مگر دومقام پر بیلفظ'' سِوَا'' کے معنی میں استعال ہوا' وہ دومقام بیری:

اوّل: 'فَمَنِ ابْتَعٰی وَرَآءَ ذٰلِكَ ''(المؤمنون: ٤)' اورجوان دو کے سوا کچھاور جا ہے '۔
''یعنی سِوَی ذٰلِكَ ''دوم: 'وَالْحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰ الِكُمْ '(النماء: ٣٣)' اوران کے
سواجو ہیں وہ تہمیں طال ہیں ' ۔ ' یعنی سِوَی ذٰلِکُمْ ''۔

ابوبكر بن عياش بيان كرتے ہيں:

قرآن مجید میں جہاں'' تکشفہ''آیا ہے'اس سے مرادعذاب ہوتا ہے اور جہال کہیں '' یکسفہ''آیا'اس سے مراد بادل کا ککڑا ہے۔

ابن جریر نے ابووراق ہے روایت کیا ہے کہ قرآن مجید میں صیغہ 'جَعَل '' بمعنی '' خَلَقَ''
استعال ہوا ہے۔

صیح بخاری میں سفیان بن عید ہے مروی ہے کہ اللہ تعالی نے قرآن مجید میں جہال کہیں "کہیں" مطر" کانام لیا ہے اس سے عذاب مراد ہے اور اہل عرب بارش کو تعیث "کہتے ہیں۔

علامہ سیوطی رحمۃ اللہ نے کہا ہے کہ ایک مقام مذکورہ بالا قاعدہ ہے مشتیٰ ہے کہ وہاں ''مطو'' ہے بارش ہی مراد ہے وہ مقام یہ ہے:' اِنْ تَکَانَ بِسَکُمْ اَذَّی مِّنْ مَّطُو '' (الساء: مطو'' ہے)'' اگر تمہیں بارش کے سبب تکلیف ہو'' کیونکہ اس میں مطر سے مراد بارش ہے۔

ابوعبیدہ نے کہا کہ جہاں پرمطرے مرادعذاب لیا گیا ہے وہاں برصیغہ ' اُمُسطَو تُ '' استعال ہواہے اور جہاں اس سے مرادر حمت ہوتی ہے وہاں ' مَسطَو تُ '' کے صیغہ کے ساتھ آتا ہے۔ سفیان بن عینہ سے مروی ہے کقر آن مجید میں جس جگہ 'وَ هَا یُدُویْكُ ''(العبس: ۳)
'' اور تہمیں کیا معلوم' آیا ہے وہاں اللہ تعالی نے کوئی خرنہیں دی ہوتی اور جہاں پر فر مایا: ''وَ هَا اَدُوكَ ''(المطففین: ۸)'' اور تو کیا جائے' وہاں بتا بھی دیا کہ وہ کیا چیز ہے۔
نوٹ: ندکورہ بالا مسائل میں زیادہ تر مقامات پر بیان کرنے والوں نے کسی لفظ کا معنی بیان کرتے ہوئے ''کھل شکی ویا کے ماتھ بیان کیا ہے تو کرتے ہوئے ''گل شکی ویا ہے الفر 'ان تک ذا و تکذا'' کے تول کے ساتھ بیان کیا ہے تو واضی رہے کہ لفظ ''کسل ' سے ان کی مراد ہوتی ہے' اکثر و بیشتر اور غالب طور پر ورنہ بہت کی جگہوں پر بعض امور مشتیٰ بھی ضرور ہیں۔

اعراب قرآن کی پہچان

ابوعبید نے اپنی کتاب'' فضائل' میں امیر المومنین حضرت عمر بن الخطاب و کا تند ہے روایت کیا ہے انہوں نے فرمایا:'' تَعَدَّمُو اللَّحْنَ وَالْفَوَ انِصَ وَالسَّنَ کَمَا تَعَلَّمُو نَ الْفَرُ انِصَ وَالسَّنَ کَمَا تَعَلَّمُو نَ الْفَرُ انِصَ اور سنن کواسی طرح سیکھو'جس الْفَدُ ان یاک کو سیکھے ہو۔ طرح قرآن یاک کو سیکھے ہو۔

کی بن عتیق کا بیان ہے کہ میں نے حسن ہے کہا: اے ابوسعید! کیا عربی زبان کی تعلیم

آ دی محض اس لیے حاصل کرتا ہے کہ اس کے ذریعے اپنالب والبح خوبصورت بنائے اور قرآن
پاک کو صحیح طرح سے پڑھ سکے ۔ حسن رحمۃ اللہ علیہ نے جواب دیا: اے بھیج ! تم اس کو ضرولہ سکے وی کہ اگر ایک صحیح طرح سے پڑھ سکے ۔ حسن رحمۃ اللہ علیہ نے جواب دیا: اے بھیج ! تم اس کو ضرولہ سکھو کیونکہ اگر ایک شخص کی آ بیت کو پڑھتا ہو، مگر اس کی وجہ کے نہ معلوم ہونے سے عاجز رہ جائے تو غلطی میں پڑکر اس کے ہلاک ہونے کا اندیشہ ہے۔ جو شخص قرآن پاک کا مطالعہ کرتا ہے اور اس کے اسرار کو معلوم کرنا چاہتا ہے اس پر لازم ہے کہ وہ ہر کلمہ میں نظر وفکر کو ہے صیفہ کی شنا خت اور اس کے استعمال کا موقع محل جانے کی کوشش کرے اور یہ بھی جاننا ضروری ہے کہ سیمبنداء ہے یا خبر فاعل ہے یا مفعول ہے کلام ابتدائی ہے یا کسی سابق کلام کا جواب بیاور اس طرح کی دیگر باتوں کو معلوم کرنے کی جدو جہد کرے جولوگ قرآن مجید کے مفاہیم اور اس طرح کی دیگر باتوں کو معلوم کرنے کی جدو جہد کرے جولوگ قرآن مجید کے مفاہیم اور معانی ومطالب جاننا چاہتے ہیں'ان پر حسب ذیل امور کی رعایت رکھنا واجب ہے۔ مفاہیم اور اس سے پہلے تو اس محفی کے لیے جس کلمہ کو وہ مفرد یا مرکب قرار دے کراعواب دینا اقال : سب سے پہلے تو اس محفی کے لیے جس کلمہ کو وہ مفرد یا مرکب قرار دے کراعواب دینا اقال : سب سے پہلے تو اس محفی کے لیے جس کلمہ کو وہ مفرد یا مرکب قرار دے کراعواب دینا اقال : سب سے پہلے تو اس محفی کے لیے جس کلمہ کو وہ مفرد یا مرکب قرار دے کراعواب دینا اقال : سب سے پہلے تو اس محفی کے لیے جس کلمہ کو وہ مفرد یا مرکب قرار دے کراعواب دینا

arseNizami.MadinaAcademy.Pk

چاہتا ہے'اعراب دینے سے پہلے اس کامعنی سمجھنا ضروری ہے کیونکہ اعراب معنی کی فرع ہے'
اسی وجہ سے سورتوں کے فواتح (آغاز کے الفاظ) پر اعراب دینا جائز نہیں کیونکہ ان کے معنی
معلوم نہیں اور یہ بات ہم پہلے بیان کر چکے ہیں'ان کا تعلق متشابہات کی اس قتم سے ہے' جس
کا حقیقی علم اللہ تعالیٰ نے صرف اپنے لیے مخصوص رکھا ہے۔

ابن ہشام کا قول ہے:

بہت ہے معربین (تعنی اعراب دینے والے یاعلم اعراب کے عالموں) سے اس لیے لغزش ہوئی کہ انہوں نے اعراب دینے میں محض ظاہر لفظ کی رعایت کی اور معنی کے موجب کا خیال نہیں کیا۔

اس کی مثال اللہ تعالیٰ کا یہ قول ہے: ''اصلو تُک تَامُوٰکُ اَنْ نَتُوْکَ مَا یَعُبُدُ اٰبَاؤْنَا اللہ تعالیٰ کا یہ قول ہے: ''اصلو تُک تَامُوٰکُ اَنْ نَتُوْکَ مَا یَعْبُدُ اٰبَاؤْنَا مَا نَشَوْا ''(عود: ۸۷)' کیا تمہاری نماز تمہیں ہے تھم دی ہے کہ این جارا کے خداوں کو چھوڑ دیں اور اپنے مال میں جو چاہیں کریں 'کہ اس آیت کے الفاظ ہے بہ ظاہر ذہن پہلے ای طرف جاتا ہے کہ' ان نفعل ''کاعظف'' ان نفوک ''بی پر بے عالا نکہ یہ بات غلط ہے کیونکہ انہوں (حضرت شعیب علیہ السلام) نے ان لوگوں کو ہرگزیہ مبایت نبیس کی تھی کہ وہ اپنے اموال میں جو چاہیں کرتے پھریں بلکہ وہ تو صرف' ما ''پرعطف ہوایت نبیس کی تھی کہ وہ اپنے اموال میں جو چاہیں کرتے پھریں بلکہ وہ تو صرف' ما ''پرعطف ہوایت کیا ہم اس بات کو ترک کردیں کہ اپنے مال کو حسب منشاء صرف کریں؟ مذکورہ بالا وہم کا منشاء اور اس کے پیدا ہونے کا سب یہ ہے کہ اعراب دینے والا بہ ظاہر'' ان ''اور' فعل ''کودو مرتبہ مذکورہ کھیا ہے اور ان کے درمیان حق عطف بھی پاتا ہے 'لہذا وہ منظی میں مبتال ہو جاتا مرتبہ مذکورہ کھیا ہے اور ان کے درمیان حق عطف بھی پاتا ہے 'لہذا وہ منظی میں مبتال ہو جاتا مرتبہ مذکورہ کھیا ہے اور ان کے درمیان حق عطف بھی پاتا ہے'لہذا وہ منظی میں مبتال ہو جاتا

دوم: مقتضائے صناعت کی رعایت رکھنا بھی ضروری ہے کیونکہ بعض اوقات معرب کسی سیحی وجہ کو کھوظ رکھنے کے ساتھ صناعت کی صحت پرغور نہیں کرتا اور اس طرح و فلطی کا شکار ہوجاتا ہے اس متم کی مثالوں میں سے اللہ تعالی کا قول ' وَ قَدَ هُو دُا فَمَاۤ اَبْقی ''(اہنم:۵۱)' اور شمود کوتو کو کو کی باقی نہ چھوڑا' ہے کہ بعض علماء نے' شمود''کومفعول مقدم بتایا ہے' گریہ بات ممتنع ہے کیونکہ ' ما' نافیہ صدارت کلام کوچا بتا ہے'لہٰدااس کا مابعداس کے ماقبل میں کوئی عمل نہیں کرتا'

بلکه یهان ' ثمود' کے منصوب ہونے کی وجہ یہ ہے کہ اسپنے ماقبل قول ' وَ آنَّا لَهُ اَهْلَكَ عَادَا وَ اللّٰهُ وَلَى ' (النجم: ۵۰)' اور یہ کہ اس نے پہلے عاد کو ہلاک فر مایا' کے ' عادا' پر معطوف ہے یا دوسری وجہ یہ ہو سکتی ہے کہ ' شمود' نعل مقدر کی بناء پر منصوب ہو گفتر یرعبارت یوں ہوگی: ' واهلك ثمود' ۔

ای طرح کی دوسرے خص کا قول آیت مبارکہ'' مَلَعُوْ نِیْنَ اَیْنَمَا ثُقِفُوْ ا'(الاحزاب:۱۱)
'' پیشکارے ہوئے جہال ملیں پکڑے جائیں' کے بارے میں کہ'' صلعو نین''' ثـ قفو ا''یا ''اخدو ا'نفعل کے معمول سے حال واقع ہونے کی بناء پر منصوب ہے'لیکن یہ باطل ہے کیونکہ حال کے عامل کے لیے شرط ہے کہ دہ مقدم ہو صحیح بات یہ ہے کہ'' ملعو نین''فعل ذم مقدر کی وجہ سے منصوب ہے۔

سوم: معرب کودوراز کارامور' کمزورتوجیهات اورلغات شاذ ہ سے اجتناب کرنا چاہیے'اسے چاہیے کے قریب کو دوراز کارامور' کمزورتوجیهات اورلغات شاذ ہ سے اجتناب کرنا چاہید کے سوا کوئی وجہ ظاہر ہی نہ ہوتو پھروہ معذور سمجھا جائے گا۔ اگرتمام وجوہ محتملہ کو بایں ارادہ ذکر کیا جائے کہ اس سے عجیب اور نادر وجوہ کا اظہار ہوگا اور تکثیر کا فائدہ حاصل ہوگا تو یہ بخت مشکل طریقہ ہے۔

یامحمل وجہ کے بیان کرنے اور طالب العلم کی تربیت اور مثل کے لیے ایسا کیا تو یہ اچھی بات ہے' مگر ایسا کرنا قرآن پاک کے علاوہ عبارات میں روا ہے' الفاظِ قرآن میں یہ جائز نہیں ہے کیونکہ قرآن مجید کو بجزاس وجہ کے جس کا ارادہ ظن غالب کے لحاظ سے پایا جائے' کی دوسری وجہ پرروایت کرنا درست نہیں ہے۔

ہاں!اگرکسی خاص وجہ کا گمان غالب حاصل نہ ہوتو پھراحتمالی وجوہ کو بغیرکسی بناوٹ اوں مکلفات کے ذکر کیا جاسکتا ہے۔

چنانچای وجہ بے جس شخص نے اللہ تعالی کے قول' فکلا جُسَاح عَلَیْهِ اَنْ یَطُوّت '' (البقرہ:۱۵۸)'' اس پرکوئی گناہ نہیں کہ دونوں کے چکرلگائے''میں'' جناح''اور' علیہ''پر اغراء قرار دے کر وقف کیا ہے'اس کے قول کو غلط قرار دیا گیا ہے'اس لیے کہ غائب کا اغراء ضعیف ہے۔ اورجس خص نے اللہ تعالی کے قول 'فَ مَامًا عَلَى الَّذِی آ اَحْسَنُ ' (الانعام: ۱۵۳)
'' پورااحیان کرنے کواس پرجونیکوکار ہے' میں' احسن '' کورفع کے ساتھ پڑھنے کی وجہ یہ بتلائی کہ یہ دراصل' احسنوا' تھا' پھرواؤ کوحذف کردیااوراس کے بدلہ میں ضمہ کو (واؤ محذوف بردلالت کے لیے) کافی سمجھا کہ اشعار میں ایسا جائز ہوتا ہے' اس کا قول غلط اور مردود قرار دیا گیا ہے۔

'' آخسنُ'' کے مرفوع ہونے کی سیح وجہ یہ ہے کہ بیمبتداء محذوف کی خبر ہے' تقدیر کلام اس طرح ہے:'' ہُوَ اَحْسَنُ''۔

ای طرح آیت کریمهٔ کینهٔ هب عَنْکُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَیْتِ "(الاحزاب:٣٣)" اے نی کے گھر والو! کہتم سے ہرنا پاکی کودور فرمادے "مین" اهل "کواختصاص کی بناء پر منصوب قرار دینا غلط ہے۔

کیونکہ ضمیر مخاطب کے بعد اختصاص کا آنا ایک امرضعیف ہے رہا ہے امر کہ پھر اہل کو نصب کس لحاظ ہے آیا؟ تو درست بات رہے کہ منادی مضاف ہے۔

چہارم: اعراب دینے والے خص کو چاہیے کہ ظاہری طور پر لفظ جتنی بھی وجوہ کا احتمال رکھتا ہؤوہ ان تمام وجوہ کا احتمال رکھتا ہؤوہ ان تمام وجوہ کا اصاطہ کرئے چنا نچہوہ ''سبّے اسْم رَبِّكَ الْاَعْلٰی ''(الاعلیٰ:۱)'' اپنے رب کے نام کی سبیج کروجوسب سے بلند ہے' الیی مثال میں بیان کرے کہ اس میں لفظ' الاعلی '' لفظ' اسم ''اورلفظ' رب' دونوں کی صفت واقع ہوسکتا ہے۔

اورائ طرح الله تعالى كاقول 'هُدَّى لِللَّمُتَّقِيْنَ اللَّذِيْنَ '(البقره: ٢-٣)' بدايت ب پر بيز گارول كے ليے "' الَّذِيْنَ " بين تين صور تيل جائز بين: (١) تا بع ہو(٢) مقطوع بواور فعل مقدر 'اَعْنِي " يا' اَمْدَحُ" كى وجہ سے منصوب ہو (٣) اى طرح مبتدا ، مقدر 'هُوَ '' كى خبر ہونے كى بناء يرمرفوع (محل) ہو۔

پنجم: مُغرِبُ پرلازم ہے کہ وہ رسم الخط کی رعایت بھی کرے یہ وجہ ہے کہ جس شخص نے "سلسلسینیلا" کو" جملہ امریہ قرار دیتے ہوئے کہا کہ اس کا معنی ہے: "سَل طَرِیْفًا مُوْصِلَةً اِلْنَهُا" "" کوئی ایسار استہ دریا فت کر و جومزل تک پہنچانے والا ہو "اس شخص کو خطا کار قرار دیا گیا ہے اور اس کا قول مردود ہے کیونکہ اگر فی الواقع یہی بات ہوتی تو لکھنے میں "سَلْ سَبِیلًا"

جدا جدا کر کے لکھا جاتا' موجودہ رسم الخط کوندا ختیار کیا جاتا اور وہ مخص بھی غلطی پر ہے' جو کہتا ہے کہ اللہ تعالیٰ کے تول' اِنْ ہلٰذَانِ لَسَاحِوَ اَنِ ''(طٰ: ٣٣)' بیدونوں جادوگر ہیں' میں' ان' دراصل' آن '' ہے اور' ہا' ضمیراس کا اسم ہے' یعنی' آن الْقِصَّة '' قصہ یہ ہے'' ذَانِ ''مبتداء دراصل' آن '' ہے اور' ہا' ضمیراس کا اسم ہے' یعنی' آن الْقِصَّة '' قصہ یہ ہے'' ذَانِ ''مبتداء اور' لَسَاحِوَ اُنِ ''اس کی خبر دونوں مل کر پورا جملہ' آن '' کی خبرواقع ہے۔ یہ اس لیے باطل ہے کہ ان کومنفصلہ اور' ہے ذان '' کومتصلہ کھا گیا ہے' ورنداس شخص کے قول کے مطابق جملہ اس رسم الخط میں نہ لکھا ہوتا۔

ای طرح'' أَیُّهُمْ اَشَدُّ''میں'' هُمْ 'اور' اَشَدُّ''کومبتداءاورخبر کہنااور'' اَیِّ ''کو مقطوع عن الاضافة قرار دینا بھی اس لیے درست نہیں ہے کہ رسم الخط اس قول کی تر دید و تکذیب کررہاہے کیونکہ' اَیُّهُمْ مُتَّصِلَةُ''کرے کتابت شدہ ہے۔

ادرآیت کریمه' وَإِذَا کَالُوهُمْ أَوْ وَّزَنُوهُمْ یُخْسِرُوْنَ 0 ''(المطففین: ۳)'' اور جب انہیں ماپ تول کردیں' تو کم کردیں' کے متعلق میہ بیان کرنا که' هم ''اس میں ضمیر رفع اور واؤ جمع کی تا کید ہے' یہ بات بھی غلط ہے' اس لیے کہ اس آیت میں دومقام پر واؤ کے بعد الف نہیں لکھا گیا' ایسار سم الخطقول مذکور کی تکذیب کرتا ہے اور درست بات سے ہے کہ' ہم "مفعول واقع ہے۔

ششم: کتاب الله میں لفظ زائد کا اطلاق کرنے سے بچنا جا ہے کیونکہ زائد لفظ کا بسااوقات ہے مفہوم لیا جا تا ہے کہ اس کا کوئی معنی ہی نہیں ہے اور قرآن پاک اس بات سے منزہ ہے۔

اسی بات سے گریز کرتے ہوئے بعض علماء نے قرآن حکیم میں کسی حرف کو زائد کہنے کے بجائے ایسے مواقع پر زائد حرف کی تعبیر تاکید صلح اور قیم ایسے لفظوں سے فر مائی ہے۔

ابن الخشاب نے کہا ہے کہ قرآن مجید میں لفظ زائد کے اطلاق کے جوازیا عدم جواز کی بابت علماء کا اختلاف ہے۔

جمہور علماء کا قول جواز کا ہے'اس لیے کہ قرآن مجید کا نزول اہل عرب کی زبان'ان کے محاورہ اور بول چال کے مطابق ہوا ہے اور عربی کلام میں حروف کی زیادتی حذف کے مقابلہ میں مسلم ہے'لہذا جس طرح حذف کو اختصار اور تخفیف کی غرض سے جائز خیال کیا جاتا ہے' ویسے ہی زیادتی کوتا کیداور تمہید کے لیے درست اور جائز مانا جائے گا۔

اور بعض لوگوں نے قرآن مجید میں زائد حرف کے جواز کاانکار کیا ہے وہ یہ کہتے ہیں کہ جن الفاظ کوزائد کہا گیا ہے وہ بھی کچھ خاص معانی اور فوائد کے لیے آئے ہیں اس لیے ان پر زائد ہونے کا اطلاق نہیں کیا جاسکتا۔

ابن الخشاب نے مزید کہا کہ تحقیق ہے ہے کہ اگر حرف کی زیادتی سے کسی ایسے معنی کا شہوت مقصود ہے جس کی کوئی حاجت نہیں ہے تو بیزیادتی باطل ہے کیونکہ ایسی زیادتی عبت اور فضول ہوتی ہے ہیں ہے بات طے ہوگئ کہ ہمیں اس زیادتی کی حاجت ضرور ہے نیا لگ بات ہے کہ تمام اشیاء کی طرف ضرورت ایک جیسی اور برابر نہیں ہوتی ' بلکہ مقاصد کے مختلف ہونے ہے کہ وہیش ہو سکتی ہے کہ انسی حاجت تو ہے گر ہے کہ وہیش ہو سکتی ہے ' لہذا وہ لفظ جس کو بیلوگ زائد شار کرتے ہیں' اس کی حاجت تو ہے گر اتن نہیں ہے جتنی اس کی ہے جس برزیادتی کی گئے ہے۔ یعنی مزید علیہ کی بہ نبست مزید کم ضروری ہے۔

علامه سيوطي رحمة الله عليه فرمات مين:

اگر مقتضائے فصاحت و بلاغت کود یکھا جائے تو اس کے پیش نظر ثابت ہوگا کہ مزید اور مزید علیہ دونوں لفظوں کی ایک جیسی حاجت ہوتی ہے۔

تعبیہ: ابوعبید نے فضائل القرآن میں کہا ہے کہ ہم سے ابومعاویہ نے ہشام ابن عروہ کے واسط سے یہ بیان کیا ہے کہ حضرت عروہ نے کہا: میں نے ام المونین حضرت عائشہ ریجن اللہ تعالیٰ کے قول' وَ اللّہ تعالیٰ کے قول' وَ اللّہ تعالیٰ کے قول' وَ اللّہ تعالیٰ کے قول' اِنَّ اللّہ تعالیٰ کے قول' اِنَّ اللّہ نِیْنَ الْمَدُو اللّه وَ اللّهُ وَ اللّهُ وَ اللّهُ وَ اللّهُ وَ اللّهُ وَ اللّهُ وَ اللّهُ وَ اللّهُ وَ اللّهُ وَ اللّهُ وَ اللّهُ وَ اللّهُ وَ اللّهُ وَ اللّهُ وَ اللّهُ وَ اللّهُ وَ اللّهُ اللّه وَ اللّه وَ اللّه وَ اللّه وَ اللّه وَ اللّه وَ اللّه وَ اللّه وَ اللّه وَ اللّه وَ اللّه وَ اللّه وَ اللّه وَ اللّه وَ اللّه وَ اللّه وَ اللّه وَ اللّه

توام المومنين في فرمايا:

اے بھانجے! یہ کتابت کا معاملہ ہے اور بیسب کچھ کا تب حضرات کی کارگز اری ہے کہ انہوں نے لکھنے میں غلطی کی ہے'اس حدیث کی اسناد شخین کی شرط پرضجے ہے۔ ابوعبید ہی کا قول ہے کہ ہم سے حجاج نے ہارون ابن مویٰ کے واسط سے بیان کیا ہے

کہ مجھے زبیرابن الحریث نے حضرت عکرمہ کے واسطہ سے خبر دی کے عکر مہنے فر مایا: جس وقت مصاحف کتابت کے بعد حضرت عثان غنی رضی اللہ کی خدمت میں پیش کیے گئے تو حضرت عثمان نے کچھ حروف کی ان میں غلطی یائی ' فر مایا: ان میں تبدیلی کی ضرورت نہیں

کیونکہ اہل عرب خود ہی ان کو بدل لیں گے اور صحیح کرلیں گے یا نہوں نے فر مایا کہ عرب اپنی ز

بانوں ہےان کے اعراب کی اصلاح کرلیں گے۔

اس روايت كوابن الانباري نے اپني كتاب" البود على من حالف مصحف عثمان" میں اور ابن اشتہ نے'' کتاب المصاحف'' میں بھی درج کیا ہے۔

پھر ابن الا نباری ای طرح کی روایت عبدالاعلیٰ ابن عبداللہ ابن عامر کے طریق ہے اورابن اشتہ نے بھی ایسی روایت کیچیٰ ابن یعمر کے طریق سے بیان کی ہے۔

ابوعبید'ابوبشر کےطریقے ہے سعیدا بن جبیر ہے روایت کرتے ہیں کہ وہ'' المصقیدہ ا الصلوة "رخ صے اور فرماتے تھے کہ 'ھو لحن الکتاب "، کتابت کی خلطی ہے۔

به آثارا دراقوال کئی وجہ ہے آ دمی کوعجیب شش وینج اور مشکل میں ڈال دیتے ہیں۔ پہلی بات تو یہ ہے کہ بھلاصحابہ کرام رہائٹی نیم کے متعلق کیونکر یہ گمان کیا جا سکتا ہے کہ وہ فصحاء عرب ہوکرروزمرہ گفتگو میں کن کے مرتکب ہوں گئے چہ جائے کے قرآن پاک میں۔

دوسرے ان کی نسبت بیر گمان کیا جا سکتا ہے کہ جنہوں نے قر آن کوخود نبی ملتی لالیم سے اس کے نزول کے مطابق سیکھا'اسے یادر کھا'اس کے ایک ایک شوشہ تک کو بڑی مضبوطی کے ساتھ محفوظ رکھا' اس کی مشق کی اور زبانوں پر جاری کیا' اس میں ان ہے تلفظ کی غلطی واقع ہونا بالکل قرین قیاس نہیں ہے' تیسرے یہ کیونکر گمان کر سکتے ہیں کہ وہ پڑھنے اور لکھنے میں ای لفظی

خطایرسب کے سب قائم رہے۔

چوتھے بیدامربھی بعیدازعقل ہے کہان کواس غلطی پرآ گاہی کیوں نہ ہوئی ادر پھرانہوں نے اس غلطی ہے رجوع کیوں نہ کہا۔ پھر حضرت عثمان غنی پیجائلنہ کے متعلق یہ گمان کیے کر سکتے ہیں کہ انہوں نے غلطی پرمتنبہ ہو کربھی اس کو درست کرنے ہے منع کر دیا ہوا دراس پر طرہ میہ کہ پھرای علطی پرقراءت کو جاری وساری رکھا گیا' حالانکہ قرآن سلف ہے خلف تک پہطریق تواتر مروى آرباہے۔ غرضیکہ یہ بات عقل ٔ شرع اور عادت ہرا یک حیثیت سے محال نظر آتی ہے۔ علماء نے اس اشکال کے کئی حل بتائے اور جواب دیئے ہیں۔

اول: یہ کہ اس روایت کی صحت حضرت عثمان غنی رضی آللہ سے ثابت نہیں ہوتی ' اس کے اسناد ضعیف' مضطرب اور منقطع ہیں۔

اور پھرسوچنے کی بات میہ ہے کہ حضرت عثمان غنی رضی آللہ نے لوگوں کے لیے ایک واجب الاقتداء امام (قرآن مجید کا سرکاری نسخہ) تیار کیا تھا'لہٰذا میہ کیسے ہوسکتا تھا'وہ ویدہ دانستہ غلطی کو محض اس وجہ ہے باقی رہنے دیے کہ اہل عرب خود ہی اس کو درست کرلیں گے۔

بہر حال جب ان لوگوں نے جن کوقر آن پاک کی جمع وید وین کا کام سپر دکیا گیا تھا اور وہ نتخب اور اعلیٰ درجہ کے ضبح اللسان اور ماہر تھے'اس غلطی کی اصلاح نہیں کی اور اسے جوں کا توں رہنے دیا تو اور لوگوں کی کیا مجال تھی کہوہ اس غلطی کو درست کرتے۔

اور علاوہ ازیں حضرت عثمان غنی رضی آنڈ کے عہد میں ایک ہی مصحف تو نہیں لکھا گیا تھا' بلکہ متعدد مصاحف لکھے جانے کے بعد منظر عام پر آئے' پھر اگریہ کہا جائے کہ ان تمام نسخوں میں لفظی غلطی واقع ہوئی تو عقل اس بات کو ماننے کے لیے تیار نہیں کہ تمام کا جوں نے لکیر کے فقیر بن کراس غلطی پراتفاق کرلیا ہو۔

اوراگریہ کہا جائے کہ بعض مصاحف میں غلطی رہ گئی تھی' تمام میں بیقص نہ تھا تو اس دوسرے مصاحف کی صحت و درتی کا اعتراف پایا جاتا ہے حالانکہ ایسا قول کسی ہے منقول نہیں ہوا کہ خلطی کسی ایک مصحف میں تھی اور دوسرے مصاحف میں نہھی بلکہ مصاحف میں تو سوائے وجوہ قراءت کے اختلاف کے اور کوئی اختلاف کی اختلاف کے اور کوئی اختلاف کی کے نزد کہ بھی لحن اور لفظی غلطی شارنہیں ہوتا۔

اورسب سے عمدہ اور خوبصورت جواب یہ ہے کہ سابق کے تمام وہ آثار اور اقوال جو حضرت عثمان غنی رہی اللہ سے روایت کئے عین ان میں تحریف کی گئی ہے یعنی بیان کرنے والوں سے حضرت عثمان غنی رہی اُللہ کے الفاظمن وعن بیان نہیں ہو سکے جس طرح انہوں نے ادا کیے کہندا ندکورہ اشکال لازم آگیا۔

اس بات کی تائیداس روایت ہے ہوتی ہے جس کو ابن اشتہ نے سوار ابن سبشہ ہے

ر دایت کیا ہے کہانہوں نے کہا کہ حضرت ابن الزبیر رضی کلنہ بیان کرتے ہیں:

ایک شخص نے حضرت عمر فاروق اعظم رضی آللہ سے عرض کیا: اے امیر المومنین! بے شک لوگوں میں قر آن مجید کے بارے میں بہت اختلاف پیدا ہو گیا ہے محضرت عمر رضی آللہ نے بین کر ارادہ کیا تھا کہ وہ قر آن کوایک ہی قراءت پر جمع کر دیں گے مگرای دوران میں ان کے خنج کا زخم آگیا اور ایک مادھورارہ گیا۔

اور حضرت فاروق اعظم رضی آلدگی شہادت کے بعد جب عثمان غنی رضی اللہ کا دورِ خلافت آیا تو ای شخص نے (جس نے خلیفہ دوم کوتر آن پاک کا اختلاف ختم کرنے کے لیے عرض کیا تھا) حضرت عثمان غنی رضی آلد ہے بھی اس امرکی یا د دہانی کرائی 'چنا نچہ آپ نے تمام مصاحف کو جمع کیا اور مجھے (ابن زبیر کو)ام المومنین حضرت عائشہ رشی آللہ کی خدمت اقدس میں بھیجا 'چنا نچہ میں ان کے پاس سے مصحف لے کر آیا اور ہم نے دوسرے تمام مصاحف کا ام المومنین کے مطابق درست کر کے ایک صحف تیار کرلیا تو مصحف کے ساتھ مقابلہ کیا اور اس کے مطابق درست کر کے ایک صحف تیار کرلیا تو مصرت عثمان غنی رشی آللہ نے تم دیا کہ تمام دوسرے مصاحف جواس کے علاوہ ہیں 'سب بھاڑ دیے گئے۔

پھر ابن اشتہ نے اپنی سند کے ساتھ حضرت عثمان غنی رشخ اُللہ سے روایت کیا ہے ؑ وہ بیان کرتے ہیں :

جب مصحف کی تیاری سے فراغت ہوگئ تو اسے حضرت عثمان غی رشخ آللہ کی خدمت میں پیش کیا تو انہوں نے بہت اچھااور پیش کیا گیا تو انہوں نے دیکھنے کے بعد فر مایا:'' آخس نشہ و آخم لُنٹم ''تم نے بہت اچھااور عمدہ کام کیا ہے' میں اس میں کچھ چیزیں دیکھا ہوں کہ قابل اصلاح ہیں' جس کوہم اپنی زبانوں کے ساتھ درست کرلیں گے۔

فائده

ان حروف کابیان جو تین وجوہ ہے پڑھے گئے ہیں۔ اعراب' بناءیااس کی مانندکسی تیسری وجہ ہے اس کی قراءت کی گئی ہے۔ اس موضوع پر احمد بن یوسف بن مالک الرعینی کی ایک نہایت عمدہ تالیف ہے' اس كَابِكَانَامُ 'تُحْفَةُ الْأَقْرَانِ فِيْمَا قُرِئَ بِالتَّشْلِيْثِ مِنْ حُرُّوْفِ الْقُرُ 'انِ '' --مثاليس

''الْحَمْدُ لِلَّهِ ''(الفاتح:۱)' سبخوبیال الله کو'مین' حمد ''کے دال کو ابتداء (مبتداء مبتداء مرفع کے دال کو ابتداء (مبتداء مونے) کے لحاظ ہے رفع مصدر (مفعول مطلق) کی بناء پرنصب دیا جاتا ہے اور''لمنّہ کا اللہ کا میں دال کے کسرہ کے ساتھ بھی قراءت کی جاتی ہے۔

"رَبِّ الْعَالَمِينَ "(الفاتح:۱)" ما لکسارے جہان والوں کا "لفظ" دب "کواسم جلالت "المُللّٰه" کی صفت قرار دے کر مجرور پڑھ سکتے ہیں اوراس سے قطع کرتے ہوئے مبتداء مقدر کی خبر مان لیس تو مرفوع اور فعل مقدر کا معمول یا منادی قرار دے کرنصب بھی آ سکتا ہے۔ "اکر خمنِ "الرّ خمنِ "الرّ حمنِ گئے ہے۔ "اور تشکی گئے ہے۔ "اور "ش "کے سکون کے ساتھ اور یہ جہاز کی لغت ہے اور" ش "کے فتہ کے ساتھ جو کہ قبیلہ دس بیلی " کی گئے ہے۔ اس کے کسرہ کے ساتھ اور یہ جہاز کی لغت ہے اور" ش "کے فتہ کے ساتھ جو کہ قبیلہ دس بیلی " کی گئے ہے۔

"بیسن السموء" میں میم کوتین حرکوں کے ساتھ پڑھا گیا ہے اس میں اتن ہی لغات آتی ہیں۔

'' ذُرِیَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْض ''(آلعمران:۳۳)'' بدایک نسل ہے ایک دوسرے ہے'' ذال کو تینوں حرکتوں کے ساتھ پڑھا گیا ہے۔

"وَاتَقُوا الله الّذِي تَسَاءَ لُونَ بِهِ وَالْاَرْحَامَ "(الساء:١)" الله عور وجس كنام برما نكتے مواورر شتول كالحاظر كو مين" الارحام" كي ميم كواسم جلالت" الله "برعطف كى وجه يمن معوب برها كيا جاور"به "كي ضمير برعطف وال كر مجرور قراءت بهى آئى جاور مبتداء قرارد كرمرفوع بهى برها كيا جاوراس كى خبر محذوف مانى كن جدين" والارحام مما يجب ان تتقوه وان تحتا طوالا نفسكم فيه "ارحام بهى ان چيزول ميل سے بين جن كحق ميں خدارى اوراسى اوراج بے۔

"لَا يَسْتَوِى الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرٌ أُوْلِى الضَّرَدِ "(النها، ٩٥)" برابر نبيل وهمسلمان كه بعدر جهادسته بيهر بين "مين" غير "كو" القاعدون" كل صفت بنا

كرمرفوع اور' المومنين''كي صفت بناكر مجروراورا شثناء كي بناء يرمنصوب يرُها گيا ہے۔ " وَامْسَحُوا بِرُوْوْسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ" (المائدة: ١) اورايخ منداور باتقول كالمسح كرو' مين' واد جهلكم' كام كو' ايدى ' برعطف كے لحاظ سے نصب اور جوار وغيره كي وجہ سے جراورمبتداء ہونے کی وجہ ہے رفع کے ساتھ پڑھا گیا ہے مبتداء کی صورت میں اس ک خبر محذوف مانی جائے گی جس پر قرینداس کا ماقبل ہے۔

محكم اورمتشابه

ارشادر بانی ہے:

هُ وَ اللَّذِي أَنْ زَلَ عَلَيْكَ الْكِتَبَ وَى يَ جَسَ نَے آپ يريه كتاب مِنْهُ این تُنْحُکمتُ هُنَّ اُمُّ الْکِتْبِ اتاری اس کی کچھ تین محکم ہیں (جن کے معنی صاف اور واضح ہیں)وہ کتاب کی اصل ہیں اور دوسری متشابہ ہیں (جن کے معنی میں اشتباہ ہے)۔

وَأُخَرُ مُتَشْبِهِتُ . (آل عمران: ٧)

قرآن محکم ہے یا متشابہ؟

ابن حبیب نیشا پوری نے اس مسئلہ میں تین قول ذکر کیے ہیں:

اوّل: تمام قرآن محكم ہے جیسا كەللەتعالى نے فرمایا ہے:'' كَتِيَابٌ ٱحْدِيمَتْ 'اِيَاتُـهُ' (ھود:۱)' پیدایک کتاب ہےجس کی آیتیں محکم ہیں''۔

ووم: ساراقر آن متشابه بأس كي دليل الله تعالى كايه قول بي: "كِتَابًا مُّتَهَا بِهًا مَّشَابِهًا مَّشَانِيَ" ا (الرم: ۲۳) الي كتاب كداول عق خرتك ايك ي ب '(اورمتشابهه ب)

سوم: تیسرااور صحیح قول یہی ہے کہ قرآن کی تقسیم محکم اور متشابہان دوقسموں کی طرف کی جاتی ^ا ہے'اس کی دلیل مذکورۃُ الصدر آیت کریمہ ہےاوراوّل اور دوم قول میں بہطور دلیل جن دوآ بیوں کو پیش کیا گیا ہے'ان کا جواب یہ ہے کہ قرآن پاک کے محکم ہونے کا بیہ مطلب ہے وہ اتنا پختہ کلام ہے کہ اس پر نہ کوئی نقض وارد ہوسکتا ہے اور نہ ہی اس میں اختلاف راه پاسکتاہے۔

اوردوسری آیت کریمه میں جوقر آن کریم کومتشابہ کہا ہے تواس سے مرادیہ ہے کہ قرآن پاک کی آیات حق وصدافت اوراعجاز میں باہم ایک دوسرے سے ملتی جلتی ہیں اور مشابہ ہیں۔ محکم اور متشابہ کی تعیین میں مختلف اقوال ہیں:

(۱) محکم وہ کلام ہے جس کی مراداپے ظہور کی بناء پریا تاویل کے ذریعے معلوم ہوجائے اور متشابہ اس کلام کو کہیں گئے جس کاعلم حقیقی اللہ تعالیٰ نے اپنے لیے مخصوص کیا ہے۔ مثلاً قیامت کے واقع ہونے کا وقت وجال کا خروج اور سورتوں کے اواکل میں حروف مقطعات ان تمام امور کا ذاتی طور پرعلم صرف اللہ تعالیٰ ہی کو ہے۔

(۲) محکم وہ کلام ہے جس کے معنی واضح ہوں اور جواس کے برعکس ہے اس کو متشابہ کہتے ہیں۔

(۳) جس کلام میں صرف ایک ہی وجہ پر تاویل کا اختال ہو وہ محکم ہے اور جس میں کئی وجوہ سے تاویل ہو سکے وہ متشابہ کہلاتا ہے۔

(س) محکم وہ کلام ہے کہ عقل جس کے معنی کا ادراک کر سکے اور متشابہ اس کے برعکس ہے مثلاً نماز وں کی تعداد اور روز وں کا ماہ رمضان مبارک کے ساتھ ہی خاص ہونا اور شعبان میں نہ ہونا' یہ ماور دی رحمۃ اللّٰد کا قول ہے۔

(۵) محکم وہ ہے' جومستقل بنفسہ ہو' اور متشابہ وہ ہے جومستقل بنفسہ نہ ہو اور اپنے معنی پر دلالت کرنے میں غیر کا محتاج ہو۔

(۲) محکم وہ ہے جس کی تاویل خوداس کی تنزیل ہے اور متشابہ وہ ہے جو تاویل کے بغیر سمجھ میں نہ آئے۔

(2) محکم وہ ہے جس کے الفاظ میں تکرار نہ آئی ہواور متشابہ اس کے برمکس ہے۔

(۸) محکم عبارت ہے فرائف وعداور وعید ہے اور متثابہ ہے مراد قصص اورامثال ہیں۔

(۹) ابن ابی حاتم نے علی ابن ابی طلحہ کے طریق سے حضرت ابن عباس رضی اللہ سے روایت کیا ہے کہ

محکمات قرآن مجید کے ناسخ 'حلال حرام حدود فرائض اور ان امور کا نام ہے جن پر ایمان لایا جاتا ہے اور جن پر عمل کیا جاتا ہے اور متشابہات فرآن کے منسوخ 'مقدم'

موخز'امثال'اقسام اوران چیزوں کو کہتے ہیں جن پرایمان تولایا جاتا ہے مگر عمل نہیں کیا جاتا۔

(۱۰) عبدابن حمید نے ضحاک سے روایت کی ہے وہ بیان کرتے ہیں: محکمات وہ (آیات) ہیں' جوقر آن پاک میں سے منسوخ نہیں ہو کیں' اور متشابہ وہ ہیں جومنسوخ کر دی گئی ہیں۔

(۱۱) ابن ابی حاتم مقاتل ابن حبان سے روایت کرتے ہیں' انہوں نے بیان کیا ہے: ہمیں جو بات پہنچی ہے' اس کے مطابق متثابہات' الم 'المص 'المعر ''اور' المر ''ہیں۔ جو بات پہنچی ہے' اس کے مطابق متثابہات 'الم 'المص 'المعر ''اور' المر ''ہیں۔ (۱۲) ابن ابی حاتم نے کہا کہ عکر مہ خضرت قادہ اور دیگر محد ثین سے مروی ہے کہ محکم وہ کلام ہے۔ جس پر ایمان تو لا یا جاتا ہے' مگر وہ معمول بہانہیں ہے۔ وہ معمول بہانہیں ہے۔

فصل

یہ امر بھی مختلف فیہ ہے کہ قر آن پاک کے متشابہات کے علم پرمطلع ہوناممکن ہے؟ یا اللہ تعالیٰ کے سوااس کاعلم کسی کونہیں ہے؟

ان ہر دو اقوال کا منشاء دراصل ایک اور اختلاف پر مبنی ہے' جو اللہ تعالیٰ کے قول '' وَ الرَّسِخُونَ فِی الْعِلْمِ '' (آل عمران:)'' اور پخته علم والے' کے بارے میں واقع ہوا ہے' کیونکہ اس آیت مبارکہ کی ترکیب نحوی میں دو مختلف خیال پائے جاتے ہیں۔ ایک میہ کہ '' وَ السَّسِخُونَ فِی الْعِلْمِ ''' بقولون ''اس کا حال واقع ہوا ہے اور دوسراخیال میہ کہ '' وَ السَّسِخُونَ فِی الْعِلْمِ ''مبتداء ہے اور' یقولون ''اس کی خبراور' والر استحون ''میں جو وائے جو استینا فیہ ہے' واؤ عاطفہ نہیں۔ جو واؤ ہے جو استینا فیہ ہے' واؤ عاطفہ نہیں۔

پہلی رائے گنتی کے چند علماء کی ہے جن میں سے ایک مجاہد بھی ہیں اور یہ قول حضرت ابن عباس رضی اللہ سے مروی ہے۔

چنا نچدا بن المنذر عامد كري ت سے حضرت ابن عباس بينمالله سے آيت كريم "و مَا يَعْلَمُ تَأْوِيلُهُ إِلَّا الله و الوَّسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ "(آلعران: 2)" اوران كي اصل مراد الله

کے سواکوئی نہیں جانا اور جولوگ علم میں پختہ ہیں'کے بارے میں بیان کرتے ہیں کہ انہوں نے فر مایا کہ' آن مِتَّن یَعْلَمُ تَاْوِیلَهُ''لینی میں ان لوگوں میں سے ہوں جن کو متشابہات قرآن کی تاویل کاعلم ہے۔

گرصحابہ کرام ٔ تابعین نبع تابعین ان کے بعد والے علماء مفسرین خصوصاً اہل سنت میں بہ کثرت علماء دوسرے قول کی طرف گئے ہیں اور بید دوسرا قول حضرت ابن عباس شخاللہ سے منقول اقوال میں سے سب سے زیادہ صحیح ہے۔

علامه حافظ سيوطى رحمة الله علية فرمات بين:

جمہورعلاء کے مذہب کی صحت پروہ روایت بھی دلالت کرتی ہے جس کوعبدالرزاق نے اپنی تفسیر میں اور حاکم نے اپنی متدرک میں حضرت ابن عباس رشخی اللہ سے روایت کیا ہے کہ وہ یوں قراءت کرتے تھے:

اور جولوگ علم میں پختہ ہیں' وہ کہتے ہیں: ہم اس پرائیان لائے۔

وَمَسا يَعْلَمُ تَساُوِيْكَهُ اِلَّا اللَّهُ وَالرُّسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ 'امَنَّا بِهِ. (آل مِران: 2)

اوران کی اصل مراداللہ کے سواکوئی نہیں جانتا۔ پس بیقراءت دلالت کرتی ہے کہ واؤ استینا فیہ ہے'اگر چہاس روایت کا قراءت ہونا ثابت نہیں ہوا'لیکن پھر بھی کم از کم اس کو بید درجہ تو حاصل ہے کہ مصیح اسناد کے ساتھ ترجمان القرآن (حضرت ابن عباس رشخاللہ) سے مروی ہے اوران کا قول ہے' بہر حال ان کا قول دوسروں کے اقوال پر مقدم ہوگا۔

پر اس کی تائید یوں بھی ہوتی ہے کہ خود آیت مبارکہ نے متشابہات کے پیچھے پڑنے والوں کی ندمت کی ہے اور ان کو کج رو اور فتنہ پرداز کے وصف سے موصوف گردانا ہے اور دومری طرف جن لوگوں نے متشابہ کاعلم اللہ تعالی کی طرف تفویض کیا ہے اور اس کو بطیب فاطر 'برمروچشم شلیم کیا ہے' ان کی اس طرح تعریف فرمائی ہے' جیسے غیب پرایمان لانے والوں کی ستائش کی ہے اور امام فراء بیان کرتے ہیں کہ:

بِشک ابی بن کعب رسی الله کی قراءت بھی ' ویقول السواسخون' ابن الی داؤد ' المصاحف' میں اعمش کے طریق سے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے کہا کہ حفرت عبد الله

بن مسعود رضياً لله كالمراح من السلطرات من الله والمواسع الله والمواسع ون الله والمواسع ون المعلم يقولون احدا الله والمواسع ون في العلم يقولون احدا به ''۔

امام بخاری مسلم اور دوسرے محدثین نے ام المؤمنین حضرت عائشہ رفحاللہ سے دوایت کیا ہے وہ بیان فر ماتی ہیں کہرسول اللہ ملٹی کیا ہے ہے آیت کریمہ ' ہو الّذِی آئنز ل عکیف الْکِتاب '' الْکِتَاب '' الْکِتَاب '' آل عران: ۷) تک تلاوت فر مائی ۔ام المومنین بیان کرتی الْکِتَاب '' تا' اُولُوا الْالْباب '' (آل عران: ۷) تک تلاوت فر مائی ۔ام المومنین بیان کرتی ہیں کہ اس کے بعدرسول اللہ ملٹی کیا ہے ماطب ہو کر فر مانے گئے: '' فَافَا رَایْتَ الّذِیْنَ سَمّی اللّٰهُ فَاحْذَرْ هُمْ '' یعنی پس جب مان بَتَبِعُونَ مَا تَشَابَهُ مِنْهُ فَاوُلُئِكَ الّذِیْنَ سَمّی اللّٰهُ فَاحْذَرْ هُمْ '' یعنی پس جب مان لوگوں کودیکھو جو قرآن محمد کے مشابهات کے پیچے پڑے رہے ہیں تو (یا در کھو) یہی وہ لوگ ہیں جن کا نام اللہ تعالیٰ نے اس آیت میں لیا ہے'ان لوگوں سے بچنا۔

طبرانی 'الکبیر میں ابو مالک اشعری ہے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے رسول اللہ ملٹی آلیا ہم کو یہ بیان فر ماتے سنا کہ مجھے اپنی امت میں تین عادتوں کے پیدا ہوجانے کا اندیشہ ہے 'ایک تو یہ کہ ان کے پاس مال کی کثرت کا ہوجا نا اور اس کی وجہ ہے آپس میں حسد کرنا اور ایک دوسرے کوفل کرنا اور دوسرے یہ کہ' وان یہ فت سے لہم الکتاب ''تو مومن اس کو لے کر اس کی تاویل کرنے گئے طالا نکہ اللہ تعالیٰ کے سوااس کی تاویل کوکوئی نہیں جانتا۔ (الحدیث)

امام داری نے اپنی مسند میں سلیمان بن بیار سے روایت کی ہے کہ صبیغ نامی ایک مرد مدینہ منورہ آیا اوراس نے قرآن کے متشابہ کے بارے میں سوالات کرنا شروع دیئے وحفرت عمر فاروق رضی آللہ کو پتا چلا تو آپ نے اس شخص کو بلا بھیجا اور آپ نے اس کو مزادینے کے لیے محجور کی خشک شاخیس منگوا کر رحمیں تھیں (جب وہ حاضر ہوا) تو آپ نے دریافت فر مایا: تو کون ہوتا ہے؟ اس شخص نے کہا کہ میں عبد اللہ بن صبیغ ہوں۔ حضرت عمر رضی آللہ نے مجور کی ایک شاخ اٹھا کراس کے سر پر ماری جس سے اس کا سرلہولہان ہوگیا۔ اسی راوی سے دوسری روایت میں اس طرح منقول ہے کہ حضرت عمر رضی آللہ نے اس کو مجور کی شاخ سے مارا، حتی کہ روایت میں اس طرح منقول ہے کہ حضرت عمر رضی آللہ نے اس کو مجور کی شاخ سے مارا، حتی کہ اس کی پشت کو زخمی کر کے چھوڑ ااور جب وہ ٹھیک ہوگیا تو دو بارہ اسی طرح سز ادی اور جب اس دفعہ بھی اس کی چوٹیں شیخ ہوگئیں تو حضرت عمر فاروق رضی آللہ نے اس کو تیسری بار سز او بینا چاہی تو دفعہ میں کہنے لگا:

اگرتم مجھے جان ہے ہی ختم کرنا چاہتے ہوتو اچھے طریقے سے مار دو اس روز روز کے ۔ ساپے سے تو جان چھوٹے۔ بیس کر حضرت عمر دشکا تند نے اسے تھم دیا کہ اپنے وطن واپس چلا حائے۔

اور ابومویٰ اشعری رینختانند کولکھا کہ اس مخص (صبیغ) کی مجلس میں کوئی مسلمان ہرگز نہ

بينهي

تعالی کو ہے'اس کے سوااسے (ازخود) کو کی نہیں جان سکتا اور اس معلوم ہوتا ہے کہ منشابہ قرآن کاعلم صرف اللہ تعالیٰ کو ہے'اس کے سوااسے (ازخود) کو کی نہیں جان سکتا اور اس میں غور وخوض کرنا اچھا وطیرہ نہیں ہے۔

متشابهات كي حكمت

جب متشابہ کی معرفت سے انسان کو عاجز رکھا گیا ہے پھراس کوقر آن مجید میں نازل کرنے کی حکمت کیا ہے؟

متثابہ کے علم سے عجز کے باوجود قرآن پاک میں اس کوا تارنے کی حکمت کی طرف اشارہ کرتے ہوئے بعض علماءنے لکھاہے:

متنابہ کے حق ہونے کا عقادر کھنے پر عقل انسانی کو اس طرح آزمائش میں ڈالا گیا ہے ،
جس طرح کہ بدن کو ادائے عبادت کی آزمائش اور امتحان میں مبتلا کیا گیا ہے۔ اس کی مثال
اس طرح ہے کہ ایک حکیم (دانش مند) جس وقت کوئی کتاب تصنیف کرتا ہے تو بسا اوقات اس
میں بچھ مقام مجمل رہنے دیتا ہے تا کہ وہ مقام طالب علم اور شاگر دکے لیے اپ استاذ کے
میا منے عاجز ومغلوب رہنے اور اس کے ادب واحترام کا سبب بے یا مثلاً جسے بادشاہ کوئی
ماض علامت اختیار کرتا ہے اور اس کے ساتھ اپ معتمد علیہ اور خاص راز دار کو ہی مطلع کرتا
ہے ہرکس و ناکس کو اس سے آگاہ نہیں کرتا ہے اور اس سے مقصود ان لوگول کو اعز از و شرف
بخشا ہوتا ہے کہ بیاس راز کو جانے کی وجہ سے دوسروں سے متازین ۔

کہا گیا ہے کہ اگر عقل جوسار ہے جسم میں معزز ترین ہے کو ابتلاء وامتحان میں نہ ڈالا جاتا 'عالم خص بھی تکبر وغروراور نخوت وسرکشی ہے باز نہ آتا' پس اس بے بسی کی وجہ ہے تو وہ اللّٰدرب العزت کی بارگاہ جلال میں سرجھکا تا ہے متشابہ قر آن ہی وہ مقام ہے جہاں عقلوں کواپے قصور کم مالیگی کا اعتراف کرتے ہوئے باری تعالی کے حضور سرتنلیم خم کرنا پڑتا ہے اور دہ جھکتی اور سرنگوں ہوتی ہیں۔

پھرآیت کے خاتمہ میں اللہ تعالی نے اپنول' وَ مَا يَلدُّ حُو الله اوْلُوا الْآلْبَابِ'' (آل عران: ۷)' اور نفیحت نہیں مانتے مرعقل والے''کے ساتھ کجروول گراہوں کی برائی کی ہے'' داسسے ون فسی المعلم'' کی تعریف بیان فرمائی ہے۔ یعنی جولوگ نفیحت نہیں پکڑتے اور ان کے دلوں میں ڈر'خوف نہیں ہوتا اور نہ ہی وہ نفس کی خواہشات بے جاکی مخالفت کرتے ہیں' وہ عقل والے نہیں ہیں۔

اورای وجہ سے مضبوط علم والے بارگاہ ایز دی میں یوں دست بدعار ہے ہیں کہ' رُبّنَا لَا تُوْغُ قُلُوْبُنَا''(آل عمران: ۸)' اے رب! ہمارے دل ٹیڑھے نہ کر''آیت اور' رُ اسِخُونَ فی الْعِلْمِ ''(آل عمران: ۷)'' اور پختہ علم والے''اپنے خالق کے ساتھ' علم لدنی'' کے نزول کی استدعا کرتے ہیں اور نفسانی مجروی اور گمراہی سے اس کی پناہ میں رہنے کی وعاما تکتے ہیں۔

جب یہ بات معلوم ہوگئ کہ متشابہ قر آن میں خواہ مخواہ غور وخوض کرنا اچھانہیں ہے تو پھر متشابہ کی تعریف اور اس کی تعین سے واقفیت ضروری ہے' کیونکہ بہتر یہی ہے کہ جس چیز کو شارع نے پسندنہیں فرمایا'اس کا انسان کوعلم ہو'تا کہ اس سے پچ سکے۔

علامه خطانی بیان کرتے ہیں:

متشابہ کی دونشمیں ہیں' پہلی قتم ہے ہے کہ اگر اس کو محکم کے ساتھ ملا کر اور اس کی طرف اور جع کر کے دیکھا جائے تو اس کا معنی معلوم ہو جائے اور دوسری قتم وہ ہے جس کی حقیقت کے معلوم ہو نے کہ کو داور ٹیٹر ھے دل و د ماغ معلوم ہونے کی کوئی سیل نہیں ہے' اس قتم کے متشابہ کی پیروی کرنا مجر واور ٹیٹر ھے دل و د ماغ والوں کا شیوہ رہا ہے کہ وہ اس کی تاویل کی ٹو ہ اور کھوج میں لگے رہتے ہیں اور اس کی تاویل کی ٹو ہ اور کھوج میں لگے رہتے ہیں اور اس کی تہ تک رسائی حاصل نہ کر سکنے کی وجہ سے شک وارتیاب میں جبتال ہو کرفتنہ کی دلدل میں پھنس جاتے رسائی حاصل نہ کر سکنے کی وجہ سے شک وارتیاب میں جبتال ہو کرفتنہ کی دلدل میں پھنس جاتے ہیں۔

فصا

مشابہ کوشم میں ہے آیات صفاحہ ہیں۔ ابن اللبان نے اس موضوع پر الگ ایک منتقل کتاب تصنیف کی ہے۔

آيات صفات كي مثاليس بير بين:

(١) اَلرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوْلى ٥

(ئد:۵)

(٢) كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَةً.

(القصص:۸۸) ذات كے سوار

(٣) وَيَبْقَلَى وَجَهُ رَبِّكَ. (الرحمٰن:٢٤)

(٣) وَإِنتُصْنَعَ عَلَى عَيْنِي. (ط :٣٩)

اور ہاتی ہے آپ کے رب کی ذات۔ اور تا کہ ہماری مگرانی میں آپ کی برورش کی جائے۔

ہر چنز ہلاک ہونے والی ہے اس کی

رحمٰن نے عرش پراستویٰ فر مایا۔

(۵) يَدُ اللَّهِ فَوْقَ آيَدِيْهِمْ. (الفِّحَ:١٠) ان كَ بِالْقُول يِراللَّد كا بالْمِ عِ-

(٢) وَالسَّمُواتُ مَطْوِيَّاتُ بِيمِينِهِ. اورسب آسان اى كراكيل وست

(۱۷۷۳) قدرت سے لیٹے ہوئے ہول گے۔

جمہوراہل سنت جن میں سلف صالحین بھی ہیں اور تمام محدثین اس امر پر متفق ہیں کہ ان آ بیوں پر ایمان رکھنا فرض ہے اور ان سے جو بھی معنی مراو ہے وہ اللہ تعالیٰ کے سپر وکر دینا عاہری معانی سے اللہ تعالیٰ کو باک اور منزہ مانتے ہیں 'پھر بھی ان کی تفسیر نہیں کرتے۔

المل سنت كايك گروه كا فد بنب بيه به كه بم قشابهات كى تاويل اليه امور كے ساتھ كرتے ہيں ، جواللہ تعالیٰ كے جلال اور عظمت كے شايان شان ہے اور بي خلف كا فد بهب امام الحرمين بھى بہلے يہى فد بهب ركھتے تھے بعد ميں اس سے رجوع كرليا اور سلف كا فد بهب اختيار كرليا ، چنانچه وه "الرسالة النظامية" ميں لكھتے ہيں :

جس چیز کودین بنانے پر ہم راضی ہیں اور جس چیز کے ساتھ ہم اللہ تعالیٰ کی اطاعت کا عہد و پیان باند ھے ہیں وہ اسلاف کی اتباع ہے اور اسلاف کا طریقہ بیر ہاہے کہ وہ آیات صفات کے معانی بیان کرنے کے دریے ہیں ہوئے۔

ابن الصلاح لكصة بين:

اسلاف امت اور پیشوایان ملت نے یہی ندہب اختیار کیا ، جلیل القدر ائمہ فقہاء اور

عظیم المرتبت محدثین نے بھی ای طریق کو پہند کیااور متکلمین میں سے کسی نے بھی اس کاا نکار نہیں کیا۔

ابن دقیق العیدنے افراط وتفریط کوچھوڑ کر درمیانی راہ اختیار کی ہے وہ کہتے ہیں:
اگر تاویل ایسی کی جواہل عرب کی زبان سے قریب ہے ادراس کو منکر نہیں تھہرایا گیا یا وہ
تاویل بعید ہے' بہرصورت ہم تو قف کریں گے اور اگر روایت مل گئی تو اس ہے معنی پر اسی
طریق سے ایمان لائیں گے 'جس کا اس لفظ سے ارادہ کیا گیا ہے اور اس کے ساتھ ہی تنزید ا

اوراگرایسے الفاظ کے معانی اہل عرب کے طرز تخاطب اور عام بول چال کے لحاظ ہے فاہر اور معلوم ہول گال کے قائل ہو فاہر اور معلوم ہول گے تو ہم ان کو بغیر کسی تو قیف کے تعلیم کرلیں گے اور ان کے قائل ہو جائیں گئے جیسا کہ اللہ تعالیٰ کے قول ' یَا حَسْرَ تلٰی عَلٰی مَا فَرَّ طُتُ فِی جَنْبِ اللّٰهِ '' جائیں گئے اللہ کے اللہ کے اللہ کے اللہ کے اللہ کے اللہ کا خق اور جو چیزیں اس کی کو ہم اس معنی برمحمول کرتے ہیں کہ اس سے مراد ہے: اللہ تعالیٰ کا حق اور جو چیزیں اس کی طرف سے واجب ہیں۔

متشابہ کی دوسری قتم سورتوں کے اوائل ہیں (لیعنی حروف مقطعات)ان کے بارے میں بھی مختار مذہب بیہ ہے کہ وہ ایسے اسرار ہیں' جن کاعلم صرف اللہ تعالیٰ ہی کو ہے۔

چنانچہ ابن المنذ راور دیگر محدثین نے شعبی سے روایت بیان کی ہے کہ ان سے سورتوں کے فواتح کی بابت دریافت کیا گیا تو انہوں نے فر مایا: ہر کتاب کا کوئی راز ہوتا ہے اور قرآن حکیم کاراز سورتوں کے فواتح ہیں۔

بعض مفسرین نے سورتوں کے فواتے کے معانی میں غور وخوض بھی کیا ہے چنا نچہ ابن ابی ا حاتم اور دیگر محدثین نے ابواضحیٰ کے طریق سے حضرت ابن عباس وختاللہ سے اللہ تعالیٰ کے ا قول' الم "کے متعلق روایت کی ہے کہ انہوں نے بیان کیا ہے کہ اس کا معنی ہے: ' انسا اللہ ا اعسلم "لیعنی میں اللہ ہوں' خوب جانتا ہوں اور اللہ تعالیٰ کے قول' المص "کے بارے میں کہا: ' انسا اللہ افصل "میں اللہ ہوں' فیصلہ کرتا ہوں اور قول باری تعالیٰ ' الم "کے متعلق بیان کیا کہ' انا اللہ ادی "میں اللہ ہوں' دیکھتا ہوں۔

arseNizami.MadinaAcademy.Pk

قرآن کےمقدم اورمؤخرمقامات

قرآن مجید کی جن آیات میں کلام کے اندر تقدیم و تاخیروا قع ہوئی ہے'ان کی دوشمیں

پہلی قتم وہ ہے جس کے معنی میں ظاہر کے اعتبار سے اشکال واقع ہوتا ہے کیکن جب معلوم ہوجائے کہ بی تقدیم و تاخیر کے باب سے ہواں کامعنی واضح ہوجاتا ہے۔ یہ تم اس قابل ہے کہ اس کے متعلق الگ ایک کتاب تھی جائے اور سلف نے بھی کچھ آیات میں اس کا ذکرکیاہے۔

چنانچابن الى عاتم نے اللہ تعالى كاس قول أو لا تُعجبُكَ أَمْ وَ اللهُمْ وَ أَوْ لَا دُهُمْ إِنَّهَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُعَدِّبَهُم بِهَا فِي الدُّنيَا" (التوبه: ٨٥) أوران كم ال اوراولا ويرتجب نه کرنا الله بی جاہتا ہے کہ اسے دنیا میں ان پر وبال کرئے 'کے متعلق بیان کیا ہے کہ حضرت قاده رشی الله نے فر مایا: یہ آیت تقدیم کلام کی قسم سے ہے اللہ تعالی فرما تا ہے: " و لَا تُعْبِجِبْكَ آمُوَالُهُمْ وَاوَلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيْدُ اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ '' (بِهَا أَيْ فِي الْأَخِرَةِ '' (التوبه: ٨٥) ''لعن آخر**ت میں**''۔

قاده بي عمروي م كالله تعالى كول للو لا تحلِمة سَبَقَتْ مِنْ رَبَّكَ لَكَانَ لِيزَامًا وَآجَلُ مُّسَمَّى "(طُهٰ:١٠٩)" اورا گرتمهار برب كي ايك بات ندگز رچكي موتى تو ضرور عذاب انبیں لیٹ جاتا اور اگر نہ ہوتا ایک وعدہ تھہرا ہوا''میں بھی تقدیم و تاخیر کلام ہے' اللہ تعالى فرماتا ب: "لو لا كلمة واجل مسمى لكان لزاما".

اور مجام سے روایت ہے کہ انہوں نے اللہ تعالی کے قول ' أَنْ زَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِعَابَ وَكُمْ يَجْعَلْ لَّهُ عِوْجًا ٥ قَيْمًا "(الكنف:١-١)" (الله في) ايني بندے يركتاب اتارى اور اس میں اصلا مجی ندر کھی 0 عدل والی کتاب " کے بارے میں فرمایا: پیجھی تقذیم و تاخیر کے باب سے ہے۔ اصل میں یوں ہے: ' أَنْ زَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ قَيْمًا وَّلَمْ يَجْعَلُ لَـهُ عِوَجًا "اور حضرت قاده رشي لله كاقول بي كه الله تعالى كي قول إنهي مُعَوَقِيْكَ وَرَافِعُكَ إلَى " (آل عمران: ٥٥) مين تحقيم يوري عمرتك پنجاؤل كاادر تحقيم اين طرف اٹھاؤل گا" ميں

بھی تقذیم وتا خیرواقع ہے۔اور بیان کیا کہ تقذیر عبارت بول ہے:'' دَ ا**فِعْكَ اِلَّیَّ وَمُتَوَقِّیْكَ**''۔ حضرت عکرمہ بیان کرتے ہیں:

آیت کریم''لهٔ م عَذَاب شَدِیدٌ بِمَا نَسُوا یَوْمَ الْحِسَابِ''(سَ:۲۲)''ان کے لیے خت عذاب ہال پر کہ وہ حماب کے دن کو بھول بیٹے' میں بھی تقذیم وتا خیر واقع ہے' تقذیم عزاب می اللہ عَذَاب شَدِیدٌ بِمَا نَسُوا''این جریر تقذیم اللہ عَذَاب شَدِیدٌ بِمَا نَسُوا''این جریر ابن زید سے روایت کرتے ہیں کہ آیت' وَلُو لَا فَصْلُ اللهِ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَتُهُ لَا تَبْعَتُم اللهٔ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَتُهُ لَا تَبْعَتُم اللهٔ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَتُهُ لَا تَبْعَتُم اللهٔ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَتُهُ لَا تَبْعَتُم اللهٔ عَلین الله علی میں تقدیم وتا خیری صورت اس طرح شیطان کے پیچے لگ جاتے'' بھی ای قبیل سے ہے'اس میں تقدیم وتا خیری صورت اس طرح ہے'' اداعوا به الا قلیلا منهم ولو لا فضل الله علیکم ورحمته لم ینج قلیل ولا کثیر''۔

پھرای راوی نے حضرت ابن عباس رشخالہ سے اللہ تعالیٰ کے قول 'ف فَفَالُو آ اَرِ نَا اللّٰهُ کَمُورَةً ' (النساء:۱۵۳)' بولے: ہمیں اللہ کواعلانیہ دکھادو' کے بارے میں نقل کیا ہے کہ ان لوگوں کئی اسرائیل) نے جب اللہ تعالیٰ کودیکھنے کا کہا تھاتو'' جھر ہ ' ویکھنے کو کہا تھا یعنی ان کا سوال '' جھر ہ ' ویکھنے کے بارے میں تھا' تقدیر عبارت یوں ہے:'' قبالو المجھر ہ ار نا اللّٰه'' تو اس آ یت میں بھی تقدیم و تا خیر واقع ہے' ابن جریر نے کہا کہ ان کا سوال شور وغل کے ساتھ تھا۔

اورای قبیل سے ہاللہ تعالیٰ کا یہ تول 'افکو آیت مَنِ اتّنحَدُ اِلٰہ اُ هُواہُ '(الجاشہ:۳۳)

'' بھلاد کیموتو وہ جس نے اپنی خواہش کو اپنا ضدائھ ہرالیا' کہ اس کی اصل ' هو اہ الھہ '' ہو یعنی جس شخص نے اپنی نفسانی خواہش کو اپنا معبود بنالیا ہے اس لیے کہ جو شخص اپنے معبود ہی کو اپنا دلی خواہش بنائے تو اس کا یہ مل قابل فدمت نہیں ہے' گر اس آیت کر یمہ میں مفعول ٹانی اپنا دلی خواہش بنائے تو اس کا یہ مل قابل فدمت نہیں ہے' گر اس آیت کر یمہ میں مفعول ٹانی ''اللہ اُنہ 'مقدم کردیا گیا ہے کیونکہ اس کی طرف خاص تو جہ دلا نامقصود تھی اورار شادِ باری تعالی ''اللہ اُنہ 'مقدم کردیا گیا ہے کیونکہ اس کی طرف خاص تو جہ دلا نامقصود تھی اورار شادِ باری تعالی ''واللہ اُنہ ' مقدم کردیا گیا ہے کیونکہ اس کی طرف خاص تو جہ دلا نامقصود تھی اور ارشادِ باری تعالی ناملی کی میں اور جس نے چارا ' کا لئو کی کی اس اور جس اور وہ خشک بھوسا تو بعد کو ہوتا ہے' پہلے سبز اور ہرا ہوگا۔ لہٰذا اللہ تسبز مائل بہ سیابی پر ہوتا ہے اور وہ خشک بھوسا تو بعد کو ہوتا ہے' پہلے سبز اور ہرا ہوگا۔ لہٰذا اللہ تسبز مائل بہ سیابی پر ہوتا ہے اور وہ خشک بھوسا تو بعد کو ہوتا ہے' پہلے سبز اور ہرا ہوگا۔ لہٰذا اللہ تسبز مائل بہ سیابی پر ہوتا ہے اور وہ خشک بھوسا تو بعد کو ہوتا ہے' پہلے سبز اور ہرا ہوگا۔ لہٰذا

سان عبارت اوراص تقدریوں ہوگی: "اخوج الموعی اخضر شدید الخضرة فجعله جانا هشیما" اوراس میں تقدیم وتا خیر یوں ہوئی ہے کہ رعایت فاصلہ (آیت کے آخر کی موافقت) کے لیے مرع کی صفت "احوی" کومو خرکر دیا اور" غثاء "کومقدم کردیا گیا ہے۔ اور آیت کریم" وغرابیب سود" کہ اصل سود غرابیب ہے کیونکہ غربیب کا معنی سیاہ فام ہا اور ارشاد باری تعالی "فیضو حگت فیشر ناها" (حود: اے)" وہ بننے لگی تو ہم نے اسے خوش خبری دی تو بننے گئی تو ہم نے اسے خوش خبری دی تو بننے گئی تو ہم نے اسے خوش خبری دی تو بننے گئی تو ہم ہے۔

اور قول باری تعالیٰ 'وکف قد هَمَّتْ بِهِ وَهَمْ بِهَا لَوْ لَا أَنْ رَّاتَى بُوهَانَ رَبِّهِ ' (یوسف: ۲۳)' بے شک عورت نے اس کا ارادہ کیا اور وہ بھی عورت کا ارادہ کرتا اگر اپنے رب
کی دلیل ندد کھے لیتا' 'اس آیت میں بھی تقدیم وتا خیرواقع ہوئی ہے اصل یول ہے: ' لو لا ان
دای بو هان دبه لهم بها 'اس تقدر پر' هم ' یعنی ارادہ برائی کی حضرت یوسف علا لیا اللہ اللہ اللہ کا کہ کو کی گئے ہے۔

اور دوسری قتم کی آیات وہ ہیں جن میں کلام کی تقدیم و تاخیر تو واقع ہے مگراس کی وجہ ہے معنی میں کوئی مشکل اور دفت پیدائبیں ہوتی ہے۔

علامة شمس الدين بن الصائع نے اس م كى آيات كے بيان ميں ايك كتاب "المقدمه فى سو الالفاظ المقدمة "نامى تاليف كى ب جس ميں وہ بيان كرتے ہيں كه تقذيم و تاخير كلام كى نسبت جو حكمت عام طور پر مشہور ب وہ اہتمام كا اظہار ب جيسا كه امام سيبويہ نے اپنى كتاب ميں بيان كيا ہے كہ الل زبان كے نزد يك جو بات بہت زيادہ اہم اور تو جہ طلب ہوتى كا سے وہ مقدم كرد ہے ہيں۔

اور پھرسیبویہ نے اپنے اس قول کی وضاحت کرتے ہوئے کہا ہے کہ بیہ حکمت تو اجمالی ہے ورنہ یوں کلام کے مقدم ومؤخر کرنے کی وجوہ اسباب اور اسرار وحکمتیں تفصیلی طور پر لکھی جائیں تو بہت ہیں۔

امام سیبوید بیان کرتے ہیں کہ تقدیم و تاخیر کلام کے اسرار اور حکمتوں کو تلاش کیا تو خود میں نے قرآن حکیم میں اس کی دس انواع پائی ہیں اور حسب ذیل ہیں:

اوّل تبرك: (حصول بركت كے ليے) مثلاً اہم اور ذيثان امور ميں الله تعالى كے نام كومقدم عران: ۱۸)'' الله نے گوائی دی کہاس کے سواکوئی معبود نہیں اور فرشتوں اور عالمول نے''اور قول بارى تعالى: ' وَاعْلَمُوا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَأَنَّ لِللَّهِ خُمْسَةُ وَلِلرَّسُول ''(الانفال:١٣) '' اور جان لو کہ جو کچھ غنیمت لوتو اس کا یا نچواں حصہ خاص اللہ اور رسول کے لیے''۔

دوم تعظیم: مثلًا الله تعالی ارشاد فرما تا ہے:

اور جو اللہ اور (اس کے)رسول کی

وَمَنْ يُنْطِعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ.

(النماه: ٦٩) فرمال برداری کرے۔

بے شک اللہ اوراس کے فرشتے درود

إِنَّ اللَّهُ وَ مَلْئِكَتَهُ يُصَلُّونُ نَ

(الاحزاب:۵۱) مجيجة بين_

'' وَاللَّهُ وَ رَسُولُهُ أَحَقَّ أَنْ يُرْضُونُهُ ''_

سوم تشریف: (عزت بخشا) اس کی مثال مذکر مونث پر مقدم کرنا ہے جیسے

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمْتِ. بِ شك ملمان مرد اور ملمان

(الاحزاب:۳۵) عورتيل_

- آ زادكوغلام يرمقدم كرنا بي الله تعالى كافرمان ب: "اللُّحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَ الْأَنْشَى بِالْأَنْثَى " (القره: ١٤٨) " أزادك بدلي آزاداورغلام كے بدلے غلام اور عورت کے بدلےعورت''۔
- اورزنده كوميت يرمقدم كرنا بيالله تعالى كافرمان ب: "يُخوجُ الْحَيّ مِنَ الْمَيّتِ" (الانعام:٩٥) "زنده كومرده عن تكالنے والا "اور" وَمَا يَسْتَوى الْاَحْيَاءُ وَلَا الْاَمُوَاتُ" (فاطر:۲۲) "اور برابرنبین زندے اور مردے "۔
- محور بوروسرى سوارى كے جانورول يرمقدم كرنا جيسي آيت ' وَالْمُ خَيْلُ وَالْبِغَالَ وَ الْحَمِيرَ لِتَوْ كَبُوْهَا "(الحل: ٨)" اور كمور عاور خجراور كدهے كمان يرسوار بو" _
- اورساعت كوبصارت يرمقدم كرنا عيان آيول يس ب: "وعلى مسمعهم وعلى أَبْصَارِهِمْ "(البقره: ٤) أوركانول يرمبركردى اوران كي أتحمول يرهمانوب بي " "إنَّ

السَّمْعَ وَالْبُصَرَ وَالْفُوَّادَ '(بَى امرائيل:٣٦)' ميشككان اور آكھ اور دل'-'إِنْ اَخَدَ اللهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ '(الانعام:٣٦)' اورا گرالله تمهار كان اور آكھ ليے لئے۔ ليے لئے۔

ابن عطیہ نے نقاش کے متعلق نقل کیا ہے کہ انہوں نے ای آیت سے استدلال کیا تھا کہ''سمع' بصر''سے افضل ہے'ای وجہ سے اللہ تعالیٰ کی صفت میں''سمیع بصیر'' یعنی''سمیع' بصیر''پرتقدم کے ساتھ وارد ہے۔

- اورای تشریف کے لیے حضور ملٹی آیلم کا ذکر دیگر انبیاء کرام آلٹی کی مقدم کرنے کی مثال ہے۔ اللہ تعالی کا یہ قول " وَإِذْ اَحَدُنا مِنَ النبیّنَ مِیشَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ تُوْحٍ " (الاحزاب: 2)" اورام محبوب! یا دکر وجب ہم نے نبیول سے عہد لیا اور تم سے اور نوح سے "
- رسول کونی پرمقدم رکھنے کی مثال 'مِن رَّسُولٍ وَّلَا نَبِتِی ''(الحج:۵۲)' رسول یا نی
 میں ہے''۔
- مہاجرین کی انصار پرتقدیم کی مثال اللہ تعالیٰ کا یہ تول 'اکسّب اِسقُونَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهُجِوِیْنَ وَالْلَانْصَادِ ''ہے(التوب:۱۰۰)اورمہاجرین اورانصاریس سے سبقت کرنے والے۔
 والے سب سے پہلے ایمان لانے والے۔
- انسان کی جن پرتقدیم' جہاں بھی قرآن پاک میں انسان اور جن کا ذکر آیا' انسان کا ذکر
 اس میں جن سے پہلے آیا ہے۔
- صورت نساء کی آیت میں پہلے انبیاء کرام کا ذکر ہے ان کے بعد صدیقین کا اور پھر شہیدوں کا اور اس کے بعد صالحین کا ذکر فر مایا ہے۔
- صحفرت اساعیل علایسلاً کوحفرت اسحاق علایسلاً پرمقدم رکھا ہے اس کی وجہ یہ ہے کہ حفرت اساعیل علایسلاً کوحفرت اسحاق علایسلاً پرایک تو اس وجہ سے زیادہ بزرگ اور شرف حاصل ہے کہ حضور ملتی میں آئی اولا د سے میں دوسرے وہ عمر میں بھی حضرت اسحاق علایسلاً سے بڑے تھے۔
- O سورہ بقرہ کی آیت میں جعزت جبرائیل عالیہ لاا کو حضرت میکائیل عالیہ لاا یرمقدم کیا ہے

كيونكه حفرت جريل عليه السلام ميكائيل سے افضل ہیں۔

ذ وي العقول كي غير ذ وي العقول برتقديم اس كي مثاليس به جن:

(1) "مَتَاعًا لَكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ" (النزعات: ٣٣) تمهار اورتمهار عربياؤل كالده

(٢) "يُسَبِّحُ لَـهُ مَنْ فِي السَّمُواتِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرُ طَفَّتٍ "(الور:١٣)" الله ك تنبیج کرتے ہیں جوکوئی آسان اورزمین میں ہیں اور پرندے پر پھیلائے''۔

چہارم منا سبت: یہ یا تو سیاق کلام کے لیے مقدم کی کمنا سبت ہوتی ہے جیسے اللہ تعالیٰ کا پیول

وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُويْحُونَ اوران مِن تمهارے ليے زينت ہے جب شام کو (جرا کر) نہیں واپس لاتے ہو اور جب (جراگاہ) میں انہیں جھوڑ جاتے

وَجِينَ تُسُوحُونَ ٥ (الخل: ٢)

کیونکہ اونٹوں کے ذریعے خوبصورتی اور خوش نمائی کا حصول اگر چہ سراح (جانور کو چرنے کے لیے چھوڑ نا)اوراراحت (جانور کا شام کو جراگاہ ہے واپس آنا)ہر دو حالت میں ثابت ہے' مگراس میں کوئی شک نہیں کہ حالت اراحت میں ان جمال (اونٹوں) میں جو جمال وخوش نمائی ہوتی ہے کہ جب وہ چرا گاہ ہے شکم سیر ہو کر اور کو کھیں کس کر سرشام واپس لو نیتے ہیں تو زیادہ قابل نخر ہوتی ہے کیونکہ وہ شکم سیری کی وجہ سے موٹے اور فریہ نظر آتے ہیں ادر سراح لینی صبح چرا گاہ جانے کے وقت تہی شکم ہونے کی وجہ سے چونکہ ان کا پیپ اندر کو دھنسا ہوتا ہےاور کو کھوں می*ں گڑھے پڑے ہوتے* ہیں'اس لیےاس ونت ان کاحسن و جمال دوسری^ا عالت كى بەنسىت كم درجه ہوتا ہےاوراى كى نظيراللەتعالى كايەتول ' وَاللَّهْ يْمِنَ إِذَا آنْـفَـقُوا لَمْ يُسْرِ فُواْ وَلَمْ يَقْنُووْا " (الغرقان: ١٤) " اوروه كه جبخرج كرتے بين نه حدست برهيس نه تنگی کریں'' بھی ہے کہاس میں اسراف (نضول خرجی) کی نفی مقدم ہے۔ کیونکہ بداسراف مصارف ہی میں ہوتا ہے اور انفاق میں بزرگی ہے۔ اورالله تعالى كتول يُسريكُمُ البُرق خَوفًا وعطمَعًا "(الرعد:١٢) وتتهين بكل وكها تا

ہے ڈرکواورامیدکو میں خوف کا ذکر پہلے ہے کیونکہ بجلیاں پہلی چک کے ساتھ ہی گرا کرتی ہیں جب کہ بارش بے در بے بجلیوں کے چیکنے کے بعد برساکرتی ہے۔
یا مناسبت ایسے الفاظ میں مطلوب ہوتی ہے جو تقدم اور تاخر ہی کے لیے وضع ہوتے ہیں ' جیسے' اُلاکو ّلُ وَالْاٰ خِوْ '' (الحدید: ۳)'' اول اور آخر'۔'' بسا قدم واحر ''اور' لِسمَنْ شَآءً مِنْ کُمْ اَنْ یَسَقَدُّمَ اَوْ یَسَا خَوْ کَ ' (المدرْ: ۳۷)'' اسے جوتم میں سے جا ہے کہ آگ آئیا ۔ چیجے رہے 'وغیرہ مثالوں میں ہے۔

پنجم : ترغیب دلانے اور برا میختہ کرنے کے لیے تقدیم و تاخیر واقع ہوتی ہے تا کہ ستی اور کا ہلی سے بچے اس کی مثال دین (قرض) کو وصیت پر مقدم کرنا ہے۔

الله تعالى كاارشادى:

''مِنْ بَعْدِ وَصِيَّهِ بُوْصِيْنَ بِهَا أَوْ دَيْنِ ''(النساء: ١٢)'' جووصیت وه کرگئیں اور قرض کال کر' اس آیت کریمہ میں وصیت کا ذکر پہلے فر مایا ہے حالا نکہ شری لحاظ سے قرض کی ادا کیگی وصیت پرمقدم ہے۔لیکن ترغیب ولانے کی غرض سے وصیت کا ذکر مقدم کیا تا کہ لوگ اس کی تعمیل سے کا بلی نہ برتیں۔

فشم سبقت: اس تقدم سبقت کی کی صورتیس ہیں:

- (۲) ایک چیز کود دسری شے سے نازل کیے جانے کے اعتبار سے تقدم حاصل ہو جیسے اللہ تعالی کے خوں کے قول' صُحف اِبْسرَ اهِیْم وَمُوسلی ۵۰'(الاعلی:۱۹)'' ابراہیم اور موکی کے حیفوں میں' میں ہواوراس کی دوسری مثال ہے آیت ہے: '' وَ اَنْسُولَ الْتَوْدُاةَ وَ الْإِنْسِجِيْلُ ٥ مِنْ مَنْ مَنْ الْمُولُولُ وَ الْمُولُولُ وَ الْمُولُولُ وَ الْمُولُولُ وَ الْمُولُولُ وَ الْمُولُولُ وَ الْمُولُولُ وَ الْمُولُولُ وَ الْمُولُولُ وَ الْمُولُولُ وَ الْمُولُولُ وَ الْمُولُولُ وَ الْمُولُولُ وَ الْمُولُولُ وَ الْمُولُولُ وَ الْمُولُولُ وَ الْمُولُولُ وَ الْمُولُولُ وَ الْمُولُولُ وَ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰهُ اللّٰ اللّٰ اللّٰهُ اللّٰ
- (۳) یا وہ سبقت و تقدم وجوب اور تکلیف کے اعتبار سے ہو'اس کی مثال حسب ذیل ہیں' ارشاد باری تعالی ہے:'' اَرْ تکعُوْا وَ السُجُدُوا''(الجُنے۔2)'' رکوع کرواور بجدہ کرو'۔ اورایک مقام پر فرمایا:'' فَاغْسِلُوا وُجُوْهَ کُمْ وَایَّدِیکُمْ''(المائدہ:۲)'' تواپنامنہ اور باتھ دھوو''۔

ایک اور آیت میں یوں ہے:'' إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرُّوَةَ مِنْ شَعَآنِهِ اللهِ''(القرہ:۵۸) '' ہے شک صفا اور مروہ اللہ کے نشانوں سے ہیں'ای وجہ سے حضور نبی کریم مُنْ آئِیْلِلْمِ فرماتے ہیں:'' نبیداء بیما بدا الله به''ہم اس چیز سے شروع کرتے ہیں'جس کے ساتھ اللہ نے (اینے کلام میں) آغاز فرمایا۔

(٣) يا وه سبقت اور تقدّم بالذات ہوگا' جيسے الله تعالیٰ کے قول'' مَشْنی وَ ثُسَلَاتُ وَرُبُاعُ '' (انتہام: ٣)'' دود واور تمن تمن اور جار جار''۔

ہفتتم: سبیت جیسے عزیز کا تقدم حکیم پر کیونکہ الند تعالیٰ کی صفت عزت وغلبہ حکم پرمقدم ہے۔ اور علیم کو حکیم پر تقدم کا سبب بیہ ہے کہ احکام (مضبوط ومتحکم کرنا)اورا تقان (پختہ بنانا) کا منٹ علم ہے'لبنداعلم پہلے ہوا۔

اورسور والانعام میں حکیم کے علیم پر تقدم کی وجہ یہ ہے کہ وہ تشریع احکام کا مقام اور سورہ نفاتحہ میں عبادات کو استعانت پر مقدم کی وجہ یہ ہے کہ عبادت حصول اعانت کا ذریعہ اور دسیلہ ہے۔

ای طرح آیت کریم التو الین ویوب المعطقهوین "(البره:۲۲۲)" ب شک الله پند کری به بهت توبه کرنے والول کو اور پند کری به سقرول کو میں توبه کرنے والوں کواس وجہ سے مقدم کیا ہے کہ توبہ کی طہارت کا سبب ہے۔ اور پھر آیت' لِکُلِّ آفَاكِ اَثِیْمِ ''(الجائیہ: ۷)'' ہر بڑے بہتان ہائے گناہ گار کے لیے' میں'' افک''(بہتان تراثی) کو گناہ پر مقدم کیا کیونکہ'' افک'' گناہ کا باعث بنآ ہے۔

اور''يَعُضُّوْ مِنْ أَبْصَادِهِمْ وَيَحْفَظُواْ فُرُوْجَهُمْ''(النور:٣٠)'' اپن نگائيں نيجي رکھيں اورا پي شرمگاہول کی حفاظت کریں'' کی آیت میں غض بھر (آئکھ نیجی رکھنا) کا حکم دیا گیا ہے

کیونکہ نگاہ ہی بہتی ہوتو بدی ہوتی ہے۔

ہشتم کثرت: جیما کہ اللہ تعالی کا ارشاد ہے: '' فَمِنْکُمْ کَافِرٌ وَمِنْکُمْ مُّوْمِنٌ ' (التغابین: ۲)

'' تو تم میں کوئی کا فراورتم میں کوئی مسلمان 'اس آیت میں کا فروں کی کثرت کی وجہ ہان کا ذکر مومن سے پہلے فرمایا ہے اس کی ایک مثال اللہ تعالی کا یہ قول کہ '' فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِنَّفُسِهُ ' وَرَمُونَ سے پہلے فرمایا ہی جان پرظلم کرتا ہے' اس آیت میں ظالموں کی کثرت اور بہتات کی وجہ سے ان کا ذکر پہلے کیا ہے' پھر مقتصد کا ذکر کیا اور اس کے بعد سابق کا ذکر ہوتے اور ای وجہ سے سارق (چورمود) کے سارقہ (چورعورت) پر مقدم کیا کیونکہ چورا کثر مرد ہی ہوتے ہیں۔

اورزانی (برکارعوت) کوزانی (برکارمرد) پرمقدم اس وجہ سے کیا ہے کہ زنا کی کثرت عورتوں میں نبتنا زیادہ ہوتی ہے کیونکہ وہ زنا کا سبب بنتی ہے۔قرآن پاک میں بیشتر مقامات پر رحمت کوعذاب پرمقدم کیا گیا ہے کیونکہ رحمت خداوندی عذاب کے مقابلہ میں غالب اور اکثر ہے'ای وجہ سے صدیث قدی میں آیا ہے کہ' ان دھمتی غلبت غضبی' ہے شک میری رحمت میرے خضب پرغالب ہے۔

برق سے اونی سے اعلیٰ کی طرف ترقی 'میسا کہ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے: ' اَلَّهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُونَ بِهَا اَمْ لَهُمْ اَرْجُلْ يَمْشُونَ بِهَا ' (الاعراف: ١٩٥)' کیا ان کے پاؤں ہیں جن سے چلیں' کیا ان کے باتھ ہیں جن سے پکڑیں'۔

اس آیت میں ترقی کی فرض سے ابتداء اونیٰ سے کی کیونکہ 'ید ' (ہاتھ)' رجل ' (پاؤں) سے عین ' (آئکھ)' ید ' سے اور' سمع ' (کان)' بصر ' (نگاہ) سے اشرف واعلی ہے اور اس قبیل سے المنے زیادہ بلیغ کوموخر کرنا بھی ہے جس کی مثال وہ آیت ہے جس میں رحمٰن کورجیم پر اور روزف کورجیم پر اور رسول کو نبی پر مقدم کیا ہے ارشاد باری تعالی ہے:

ُ و كَانَ رَسُولًا نَبِيًّا ۞ ''(مريم: ١٥)_

اس آخری مثال کی نسبت بہت سے اور بھی نکات بیان کیے گئے ہیں جن میں سے سب سے مشہور نکت رعایت فاصلہ ہے۔

وہم: اعلیٰ سے ادنیٰ کی طرف تنزل ۔اس کی مثالیں یہ ہیں:

(۱) الله تعالی کاارشاد ہے:

نەاسىے اونگھ آئے اور نەنىند

لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ

(البقره:۲۵۵)

لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا تَكِيْرَةً. الله فَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا تَكِيْرَةً. الله فَا الله فَادِرُ صَغِيْرَاهً وَلَا تَكِيْرَةً. الله فَادِرُ صَغِيْرَلهًا وَلَا تَكِيْرُلهًا وَ الله فَادِرُ اللهُ فَادِرُ اللهُ فَادِرُ الله فَادِرُ اللهُ فَادِرُورُ اللهُ فَادُورُ اللهُ فَادِرُورُ اللهُ فَادِمُ اللهُ فَادِمُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّ

قرآن کے عام اور خاص کا بیان

عام وہ لفظ ہے جو بغیر حصر کے اپنے لائق اور مناسب معانی کا احاط کرتا ہو۔

صیغه بائے عموم کابیان

لفظ'' كل''جَبِ مبتدا ہو جیئے' گُلُّ مَنْ عَلَیْهَا فَان'(الرحمٰن:۲۱)یا تا بع ہو (برائے تاکید) جیئے' فَسَجَدَ الْمَلَآئِکَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُوْنَ 0'(الجر:۳۰)'' تو جِنْنِ فرشتے تھے۔ کے سب بحدے میں گرے 0''۔

اسم موصول:''الذی 'التی ''اوران دونوں کے تثنیہ اور جمع کے صیغے بھی عموم کے لیے استعال ہوتے ہیں۔

مثالين:

وَ الَّذِي قَالَ لِوَ الِدَيْهِ أُفِّ لَكُمَا . وه جس نے اپنے مال باب سے كہا:

(الاحقاف: ١٤) اف (لعني تم دونول برافسوس ہے!)۔

کیونکہ اس سے مراد ہروہ مخص ہے جس سے بیغل صادر ہواس کی دلیل بیہ ہے کہ اس

کے بعد اللہ تعالیٰ کا قول ہے:

یہ وہ لوگ ہیں جن پر اللہ تعالیٰ کی

أُولَٰئِكَ الَّذِيْنَ حَقُّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ.

DarseNizami.MadinaAcadmey.pk

arseNizami.MadinaAcademy.Pk

(الاحقاف:١٨) بات يوري بوكرري-

وَالَّذِيْنَ 'امَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحْتِ اور جولوك ايمان لائ اور انهول لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَى وَزِيَادَهُ. جناولول نے نیک کام کے ال کے (بنس:۲۲) لیجاچی جزاہے۔

اس میں بھی ایسی ہی تعیم مراد ہے۔ أُولَئِكَ أَصْحُبُ الْجَنَّهِ. (القره: ٨٢) في نيك كام كي وه جنتي بين -

اوراس عيمى زياده يُللَّذِينَ اتَّقُواْ عِنْدَ رَبِّهمْ جَنَّاتٌ "(آلعران:١٥)" برميز گارول کے لیےان کے رب کے بال جنتیں ہیں''۔

اور جوحیض ہے مایوس ہو چکی ہوں۔

وَ الَّيْنِي يَئِسُنَ مِنَ الْمَحِيْضِ. (الطلاق: ١٠)

وَ اللَّتِيْ يَأْتِينُ الْفَاحِشَةَ مِنْ يِّسَآئِكُم اور جو بدكاري كري تمهاري عورتول میں ہےتو گواہی طلب کرو۔

فَاسْتَشْهِدُوا (النهاء:١٥)

وَ الَّذَنِ يَأْتِينِهَا مِنْكُمْ فَانْذُوْهُمَا. اورجو دوآ دی برائی كاارتكاب كری

(النباء:١١) تم ميں ہے توانہيں اذیت پہنچاؤ۔

O "ای ما"اور" من" بیالفاظ ہر حالت میں عموم کے لیے آتے ہیں جا ہے شرطیہ ہول' استفهاميه ہوں ماموصولہ ہوں۔

ان کی مثالیں حسب ذیل ہیں:

"اي"كَ مَثَالَ جِيعَ أَيَّامًا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى"(بناسرائل:١١٠)

'' جس نام ہے بھی بکارؤسب اس کے اچھے نام ہیں''۔

"ما"كَ مثال صِي إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُوْنَ اللهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ" (النباء:٩٨) '' ہے شکتم اللہ کے سواجن بتوں کی تم عیادت کرتے ہو' سب جہنم کا ایندھن ہیں''۔ '' من'' كي مثال جيئے' مَنْ يَنْ عُمَلْ سُوَّةً ايُّجْزَبِهِ ''(النهاء:١٢٣)جو برائي كرے گا'

اس کا بدلہ دیا جائے گا۔

O اورصیغه جمع جب مضاف ہوتو وہ عموم پر دلالت کرتا ہے جیسے اس آیت میں ہے:

"يُوْصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْ لَا دِكُمْ" (الساء:١١)" عَلَم ديتا بِمُنهِين الله تعالى تمهاري اولاد کے (حصول) کے بارے میں"۔

معرف بالام بھی عام کی قتم ہے ہے تھے اقد افلکت المو مِنون " (المؤمنون:١) " بے شك مرادكو ينيج ايمان والي 'اور' فَاقْتُلُوا الْمُشْرِيكِينَ ''(التوبه: م)' تومشركول كومارو' کی مثالوں میں ہے۔

O ادراسم جنس جس وقت مضاف ہوتو وہ بھی مفیدعموم ہوتا ہے جیسے مثلاً آیت'' فیلیّے خذر الَّذِيْنَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ "(النور: ٣٣)" تووه لوك وْرِين جورسول كَ حَكم كَي خلاف إ ورزی کرتے ہیں' میں ہے کہاس سے مرادتمام احکام خداوندی ہیں۔

اورمعرف بالف ولام بهي اي معنى مين آتائي مثلًا "وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ" (البقره: ٢٥٥) " اورالله في حلال كيائي كو العنى (كل ع)اى طرح" إنَّ الْإنْسَانَ لَفِي خُسُون فَ (العصر: ۲) ' بے شک آ دمی ضرور نقصان میں ہے' میں کل انسان مراد ہیں' اس کی دلیل الله تعالى كايةول" إلَّا الَّذِينَ 'المَنُوا" (العسر: ٣) "مرجوايمان لاع "بيد

ایسے ہی اسم نکرہ سیاق نفی اور نہی میں واقع ہوتو عموم کا فائدہ دیتا ہے جیسے ارشاد خداوند تعالى ب: "فَلَا تَفُل لَهُ مَا أُقِ" (بن الرائل: ٢٣) تو (اح فاطب!) البين اف (تک)نه کهنا به

اورآیت کریمه:

وَإِنْ مِّنْ شَيْءِ إِلَّا عِنْدَفَا خَزَ آئِنُهُ. اور كوئى چزنبيس ليكن هارے ياس

(الجر:۲۱) ال كفران بير

اورآ بت:

يه عالى شان كتاب اس ميس كو في شك

ذٰلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْتَ فِيهِ.

(القره:۲) نهبیں _

اورقول بارى تعالى:

تو نه عورتوں سے مماشرت کی ہاتیں ادرنه گناه اورنه جھگزا حج میں ۔

فَلَا رَفَتَ وَلَا فُسُوْقَ وَلَا جَدَالَ فِي المُحَجِّ. (البقرة: ١٩٧) ای طرح کر ہ جب سیاق شرط میں واقع ہوتو مفیدعموم ہوتا ہے جیسے اللہ تعالیٰ کے اس قُول مِن ہے: ' وَإِنْ آحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرُهُ حَتَّى يَسْمَعَ كَلْمَ الله "(التوبه: ١) اورا كثرمشركين ميس بي كوني شخص آب سے پناه ما تكے تواسے پناه د بيج یہاں تک کہ وہ اللہ کا کلام ہے۔

ای طرح سیاق احمان (احسان رکھنا) میں بھی جسے ارشاد باری تعالی ہے: ' و اَلْسَرَ لُسَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُورًا" (الفرقان:٨٨)" اورجم في آسانول سي ياك كرف والاياني اتارا"_ قرآن مجید کے ذریعہ جن احکام کی تخصیص کی گئے ہے اس کی مثالوں میں سے چندحسب

اور طلاق یانے والی عورتیں روکے رکھیں اپنی جانوں کو تین حیض (تک)۔

وَالْمُ طَلَّقْتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلَثُهُ قُووْءِ. (البقره:٢٢٨)

اس كى خصص بيرة يت ب جس مين الله تعالى فرما تا ب:

إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنْتِ ثُمَّ جبتم مسلمان عورتول سے فكاح كرو

طَلَقْتُمُو هُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمَسُّوهُنَّ فَمَا لَهُم بِالصَّلَاكَ عَ يَهِلَى الْهِيلَ طلاق د عدو لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ. (الاحزاب:٣٩) توتمهارے ليےان ير يجه عدت نبيل -

اوردوس الآيت:

اور جامله عورتوں کی عدت ان کا ضع

وَٱوۡلَاتُ الۡاَحۡـمَـال اَجَـلُهُنَّ اَنۡ

يَّضَعْنَ حُمْلُهُنَّ. (اطلاق: ٩)

اس ہے بھی عام حکم کی تخصیص ہوگئ ہے۔

اورتول بارى تعالى "حُرَّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمْ" (المائده: ٣) "حرام كيا كياتم ير مردار (اوررگول کابہا ہوا) خون '۔اس میں 'میسه ''ے 'سمك '' (مچھلی) کتخصیص كر دى كئ بكرده مجلى اس حرمت ميستنى ب جيها كدخودارشادخداوندى بك "أحِلَّ لكم صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ "(الدائده: ٩٦)" وريا مِن شكاركرنا (نيز يكرى ہوئی مچھلی) اور دریا کا طعام (اس کی مچینی ہوئی مچھلی) تمہارے لیے حلال ہے تمہارے اور مرافروں کے فائدہ کے لیے' اور' دم' سے جامرخون کوخاص کردیا۔اس کی تصریح'' او دما

مسفوحًا "پُر آیت کریم' و اتنت م اِحداهُنَّ قِنطارًا فَلَا تَأْخُذُوا مِنهُ شَیْنًا" (الها: ٢٠)

" اورائ و هرول مال دے چکے ہوتو اس میں پچھوا پس ندلو " (الایہ) کی تعیم کو اللہ تعالیٰ نے اپنے قول ' فَلَا جُناح عَلَیْهِمَا فِیْمَا افْتَدَتْ بِه " (البقره: ٢٢٩)' تو ان پر پچھ گناه ہیں جو عورت نے (خلاص پانے کا) بدلہ دیا" نے خاص فر مادیا ہے۔

اور تول باری تعالی ہے: 'الزّانیسَهُ وَالزّانِی فَاجْیلدُوا کُلّ وَاجِدِ مِنْهُمَا مِائَهُ عَلَیهِ '(النور:۲)' جوعورت بدکار ہواور جوم و بدکار ہوتو نگا و برایک کوان دونوں میں سے و سودر ہے' میں جوعموم تھا'اسے بھی خاص کردیا' چنانچار شادفر مایا کہ' فَعَلیْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَی الْمُحْصَنَاتِ مِنَ الْعَذَابِ '(الساء:۲۵)' توان پر آرهی سزاہے جو آزاد عور توں پر ہے'۔ اللہ خصناتِ مِنَ الْعَذَابِ '(الساء:۲۵)' توان پر آرهی سزاہے جو آزاد عور توں پر ہے'۔ اورای طرح اللہ تعالی کے قول 'فَانْ کِحُواْ مَا طَابَ لَکُمْ مِنَ النِسَاءِ '(النہا:۳)) ' تو نکاح میں لاؤ جوعور تیں تمہیں خوش آئیں' میں عام تھم کی تخصیص آیت کریمہ ' خُسِوْ مَنْ النہ عَلَی ہے۔ گئی مُنْ النہ عَلَی کُمْ اللّٰ مِنْ کے دوری گئی ہے۔ گئی گئم المّ ہوگئی ہے۔ '' تو نکاح میں لاؤ جوعور تیں تمہیں خوش آئیں' میں مام تھم کی تخصیص آیت کریمہ ' دوری گئی ہے۔ '' تو نکاح میں لاؤ جوعور تیں '' ترام ہوئیں تم پرتمہاری مائیں'' ہے کردی گئی ہے۔

احادیث مبارکہ کے ذریعہ تخصیص کی مثالیں ہے ہیں

الله تعالی کا قول ہے:'' وَاَحَلَّ اللهُ الْبَيْعَ ''(البقرہ:۲۷۵)اللہ نے تعظیم بیدوفروخت کو جائز فرمایا ہے' مگر بھے فاسدہ جو بہ کثرت ہیں'اس عام تھم سے صدیث کے ذریعے خارج کر دی گئی ہیں اور اللہ تعالیٰ نے'' دہلوا''سودکوحرام فرمایا اور اس سے عرایا کو صدیث کے ذریعہ خاص کردیا گیا ہے۔

آیت میراث کے عموم میں حدیث کے ذریعة تخصیص کر کے قاتل اور مخالف فی الدین
 شخص کو وراثت ہے محروم قرار دے دیا گیا۔

اورتح یم" مینه " (مردارحرام ب) کی آیت میں صدیث نے تخصیص کر کے جرادیعنی ٹڈی کواس حکم سے مشتنی کیا ہے۔

اور'' فَالاَثَاهُ قُورُوءٍ '' (البقره: ٢٢٨)'' تين حيض'' كي آيت ميں سے لونڈي كي تخصيص بھي بدذريعہ صديث ہوئى ہے اور اللہ تعالیٰ کے قول'' ماء طهور ا''سے وہ پانی جس کے اوصاف (رنگ ' بؤذا لُقہ) بدل گئے ہول' كو صديث كے ذريعے محصوص كرديا گيا ہے اور'' السادق ،

والسادقه "كاتهم برچوركے ليے تھا گرحديث نے چاردينارے كم چورى كرنے والے كو ہاتھ كائے جانے كے تحكم سے خارج كرديا ہے۔

اجماع کے ذریعے تحصیص کی مثال درج ذیل ہے:

"رفیق" (غلام) کوآیت میراث کے تھم ہے خارج کردیا گیا ہے 'لہذار قبق بھی وارث نہیں ہوگا علامہ کی نے ذکر کیا ہے کہ اس برتمام علاء کا اجماع ہے۔

قیاس تے تصیص بیدا ہونے والی مثال آیت زنا' فاجلِدُو ا کُلَّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا مِائَةَ
 جَلْدَهِ ''(الور: ۲)' اوران میں سے ہرایک کوسوکوڑے مارو''۔

اس میں ہے 'عباد''کو' آمة''(لونڈی) پر قیاس کر کے خاص کیا ہے اورلونڈی کے بارے میں یہ تھم نص سے نابت ہے اللہ تعالی ارشا وفر ما تا ہے: '' فَعَلَیْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَی بارے میں یہ تھم نص سے نابت ہے اللہ تعالی ارشا وفر ما تا ہے: '' فَعَلَیْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَی الْمُ خَصَنْتِ مِنَ الْعَذَابِ''(النماء: ٢٥)' ان پر اس کی آ دھی سز ا ہے' جو آ زاد (کنواری) عورتوں پر ہے'۔ چنا نچہ اس آیت نے قام تھم کو خاص کر ڈالا ہے' یہ تول علامہ کی سے منقول ہے۔

فصل

قرآن مجيد ميں بعض خاص نصوص اليي بھي ہيں جوسنت نبوي ملته اليليم التحيه والسلام "كي عموم كے ليخصص ہيں ليكن اس كي مثاليس كم ہيں منجله ان امثله كي ايك مثال الله تعالى كاقول "حقى يعطو الله المجزية" (التوبة ٢٩٠) "جب تك الله التحال محتى يقولوا لا الله الا الله "" بحص محم ديا گيا ہے كہ لوگوں سے لاول يبال تك كدوه لا الدالا الته كا اقرار كريم من تحصي مردى ہے۔ ليك كدوه لا الدالا الته كا اقرار كي الله الا الله الا الله كا الله الا الله كا الله الا الله كا مردى ہے۔

اوراللدتعالی کاارشاد 'حافظوا علی الصّلوات و الصّلوة الوسطی '(القره: ٢٣٨)
'' بھہانی کروسب نمازوں کی اور بھی کی نماز کی 'مخصوص ہے اس نہی کے عموم کے لیے حضور مُن مُن مُن اللہ میں فر مائی ہے فرائض کو نکال کر۔ مُن مُن مُن اللہ میں فر مائی ہے فرائض کو نکال کر۔ اور اللہ تعالی کا قول 'وَ مِن اَصْوافِها وَ اَوْبَادِها ''(الابہ) رسول کریم مُن مُن اَن اللہ میں فر مائی ہے۔

ارثادُ ما ابين من حيى فهو ميت "كتخصيص كرديتا بـ

اورآیت کریم 'والْعَامِلِیْنَ عَلَیْهَا وَالْمُولَّفَةِ قُلُوْبَهُمْ '(التوب: ٢٠)' اورجوا ہے تخصیل کر لے لاکی اور جن کے دلول کو اسلام سے الفت دی جائے'' نے حضور ملٹ اُللہ کی مدیث مبارک' لا تبحل الصدقه یلغنی و لا الذی مرہ سوی '' کے عموم کی تخصیص کر دی ہے اور آیت کریم ' فق اتبلوا التب تبغی '' نے نی ملٹ اُللہ کے قول' اذا التبقی المسلمان فالقاتل والمقتول فی النار'' کے عموم کو خاص کر دیا۔

عموم وخصوص ہی کے متعلق چند متفرق ذیلی مسائل کا بیان

اول: یہ کہ جب لفظ عام مدح یا ذم کے لیے وار دہوتو آیا وہ اس صورت میں اپنے عموم پر ہاتی رہتا ہے یانہیں؟ اس کے بارے میں کئی مذا ہب ہیں:

ایک ند بہب یہ ہے کہ وہ اپنے عموم پر باتی رہتا ہے کیونکہ اس میں نہ کوئی قرینہ صارفہ کی العموم پایا جاتا ہے کہ العموم پایا جاتا ہے اور نہ بی مدح وذم اور عموم کے درمیان کسی قتم کی کوئی منافات ہے کہ ان میں اجتماع نہ ہو سکے۔

دوسرا فدہب یہ ہے کہ وہ اپنے عموم پرنہیں رہے گا' کیونکہ اسے تعیم کے لیے نہیں لا یا گیا'
 بلکہ مدح وذم کے لیے استعمال ہوا ہے' پس وہ اس کا فائدہ دے گا اور بس!

نیسرا جو کہ زیادہ تھیجے مذہب ہے وہ بیہ ہے کہ تفصیل سے کام لیا جائے گا چنا نچہ اگر کو کی اور عام اپنے عام اس کا معارض نہ ہواور نہ عام اس غرض کے لیے استعمال ہوا ہوتو پھر وہ عام اپنے عموم پر ہاتی رہتا ہے۔

کیکن اگر کوئی دوسرا عام اس کے معارض پایا جائے تو پھرعموم مرادنہیں ہو گا کیونکہ ایسے میں دونوں کے مابین جمع اور تو افق پیدا کرنامقصود ہوتا ہے۔

اس عام کی مثال کہ اس کا معارض کوئی نہیں ہے اللہ تعالیٰ کا یہ قول ہے: '' إِنَّ الْاَبِسِرَ الرَّ لَفِی نَعِیْمِ O وَّاِنَّ الْمُعَارِ لَفِی جَعِیْمِ O ''(الانفطار: ۱۳ سے ۱۳)' ہے شک نیکی کرنے والے راحت میں ہیں O اور یقینا بدکارلوگ ضرور دوزخ میں ہیں O''۔

اورمعارض مونى كمثال الله تعالى فرماتا ب: "وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ خُفِظُونَ ٥

arseNizami.MadinaAcademy.Pk

الا على ازواجهم أو ما مكت آيمانهم "(المؤمنون:١-٥)" اورجوا بى شرم كابول كى حفاظت كرتے بي ٥ مرائى (منكوم) بيويوں پريا (مملوكه) بانديوں بر" - كه اس آيت ميں عام كو بيان مدح كے ليے لايا گيا ہے اور اس كے ظاہرى الفاظ ہے اس بات كاعموم بھى پايا جاتا ہے كہ ملك يمين (لونڈيوں) كى صورت ميں دو بہنول كوايك ساتھ جمع بھى كيا جاسكتا ہے كم الك "جمع بيين الما ختين "كے مفہوم ہے اللہ تعالى كاية ول ہے: "وَأَنْ تَدَجْمَعُوْ الْبَيْنَ اللّهِ خَتَيْنِ "(النماء: ٢٣) اور يہ كم كرودو بہنوں كومعارضه كرر ہا ہے كونكه يه علم ملك يمين اللّه ختين "(النماء: ٢٣) اور يه كم كرودو بہنوں كومعارضه كرر ہا ہے كونكه يه علم ملك يمين كوز ريع ہے بھى دو بہنوں كوجع كرنے كوشائل ہے اور يه مدح كے ليے نہيں لايا كيا البذا اول كے عموم كواس بات كے سواد يكر امور برمحول كيا جائے گا اور يه مانا جائے گا كه بہلے عام نے دوسرے عام كوائے دائر واثر ميں شامل كرنے كا ہم گز ارادہ نہيں كيا۔

اورعام کے سیاق' دم ''میں واقع ہونے کی مثال' آیت کریمہ' وَ اللَّه نِینَ یَکُنِوُوْنَ اللَّهُ مَنْ اللّٰ اللّٰهِ مَنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ عَلَمُ اللّٰهِ مِنْ عَلَمُ اللّٰهِ مِنْ عَلَمُ اللّٰهُ مِنْ عَلَمُ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ اللّٰ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰلْمُ اللّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰلِ اللّٰمُ اللّٰ اللّٰ اللّٰلّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰ ال

اور حضرت جابر رضی الله کی روایت کردہ صدیث کیس فی المحلی زکاہ ''' زیور میں زکا ہ ''' زیور میں زکا ہ نہیں 'اس کے معارض ہے لہذا پہلے عام کواس کے ماسوا پرمحمول کیا جائے گا۔

ثانی: دوسرے یہ کہ وہ خطاب جوحضور ملڑ گیا ہم کے ساتھ خاص ہے مثلاً 'یا یہا السبی' اور 'نواس میں اختلاف ہے کہ آیا یا است کو بھی شامل ہے یا کہ است اس میں حضور ملڑ گیا ہم کے ساتھ شریک نہیں ہے اس کے جواب میں کہا گیا ہے کہ بے شک است بھی اس خطاب میں شریک ہے کیونکہ پیشوا کو جو تھم دیا جاتا ہے تو عرفا وہ اس کے بیروکاروں اور اتباع کرنے والوں کو بھی تھم ہوتا ہے گرعلم اصول میں تیجے ترقول یہ ہے کہ اس خطاب میں اتباع کرنے والوں کو بھی تھم ہوتا ہے گرعلم اصول میں تیجے ترقول یہ ہے کہ اس خطاب میں استی شرکت کا ہونا درست نہیں' کیونکہ صیغہ خطاب نبی کریم ملڑ گیا ہم کی ذات اقدس کے ساتھ خاص ہے۔

 ابن انی حاتم 'زہری سے روایت کرتے ہیں' انہوں نے بیان کیا ہے کہ جس وقت اللہ تعالیٰ' یا ایھا اللہ ین المنوا افعلوا''ارشادفر ماتا ہے'اس وقت نبی کریم ملی ایکی الم مومنین کے ساتھ شریک خطاب ہوتے ہیں۔

- دوسرا ند بہب ہے کہ نہیں وہ خطاب حضور ملٹی کی اللہ کو شامل نہیں ہوتا کیونکہ وہ خطاب خود
 رسول اکرم ملٹی کی نہیں وہ خطاب حضور ملٹی کی نہیں کی زبان سے دوسروں کو تبلیغ کے لیے ادا کرایا گیا ہے اور سے
 مناسب معلوم نہیں ہوتا کہ آپ خود بھی اس میں شریک خطاب ہوں' جو بات کہ آپ کی
 معرفت دوسروں کو پہنچائی گئی ہے' علاوہ ازیں آپ کی خصوصیات بھی آپ کو اس تعظیم
 معرفت دوسروں کو پہنچائی گئی ہے' علاوہ ازیں آپ کی خصوصیات بھی آپ کو اس تعظیم
 میں شامل قر ارنہیں دیتیں۔
- تیسراند بہب ہے کہ اگر وہ خطاب لفظ' قسل'' (صیغہ امر) کے ساتھ مقتر ن ہوتو پھر
 اس وجہ سے کہ وہ تبلیغ کے باب میں ظاہر اور نمایاں تھم ہوجا تا ہے' بھی رسول اکرم مُنْ اَلِّنَا اِلَّهِ کُوشامل نہ ہوگا اور یہی امر اس کے عدم شمول کا قرینہ ہے لیکن اگر وہ'' قبل'' کے ساتھ مقتر ن نہ ہوتو پھر البتہ شامل ہوگا۔
- چوتھا فدہب جو کہ اصل میں درست ترین فدہب ہے وہ یہ ہے کہ 'یا ایھا الناس'' کے خطاب میں'' کافڑ' اور'' عبد'' (مومن غلام) دونوں شریک ہوتے ہیں' کیونکہ لفظ ''الناس''عام ہے'اس میں سب انسان شریک ہیں۔
- اورایک کے مطابق میکافر کوشامل نہیں ہے کیونکہ وہ فروعات کا مکلف نہیں ہوتا اور ای
 طرح '' عبد' کو بھی شامل نہیں کیونکہ اس کے تمام منافع شری لحاظ ہے اس کے آتا

 کو چینچتے ہیں۔
- والنظاف بيہ که آیالفظ من "مونث کو بھی شامل ہوتا ہے یا نہیں؟ سیح ترین دائے بیہ ہے کہ آیالفظ من "مونث کو بھی شامل ہوتا ہے یا نہیں؟ سیح ترین دائے بیہ ہے کہ بیمونث اور مذکر دونوں کے لیے آتا ہے گراحناف اس کے خلاف ہیں اور ہماری دلیل بیہ ہے کہ اللہ تعالی فرماتا ہے: "وَ مَنْ يَسْعُمَلُ مِنَ اللّٰ اللّٰ اللّٰهِ عَلَى فَرَى اللّٰهِ عَلَى فَرَى اللّٰهِ اللّٰهِ عَلَى اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰمِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ

اُوِّ اَنْهٰی ''(التساء: ۱۲۳)'' اور جو پچھ بھلے کا م کرے گامر دہویا عورت' اس میں مذکر اور مونث دونوں کے ذکر کے ساتھ نیک عمل کرنے والوں کی تفسیر بیان کی گئی ہے اور بیاس امریر دلیل ہے کہ لفظ'' من'' مذکر ومونث دونوں کوشامل ہے۔

ای طرح اللہ تعالیٰ کا قول 'و مَنْ يَتَفْتُ مِنْكُنَّ لِللهِ ''(الاحزاب: ٣١)' اور جوتم ميں اللہ كا فرماں بردارر ہے ' بھی ہے۔ جمع فدكر سالم كے بارے ميں بھی يداختلاف ہے كدآيا وہ مونث كوشامل ہوتا ہے يانہيں؟

صحیح ترین قول بیہ ہے کہ شامل نہیں ہوتا اورا گرجمع مذکر سالم میں کوئی مونث داخل بھی ہوتو کسی قرینہ کی وجہ ہے ایبا ہوگا' البتہ جمع مکسر میں مونث بالا تفاق داخل ہے۔

و چھے اس میں اختلاف ہے کہ آیا 'یا اہل الکتاب ''کے خطاب میں موسین بھی شامل ہیں یا نہیں؟ صحیح یہ ہے کہ نہیں کیونکہ لفظ کا اختصاص صرف انہی لوگوں کے ساتھ ہے ' جن کا اس خطاب میں ذکر آیا ہے اور ایک رائے یہ ہے کہ اگر اہل کتاب کے ساتھ موسین کی شرکت معنوی اعتبار ہے ہوتو پھر یہ خطاب ان کو بھی شامل ہوگا ور نہیں۔ اور یہ بھی مختلف فیدام ہے کہ ''یا بھا اللذین المنوا'' کے خطاب میں اہل کتاب شریک ہیں یانہیں؟

ایک قول میہ ہے کہ ہیں اس لیے کہ وہ فروگ احکام کے مخاطب نہیں ہیں اور دوسرا قول میہ ہے کہ وہ شریک خطاب ہیں۔

ابن السمعانی رحمة الله کامخار یمی ہے وہ لکھتے ہیں کہ الله تعالیٰ کا ارشاد ' سابھا الذین امنوا'' خطاب تشریف ہے تخصیص کے لیے نہیں ہے۔

قرآن مجید کے مجمل اور مبین کابیان

مجمل: مجمل اس کلام کو کہتے ہیں جو واضح طور پر (اپنے معنی پر) دلالت نہ کرئے قرآن مجید میں اس کی مثالیں موجود ہیں گرداؤ دظاہری (فرقہ ظاہریکا ام) اس کا قائل نہیں۔ قرآن مجید کا مجمل باتی رہنے کے جواز میں کثیر اقوال ہیں جن میں سے زیادہ صحیح قول میں ہے کہ مجمل برعمل کے کہ اس برعمل سے کہ مجمل برعمل کے کہ اس برعمل

ضروری ہوتا ہے۔

چند آیات کے بارے میں بیا ختلاف ہے کہ آیا از قبیل مجمل ہیں یانہیں؟ ان جملہ
آیات میں سے ایک آیت سرقہ ہے کہا گیا ہے کہ بیآ یت ' یسد ' (ہاتھ) کے بارے میں
مجمل ہے کیونکہ ' ید ' کا اطلاق کلائی ' کہنی اور کندھا تک ہرسے صص کے مجموعہ پر ہوتا ہے۔
اور پھر' قطع ' (کا نے) کے بارے میں بھی اجمال ہے کیونکہ قطع کا استعال جدا کرنا
اور زخی کرنا ' دونوں معنوں کے لیے ہوتا ہے اور یہاں کی امر کی بھی وضاحت نہیں ہے' ہاں
شارع علائیلاً کا یہ بیان فر مانا کہ ہاتھ کو کلائی کے قریب سے کا ٹا جائے' اس کی مراد کو ظاہر کرتا

ادرا یک قول میہ ہے کہ اس آیت میں کوئی اجمال ہے ہی نہیں اس کی وجہ میہ ہے کہ قطع کا استعال اہانت (جدا کرنے) کے معنی میں ظاہر ہے۔

اورای طرح آیت کریمه "و المسحوا برو و و سیم "(المائده: ۱") اور سرول کامسی کرو" بھی از شم مبین ہے اس میں اجمال یوں بیان کیا جاتا ہے کہ اس نے تر دو بیدا کردیا ہے کہ پورے سرکامسی کرنا ہے اور شارع علا پسلاا کا مقدار ناصیہ (پیشانی کی مقدار) سرکامسی فرمانے کاعمل اس اجمال کی تفصیل اور بیان بنمآ ہے اور بعض نے کہا ہے کہ نیس یہاں پر" و احسحوا" مطلق سے پرولالت کرتا ہے اور اس کا اطلاق مسی کہا ہے کہ نیس یہاں پر" و احسم وا" مطلق سے پرولالت کرتا ہے اور اس کا اطلاق مسی واقع ہونے والی شے کے قبیل حصہ پر بھی صادق آتا ہے نزیادہ سے زیادہ پر بھی اور ان آیات میں جن کے جمل یا مفصل ہونے میں اختلاف ہے وہ آیات بھی جن جن میں شری اساء واقع میں جن کے جمل یا مفصل ہونے میں اختلاف ہے وہ آیات بھی جن جن میں شری اساء واقع میں مثال :

نمازقائم كرواورزكوة اداكرو_

اَقِيْمُوا الصَّلُوةَ وَ التُّوا الزَّكُوةَ.

(البقره:۳۳)

ر فلیصمهٔ توتم میں ہے جواس مہینہ میں موجود (البقرہ:۱۸۵) موتو وہ ضروراس کے روز سے رکھے۔

فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ.

اوراللہ کے لیے لوگوں پراس کے گھر

وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ.

(آلعران:٩٤) كافح كرناب-

کہا گیا ہے کہ یہ آیات بھی جمل ہیں کیونکہ لفظ 'صلوہ ''ہرایک دعا کا اور لفظ 'صوم''
ہرایک قتم کے امساک (رک جانے) اور لفظ 'حج ''ہرایک قصد کرنے کا احمال رکھتا ہے اور
ان الفاظ کی خاص مراد پر لغت ہے کوئی استدلال نہیں ہوسکتا' لہذان کے لیے بیان کی حاجت
پڑی' اور ایک قول یہ ہے کہ ان میں اجمال کا احمال نہیں ہے' بلکہ ان الفاظ کو تمام نہ کورہ معانی
متملہ پرمحمول کیا جائے گا' سوائے اس تخصیص کے جو کسی دلیل سے ثابت ہو جائے۔

قرآن حکیم کے ناسخ اورمنسوخ کابیان

ننخ کے معنی کی لغوی شخقیق

سنخ کالفظ زائل کرنے (مٹانے) کے معنی کے لیے استعال ہوا ہے بیسے قرآن مجید میں ارشادہ وا: 'فَینسنے اللّٰهُ مَا یُلْقِی الشّیطُنُ ثُمّ یُحْکِمُ اللّٰهُ 'ایلیّه' (انج : ۵۲) تواللّٰه مثا ویتا ہے شیطان کے ڈالے ہوئے کو بھرا پی آیتیں خوب کی کر دیتا ہے۔ اور تبدیل کے معنی میں بھی آتا ہے بیسے اس آیت میں ہے: 'وَإِذَا بَدَّلْنَا ایدَ مَّکَانَ 'ایدَ مَّکَانَ 'ایدَ وَ الله ماری الله میں بھی آتا ہے۔ مثل موارث کا تاسخ ایک شخص سے دوسرے تحص کی جانب تحویل میراث کے معنی میں بھی آتا ہے۔ مثلاً موارث کا تاسخ ایک شخص سے دوسرے تحص کی جانب تحویل میراث کے معنی میں ہے۔ مثلاً موارث کا تاسخ ایک شخص سے دوسرے تحص کی جانب تحویل میراث کے معنی میں میں میں میں ایک ایک شخص سے دوسرے تحص کی جانب تحویل میراث کے معنی میں

اورایک جگہ ہے دوسری جگہ قل کرنے کے لیے بھی لفظ ننخ آتا ہے جیسے کہا جاتا ہے: "
نسخت الکتاب" یماور واس وقت بولا جاتا ہے جب قرآن کے لفظ اور طرز خط دونوں کومن وعن نقل اور حکایت کر دیا جائے۔

مسکہ دوم: یہ ہے کہ "نے" منجملہ ان امور کے ہے جن کے ساتھ اللہ تعالیٰ نے اس امت مسلمہ کو خاص اور ممتاز فرمایا ہے۔ ننخ کی بے شار حکمتیں ہیں ان میں سے ایک حکمت "تیسیر" یعنی احکام میں آسانی اور سہولت فراہم کرنا ہے اور ننخ کے جواز پر امت مسلمہ کا اجماع ہے۔ جب کہ یہودیوں کا خیال یہ ہے کہ ننخ ہے معاذ اللہ اللہ تعالیٰ کی شان میں "بداء" کی خرابی اور قباحت لازم آتی ہے لہذا اس کے جواز کا قول نہیں کیا جا سکتا اور "بداء" کی تعریف یہ ہے کہ کی خیال میں ایک بات آئے اور پھر وہ اس کوچھوڑ کر دوسری رائے قائم تعریف یہ ہے کہ کی خیال میں ایک بات آئے اور پھر وہ اس کوچھوڑ کر دوسری رائے قائم

کرے جواس پر بعد میں ظاہر ہو کینی بداء تلون مزاجی کا نام ہے اور یہود کا بیاعتراض اس لیے باطل ہے کہ ننخ اس طرح احکام کی مدت بیان کرنے کی غرض سے ہوتا ہے جیسے موت سے دو چار کرنے اس طرح احکام کی مدت بیان کرنے کی غرض سے ہوتا ہے جیسے موت سے دو چار کرنے کے بعد دوبارہ زندہ کرنا اور اس کے برعکس بیاری کے بعد تندرست کرنا کیا اس کا عکس مالدار کرنے کے بعد مفلس و نادار کر دینا یا عکس نو جس طرح بیسب امور جائز ہیں اور ان میں کسی چیز کو بھی '' بداء' نہیں کہا جاسکتا اور امراور نہی کی بھی بہی صورت حال ہے۔

نائخ قرآن کے بارے میں علاء کا اختلاف ہے بعض علاء فرماتے ہیں کہ قرآن کا نائخ صرف قرآن کے بارے میں علاء کا اختلاف ہے بعض علاء فرماتے ہیں کہ قرآن کا نائخ صرف قرآن ہی ہوسکتا ہے جسیا کہ خود اللہ تعالی ارشاد فرماتا ہے: '' مَا نَنْسَعُ مِنْ ایمه وَ اَیْ مِنْلِهَا ''(البقرہ:۱۰۱)'' جوآیت ہم منسوخ کردیتے ہیں یا جملا دیتے ہیں (تق) اس سے بہتریا اس جسی لے آتے ہیں'۔

علماءمفسرين فرماتے ہيں:

قرآن مجید کی مثل اوراس سے بہتر قرآن ہی ہوسکتا ہے نہ کہ کوئی دوسری چیز۔

دوسراقول یہ ہے کہ قرآن کا ننخ حدیث ہے بھی ہوسکتا ہے کیونکہ سنت کا ثبوت بھی مخانب اللہ ہے 'لہذاوہ بھی قرآن کومنسوخ کرسکتی ہے' حدیث کے اللہ کی جانب ہے ہونے پر دلیل اللہ تعالیٰ کا ارشاد' و مَا یَسنطِقُ عَنِ الْهُولٰی O'(النجم: ۳) ہے لیمیٰ ' رسول اپنی خواہش ہے کہ جہیں کہتے' اور وصیت کی آیت جوآگے آرہی ہے' اس کا تعلق ای قتم سے ہے۔ مسکلہ سوم: یہ ہے کہ ننخ فقط امر اور نہی میں واقع ہوتا ہے' عام ازیں کہ وہ اوامرونواہی لفظ خبر جملہ خبریہ) کے ساتھ وار دہوں یا صیغہ امر ونہی (جملہ انشائیہ) کے ساتھ' مگر جو خبر (جملہ خبریہ) طلب اور انشاء کے لیے نہ ہو' اس میں ننخ راہ نہیں پاتا' ای طرح وعد اور وعید بھی ای قبیل سے ہیں کہ ان کو میں بھی ننخ کو خل نہیں ہے۔

لہٰذااس وضاحت کے بعد یہ بھی معلوم ہوجا تا ہے کہ جوعلاءاخبار وعداور وعید کی آیات ۔ لنسوں مراس نہ

كوكتاب النفخ ميں لائے ہيں وہ ٹھيك نہيں ہے۔

مسكله چهارم: يدے كەشخ كى كى قىتمىس بىل ـ

نشخ کی بہلی متم وہ ہے کہ جس میں مامور بہ پڑمل درآ مدسے پہلے ہی اس کومنسوخ کرویا گیا ہواس کی مثال'' آیت نجویٰ' ہے اور یہی حقیقی شخ ہے دوسرانشخ وہ منسوخ شدہ تھم ہے جو ہم ہے پہلی امتوں پرنافذ اور مشروع تھا'جیسے مشروعیت قصاص اور دیت کی آیت ہے۔
یا پھر کسی چیز کا تھم مجمل طور پر دیا گیا تھا' مثلاً بیت المقدس کی طرف رخ کر کے نماز ادا
کرنا پہلے مشروع تھا' پھریہ منسوخ کر کے خانہ کعبہ کی طرف رخ کرنے کا تھم دے دیا' ای
طرح عاشورہ کے روزہ کا تھم ماہ رمضان المبارک کے روزوں کے ساتھ منسوخ کیا گیا اور اس
قتم پرمجازی طور پرننخ کا اطلاق کیا جاتا ہے۔

تیسراننخ وہ ہے جس کا تھم کسی سبب کی بناء پر دیا گیا تھا' مگر بعد میں سبب زائل ہو گیا' جیسے مثلاً مسلمانوں کی کمزوری اور کی کے دفت میں صبر اور عفو و درگز رہے کام لینے کا تھم دیا گیا تھا' مگر بعد میں بیو وجہ جاتی رہی تو سبب کے زائل ہونے پر جہاد فرض کر کے اسے منسوخ کر دیا گیا' بین خور حقیقت نئے نہیں ہے بلکہ افتیم'' منساء'' (یعنی فراموش کر دینے کے) ہے' جیسا کیا' بین خور مایا:'' او نہ سبھا''ہم اس تھم کونسیان وفراموشی کی نذر کر ڈوالتے ہیں۔ چنانچہ مسلمانوں کے قوت حاصل کرنے تک قبال کا تھم اٹھائے رکھا گیا اور جب تک اسلام کوغلبہ حاصل نہیں ہوا اور مسلمان کمزوری کی حالت میں تھے'نہیں اذیت پر صبر کرنے کا تھم تھا۔

بیان ندکورے اکثر لوگوں کی اس ہرزہ سرائی کا زور نوٹ جاتا ہے کہ اس بارے میں جو
آیت نازل ہوئی تھی ، وہ آیت سیف کے نزول سے منسوخ ہوگی ہے ، بات بین ہے بلکہ
حقیقت بیہ کہ بیآ بیت ' منساء' کے قبیل سے ہے' جس کے معنی بیر ہیں کہ ہرا یک امر جو وارد
ہوا ہے' اس برعمل درآ مدکرنا کسی نہ کسی وقت ضرور واجب ہو جاتا ہے بعنی جس وقت اس تھم کا
کوئی مقتضی بیدا ہوتا ہے اور پھراس علت کے نتقل ہوتے ہی کسی دوسر ہے تھم کی طرف منتقل ہو
جاتا ہے اور بیننے ہرگز نہیں ہے' کیونکہ ننے کہتے ہیں تھم کو اس طرح زائل کر دینا اور مٹادینا کہ
پھراس کی قبیل اور بچا آوری جائز ہی نہ رہے۔

مسکلہ پنجم: بعض علماء مفسرین نے بیان کیا ہے کہ ناسخ اور منسوخ کے اعتبار سے قرآن مجید کی سورتوں کی کئی قسمیں ہیں ہیں جن میں ناسخ اور منسوخ کا وجود نہیں ہے اور الیسور تیل کئی تنتالیس (۳۳) ہیں جن کے اساء حسب ذیل ہیں:

فاتحهٔ يوسف يلين الحجرات الرحلن الحديد القف الجمعه التحريم الملك الحاقه الجن المرسلات عم النازعات الانفطار إوراس كے بعدى تين سورتيں _

اورالفجر' پھراس کے بعد ہے التین 'العصراور الكافرون تین سورتوں کے علاوہ ختم قرآن تك تمام سورتوں میں كوئى تاتخ اور منسوخ موجوز ہیں ہے۔

قتم دوم: قرآن پاک کی وہ سورتیں جن میں ناتخ اور منسوخ موجود ہیں اور ایس کل پچیس (۲۵) سورتیں ہیں ؟ جن کے نام درج ذیل ہیں:

البقرہ اور اس کے بعد مسلسل ٹین سور ٹیں' النج' النور اور اس کے بعد کی دوسور ٹیں' النجز النور اور اس کے بعد کی دوسور ٹیں' الاحزاب سبا' المومن شوری' الذاریات' الظور'الواقعہ' المجادلہ' المرش المدثر' التكویراورالعصر۔ فسم سوم: وہ سور ٹیس جن میں فقط ناسخ آیات ہیں اور منسوخ کا وجود نہیں وہ کل جھے سور ٹیس ہیں' جن کے نام الفتح' الحشر' المنافقون' التغاین' الطلاق اور الاعلیٰ ہیں۔

فتیم چہارم: وہ قتم ہے جن سورتوں میں صرف بعض منسوخ آیات پائی جاتی ہیں اور نائخ موجودنہیں ہیں اور وہ باقی چالیس (۴۰) سورتیں ہیں اور بیاس بناء پر ہے۔ جب منساء اور مخصوص کو بھی منسوخ کی قتم ہے ثار کیا جائے۔

مسكه ششم :قرآن مجيد مين نسخ كي تين شميل بير-

فشم اوّل: وہ ننخ ہے جس میں تلاوت اور اس کا حکم دونوں ایک ساتھ منسوخ ہو گئے

بي-

ام المومنين حضرت عا كشرصد يقد رض الدفر ماتى بين:

''کان فیما انزل عشر رضعات معلومات فنسخن بخمس معلومات فتو فی رسول اللَّه *طُوْلَيْكِمُ* وهن مما يقراء من القرآن رواه الشيخان''۔

محدثین نے اس روایت میں کلام کیا ہے کیونکہ اس میں'' و هسن مسل یہ قسواء من المقدر آن''کے قول سے بہ ظاہر میں معلوم ہوتا ہے کہ اس کی تلاوت منسوخ نہیں ہوئی تھی' صرف تھی منسوخ ہوا تھا' جب کہ صورت واقعہ اس کے برعکس ہے۔

چنانچہاں اعتراض کا جواب بیدیا گیا کہ ام المومنین ریکناللہ کی مراد 'فتو فی ''سے بیہ ہے کہ حضور ملتی لیکناللہ کا وقت وصال قریب آ گیا تھا'یا بیہ کہ تلاوت بھی منسوخ ہوگئی تھی' گرتمام صحابہ کرام تک اس کی خبر نہ پیچی اور وہ لاعلمی کی وجہ سے اس کی تلاوت کرتے رہے اور انہیں حضور ملتی لیکنی ہے وصال کے بعداس کی تلاوت کے بھی منسوخ ہونے کاعلم ہوا۔

قسم دوم: وہ ہے جس کا تھم منسوخ ہو گیا ہے 'گراس کی تلاوت باقی ہے' منسوخ کی اس فتم کے بیان میں علاء نے کئی کتابیں تالیف کی بین در حقیقت اس نوعیت کی آیات بہت کم پائی گئی ہے اور گو کہ بعض علاء نے اس کے شمن میں بہ کثرت آیات گنوا دی بین کیکن محققین نے (جیسے کہ قاضی ابو بکر ابن عربی بیں) اس کو بردی شرح و بسط کے ساتھ بیان کیا اور مسئلہ کی اصل صورت حال کو واضح کرتے ہوئے یا بیر شبوت تک پہنچایا ہے۔

، اورتیسرا قول یہ ہے کہ اس کا نامخ اجماع امت ہے جیسا کہ ابن العربی نے بیان کیا

ے۔

(۲) آیت 'وَعَلَی الَّذِیْنَ یُطِیفُوْنَهُ فِذْیَةٌ '(ابقره: ۱۸۳)' اورجنهیں اس کی طاقت نه ہو وه بدله دین 'کوالله تعالیٰ کے قول' فَمَنْ شَهِدَ مِنْکُمُ الشَّهُرَ فَلْیَصُمُهُ '(ابقره: ۱۸۵) '' توتم میں جوکوئی بیم بینه پائے تو وہ ضروراس کے روزے رکھے' نے منسوخ کرویا ہے ' دوسری رائے بیہ کہ نبیس بیآ یت محکم ہے اوراس میں '' لا'' نافیه مقدر ہے یعنی اصل میں '' لا بطیقو نه '' ہے۔

(۳) الله تعالی کا قول ' اُحِلَّ لَکُمْ لَیْلَهٔ الصِیامِ الرَّفَتُ ' (البقرہ: ۱۸۷)' روزوں کی را توں میں اپنی عورتوں کے پاس جانا تمہارے لیے حلال ہو' ناتخ ہے اوراس نے آیت' کی ما کئیسب علی الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِکُمْ ' (البقرہ: ۱۸۳)' جیسے اگلوں پر فرض ہوئے تھے' کو منسوخ کردیا ہے' کیونکہ اس کا مقتضی یہ ہے کہ جس طرح سابقہ امتوں پر روزوں میں سوجانے کے بعد دوبارہ رات میں اٹھ کر کھانا پینا اور ہم بستری کرنا حرام تھا' ویسے ہی اس امت مصطفویہ پر بھی یہ چیزیں حرام ہیں اس بات کو ابن العربی نے بیان کیا ہے اور ساتھ ہی ابن العربی نے بیان کیا ہے اور ساتھ ہی ابن العربی نے بیان کیا ہے اور ساتھ ہی ابن العربی نے بیان کیا ہے اور ساتھ ہی ابن العربی نے بیان کیا ہے اور ساتھ ہی ابن العربی نے بیان کیا ہے اور ساتھ ہی ابن العربی نے بیان کیا ہے اور ساتھ ہی ابن العربی نے ایک قول یہ جھی نقل کیا ہے کہ یہ آیت صدیث سے منسوخ ہوئی ساتھ ہی ابن العربی نے ایک قول یہ جھی نقل کیا ہے کہ یہ آیت صدیث سے منسوخ ہوئی

ے۔

(٣) اورآیت 'نیسئلُونک عَنِ الشَّهْرِ الْحَوَامِ ''(ابقره:٢١٥)'' تم سے پوچھے ہیں شہرِ حرام کے بارے 'منسوخ ہے'اس کی تنسخ الله تعالیٰ کے ارشاد ' و قاتِلُو اللَّهُ شُرِ کِیْنَ کَسَامَ مُشْرِکُول ہے' ہے ہوئی ہے' یقول ابن جریر نے عطاء بن میسرہ سے روایت کیا ہے۔

(۵) اور 'وَ الَّذِینَ یُتُوَ قُوْنَ مِنْکُمْ ' تا قوله تعالی ' مَتَاعًا إِلَی الْحَوْلِ ' (القره: ۲۳۰) " اور جوتم میں مریں اور بیمیال چھوڑ جا ئیں وہ اپنی عورتوں کے لیے وصیت کر جا ئیں سال
گرتک نان نفقہ کی ' کی آیت منسوخ ہے'اس کی ناتخ آیت' اُر بَعَهٔ اَشْهُر وَّ عَشْرًا ')

(البقره: ۲۳۳)' چار ماہ دس دن ' ہے اور وصیت کی آیت ' آیت میراث سے منسوخ ہوگئی ہے اور ' سکسنی ' ایک گروہ کے نزدیک ثابت ہے اور بعض دوسرے حضرات اس کو
منسوخ مانتے ہیں اور حدیث' و لا سکنی '' کواس کا ناسخ قرار دیتے ہیں۔

(۲) ارشادر بانی'' وَإِنْ تُبُدُوْا مَا فِی اَنْفُسِکُمْ اَوْ تُخفُوْهُ یُحَاسِبُکُمْ بِهِ اللّهُ''(القره: ۲۸۳)''اوراگرتم ظاہر کروجو پھے تہارے جی میں آئے یا چھیاؤ اللہ تم ہے اس کا حساب کے اسکا' اس کے بعدوالے قول باری تعالیٰ'' لَا یُسْکَیِّفُ اللّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا'' کے اللّه مُنفسًا إِلَّا وُسْعَهَا'' اللّه مُنفسًا إِلَّا وُسْعَهَا'' اللّه مَنهوخے۔ (البقرہ:۲۸۹)'' اللّه کی جان پر ہو جھنہیں ڈالیّا مگراس کی طاقت بھر'' سے منسوخے۔

(2) سوره آل عمران میں سے آیت ' اِنتَّفُوا اللَّهُ حَقَّ تُقَاتِه ''(آل عمران: ۱۰۲)' الله سے ڈروجیسااس سے ڈرنے کاحق ہے' کے بارے میں ایک قول یہ ہے کہ اس کو' فَاتَّقُوا اللّٰهُ مَا اسْتَطَعْتُم' '(التغابن: ۱۱)' تواللہ سے ڈروجہاں تک ہوسکے' نے منسوخ کردیا ہے اورلیکن یہ بھی کہا گیا ہے کہ بیمنسوخ نہیں بلکہ محکم ہے۔

سورہ آل عمران میں آیت مذکورہ بالا کے سوا اور کوئی انبی آیت نہیں ہے جس کے بارے میں ننخ کادعویٰ کرناضچے ہو۔

(۸) سوره الاحزاب میں سے 'لَا یَسِعِلُّ لَكَ النِّسَاءُ ''(الاحزاب:۵۲)'' ان کے بعداور تورتیں تہمارے لیے طلال نہیں ''کا حکم منسوخ ہے'اس سورہ الاحزاب کو'' اِتَّلَ آخُلُلُنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ ''(الاحزاب:۵۰)'' ہم نے تہمارے لیے طلال فرما کیں تمہاری بیبیال''کے اُزُوَاجَكَ ''(الاحزاب:۵۰)'' ہم نے تمہارے لیے طلال فرما کیں تمہاری بیبیال''کے

قول خداوندی نے منسوخ کردیا ہے۔

(٩) اورسوره مجادله کی آیت آفا نَاجَیْتُم الرَّسُولَ فَقَدِّمُوْا "(المجادله:١٢)" جبتم رسول سے تنهائی میں کوئی بات کرنا جاہوتو آگے پیش کرو" اپنے مابعد آنے والی آیت سے منسوخ ہوگئی ہے۔

، و اگر میسوال کیا جائے کہ کسی آیت کا حکم اٹھا لینے اور اس کی تلاوت کو باقی رکھنے میں کیا حکمت ہے؟

تواس كاجواب دوطريقون سے ديا جاسكتا ہے:

پہلاطریقہ بیہ ہے کہ یوں کہاجائے کہ آن مجید کی تلاوت جس طرح اس سے تھم معلوم کر کے اس پڑمل کرنے کی غرض سے کی جاتی ہے ای طرح اس کے کلام الٰہی ہونے کی وجہ سے اس کی تلاوت کر کے محض ثواب حاصل کرنا بھی مقصود ہوتا ہے 'لہٰذا اس حکمت کی بناء پر تلاوت کو ہاتی رکھا گیا ہے۔

اور دوسراطریقہ بیہ ہے کہ یوں کہا جائے کہ ننخ غالب طور پر تخفیف کے لیے ہوتا ہے اور تلاوت کو اس سبب سے باقی رکھا کہ وہ اللہ تعالیٰ کی نعمتوں اور نواز شوں کی یاد دلاتی رہے کہ بندو! یاد کرواللہ تعالیٰ نے تم پر اپنالطف وکرم کر کے تمہیں محنتوں اور مشقتوں سے نجات دی

ہے۔

قرآن پاک میں جس قدرآیات دورِ جاہلیت کے قوانین ہم سے پہلی شریعتوں کے

احکام یااسلام کے ابتدائی دور کے احکام کومنسوخ کرنے کے لیے وارد ہوئی ہیں وہ بھی بہت کم

تعداد میں ہیں اور اس کی مثال ہے: آیت قبلہ سے بیت المقدس کی طرف رخ کر کے نماز ادا

کرنے کامنسوخ ہونا' اور رمضان کے روز وں سے عاشورہ کے روز وں کامنسوخ ہونا۔

قشم سوم: منسوخ کی تیسری قتم ہے ہے کہ صرف تلاوت منسوخ ہوئی ہے مگر تھم باتی ہے یعنی ننخ

کا تعلق محض تلاوت سے ہے چنا نچواس کا قرآن ہونا ثابت نہ ہوگا اور اس کی تلاوت کرنے

ہے قرآن پر ھنے کا ثواب نہیں ملے گا' باتی رہااس کا تھم تو وہ باقی رکھا گیا ہے اور اس پر مل کیا

ہے قرآن پر ھنے کا ثواب نہیں ملے گا' باتی رہااس کا تھم تو وہ باقی رکھا گیا ہے اور اس پر مل کیا

جائے گا'اس تیسری قتم کے منسوخ کی مثالیں بہ کثرت ملتی ہیں۔ ابوعبید نے زرابن جش سے روایت کیا' وہ بیان کرتے ہیں کہ مجھ سے حضرت الی اتن کعب طبخیاند نے دریافت فرمایا کیتم'' سورہ الاحزاب'' کی گُنٹی آیتیں شار کرتے ہو؟ زرا بن حبش کہتے ہیں: میں نے جواب دیا: بہتریا تہتر آیتیں۔

انی بن کعب فرمانے گئے: بیسورت (سورہ الاحزاب)سورہ بقرہ کے برابرتھی اور ہم اس میں آیت رجم کی قراءت کیا کرتے تھے۔

زرا بن جبش کتے ہیں: میں نے پو چھا کہ آیت زجم کیاتھی؟

حضرت افي ابن كعب في مايا:

اذا زنا الشيخ والشيخة فارجموها البنته نكالا من الله والله عزيز حكيم "اذا زنا الشيخ والله عزيز حكيم "" ثادي شدهم دوعورت جبزنا كرئيس توانيس سَلَسار كروالله كي طرف سي مزاج اورابته غالب حَمت والاح".

ا بوموی اشعری می است. بیان کرتے ہیں:

ائيسورت سوره برائة كمثل نازل بون تمنى الربعد مين وه الهالى أني اوراس كاصرف الله يوات مثل نازل بون تمنى الدين باقوام لا خلاق لهم ولو ان لابن الده والديس من مال لتمنى والديا ثالثا ولا يملا جوف ابن آدم الا التواب ويتوب المله على هن تاب "أربيسوال كياجائي كمنوث كاس فتم يعني تمم وباتي ركيم بوئي المله على هن تاب "أربيسوال كياجائي كمنوث كاس فتم يعني تمم وباتي ركيم بوئي المادة وتنوب ومنوث كراس فتم يعني من كركمت بوئي المادة ومنوث كروب ومنوث كراس فتم المادة من كراس فتم يعني كم كراس فتم بالربية المناس في المناس فتم بالمناس في المناس المان من الا عت شعاری اور فرمان برداری کا ظهار مقصود تق "سیس طرح است مصطفویه تلی صاحب التحیة المت شعاری اور فرمان برداری کا ظهار مقصود تق "سیس طرح اس است کے اور سرف است کے اور سرف نون کی بیان وینے کے لیے سرف خن کی بنیاد پر بغیر کوئی دلیاں اور تفصیل طعب کے اند تعالی کی راہ میں جان وینے کے لیے ای منتقد رہنے تیں اور اپنا مان جان اور سب بچھاس کے راستے میں قربان کرویئے کے لیے ای میں شرح بین اور اپنا مان جان اور سب بچھاس کے راستے میں قربان کرویئے کے لیے ای میں شرد ویت کے لیے ای میں شرد ویت کے ایمان دید ہے۔ میں شرد ویت کے ایران برد کے ویل رہوگئے مینے جائے کہ خواب وی کا ادنی درجہ ہے۔

متفرق فوائد

جنس عو ، کا قول ہے کہ قوم ان پاک میں کوئی نامخ ایں نبیس کے منسوٹ ترجیب میں اس

سے پہلے نہ آیا ہو' مگر دوآ یتی اس قاعدہ سے مشنیٰ بین ایک سورہ بقرہ کی آیت عدیت اور دوسری آیت اور دوسری آیت الیسکاءُ "(الاحزاب:۵۲)" اور بیبیاں تمہارے لیے حلال نہیں "

اور بعض علماء نے ای طرح کی مثال میں تیسری آیت سورہ حشر کی وہ آیت پیش کی ہے' جو'' فیبی'' کے بیان میں وار دہوئی ہے اور بیاس شخص کی رائے کے مطابق ہوگی جو آیت حشر کو آیت الانفال'' وَاعْلَمُوْ النَّمَا غَنِمْتُمْ مِیْنُ شَیءِ'' (الانفال: ۴)'' اور جان لو کہ جو پچھنیمت لؤ' ہے منسوخ مانتا ہے۔

"فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشُهُرُ الْحُرُمُ فَاقَتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ"(التوبه: ٥) فيمر جب حرمت عصين فكل جا كين تومشركول كومارو".

آس فذکورہ بالا آیت کریمہ نے ایک سوچوہیں آیات منسوخ کی ہیں' پھراس کے آخری حصہ نے اس کے اوّل حصہ کوبھی منسوخ کر دیا اور اس آیت میں جوایک اہم بات تھی' وہ پہلے ذکر ہو چکی ہے۔

ابن العربی نے ایک اور بات یہ بیان کی ہے کہ آیت 'خید الْفَفُو' (الاعراف:۱۹۹)

معاف کرنا اختیار کرو' منسوخ کی ایک عجیب وغریب مثال ہے' کیونکہ اس کا فدکورہ بالا اوّل حصہ اورا خیر حصہ یعنی ' وَ اَعْدِ ضَ عَنِ الْجَاهِلِیْنَ ' (الاعراف:۱۹۹)' اور جاہلوں ہے منہ پھیر لؤ' یہ دونوں منسوخ ہیں' گراس کا وسط یعنی' وَ اُمْدُ بِالْمَعُرُ وَ فِ ' (الاعراف:۱۹۹)' اور بھلالی کا حکم دو' محکم ہے۔

اوراس کی مثل ایک اور آیت بھی عجیب وغریب ہے جس کا اوّل حصہ منسوخ اور آخری حصہ ناخ ہے اور اس آیت کی اور کوئی نظیر نہیں ملتی صرف ایک ہی مثال ہے جواللہ تعالیٰ کا بیہ قول ہے:

" عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ "(المائده:١٠٥)" تم ا فِي ال

ر کھوتمہارا کچھ نہ بگاڑے گاجو گمراہ ہواجب کہتم راہ پر ہو' یعنی جب کہتم نے نیک کاموں کا حکم دینے اور بری باتوں سے منع کرنے کے ساتھ مدایت یائی تو پھرکسی اور شخص کا گراہ ہونا تمبارے لیے پچھ مفزنہیں ہوسکتا۔ آیت کا آخری حصہ شروع والے حصہ یعن 'عَلَیْٹُ مُم أَنْفُسَكُمْ "" تماين فكرركو" كاناتخ بـ

تنبیہ: ابن الحصار کا قول ہے کہ ننخ میں بیامر ضروری ہے کہ محض کسی ایسی صریح نقل کی طرف رجوع کیا جائے 'جورسول الله طلق لیکنے ہم یا کسی صحالی رضی اللہ سے منقول ہو کہ فلاں آیت نے فلال آیت کومنسوخ کیا ہے۔

مزید فرماتے ہیں کہ اور بھی کوئی قطعی اور یقینی تعارض یائے جانے کی صورت میں تاریخ کاعلم ہوتے ہوئے بھی ننخ کا حکم لگا دیا جا تا ہے۔ تا کہ متقدم اور متاخر کاعلم اور معرفت ہو سکے کیکن کشخ کے بارے میں عام مفسرین کا قول بلکہ مجتہدین کا اجتہاد بھی بغیر سیجے نقل اور بلاکسی واضح معارضہ کا قابل اعتاد نہیں ہوگا' کیونکہ نسخ کسی ایسے حکم کے اٹھا لیے جانے اور اس طرح ا یک اور حکم کے ثابت کرنے کو متضمن ہوتا ہے جس کا تقر رحضور نبی کریم ملتی کیا ہم کے عبد مبارک میں ہو چکا ہے اور اس میں نقل اور تاریخ ہی پر اعتماد کیا جا سکتا ہے ٔ رائے اور قیاس 📆 اجتباد لائق اعتادنہیں ہوگا۔

متشابهاور بهظا هرمتضا دومتناقض آيات كابيان

الله تعالیٰ کا کلام اس عیب ہے پاک ہے کہاس میں اختلاف اور تناقض پایا جائے 'اس بارے میں خود اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللهِ لَوَجَدُوا الربيقرآن ياك الله تعالى كاطرف ہے نازل شدہ نہ ہوتا تو لوگ اس میں بہت

فِيْهِ اخْتِلَافًا كَتِيْرًا ٥(النياء:٨٢)

سااختلاف یاتے 0

لیکن مبتدی شخص کوبعض اوقات اس میں اختلاف کا وہم سا پیش آتا ہے ٔ حالا نکہ حقیقت میں اس کے اندر کوئی اختلاف نہیں ہوتا'لہذا حاجت یڑی کہ اس وہم کا از الد کیا جائے اور اس سلسله میں تحقیقی کام ہو'جس طرح باہم (بہ ظاہر) متعارض اور متناقض احادیث میں جمع اور تطبیق arseNizami.MadinaAcademy.Pk

پیدا کرنے کے لیے با قاعدہ اس موضوع پر کتابیں تصنیف کی گئی ہیں۔ چنانچہ حضرت ابن عباس بختیائیہ ہے اس موضوع پر کچھ کلام بھی منقول ہے اور بعض مواقع پر انہوں نے مشکلات قرآن کی نسبت تو قف بھی فر مایا ہے۔ عبد الرزاق ابن تفسیر میں لکھتے ہیں: معمر نے ایک شخص کے حوالہ ہے خبر دی ہے کہ منہال ابن عمر و نے سعید ابن جبیر ہے روایت کیا ہے کہ انہوں نے بیان کیا کہ ایک شخص نے حضرت ابن عباس شختائد کی خدمت میں حاضر ہو کرعرض کیا: میں بیان کیا کہ ایک میں بعض ایس چیزیں یا تاہوں' جو مجھے آپس میں متعارض معلوم ہوتی ہیں۔

حضرت ابن عباس مختاللہ نے فرمایا: وہ کیا ہیں؟ کیا کوئی شک پڑ گیا ہے؟ ساکل نے عرض کیا: شک کی کوئی بات نہیں ' لیکن اختلاف و تعارض کا وہم گزرتا ہے خضرت ابن عباس مختبلہ نے فرمایا:

اچھاتو پھر بیان کروتم کوقر آن میں کبال اختلاف نظر آتا ہے سائل کہنے لگا: سنیئے اللہ تعالیٰ فرما تا ہے: (میں اللہ تعالیٰ کو یہ فرماتے ہوئے سنتا ہول)'' شُمّ کَسُمْ تَکُنْ فِتَنَتُهُمْ إِلَّا اَنْ قَالُوْ اوَ اللّٰهِ رَبِّنَا هَا كُنّا هُشُو كِنْنَ '(الانعام: ٢٣)'' پھران كاكوئى بہانا نہ ہوگا یہ کہ وہ کہیں گے: ہمیں اپنے بروردگار اللہ کی قشم کہ ہم مشرک نہ تھ'۔

اور فرمایاً: 'وَلَا یَکُتُمُونَ اللّٰهَ حَدِیْظًا ''(انساء: ۳۲)' اوراللہ ہے وہ کوئی بات نہ چھپا سکیں گے'۔ حالانکہ حقیقت میہ ہے کہ انہوں نے کتمان کیا تھا اور بات چھپائی تھی' ای طرت ایک مقام پراللہ تعالیٰ کوقر آن میں میفر ماتے ہوئے سنتا ہوں:

"أَمِ السَّمَآءُ بَنَاهَا" (النزعات: ٢٧) أيا آسانول كابنانا" اورفر مايا: "وَالْأَرْضَ بَعْدَ

ذُلِكَ وَحَاهَا "(النزعت:٣٠)" اورزمين اس كے بعد پھيلائي"۔ اور ميں سرآيت بھي ليتا ہوں "كان الله" والانكه الله تعالى كى شان تو"كان الله" فرمانے سے بلندو بالا ہے۔ حضرت ابن عماس مِنْ الله نے اس شخص کی ساری گفتگو کے بعد ارشا دفر مایا: الله لکھالی کا فر مان ' ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتُنتُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا وَاللَّهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ "(الانعام:٣٣) '' پھران کا کوئی بہانا نہ ہوگا مگریہ کہ وہ کہیں گے: ہمیں اپنے پروردگاراللہ کی تتم ہے کہ ہم مشرک نہ تھے'' بالکل بجا ہے اس کی دلیل یہ ہے کہ قیامت کے دن جب مشرکین دیکھیں گے کہ اللہ تعالیٰ اہل اسلام کے تمام گنا ہوں کو بخش رہاہے ٔ صرف شرک کونہیں بخشا' شرک کے علاوہ کسی بھی گناہ کو بخش دینااللہ تعالیٰ کے لیے گراں نہیں' تو وہ بیہ منظر رحمت دیکھ کر کہیں گے کہ یااللہ ہم نے شرک نہیں کیا تھا یعنی وہ مغفرت کی امید میں جان بو جھ کرایئے شرک کا انکاری ہو جا ئیں

كَ اوركبيل كَ: ' وَاللَّهِ رَبِّنَا هَا كُنَّا مُشْوكِيْنَ '' (الانعام: ٢٣) ' اے بھارے رب! تيري

فحتم الله على افواهم وتكلمت ليس الله ان كے مونہوں يرمبرلگا و ع ایدیھم و ار جلھم بما کانو ایعملون. گا اور ان کے ہاتھ یاؤں کلام کرنے لگیں گے کہوہ کیا کرتو تیں کرتے تھے۔

ذات کی قتم! ہم شرک کرنے والے نہیں تھے'۔

تو اس موقع پر کافروں اور منکرین رسالت کے دل بیرچاہیں گے کہ کاش!ان کوزیین نگل حاتی اوروہ اللہ تعالیٰ سے کچھ بھی تو چھانہیں سکیں گے۔

''يَـوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا وَعَصَوُا الرَّسُولَ لَوْ تُسَوَّى بِهِمُ الْاَرْضُ وَلَا يَكْتُمُونَ اللَّهُ حَـدِیْثًا ''(النساء:۳۲)'' تمنا کریں گے وہ جنہوں نے کفر کیااوررسول کی نافر مانی کی' کاش!انہیں مٹی میں دبا کر برابر کر دیا جائے اور کوئی بات اللہ سے نہ چھیا سکیں گے' اور اللہ تعالیٰ کا قول' فکل أنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذِ وَلَا يَعَسَاءَ لُوْنَ0° (المؤمنون:١٠١) "توندان مِس رشة ربيل كاور[نهایک دوسرے کی بات یوچیس کے '۔تواس کابیان اورسیا ق کلام یہ ہے:

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي اورصور پيولُكُ جائے گا تو بهوش ہو شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخُولَى فَإِذَا هُمْ مِي مُرجَى اللَّه عِلْمُ وه دوباره يجونكا جائ

السَّدُولَةِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ جَاكِيلٍ كَحْجَ آسانوں ميں بين اور جِتنے زمينوں

گا' جبھی وہ دیکھتے ہوئے کھڑے ہو جا کیں

قِيَامٌ يَّنْظُورُونَ (الزمر: ١٨)

اور ان میں ایک نے دوسرے کی طرف منہ کیا آپس میں بوچھتے ہوئے۔ وَ اَقْبُلَ بَعْضُهُمْ عَلْى بَعْضٍ يَّتَسَاءَ لُوْنَ. (الشَّفْت:٢٤)

اوراللہ تعالیٰ کاارشاد: ''خَلَقَ الْاَرْضَ فِی یَوْمَیْنِ ''(حم اسجدہ: ۹) جس نے دودن میں زمین بنائی' اس کے بارے میں معلوم ہونا چاہیے کہ زمین آسان سے پہلے پیدا کی گئی اور آسان اس وقت دھواں تھا' پھر اللہ تعالیٰ کے آسانوں کے سامت طبق دودن میں 'زمین کی خلیق کے بعد بنائے اور اللہ تعالیٰ کا بیارشاد: ''وَالْاَرْضَ بَعْدَ ذَالِكَ دَحَاهَا O''(النزعات: ۳۰) '' اور زمین اس کے بعد پھیلائی''۔

اس میں اللہ تعالیٰ فرما تا ہے کہ اس نے زمین میں پہاڑ دریا ورخت اور سمندر بنائے اور ارشادر بانی ''سکان اللّٰه'' کے متعلق بیام طحوظ رہے کہ اللہ تعالیٰ ہمیشہ سے ہے اور ہمیشہ رہے گا' وہ ای طرح ازل سے عزیز' کلیم اور قدیر ہے اور بول ہی ہمیشہ رہے گا۔

پی قرآن مجید میں جو پچھ تخفے اختلاف نظرآتا ہے وہ اختلاف ایسا ہے جیسا کہ میں نے بتایا ہے اور اللہ تعالیٰ نے قرآن میں جو پچھ بھی نازل فرمایا 'اس کی مراد واضح ہے اور حق صواب ہے 'لیکن قلت تد بر کی وجہ سے چونکہ اکثر لوگ اس کی حقیقی مراد تک رسائی حاصل نہیں کر سکتے اور انہیں اس میں تعارض اور اختلاف نظر آنے لگتا ہے۔ جب کہ حقیقت میں اس میں کوئی تعارض نہیں ہوتا' حاکم نے متدرک میں اس روایت کو بوری تفصیل سے ذکر کیا ہے اور اس کوشیح قرار ویا ہے'اس حدیث کی اصل سے جو رحمۃ اس کوشیح قرار ویا ہے'اس حدیث کی اصل سے جو رحمۃ اللہ علیہ این شرح میں لکھتے ہیں:

اس حديث ياك كاماحصل جارباتون كمتعلق سوال ع:

اوّل: قیامت کے دن لوگوں کے باہم سوال کرنے کی نفی اوراس کا ثبوت۔

دوم:مشركين كالهيخ حال كو چھپانا اور پھراس كوظا ہر كرنا۔

سوم: بيسوال كه آسان كى تخليق ببليے موئى ياز مين كى؟

چہارم: لفظ "كان" جوكر شدر ماند پردلالت كرتا ہے اس كا استعال الله كے ليے كيوكر درست

ب حالانكدالله تعالى تو بميشد سے باور بميشدر ب كا؟

حضرت ابن عباس منجالہ نے پہلے سوال کا جو جواب دیا' اس کا حاصل یہ ہے کہ دوسری مرتبہ صور پھو نکے جانے سے قبل لوگوں کے سوال کرنے کی نفی ہے اور اس کے بعد دوبارہ صور جب پھو نکا جائے گا تو اس کے بعدلوگ باہم سوال وغیرہ کریں گے۔

اور دوسرے سوال کا جواب ہے ہے کہ وہ (مشرک) اپنی زبانوں سے (گناہوں کو)
چھپا کیں گے اور ان کے ہاتھ اور دیگر اعضائے بدن قدرت خداوندی سے گفتگو کرنے لگیں
گے اور تیسر سے سوال کا جواب دیتے ہوئے انہوں نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ نے پہلے زمین کو دو
دن میں پیدا کیالیکن ابھی اس کو بچھایا نہیں 'چر دو دن میں آسان بنائے اور ان کو ہموار کیا 'چر
اس کے بعد زمین کو بچھایا اور اس میں پہاڑوں وغیرہ کے کنگر ڈالے 'اس میں بھی دو دن لگئ
اس طرح زمین کو بچھایا اور اس میں چاڑوں وغیرہ کے کنگر ڈالے 'اس میں بھی دو دن لگئ
اس طرح زمین کو بچھایا اور اس میں چاڑوں وغیرہ کے کنگر ڈالے 'اس میں بھی دو دن لگئ
اس طرح زمین کو بخھایا اور اس میں چاڑوں وغیرہ کے کنگر ڈالے 'اس میں بھی دو دن لگئ

قر آن مجید کےمشکل اور متشابہ کا ایک مقام کہ جس میں حضرت ابن عباس رعباً کا لئے ہے۔ بھی تو قف فر مایا ہے۔

ابوعبیدا پی سند کے ساتھ بیان کرتے ہیں کہ کمی شخص نے ابن عباس رعبی کہ سے اللہ تعالیٰ کا قول' فیٹی یئو م تحان مِقدار و اَلْف سَنَهِ ' (اسجدہ:۵)' اس دن میں جس کی مقدار ایک ہزارسال ہے' اور قول باری تعالیٰ ' فیٹی یئو م تحان مِقدار و تحمیسیْن اَلْف سَنَةٍ ' کا ایک ہزارسال ہے' اور قول باری تعالیٰ ' فیٹی یئو م تحان مِقدار ہوں ہے' کا مطلب دریافت کیا تو انہوں (المعاریٰ: ۳)' اس دن میں جس کی مقدار پچاس ہزار برس ہے' کا مطلب دریافت کیا تو انہوں نے فر مایا: وہ دونوں دودن ہیں' جن کا ذکر اللہ تعالیٰ ان کو خوب جانتا ہے۔

اسباب الاختلاف كابيان

علامه زركشى في "البربان" ميس اختلاف آيات كئ اسباب بيان كي بين ان ميس

سے ایک سبب سے:

کومجربہ (جس کی خبردی گئی) کا وقوع مختلف احوال اور متعدد اطوار پر ہوا ہے' مثلاً اللہ تعالیٰ حضرت آ دم عالیسلاا کی تخلیق کے بارے میں ایک جگدار شاد فر ما تا ہے: '' هِس نُ تُوابِ '' (آلجر: ۵۹)'' جوسیاہ (آل عران: ۵۹)'' مٹی ہے' اور دوسری جگدفر مایا: '' هِس نَ حَما مَسْنُونِ '' (الجر: ۳۳)'' جوسیاہ بودار گارے ہے تھی' اور کہیں' مِن طِیْت یَل یَان بِ '' (الفقت: ۱۱۱)'' لیس دار مٹی ہے' اور ایک جگدفر مایا: '' هِنْ صَلْصال ہوائی تھی تحقی ناور ان کے معانی بھی مختلف صور تیں رکھتے ہیں کیونکہ لفظ' صلصال '' یا لفاظ بھی مختلف ہیں اور ان کے معانی بھی مختلف صور تیں رکھتے ہیں کیونکہ لفظ' صلصال '' حما '' ہے اگل ایک چیز ہے اور ' حما '' اور ' تو اب '' بھی ایک دوسر سے کے غیر غیر ہیں' مگر ان سب کی اصل ایک ہے اور وہ جو ہر اور اصل تر اب (مٹی) ہے' درجہ بہ درجہ بیسب عالیں ہوتی گئیں۔

دوسراسبب: موضع کااختلاف ہے جیسے اللہ تعالیٰ کا قول ہے: '' وَقِسفُ وَهُمَّمُ اِنَّهُمُ مَّسنُوْلُوْنَ '' (الصَّفَة: ۲۴)'' اور (ذرا) انہیں تھہراؤ بے شک ان سے بوچھا جائے گا''۔ اور قول ہاری تعالیٰ ہے:

"فَلَنَسْنَكُنَّ الَّذِيْنَ أَرْسِلَ اللَّهِمْ وَلَنَسْنَكَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ "(الاعراف:١)" توب شك بم ان لوگول سے ضرور بوچیس كے جن كی طرف رسول بھیج گئے اور بے شک بم رسولول سے ضرور بوچیس گئے۔

ما وجوداس کے کہای کے ساتھ اللہ تعالی کا ارشاد ہے:

'' فَيُوْمَئِذٍ لَآ يُسْئَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسُ وَلَا جَآنٌ ''(الرحن: ٢٩)'' تواس دن كس سَهْكار كَ فَيُومَئِذٍ لَآ يُسْئَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسُ وَلَا جَآنٌ ''(الرحن: ٢٩)'' تواس دن يوجها جائے گا''۔ كَ مُن انسان اور جن سے نہ يوجها جائے گا''۔ علامہ طبی رحمۃ اللہ تعالیٰ بیان کرتے ہیں:

کہ ان مقامات پر پہلی آیت کوتو حید اور تصدیق انبیاء کرام انتظا کے سوال پرمحمول کیا جائے گا۔ جائے گا۔

اور دوسری آیت کومحمول کیا جائے گاان اُمور کے بارے سوال پر جو کہ شرائع اوراحکام کے بارے میں ہول گئے جن کواقر ارنبوت مستلزم ہے اور بعض علماء نے دوسری آیت کومقامات

کے مختلف ہونے پرمحمول کیا ہے۔ کیونکہ قیامت میں مختلف مقامات ہوں گے کہ ان میں ہے کسی مقام پرلوگوں سے سوال ہوگا اور کسی مقام پرنہیں ہوگا۔

اورایک قول ریجی ہے کہ مثبت سوال شرم دلانے اور ڈانٹ ڈپٹ کے لیے ہوگا اور منفی ' عذرخوا ہی اور بیان حاجت کے لیے ہوگا۔

تیسراسبب: دوزاتوں کافعل ُ فعل کی دومخلف جہتوں کے لحاظ سے مختلف ہوتا ہے جیسے اللہ تعالیٰ کا یہ قول ہے: ' فَلَمْ تَفْتُلُوْ هُمْ وَلَكِنَّ اللَّهُ قَتَلَهُمْ ' (الانفال: ١٤)' (توانے مسلمانو!) تم نے انہیں قرنہیں کیالیکن اللہ نے انہیں قرل کیا ہے'۔

اور تول باری تعالیٰ' و مَا رَمَیْتَ اِذْ رَمَیْتَ وَلَکِنَّ اللّٰهُ رَمْی ''(الانفال: ۱۵)' اور (اے محبوب!) آپ نے (خاک) نہیں چینکی جس وقت آپ نے چینکی لیکن الله تعالیٰ نے چینکی''۔
کہ آ بیوں میں قبل کی نسبت کا فرول کی طرف اور رمی یعنی پھینکنے کی اضافت رسول کریم مائٹ کیا تھے کہ کا مناور رسول کریم مائٹ کیا تھے کی طرف کی گئے ہے' کسب مباشرت اور تا ثیر ہر دولحاظ سے اور پھر کفار اور رسول کریم مائٹ کیا تھے دونوں سے تا ثیر کے اعتبار سے ان افعال کی نفی کردی ہے۔

چوتھا سبب: یہ ہے کہ دو با تیں حقیقت ومجاز میں مختلف ہوں' جیسے اس آیت میں ہے: ا ''وَ تَرَی النَّاسَ سُکّارٰی وَ مَا هُمْ بِسُگارِٰی ''(الج:۲)'' اور تو دیکھے گا کہ لوگ نشہ میں ہیں۔ اور وہ نشہ میں نہ ہوں گے''۔

لینی قیامت کے ہولنا ک احوال کی وجہ سے ان کومجاز آنشہ میں پُو رکہا گیا ہے اور حقیقت میں شراب کے نشہ میں چورنہیں ہول گے۔

پانچوال سبب: وه اختلاف ہے جو کہ دوا عتبار سے ہو جھے اللہ تعالی فر ما تا ہے: '' الّذِینَ '' المَّذِوْ اوَ تَطْمَئِنَ قُلُو بُھُمْ بِذِکْرِ اللّٰهِ '' (الرعد: ٢٩)'' یہ ده لوگ (ہیں) جوایمان لا سے اور ان کے دل اللہ کے ذکر سے مطمئن ہوتے ہیں' ای کے ساتھ یہ ارشاد بھی ہے: '' إنَّمَا الْمُوْمِئُونَ اللّٰذِینَ اِذَا ذُکِرَ اللّٰهُ وَجِلَتُ قُلُو بُھُمْ '' (الانفال: ٢)'' ایمان والے وہی ہیں کہ جب اللہ یاد کیا جائے تو ان کے دل ڈر جا کیں' ان دونوں آیت کودی سے خیال ہوتا ہے کہ 'و جسل' کیا جائے تو ان کے دل ڈر جا کیں' ان دونوں آیت کودی سے خیال ہوتا ہے کہ 'و جسل' ڈرنا' طمانیت (سکون قلب) کے خلاف ہے اس کا جواب یہ ہے کہ طمانیت اور تسکین قلب معرفت تو حید کے ساتھ افتراح صدر سے حاصل ہوتی ہے اور ''وجل'''' ڈور' لغزش کے اندیشہ معرفت تو حید کے ساتھ افتراح صدر سے حاصل ہوتی ہے اور 'و جل'''' ڈور' لغزش کے اندیشہ

arseNizami.MadinaAcademy.I

کے دفت راہ مدایت سے بھٹک جانے کے خیال سے پیدا ہوتا ہے۔

اور قلوب لرز جاتے ہیں اور ایک آیت میں تو بید دونوں باتیں جمع ہوگئ ہیں' وہ آیت كريم بيرب: 'تَـفُّشُعِرٌ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشُونَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ اِلٰی ذِکْرِ اللّٰهِ''(الزمر:٣٣)'' اس ہےرو نگٹے کھڑے ہوجاتے ہیں'ان لوگول کے جسمول پر جوایئے رب سے ڈرتے ہیں چھران کی کھالیں اوران کے دل نرم ہو جاتے ہیں اللہ کے ذکر کی طرف''_اى طرح قول خداوندى: ' وَمَنْ أَظُلَمُ مِمَّن افْتُونى عَلَى اللهِ كَذِبًا ''(الانعام: ٢١) ' اوراس سے بر هر طالم كون جس في الله يرجهوث باندها ' اور ' فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ " (الزمر: ٣٢)" تواس سے بڑھ كرظالم كون جوالله يرجھوٹ باند ھے" كوالله تعالىٰ ك قول' وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسَاجِدَ اللَّهِ ''(القره: ١١٣)' اوراس سے برْ هرَ طالم كون جو الله كي معجدول ہے روكے 'اور قول باري تعالیٰ' وَ مَنْ اَظُلَمُ مِهَنْ ذُرِّحُه باياتِ رَبّه فَاعْدَ ضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدْهُ ''(الكهف: ٥٤)' اوراس سے بڑھ كرظالم كون جے اس کےرب کی آیتیں یاد دلائی جاتی ہےتو وہ ان سے منہ چھیر لےاوراس کے ہاتھ جوآ گے بھیج چکے اسے بھول جائے''وغیرہ آیتوں کے ساتھ تقابل کر کے دیکھا جائے تو اشکال پیدا ہوتا ہے' وہ یہ کہ اس جگد استفہام انکاری مراد ہے اور معنی یہ ہوئے ' لا احد اظلم ''پس ، جملہ عنی کے لخاظ سے جملہ خبر یہ ہے گا اور جب خبریہ ہواور آیات کوان کے ظاہر پرلیا جائے تو ان کے اندر تناقض ہوگا'اس اشکال کا جواب کئی طریقوں سے دیا گیا ہے۔

ان جوابات میں سے ایک جواب یہ ہے کہ ہرمقام پر لفظ اپنے صلہ کے ساتھ مخصوص ہے 'یعنی مقصد یہ ہے کہ منع کرنے والوں میں کوئی شخص اس سے بڑا ظالم نہیں' جواللہ تعالیٰ کے ذکر سے معجدول میں منع کرنے والا ہواور افتراء باند ھنے والوں میں اس سے بڑھ کرکوئی برا نہیں' جو اللہ تعالیٰ پر جھوٹ تراشتے ہیں اور جس وقت ان میں صلات (صلہ کی جمع) کی خصوصیت کالحاظ کیا جائے تو پھریہ تناقض بھی خودر فع ہوجائے گا۔

قرآن مجيد كي مطلق اورمقيد آيات كابيان

مطلق : وہ کلام ہے جو کسی قید کے بغیر ماہیت پر دلالت کرتا ہواور مطلق کے ساتھ جب قید کا

بھی لحاظ ہوتو اس کا تھم وہی ہوتا ہے 'جو عام کا خاص کے ساتھ ہوتا ہے علماء بیان کرتے ہیں:

کہ اگر مطلق کی تقید پر کوئی دلیل موجود ہوتو اس کو مقید کریں گے 'ور نہیں بلکہ مطلق کو

اس کے اطلاق پر چھوڑ دیں گے اور مقید کو اس کی تقید پر باقی رہنے دیا جائے گا' بیاس لیے ہے

کہ اللہ تعالیٰ نے ہمیں لغت عرب کے ساتھ خطاب فر مایا ہے' اس سلسلے میں ضابطہ بیہ ہے کہ

جب اللہ تعالیٰ نے کسی چیز کا تھم صفت یا شرط کے ساتھ مقید کر کے دیا ہواور پھر اس کے بعد

ایک اور تھم مطلق طور پر وار دہوا ہوتو اس صورت میں غور کیا جائے گا کہ آیا اس تھم مطلق کی کوئی ا

اگراس دوسرےمقید تھم کے سوااس کی ایسی کوئی اصل نہیں ہے کہ جس کی طرف تھم مطلق کو پھیرسکیں' تو اب اس قید کے ساتھ اس تھم مطلق کومقید کرنا ضروری ہو گا اور اگراس کی کوئی اور اصل اس تھم مقید کے علاوہ بھی ہوتو اس صورت میں تھم مطلق کو دواصولوں میں ہے ایک جھوڑ کر دوسرے کی طرف راجع کرنا افضل اور بہتر نہ ہوگا کیونکہ دونوں برابر ہیں ۔ اوّل کی مثال رجعت' فراق اور وصیت برگواہوں میں عدالت کا شرط قرار دینا ہے۔

صیا کہ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے: ' و اَشْهِدُو ا ذَو ی عَدْلِ مِّنْکُمْ ' (الطلاق: ۲) ' اور ایپ دو ثقہ کو گواہ کرلؤ' اور قول باری تعالیٰ ' شَهادَهُ بَیْنِدگُمْ اِذَا حَضَّر اَحَدَکُمُ الْمَوْتُ حِیْنَ الْبَارِي وَ اَلْبَالُهُ ' (المائدہ: ۱۰۱)' جبتم میں ہے کی کوموت آئے قو اللہ واللہ کہ اللہ کہ اللہ کہ اللہ کہ اللہ کہ میں سے دومعتر شخص ہول'۔ وصیت کے وقت تمہاری آئیس کی گواہی (اس طرح ہو) کہتم میں سے دومعتر شخص ہول'۔ اور نیچ کے معاملات میں مطلق شہادت کا تھم وارد ہے۔

ارشاد خداوندی ہے:

''وَاَشْهِدُوْا إِذَا تَبَايَعْتُمْ ''(الِقره:٢٨٢)'' اورگواه بنالوُجب خريدوفروخت كرو''۔ اور دوسرى جگه فرمایا:'' فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَیْهِمُ اَمُوَالَهُمْ فَاَشْهِدُوْا عَلَیْهِمْ ''(النساء:٢) '' پھر جبتم ان كے مال ان كے سپر دكر نے لگوتوان پر گواه بنالو''۔

بہرحال ان سب احکام مذکور میں گواہوں کے لیے شرط ہے کہ عادل ہوں ایسے ہی کفارہ تیں مولی میں مطلق کفارہ کیمین اور کفارہ ظہار میں مطلق حکم ہے اور وصف رقبہ میں مطلق اور مقید دونوں کیسال ہوں گے۔

اورای طرح آیت وضویل ہاتھوں کومرافق (کہنیوں) تک مقید کرنااور تیم میں مطلق رکھنا بھی اس کی مثال ہے۔اور آیت 'وَ مَنْ یَرْ تَدِدْ مِنْکُمْ عَنْ دِیْنِهِ فَیَمْتُ وَهُو کَافِرٌ'' (البقرہ:۱۷)' اور تم میں ہے جومر تد ہوجائے اپنے دین ہے 'چروہ کافر ہونے کی صورت میں مرجائے''میں اعمال کے اکارت جانے کو اسلام سے مرتد ہوکر بہ حالت کفر مرجائے کے ساتھ مقید کیا ہے' بھر دوسرے مقام پر اللہ تعالی نے فرمایا:

'' وَمَنْ يَكُفُرْ بِالْإِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَدُهُ'' (المائده: ۵)'' اورجس نے ایمان لانے سے انکار کیا تو بے شک اس کاعمل ضائع ہو گیا'' اس آیت میں اعمال کے ضائع ہونے اور رائےگاں جانے کومطلق رکھا گیا ہے۔

اورسورہ الانعام میں خون کے حرام ہونے کو صفت مسفوح (بہنے) کے ساتھ مقید کیا گیا ہے اور دوسری جگہوں پر اس قید کے بغیر مطلق ذکر کیا ہے۔ چنا نچہ امام شافعی رحمة اللہ تعالیٰ کا خدہب یہ ہے کہ تمام صورتوں میں مطلق کو مقید ہی پر محمول کرنا چاہیے' لیکن کچھ علاء اس قید کے قائل نہیں ہیں اور وہ ظہار اور بیمین کے کفارہ میں کا فر غلام کا آزاد کرنا بھی جائز قرار دیتے ہیں اور تیمیم کے سلسلہ میں صرف دونوں کلا ئیوں تک مسح کو کافی قرار دیتے ہیں اور فرماتے ہیں کہ محض ردت (اسلام ہے برگشتہ ہونا) ہی اعمال کے اکارت اور برکار ہوجانے کا باعث ہے۔ محض ردت (اسلام ہے برگشتہ ہونا) ہی اعمال کے اکارت اور برکار ہوجانے کا باعث ہے۔ قسم ثانی: یعنی مقید احکام کی مثال ہے ہے کہ کفارہ قبل اور کفارہ ظہار کے روزوں کو مسلسل رکھنے کی قید لگائی ہے اور کفارہ کین اور قضاء رمضان میں مطلق تھم ہے یعنی ان کو متواتر اور متفرق دونوں طرح رکھنا جائز رہے گا۔

قرآن مجيد كے منطوق اور مفہوم كابيان

منطوق: وہ معنی جس پر لفظ کی ولالت میں محل نطق میں ہوتی ہے' پھر اگر لفظ ایسے معنی کا فائدہ وے کہ اس کے سوااور معنی کا وہ لفظ احتمال ہی نہ رکھتا ہوتو اسے نص کہتے ہیں' جیسے اس کی مثال

' فَصِيَامُ ثَلْقَهِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ تِلْكَ عَشَرَهٌ كَامِلَةً '

(البقره: ١٩٩١)" پھر جے قربانی کی قدرت نہ ہوتو اس پر جج کے دنوں میں تین دن کے روز ہے ہیں اور سات (روز ہے) جب تم واپس آؤیہ پورے کرنے ہوں گے'۔اوراگر وہ لفظ نہ کورہ بالامعنی کے ساتھ دوسرے معنی کا بھی مرجوح اور کمزور ساحتال رکھتا ہوتو اس کو ظاہر کہتے ہیں 'مثلاً'' فَمَنِ اصْطُرٌ غَیْرٌ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ '(البقرہ: ١٤٣)' اور جونا چار ہونہ یوں کہ خواہش ہے کھائے اور نہ یوں کہ ضرورت ہے آگے ہوئے' اس لیے کہ باغی کا لفظ جائل اور ظالم دونوں پر کھائے اور نہ یوں کہ ضرورت سے آگے ہوئے "اس لیے کہ باغی کا لفظ جائل اور ظالم دونوں پر بولا جاتا ہے حالا نکہ وہ اس معنی میں زیادہ ظاہر اور غالب ہے ' دوسری مثال آیت کریمہ' وَ لَا بولا جاتا ہے حالا نکہ وہ اس معنی میں خرار نہ کی نہ کروجب تک پاک نہ ہولیں' اس لیے کہ جس طرح مورتوں کے ایام عدت ختم ہونے پر'' طہر' کا اطلاق ہوتا ہے' اس طرح وضوا ورغسل کو بھی طہر کہتے ہیں اور دوسرے معنی میں طہر کا لفظ زیادہ ظاہر و غالب ہے' اگر کسی دلیل کی بناء پر لفظ ظاہر کو امر مرجوح (کمزور معنی) پر محمول کیا جائے تو بیصورت تاویل کسی دلیل کی بناء پر لفظ ظاہر کو امر مرجوح (کمزور معنی) پرمجمول کیا جائے تو بیصورت تاویل کی جاور جس مرجوح پر اس کو حمل کیا گیا ہے' اس کو مؤول کہتے ہیں' اس کی مثال اللہ تعالی کا پی قول ہے:

یا مثلاً اللہ تعالیٰ کا قول'' وَاخْیفِ صْ لَهُ مَا جُنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ ''(بی اسرائیل۔ ۲۳)'' اور نرم ولی کے ساتھ ان کے لیے عاجزی ہے جھکے رہنا''۔

اس آیت کو ظاہری لفظوں پرمحمول کرنااس لیے ممکن نہیں ہے کہ انسان کے پرنہیں ہوتے' لہذااس کوحسن اخلاق اور عاجزی کے معنی پرمحمول کیا جائے گا۔

مفہوم: لفظ کی دلالت معنی برگل نطق میں نہ ہو بلکہ اس سے خارج ہوتوالی دلالت کومفہوم کہتے ہیں'اس کی دوسمیں ہیں: مفہوم موافق' مفہوم مخالف۔

پہلی قتم یعنی مفہوم موافق ہے کہ جس کا تھم منطوق کے تھم کے موافق ہوئیہ موافقت اولی ہوگ تو اس کا نام' فحوی المخطاب''رکھا جائے گا۔اس کی مثال ہے آیت ہے:''فَلا تَقُلُ

لَّهُمَا أُفِّ" (بى اسرائل: ٢٣) " تونه كهوان دونو ل (مال باپ) كوأف "-

ية يت دلاكت كرتى ہے كه والدين كو مارنا حرام ہے ئيد دلالت اس واسطے ہے كه مارنا به

نبیت کلمہاف کہنے کے زیادہ سخت ہے۔

اورا گریموافقت مساوی ہوتوائے 'لیعن المخطاب'' کہتے ہیں یعنی خطاب کامعنی مفہوم ہے جے اللہ تعالیٰ کا قول' اِنَّ الَّذِینَ یَا مُکُلُونَ اَمُوالَ الْیَتُمٰی ظُلُمًا' (النہ:۱۰) بے مفہوم ہے جے اللہ تعالیٰ کا قول' اِنَّ الَّذِینَ یَا مُکُلُونَ اَمُوالَ الْیَتُمٰی ظُلُمًا' (النہ:۱۰) بے شکہ جولوگ کھاتے ہیں تیموں کا مال ناحق' دلالت کرتا ہے کہ تیموں کا مال جلا ڈالنا حرام ہے وجہ دلالت سے کہ تاحق اور ظلم کے ساتھ تیموں کا مال کھا جانا اور اس کو جلا ڈالنا' دونوں اتلاف مال میں مساوی ہیں۔

دوسری قسم بیعنی مفہوم مخالف میہ ہے کہ جس کا حکم منطوق کے حکم کے خلاف ہواور اس کی گئی قشر سیدہ

(۱) مفہوم صفت: عام ازیں کہ وہ نعت (وصف) ہو یا حال ہو یا ظرف یا عدد ہومثلاً اس کی مثال اللہ تعالیٰ کا پیول ہے کہ 'اِنْ جَآءَ کُمْ فَاسِقٌ بِنَبَاءٍ فَتَبَیَّنُوْ آ' (الجرات: ۲)' جب تہارے یاس کوئی فاس خبرلائے تو خوب چھان بین کرلیا کرؤ'۔

اس آیت کامفہوم مخالف سے ہے کہ غیر فاسق کی خبر میں تحقیق ضروری نہیں ہے ' چنا نچہ ایک عادل شخص کی خبر مقبول ہوگ ۔

(٢) مفهوم شرط: جيئ وَإِنْ كُنَّ أُولاتِ حَمْلٍ فَانْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ ''(الطلاق:١) ''اوراگروه (مطلقة عورتيں) حاملہ ہوں توان پرخرچ کرو''۔

اس کامفہوم مخالف سے ہے کہ غیر حاملہ ہونے کی صورت میں مطلقہ عورتوں پرخرج کرنا شوہروں پرواجب نہیں ہے۔

ر القره: مثلاً الله تعالی کا قول فکلا تدول که مِنْ بَعْدُ حَتَّی تَنْکِحَ ذَوْجًا فَیْسِ مَعْدُ حَتَّی تَنْکِحَ ذَوْجًا فَیْسِ مَعْدُ الله تعلی کا قول فکلا قدے دی تو وہ عورت اس تیسری طلاق کے بعد اس کے علاوہ کسی اور مرد سے نکاح کے بعد اس کے علاوہ کسی اور مرد سے نکاح کرے بحروری کرے جس کواس کے شوہر نے طلاق مغلظ دے دی ہو دوسرے مرد سے نکاح کر کے ضروری ممل سے گزرجائے گی تواب وہ بشرط رضا مندی زوج اقل کے لیے حلال ہوجائے گی۔

(٣) مفهوم حصر: جيب مثلًا " لَا إلله إلَّا اللَّه " (الصافات: ٣٥)_

اور ﴿ إِنَّهِ مَا إِلَهُ كُمُ اللَّهُ " (طَان ٩٨) يعني بدك الله كسواكوني معبود فقي اور لائق عبادت

نہیں ہے۔

''فَاللَّهُ هُوَ الْوَلِیَ ''(الثوری: ۹) یعن'' اللہ کے سواکوئی ولی نہیں ہے'۔

العددندید سے سواکسی او "لَا إِلَى اللَّهِ تُحْشَرُونَ " (آل عران: ١٥٨) يعن "الله كي سواكي اور كي طرف ان كا حشر نہیں ہوگا''۔' اِیّاكَ نَعُبُدُ (الفاتح:۵)' ہم تیری ہی عبادت كريں' لعنی تير بسوانسي اور کی عبادت نہ کریں۔علماء کا اس بارے میں اختلاف ہے کہ آیامفہوم مخالف بہطور ججت معتبر ہے یا کہ نہیں؟ تو اس میں مختلف آ راءاور اقوال ہیں' زیادہ سچے بات یہ ہے کہ چندشرا کط کے ساتھ جواصول فقہ کی کت میں بیان کی گئی ہیں کیہ جست ہے۔

قرآن یاک کے وجوہ مخاطبات

علامه ابن الجوزي رحمة الله عليه اپني كتاب'' النفس'' ميں بيان كرتے ہيں كەقر آن مجيد میں خطاب پندرہ طریق ہے آیا ہے اور ایک عالم نے تمیں سے زیادہ قر آن میں وجوہ خطاب گنوائے ہیں'ازاں جملہ بعض طریق خطاب حسب ذیل ہیں:

(۱) خطاب عام: اوراس ہے عموم مراد ہے مثلًا الله تعالیٰ کاارشاد'' اَللّٰهُ الَّذِي خَهِ لَقَكُمْ'' (الروم: ۴۰)" الله واي عے جس نے تمہیں بیدا کیا"۔

(٢) خطاب خاص: اوراس میں خصوص مراد ہے مثلاً اللہ تعالی کا قول ہے:

'' أَكَفَ رُنُّمْ بَعْدَ إِيْمَانِكُمْ '' (آل عمران:١٠٦)' كياتم ايمان لانے كے بعد كافر ہو گئے'' اور "يَا يَنْهَا الرَّسُولُ بَلِّلْغُ" (المائده: ١٤) "المارسول! پهنجاد بجيَّا".

(٣) خطاب عام: جس ہے خصوص مراد ہے مثلاً'' نِهَا النَّاسُ اتَّقُوْ ارَبَّكُمْ ''(الج:١) " اےلوگو!ایے رب ہے ڈرو' کہاس میں نیچاور یا گل (دیوانے) داخل نہیں۔

(٣) خطاب خاص: جس ہے عموم مراد ہے جیسے اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

"يَا أَيُّهَا السَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ" (الطلاق: ١) اع ني! (ايمان والول عفر ما د بجئے)"جب كماس ميں افتتاح خطاب نبي ياك ملتي الله كيا كم موائ مكر مرادتمام وہ لوگ بین جوطلاق کے مالک ہول اور آیت کریمہ ' نِنَایَّهَا النَّبِیُّ اِنَّا اَحْلَلْنَا لَكَ اَزُواجَكَ '' (الاحزاب: ۵۰)' اے نی! ہم نے آپ کے لیے آپ کی وہ یویاں حلال فرمادی'۔

اس کے بارے میں ابو برالصیر فی بیان کرتے ہیں:

اس آیت میں خطاب کا آغاز رسول کریم ملی آئیلیم ہی ہے ہواتھا 'کھر جب اللہ تعالیٰ نے ''موہوب' کے بارے میں'' خوالے حمیۃ لگک''(الطلاق: ا) فرمایا تواس ہے معلوم ہوا کہ اس کا ماقبل رسول اللہ ملی آئیلیم اور آپ کے علاوہ دوسر بولوگوں کو بھی شامل ہے۔ اس کا ماقبل رسول اللہ ملی آئیلیم اور آپ کے علاوہ دوسر بولوگوں کو بھی شامل ہے۔ (۵) خطا ہے جنس: مثلاً قول باری تعالیٰ '' آئیلی النہ تی اس کے علاوہ کی علیک الصلوۃ والسلام!

(٢) خطاب نوع: مثلاً " يَا بَنِي إِسْرَ انِيلٌ "ا عِن اسرًا كِيل!

قرآن مجید میں کسی مقام پر بھی حضور ملتی آلیم کو یا محمد کہدکرنام کی حیثیت سے خطاب نہیں ہوا بلکہ آپ کی تعظیم اور تشریف کا لحاظ رکھتے ہوئے" آیا تیکا النبی """ اے غیب کی خبر دینے والے" اور" آیا تیکا الرّسول """ اے رسول!" کے ساتھ آپ کو مخاطب کیا گیا ہے۔

- (٨) خطاب مدح: مثلًا "يَانَيُّهَا الَّذِينَ المَنُوْا" (التحريم: ٢) "اے ايمان والو!" اوراس ليے الله مدين وَ "أَلَّذِينَ أَمَنُوْا وَهَا جَرُوْا" (الانفال: ٢٠) "جوايمان لائے اوراللہ كے ليے كھر بارچھوڑئے"۔
- (٩) خطاب الذم: مثلًا "يَانَيُهَا اللَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ "(الْحَرِيمِ: ٤)" ال كَافِروا آج بهان نه بناوَ". قُلُ يَاتُهُا الْكَافِرُونَ "(الكافرون: ١)" تم فر ماوَ! ال كافرو!".

- (۱۰) خطاب کرامت: جیسے اللہ تعالیٰ کا قول' نِسَا اَیُّھَا النَّبِیْ ''' اے (غیب کی خبر دیئے والے) نبی!''۔' یَلَا اَیُّھَا الرَّسُولُ'''' اے رسول!''۔
- (۱۱) خطاب المانت: "فانك رجيم" تومردود إور "إخسوا فيها وكا تحكيمون" (المؤمنون:١٠٨) في حكيم الله التوبي براعزت والاكرم والاب" _
- (۱۲) خطاب تحكم: جيئ ' ذُقُ إِنَّكَ أَنِّتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ' (الدخان: ۴۹)' أَ جَلَهُ بال بال! تو بى براعزت والاكرم والابئ .
- (۱۳) خطاب جمع لفظ واحد كے ساتھ: جيئ 'يآسائُها الْونسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكُويْمِ'' (الانفطار:٢)'' اے آ دمی! تجھے کس چیز نے فریب دیاا پنے کرم والے رب ہے''۔
- (۱۴) خطاب واحدلفظ جمع كے ساتھ: 'نِياَيَّهَا الرَّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبَاتِ '(المؤمنون: ۱۴)' اے پیمبرو! پا كيزه چيزي كھاؤ''،''تيا قوله تعالى''' فَذَرْهُمُ فِي غَمْرَتِهِمْ ' (المؤمنون: ۵۳)' توتم ان كوچھوڑ دوان كے نشه ميں''۔
- یہ تنہا حضور ملٹی لیا ہم کو خطاب ہے کیونکہ نہ تو آپ کے ساتھ کوئی رسول تھا اور نہ ہی آپ کے بعد کوئی نبی ہوایا ہوگا۔

اورای طرح آیت کریم' وَإِنْ عَافَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا '(الحل:١٢٦)' اگرتم ان کوسزادواتو الیسزادو' میں بھی آپ ملٹ کیلئے ہم ہی کوخطاب ہے'اس کی دلیل بیآیت ہے:' واصبر وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ ''(الحل: ١٢٧)' اے مجبوب! تم صبر کرواور تبہارا صبر اللہ ہی کی توفیق ہے ہے'۔

پھرای طرح اللہ تعالیٰ کے قول' فَالَّمْ یَسْتَجیبُوْا لَکُمْ فَاعْلَمُوْا''(هود:۱۳)' توالے مسلمانو!اگرد ہتمہاری بات کا جواب نہ دے شکیس تو جان لؤ' میں بھی اسکیے حضور ملٹھ کُلِیمْ کو خطاب کیا گیا دخطاب کیا گیا ہے اور تنہا آپ ہی مخاطب ہیں اس کی دلیل اللہ تعالیٰ کا ارشادُ ' قبل فیاتو ا'

(۱۵) واحد کوتثنیہ (دو) کے لفظ سے خطاب کرنا: جیے 'اکْیِقِیا فِی جَهَنَّمَ ''(قَ:۲۲) تم دونوں جہنم میں ڈال دوحالانکہ بیخطاب مالک دار دغہ دوزخ کو ہے۔ اور ایک قول ہے کہ نہیں بلکہ اس کے مخاطب دوزخ کے خزانہ دار فرشتے اور وہاں کے عذاب دینے والے فرشتے ہیں تواس حالت ہیں وہ جمع کا خطاب لفظ تثنیہ کے ساتھ ہوگا۔
اور یہ تول بھی ہے کہ یہ دوا سے فرشتوں سے خطاب ہے 'جوانسان پرموکل ومقرر ہیں'
جیسا کہ ان کا بیان آیت کر یم' و جَاءَ ٹ کُلُّ نَفْسِ مَعْهَا سَآئِقَ شَهِیدٌ '' (تَنَ ا ۲)
''اور ہرجان یوں حاضر ہوئی کہ اس کے ساتھ ایک ہا گئے والا ہو' میں کیا گیا ہے۔
''اور ہرجان یوں حاضر ہوئی کہ اس کے ساتھ ایک ہا گئے والا ہو' میں کیا گیا ہے۔
''تم دونوں کا ففظ واحد کے ساتھ خطاب: مثلاً ''فَدَنُ رَبِّعُکُما یَا مُوسِیٰ '' (لے : ۲۹)

د تم دونوں کا خداکون ہے اے موئی!'' '' بقی و یا ھارون ''اور اس کی مثال' فلا گلا کہ ہو جَنَیکُما مِنَ الْحَدِّیةِ فَتَشْقَی '' (لے : ۱۱۷)'' توابیا نہ ہو کہ وہ تم دونوں کو جنت سے کہ ہو جنگ کما مِن الْحَدِّیةِ فَتَشْقَی '' (لے : ۱۱۷)'' توابیا نہ ہو کہ وہ تم دونوں کو جنت کے اللہ تعالیٰ کے اس خطاب میں صرف حضر ہے آ دم عالیہ لگا ہی کو تنہا شقاوت کے ساتھ مخاطب کیا ہے' کیونکہ آ ب بی مخاطب اقل اور مقصود فی الکلام ہیں۔

زیار کو اللہ جمع کے ساتھ خطاب کرنا: جیٹے'' ان تبوا لقو مکما بمصر بیوتا و اجعلوا بیوتکم قبلہ ''تم دونوں اپنے لوگوں کے لیے مصر میں گھر بناؤ اور تم سبوتا و اجعلوا بیوتکم قبلہ ''تم دونوں اپنے لوگوں کے لیے مصر میں گھر بناؤ اور تم سبوتا و اجعلوا بیوتکم قبلہ ''تم دونوں اپنے لوگوں کے لیے مصر میں گھر بناؤ اور تم سب

فائده

بعض علاء بیان کرتے ہیں کرتم ان کے خطاب کی تین قسمیں ہیں:

(۱) ایک قسم ایس ہے جو صرف نبی کریم النوٹی آئی ہے کہ الاقلام ہے۔

(۲) دوسری قسم وہ ہے جو نبی کریم النوٹی آئی ہے کے علاوہ دوسر بے لوگوں کے لیے موزوں ہے۔

(۳) تیسری قسم وہ ہے جو حضور المن آئی آئی اور دوسر بے لوگوں کے لیے بکسال ہے (لیمنی دونوں ہیں)۔

ہی اس کے مخاطب ہو سکتے ہیں)۔

اینے گھروں کو قبلہ (مسجد) قرار دو۔

قرآن کے حقیقت اور مجاز کا بیان

بلاشبة قرآن مجيد ميں حقائق كا وقوع ہوا ہے اور حقيقت اس لفظ كوكها جاتا ہے 'جواپنے

معنی موضوع له میں استعال ہواور اس میں کی نقدیم و تا خیر نه کی گئی ہو بلکہ اپنے معنی پر باقی ہوا در قائم ہو'یہ کلام میں بہ کثرت موجود ہے۔

اوررہا مجاز تو جمہوراس کے بھی قرآن میں وقوع کے قائل ہیں۔ جب کہ ایک گروہ کے نز دیک قرآن میں سے فرقہ ظاہر یہ بھی ہے اور نز دیک قرآن میں سے فرقہ ظاہریہ بھی ہے اور شوافع میں سے ابن خویز منداد قرآن میں مجاز کے وقوع کے منکر ہیں۔

ان منکرین مجاز کا اعتراض میہ ہے کہ مجاز جھوٹ کے مشابہ ہے اور قر آن مجید کذب (جھوٹ)کے شائبہ سے بھی پاک ہے۔

اور دوسری بات یہ ہے کہ مشکلم مجاز کا اس وقت سہارالیتا ہے 'جب حقیقت کا دامن تنگ ہوجا تا ہے 'پھروہ اس وقت مجاز کی طرف عدول کرتا ہے اوراللّٰد تعالیٰ کے لیے بیمحال ہے کیونکہ اس کے لیے حقیقت کا دامن تنگ نہیں ہوتا ہے۔

کیکن ان لوگوں کا بیشبہ باطل ہے کیونکہ اگر قر آن مقدس سے مجاز کو نکال باہر کریں تو قر آن سے حسن وزینت کا ایک بہت بڑا حصہ ساقط ہو جائے گا'اس لیے کہ علاء بلاغت میں مجاز کا استعمال زیادہ ہے یعنی حقیقت کی بہ نسبت مجاز زیادہ حسن وخو بی کا باعث ہوتا ہے' پھراگر قر آن کومجاز سے خالی ماننا ضروری قرار دے دیا جائے تو قر آن پاک کوحذف' تا کیو' فضص کی تکرار اور دیگرمجاس کثیرہ سے بھی اس کو خالی مانتا پڑے گا۔

مجاز کی دونشمیں

(۱) مجاز فی الترکیب ہے'اس کومجاز الا سناد اور مجاز عقلی بھی کہتے ہیں'اس میں علاقہ ملابست کا ہوتا ہے۔

مجازعقلی ہے ہے کفعل یا مشابہ فعل کی اسناد غیر ماھولہ کی طرف ہویعنی فعل یا شبہ فعل کو اصل میں جس امرے لیے وضع کیا گیا ہے'اس حقیقی وضع کے سواکسی دوسرے امرکی طرف اس فعل یا شبہ فعل کا اس کے ساتھ تعلق ہوتا اور ملابست ہوتی شبہ فعل کا اس کے ساتھ تعلق ہوتا اور ملابست ہوتی ہے۔

(٢) عِيدَاللَّهُ تَعَالَى كَايِقُول ٢: 'وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ النَّهُ زَادَتُهُمْ إِيمَانًا ''(الانفال:٢)

'' اور جب ان پرقر آن کی آیتی پڑھی جائیں تو وہ (آیات)ان کے ایمان کوزیادہ کر دی'' یہ

اس میں ایمان (کے کیف) میں زیادتی کرنا جواللہ تعالیٰ کافعل ہے'اس کی نسبت آیات کی طرف کر دی ہے کیونکہ وہ سبب بنتی ہیں اور' یکڈ بیٹے آبناء ھٹم "وہ (فرعون) ان کے بیٹول کو مارڈ التا اور اس طرح' یا ھامکانُ ابن لینی صَرْحًا "(المؤمن: ۳۱) اے ہامان! میرے لیے ایک بلند عمارت تعمیر کر' پہلی مثال میں ذکح کی نسبت فرعون کی طرف کی ہے حالانکہ ذکے اس کے جلاد وغیرہ کرتے تھے اور دوسری مثال میں بناء مکان کی نسبت ہامان کی طرف کی گئی ہے' حالانکہ سے کام بھی راج اور مز دوروں کا تھا' لیکن سے چونکہ سبب آمر تھے'اس لیے ان کی طرف محاز اُنسبت کردی ہے۔

ایسے، ی اللہ تعالیٰ کے قول 'و آ حکہ و قدو مَهُمْ ذار الْبُوادِ O '(ابراہیم:۲۸)' اورا پی قوم کو دوزخ میں لے قوم کو انہوں نے ہلاکت کے گھر میں ڈالا' میں لیڈرول کی طرف اپنی قوم کو دوزخ میں لے جانے کی نسبت کی گئی ہے کیونکہ انہی سردارول نے اپنی رعایا کو کفر کا صم دیا تھا اوران کے کافر ہونے کا سبب بنے تھے۔ یوں ہی اللہ تعالیٰ کا قول ' یَوْمًا یَّجْعَلُ الْولْدُانَ شِیْبُاO' (الران عور نے کا سبب بنے تھے۔ یوں ہی اللہ تعالیٰ کا قول ' یَوْمًا یَّجْعَلُ الْولْدُانَ شِیْبُاO' (الران دین کو دن جو بچول کو بوڑھا کر دے گا' میں بوڑھا کرنے کے فعل کی نسبت ظرف یعنی ' یوم' کی طرف کردی ہے'اس لیے کفعل اس میں واقع ہوا ہے'اور' عِیْشَدَةٍ دَّاضِیَةٍ O' (القارعة : ۷)' بیند یوم "کی طرف کردی ہے'اس لیے کفعل اس میں واقع ہوا ہے'اور' عِیْشَدَةٍ دَّاضِیَةٍ آ

مجازی دوسری شم مجاز فی المفر ذاس کا نام مجاز لغوی بھی ہے 'بیشروع ہی سے لفظ کو غیر ما وضع له میں استعمال کرنے کا نام ہے اس کی بہت ہی انواع ہیں:

(۱) حذف: جيساس كى مثال ب: "واسال القريم" "" بستى والول سے سوال كر" مراد بيان قريب يوجھ-

(۲) زیادت: جیسے 'لیس کے مثله شئی''،''نہیں اس کی مثل کوئی چیز' کینی'' لیس مثله شئی'''نہیں اس کی مثل کوئی چیز' کینی کا لیس کے مثله شئی ''نکین حال بیمثال محال نظر ہے۔

پوری انگلیوں سے تعبیر کرنے کی حکمت اور نکتہ بیمضم ہے کہ ان کے اسلام سے گریز کرنے اور فرار اختیار کرنے میں مبالغہ کا اظہار ہو کہ اگر ان کا بس چلے تو وہ پوری انگلی کرنے اور فرار اختیار کرنے میں مبالغہ کا اظہار ہو کہ اگر ان کا بس چلے تو وہ پوری انگلی بھی کا نول میں ٹھونس لینے سے نہ کتر ائیں اور قول باری تعالی ''وَ إِذَا رَأَيْتُهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ '' (المنافقون: ۳)'' اور (اے نخاطب!) جب تو آئییں دیکھے (تو) ان کے قد و قامت تھے بہند یدہ نظر آئیں' اجسام سے مراد چرے ہیں کیونکہ آپ نے ان کے قامت بدن تو نہیں مشاہدہ کے تھے۔

(٣) جز بول کرکل مراد لینا: جیسے اللہ تعالیٰ کا یہ قول' وَیَدُ قَسی وَ جُمهُ رَبِّكَ ''(الرَّمَن:٢٠) '' باقی ہے آپ کے رب کی ذات' بینی اس کی ذات مراد ہے۔'' فَوَ لِکُوا وُجُو هُدگُمُ شَطْرَهُ ''(البقرہ:١٥٠)مراد ہے' اپنے چہرے پھیرلو کیونکہ استقبال قبلہ سینہ کے ساتھ واجب

'' و جُوه یّ یّو مَئِذٍ نَّاعِمَهٔ ''(الغاشید، ۸)'' (بہت) چہرے اس دن بشاش بثاش ہوں گے''اور' و جُوه یّ یّو مَئِذٍ خاشِعَهٔ ۵ عَامِلَهٔ نَّاصِبَهُ ''(الغاشید: ۲۰۳۰)'' اس دن (بہت) چہرے ذکیل ہوں گے 0 (دنیا میں) کام کرنے والے مشقت جھیلنے والے''کہ ان آیول میں پورے بدنوں کو وجہ (چہرہ) کے لفظ سے بیان اور تعبیر کیا گیا'' ذلك بما قدمت بداك '' یہ اس کا بدلا ہے جو تیرے ہاتھوں نے آگے بھیجا''اور'' ہما کسبت ایدیکم '''' بسبب اس کے جو تیرے ہاتھوں نے کمایا'' یعنی'' قدمتم ''اور'' کسبتم ''بصیغہ جمع اور اس کی نبست ایدی کی اس کے جو تیرے ہاتھوں نے کمایا'' یعنی'' قدمتم ''اور'' کسبتم ''بصیغہ جمع اور اس کی نبست '' بسبب کی طرف اس لیے ہوئی کہا کثر کام ہاتھوں ہی سے کیے جاتے ہیں۔ '' ایدی '' (ہاتھوں) کی طرف اس لیے ہوئی کہا کثر کام ہاتھوں ہی سے کیے جاتے ہیں۔ (۵) اسم خاص کا اطلاق عام پر چسے'' انسا رسول رب المعلمین '''' میں رب العالمین کا رسول ہوں ' (یعنی رسلہ)۔

(۲) اسم عام کااطلاق خاص پرجیے' وَیَسْتَغْفِرُونَ لِمَنْ فِی الْآرُضِ ''(الثوریٰ:۵) (یعیٰ المومنین) کے لیے مغفرت چاہتے ہیں اوراس کی دلیل ہے: اللّٰہ کا قول' وَیَسْتَغْفِرُونَ لِلّٰکِ اللّٰہ کَا قول' وَیَسْتَغْفِرُونَ لِلّٰکِ اللّٰہ کَا وَلَا اللّٰہ کَا وَلَا اللّٰہ کَا وَلَا اللّٰہ کَا اللّٰہ کَا وَلَا اللّٰہ کَا وَرَجْشَشُ طلب کرتے ہیں ایمان والوں کے لیے''۔

(2) کسی شے کا نام اس امر پررکھنا جو ماضی میں تھا' مثلاً'' و 'اتسو اللّیئے اللّٰے اللّٰمِ اللّٰهِم '' (النساء: ۲) لیعنی ان لوگوں کے اموال ان کو دے دو' جو کبھی پہلے بیتم تھے کیونکہ بالغ ہونے کے بعد یمی باقی نہیں رہتی اس طرح ماکان کے اعتبار سے کی شے کا نام رکھنے کی مثالیں یہ بھی ہیں مثلاً' فکلا قد عضلو گُون آن یَنْکِحُن اَزْ وَاجَهُنَّ '(البقرہ: ۲۳۲) یعن عور تیں ان لوگوں سے نکاح کرلیں جو کہ پہلے ان کے شوہر تھے ایسے ہی اللہ تعالیٰ کا قول ' من یات ربع مجرما'' کہ اس آنے والے کے نام مجرم دنیاوی گنہگاروں کے اعتبار سے رکھا ہے۔

(۸) ایک شے کومال اور انجام کارکے نام ہے موسوم کرنا مثلاً'' انبی اد انبی اعصر حصو ا''
یعنی میں نے اپنے آپ کوانگور نچوڑتے ہوئے دیکھا'جو انجام کارشراب بن جاتی ہے۔
اور اللہ تعالیٰ کا قول' و کلا یَلِدُوْ اللّا فَاجِرًّا کَفّارٌ اُنْ '(نوح:۲۷) یعنی'' ایسے لوگ جنیں گے'جو کفرو فجور کی طرف لوٹیس گے'۔

اورالله تعالیٰ کا قول' ختی تُنکِحَ ذَوْجًا غَیْرَهٔ ''(القره: ۲۳) دوسرے مردکوشو ہرکے نام ہے موسوم کیا کیونکہ عقد کے بعد وہ شو ہر ہی ہوگا اور مباشرت ای حالت میں کرے گا' جب کہ شو ہر ہو جائے گا۔

اور تول باری تعالی 'فکت و نباه بیغلام خلیم کیلیم ' (القفت:۱۰۱)' توجم نے انہیں حکم والے بیٹے کی خوش خبری دی 'اور' نبیشو کے بیغلام علیم کیلیم ' (الحجر:۵۳)' ہم آپ کو علم والے فرزند کی بشارت دیتے ہیں ' کہ ان آیات میں بچہ کی صفت اس حالت کے ساتھ بیان کی ہے جوانجام میں اس کو حاصل ہونے والی تھی یعنی علم اور حکم -

(۹) حال کااطلاق محل پر جیسے قول خداوندی ہے: '' فَیفِیْ رَحْمَةِ اللّٰهِ هُمْ فِیْهَا خُلِدُوْنَ '' (آل عمران: ۱۰۷)'' وہ اللّٰہ کی رحمت میں ہیں وہ اس میں ہمیشہ رہیں گے''یعنی جنت میں کیونکہ وہ رحمت کامحل ہے۔

اور' لا بل مكوا الليل''رحمت كالمحل ہے۔

"إذْ يُرِيكُهُمُ اللهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا" (الانفال:٣٣) لِعِن تيرى آ تَكُومِ سيدسن رحمُ اللهُ فِي مَنَامِك قَلِيلًا" (الانفال:٣٣) لعِن تيرى آ تَكُومِ سيدسن رحمُ الله تعالى كا قول ہے۔

(۱۰) ایک چیز کواس کے آلہ کے نام ہے موسوم کرنا' مثلاً'' وَاجْعَلْ لِّلَیْ لِسَانَ صِدُقِ فِی اللّٰ اللّٰہِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰمِ اللّٰہِ اللّٰمِ ْمِ اللّٰمِلْمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ الل

میں' مینی ٹناء سن اچھی تعریف ذکر خیر کیونکہ زبان ثناء کا آلہ ہے اور' وَ مَا اَرْسَلْنَا مِنْ رَسُولِ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهِ' (ابراہیم: ۳)' اور ہم نے کوئی رسول نہیں بھیجا مگراس کے قبیلہ کی زبان میں' مینی ای قوم کی لغت ہولی ہیں۔

(۱۱) ایک چیز کانام اس کی ضد کے ساتھ رکھنا جیے' فکرشِ رڈھُمْ بِعَذَابِ اَلِیْمِ O'(آل عمران: ۲۱)'' تو انہیں خوش خبری سنا دیجئے در دناک عذاب کی'' حالانکہ بشارت کا حقیقی استعمال مسرت بخش خبر میں ہوتا ہے۔

(۱۲) فعل كالطلاق ايسے امر پر كرنا جس كا ارادہ كرليا ہويا جوقريب الحصول ہو جيسے مجاز في المشارفت والقرب كہتے ہيں۔

جیٹے' فَسَلَغُنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِکُوْهُنَّ ''(القرہ:۲۳۱)'' پھروہ اپنی عدت کو پہنچیں تو انہیں روک لؤ' جب مدت پہنچنے کے قریب ہو جا ئیں یعنی عدت گز رنے اور ختم ہونے تک پہنچ جا ئیں کیونکہ انقضائے عدت کے بعد امساک (روکنا) نہیں ہوتا۔

ن کر''فَسَلَغُنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعُصُّلُوْهُنَّ''(القره:۲۳۲)''پھروه پُنجَ جا کیں اپی عدت کو تو ندروکوانہیں' حقیقت ہے کیونکہ جب ان کی موت آنے کا وقت قریب ہوا۔ اور'' وَلْیُسَخْتُ اللَّذِیْنَ لُوْ تَرَکُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ''(النیاء:۹) یعنی اگر وہ چھوڑنے کے قریب ہوتے ہیں تو ڈریتے ہیں کیونکہ خطاب وصی لوگوں کی طرف ہے اور ان سے اس خطاب کا تعلق ترک ہے بعد تو خود ہی مردہ جا کیں گئے۔

O "إذا قُمْتُمُ إلَى الصَّلُوةِ فَاغْسِلُوا "(المائدة:٢) يعنى جب كتم قيام كااراده كرو

' فَالِذَا قَدَاتَ الْقُرُ انَ فَاستَعِذْ ' (النحل: ٩٨) يعنى جب قراءت كااراده كرؤ تاكه استعاذه قراءت كااراده كرؤ تاكه استعاذه قراءت بي بل مور

العراف: ٣ وَكُمْ مِّنْ قَوْيَهُ الْهَلَكُنَاهَا فَجَآءَ هَا بَاسُنَا "(الاعراف: ٣)
العنى جم نے ال کے ہلاک کرنے کا ارادہ کیا 'ورنہ اگریہ سلیم کریں تو حرف فاء کے ساتھ عطف ڈ الناضیح نہ ہوگا۔

(۱۳) ایک صیغہ کو دوسرے صیغہ کے مقام پر رکھنا' اس نوع کے تحت بہت می قتمیں آتی ہیں'

ان میں سے ایک یہ ہے کہ فاعل کا اطلاق مفعول پر ہو جیسے مثلاً ' مَنَّاءٍ دَافِق '' (الطارق: ٢) یعنی مدفون (احیمالا ہوا)۔

اورْ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِلَّا مَنْ رَّحِمَ "(هود: ٣٣) " آج الله كَعَمْ ال ے کوئی بچانے والانہیں مگر وہی (بے گا) جس پر الله رحمت فرمائے العنی لامعصوم کوئی بحاہوانہیں۔

"جعلنا حرما امنا" يعنى مامون فيهجس مين امن طے اور اس كاعس يعنى بهى مفعول كااطلاق فاعل يركيا جاتا بجيئ انه كان وعده ماتيا "ليخين" آتيا" -

O اور''حجابًا مستورًا''لعنی''ساترًا''پوشیده کرنے والااورایک قول بیہ کہ بیائے باب يرب اوراس كمعني بين: "مستورًا"" عن العيون لا تحس به احد" آ تکھوں ہے بوشیدہ ہے کہ کوئی شخص اس کومسوس نہیں کرسکتا۔

مفرد ٔ تثنیه اورجمع میں ہے ایک کا دوسرے پراطلاق مفرد کے تنی پراطلاق کی مثال ہے '' وَ اللَّهُ وَ رَهُو لُهُ أَحَقُّ أَنْ يُرْضُوهُ ''(التوبه: ٦٢) لِعِني ان دُونو ل كوراضي كرومكر چونكه دونوں کی رضامندی اورخوشنو دی حاصل کرنا باہم لازم وملز وم تھا'اس لیےمفر د کا صیغہ لا ما گیاہے۔`

اورمفرد كے جمع يراطلاق كى مثال 'إنَّ الْإنسانَ لَفِي خُسُر ''(العصر: ا)' بِشك آ دمی ضرور خسارے میں ہے' بعنی تمام انسان' اس کی دلیل اس میں ہے مشکیٰ کا درست مونا الله الله عنه السان ره كاور إنَّ الْإنسانَ خُلِقَ هَلُوْعًا "(المعارن: ١٩) " بے شک انسان کم حوصلہ بیدا ہوا ہے" اور اس کی دلیل" الا المصلین" کا اس میں

ہے۔ سے متنیٰ ہونا ہے۔

 اور شن کے مفرد براطلاق کی مثال' القیا فی جہنم' 'یعیٰ' الق' تو ڈال دے اور ہر ابیا جوصرف ایک ہی چیز کے لیے ہونے کے باوجود دو چیزوں کی طرف منسوب کر دیا الله وه اى قبيل عرب مثلاً " يَخُورُجُ مِنْهُمَا اللَّوْلُو وَالْمَرْجَانُ 0 " (الرحل: ۲۲)" ان سے موتی اور مو نگے نکلتے ہیں' حالانکہ موتی اور مرجان ایک ہی قتم کے دریا يعنى شوراوركمارى يانى سے برآ مربوتے ہيں نه كه شيريں يانى سے ' وَجَعَلَ الْفَمَرَ

فِيهِنَ نُوْرًا ''(نوح:۱۱)' اوران مين چاندکوروش فرمایا'۔' ای في احداهن ''لیخی صرف ایک آسان میں اس کونور بنایا ہے۔' نئیسیا حُوثِ تَهُما' (الکہف:۱۱)' وہ دونوں محیطی کو بھول گئے' حالانکہ بھو لنے والے صرف یوشع عالیہ للا سے جس کی دلیل یہ ہے کہ انہوں نے موی عالیہ للا سے کہا تھا:'' فَایِنی نئیسٹ الْحُوث ''(الکہف: ۱۳)'' تو میں اپی مجھلی کو بھول گیا' اور نسیان کی نبیت ان دونوں کی طرف ایک ساتھ'اس وجہ ہے کی اپی مجھلی کو بھول گیا' اور نسیان کی نبیت ان دونوں کی طرف ایک ساتھ'اس وجہ ہے کی گئی کہ موی عالیہ للا نے سکوت کیا تھا'' فَسَنْ تُسَعَجَّلَ فِی یَوْمَیْنِ ''(البقرہ: ۲۰۳)'' تو اللہ جس نے جلدی کی دودن میں اس پر کوئی گناہ نہیں' حالانکہ بھیل یوم ثانی میں ہی ہوتی ہے اور جنی کے اور جنی کی دورن میں اس پر کوئی گناہ نہیں' حالانکہ بھیل یوم ثانی میں ہی ہوتی ہے اور جنی کرات بار بار بہت می مرتبہ کیونکہ نگاہ کا تھکنا بغیر کشرت نظر کے ممکن نہیں ہے اور جنی کی مفرد پر اطلاق کرنے کہ مثال ' قبال دب ارجعون '' ہے یعی'' ارجعنی '' دجعون '' ہے بھی پھر

ماضی کا طلاق مستقبل پر۔ کیونکہ اس کا وقوع ٹابت اور پینی ہے 'مثلاً'' انسی امسر اللّٰہ''

ایعنی قیامت اور اس کی دلیل ہے اللہ تعالٰی کا قول' فلا تستعجلوہ'' اور'' وَنُفِخَ فِی

الصَّّودِ فَصَعِقَ مَنْ فِی السَّمُواٰتِ'' (الزم: ۱۸)'' اور پھونکا جائے گاصور' پس عُش کھا

کرگر پڑے گا جوآسانوں میں ہے'۔

(وَإِذْ قَالَ اللّٰهُ يَلِيسْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَ أَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ ''(المائده:١١١)' اورجب التذفر مائے گا: اے میسی! مریم کے بیٹے! کیاتم نے کہا تھا لوگوں کؤ'۔

اوراس کے برعکس یعنی مستقبل کا اطلاق ماضی پر تا کہ وہ دوام اور استمرار کا فائدہ دیے۔
 گویا کہ وہ واقع ہو کراستمرار پا گیا 'جیسے' آئے آمٹ وُ وُ نَ النّاسَ بِالْبِیرِ وَتَنْسَوْنَ '' (البقرہ: ۳۳)
 '' کیاتم لوگوں کو نیکی کا تھم دیتے ہو؟ اور بھول جاتے ہو''۔

"وَاتَّبَعُواْ مَا تَتَلُوا الشَّيَاطِيْنُ عَلَى مُلْكِ سُلَيْمَانَ "(القره:١٠٢)" اوروها ال كفريد جادومنتر) كي يَحِيلُك كَيْ جِيهِ المِمان كَعَهد مِين شيطان برُها كرتاتها" يعنى تلت " انهول ني برُها "لقد نعلم "ليني علمنا "اور" قد يعلم ما انتم عليه "يعن علم جان ليا" فَلِمَ تَقَالُوْنَ أَنْبِيآ وَ اللهِ "(القره: ٩١)" تم كيول قل كرتے تص الله كنبول

DarseNizami. MadinaAcademy. Pk

كو" ي"اى قتلتم" تم فال كول كيا-

حصراورا خضاص كابيان

حصر مخصوص طریق ہے ایک چیز کو دوسری چیز کے ساتھ خاص کرنا یا کسی ایک چیز کے لیے کو فی کرنا حصر کہلاتا ہے (اور حصر کوقصر بھی کہتے ہیں)۔

قصر کی دوشمیں ہیں:

(١) قصر الموصوف على الصفته -

(۲) قصرالصفة على الموصوف اور ہرايك حقيقى ہے يا مجازى۔

قصر الموصوف على الصفة حقیقى كى مثال جيئ ما زيد الى كاتب "ليعنى زيدك ليه سوائے كاتب مونے كے اوركوئى صفت نہيں ہے۔

اس ستم کا حصر فی الواقع موجود نہیں ہے کیونکہ کسی چیز کی تمام صفات پراحاطہ کر لینااس طور پر کہ صرف ایک صفت کا ثبات اور دیگر صفات کی کلیڈ نفی ہو سکے ناممکن ہے علاوہ ازیں یہ بھی بعید ہے کہ ایک ذات کے لیے صرف ایک ہی صفت ہوا در کوئی دوسری صفت نہ ہوائی وجہ سے قرآن عکیم میں اس نوعیت کا حصر واقع نہیں ہے۔

قصرالموصوف علی الصفة مجازی کی مثال الله تعالی کا بیقول ہے: ' وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ''
(آل عران: ۱۳۳)' اور محمد (معبود نہیں) صرف ایک رسول ہیں' بعنی حضور طُنَّ اُلِیَا ہِم رسالت پر مقصود ہیں' اس سے متجاوز ہو کرموت سے بری نہیں ہو سکے' جیسے کہ لوگ مستبعد خیال کرتے تھے کیو ککہ موت سے بری ہونا شان الوہیت ہے۔

قصرالصفة على الموصوف حقق كى مثال ألا إلى الله الله الله السافات: ٣٥) أنهيل كوئى معبود برحق مرالله المحتفظ الموصوف على الموصوف عبازى كى مثال أقُل لا أجِد في ما أوْجِى المَّقِي مُحَرَّمًا عَلَى طَاعِم يَّطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ يَنْكُونَ مَيْتَهُ أَوْ دَمًّا مَّسْفُوْ حًّا أَوْ لَحْمَ حِنْزِيْرٍ اللّه مِحْرَمًا عَلَى طَاعِم يَّطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ يَنْكُونَ مَيْتَهُ أَوْ دَمًّا مَّسْفُوْ حًّا أَوْ لَحْمَ حِنْزِيْرٍ اللّه وَمَنْ الله وَلَى مَا أَوْ لَحْمَ الله وَيَ الله وَيَ الله وَيَ الله وَيَ الله وَيَ الله وَيَ مَن الله وَي الله وي مردار ہو یا (رگول سے) بہتا ہوا فون یا خزیر کا گوشت تو بے شک وہ نجاست ہے یا نافر مانی کے لیے ذبح کے وقت جس جانور پرغیراللہ کا نام پکارا جائے' اس آیت کا ظاہر دلالت کرتا ہے کہ حرام کر دہ اشیاء صرف یہی ہیں جواس آیت میں مذکور ہیں اور بیمفہوم مراد نہیں ہوسکتا ے کیونکہ آیت میں مذکور حرام چیزوں کے علاوہ بھی بہت می چیزیں ایسی ہیں 'جوحرام ہیں کیکن ان کا یہاں اس جگہ ذکر نہیں کیا گیا' مثلاً خمراور دیگرنشہ آوراشیاء اسی طرح سور کے علاوہ دیگر کنچلیوں سے شکارکرنے والے جانور کا گوشت ای لیےعلاء نے کہاہے کہاں آیت میں حصر مجازی ہے جو کہاس آیت کے سبب نزول کے واقعہ کے ساتھ مخصوص ہے۔امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ نے اس مسئلہ کو بڑی تفصیل کے ساتھ بیان کیا ہے جس کا خلاصہ اور لب لباب ہیہ ہے کہ کفار چِونکہمر دار' بہا ہوا خون' سور کا گوشت اور بتوں کے نام لے کر ذبح کیا ہوا جانور ان کو حلال کہتے تھے اور بہت سے مباحات کوحرام تھہراتے تھے اور طریق شریعت کی مخالفت ان کا شیوہ تھا' بیآیت ان کی تر دیدکرنے کے لیے اور ان کے اس اشتباہ کے ذکر میں نازل ہوئی' جس پروہ کاربند تھے اور حصر کے انداز میں اس کو بیان کر دیا گیا ہے تا کہ ان کا کذب خوب واضح ہو جائے اور تا کید کے ساتھ ان کار د ہو جائے گویا کہ اللہ تعالیٰ نے فر مایا کہ ہیں حرام مگر وہی شے جس کو کفار نے حلال کھہرا رکھا ہے اورغرض اس سے کفار کی مخالفت اور ان کی تر دید كرنا ين كه حصر حقيق ايك اوراعتبار ي حصر كي تين قسمين بن:

(۱) قصرافراد (۲) قصرقلب (۳) قصرتعين ـ

اوّل ہے خطاب اس کو کیا جاتا ہے جوشر کت کا اعتقادر کھتا ہو جینے' اِنّہ مَا اِلْہ ہُکُمْ اِلْهُ وَالَّهِ بِتَ اللّٰ اللّٰهِ اللهِ اللهِ اللهُ الللهُ الللهُ اللهُ اللهُ الللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ الللهُ الللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ الللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ الللهُ اللهُ الللهُ اللهُ اللهُ اللهُ الللهُ اللهُ اللهُ اللهُ الللهُ اللهُ اللهُ اللهُ الللهُ اللهُ الللهُ اللهُ الللهُ الللهُ اللهُ اللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللهُ اللهُ اللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللللهُ اللهُ الللهُ الللهُ اللهُ

حصر کے طُرُقُ

حفر کے بہت سے طریق ہیں:

(۱) نفی اوراستناء خواه فی "لا" کے ساتھ ہویا" ما" کے ساتھ یا اور کسی ذریعے سے اوراستناء خواه فی "لا" کے ذریعے ہویا غیر کے ذریعے جیٹے "لا اللّه اللّه اللّه "(الصافات: ۳۵) " منبیں کوئی معبود مگر اللّه "اور" مَا مِنْ اِلْهِ اِلّا اللّه "(آل عران: ۱۲)" اللّه کے سواکوئی معبود نبیں "اور" مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلّا مَا آمَرُ تَنِیْ بِه "(المائدہ: ۱۱۷)" میں نے آئیس نبیں کہا مگروہی جس کا تو نے مجھے تکم دیا"۔

(۲) "انما"جہورکاال پراتفاق ہے کہ کلمہ"انما" حصر کے لیے آتا ہے حصر ثابت کرنے والوں سے حسب ذیل آبات سے استدلال پیش کیا ہے:

(i) "إِنَّـ مَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ" (البقره: ١٥٣) "ال في يكي تم يرحرام كي بيل مردار اورخون" -

(ii)" إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ" (اللك:٢٦)" يَعْلَمْ تَوَاللَّه كَ بِاس بـ"-

(iii)' فَالَ إِنَّهَا يَأْتِيكُمْ بِهِ اللَّهُ ' (حود: ٣٣) ' بولا: وه تو اللَّهُ مر لا عَكا ' -

(۳) ''انسما بالفتح ''علامه بیضاوی اورعلامه زخشری نے ''انما ''کوطرق حصر میں شارکیا ہے اوردونوں کا قول ہے کہ اللہ تعالی کے ارشاد ''قُلُ إِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّ مُلْکُمْ یُوْ حٰی اِللّٰہ وَ اَحِدٌ ''(الکہف:۱۱)'' (اے صبیب! کافروں ہے) فرماد ہے کے ایک ایک میں (الوہیت کا می نہیں بلکہ معبود نہ ہونے میں) تم جیسا ہوں میری طرف وحی کی جاتی ہے کہ (میرااور) تمہارا معبود ایک ہی معبود ہے 'میں کلم'' انما ''برائے حصر ہے۔

(۳) تقدیم معمول جیے 'ایّاک نَعْبُدُ' (الفاتح:۵)' ای لا غیسر ک ''ہم تیری بی عبادت کرتے ہیں یعنی تیرے سواکسی کی ہم عبادت نہیں کرتے ۔

(۵) ضمیر فصل: (۱) جیسے 'ف الله هو الولی ''(ای لا غیره) الله تعالیٰ بی ولی ہے اس کے سواکوئی نہیں۔

(ب) "وَأُولِنِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ" (البقره: ۵) "اورو بى مرادكو يَبَيْخِ والـ '-(ح) "إِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ" (آل عران: ٦٢) " يبى بِ شك سيابيان بـ '-

ايجاز اوراطناب كابيان

جاننا چاہے کہ ایجاز اور اطناب بلاغت کی بڑی انواع میں سے ہیں کیہاں تک کہ صاحب'' سرالفصاحة'' نے بعض علاء بلاغت کا یہ قول نقل کیا ہے کہ' البلاغة هي الا يحاز و الاطناب '' یعنی ایجاز اور اطناب ہی بلاغت ہے۔

ایجاز اوراطناب کی تعریف میں علاء کے اقوال مختلف ہیں۔

لعض علماء نے کہا:

متعارف عبارت ہے کم میں مقصود کوا دا کر دینا ایجاز ہے اور بسط کے موقع پر متعارف عبارت ہے زیادہ میں مقصود کاا دا کرنااطناب کہلاتا ہے۔

اوربعض کے نز دیک غیر زائد الفاظ میں مطلب کو پورا بیان کر دینا ایجاز ہے اور زائد کے ا الفاظ میں پورےمطلب کو بیان کرنااطناب ہے۔

اطناب اسہاب سے اخص ہے کیونکہ اسہاب تطویل با فائکہ ہ اور بے فائدہ دونوں کو کہتے ہیں ۔

ایجاز کی انواع

ایجازی دو تشمیں ہیں: (۱) ایجاز قصر (۲) ایجاز جامع۔ ایجاز قصریہ ہے کہ لفظ کا قصر ایجام کے ایجاز قصریہ ہے کہ لفظ کا قصر این معنی پر ہو جیسے الله الرسم الله الرسم الله الرسم الله الرسم الله الرسم الله الرسم الله الرسم الله الرسم الله الرسم الله الرسم الله الرسم الله الرسم الله الرسم الله الرسم الله الله کے نام ہے جونہایت رحمت والا بے حدر م فرمانے والا ہے اور بے شک وہ (خط) الله کے نام ہے جونہایت رحمت والا بے حدر م فرمانے والا ہے اللہ الله کے نام ہے جونہایت رحمت والا بے حدر م فرمانے والا ہے اللہ الله کے نام ہوکر میرے پاس چلے آؤں۔

کداس میں عنوان کتاب اور حاجت کوجمع کر دیا ہے اور اس کی ایک تشم کا نام ایجاز جامع ہے وہ یہ ہے کہ لفظ کی معانی کوشامل اور محیط ہو جیسے ' اِنَّ السَّلَّة یَامُو ہِ بِالْعَدْلِ وَ الْاِحْسَانِ '' (الحل نظم فرما تا ہے عدل کرنے اور نیکی کرنے کا'' (الایہ)۔

''عدل'' سے مراد صراط متنقم ہے' جو افراط اور تفریط کے در میان معتدل اور متوسط طریقہ اور استہ ہے' اس سے عقائد' اخلاق اور عبودیت کے تمام واجبات اور ضروری امور کی طرف اشارہ کیا گیا ہے۔

'' احسان' واجبات عبودیت میں اخلاص سے کام لینا احسان ہے کیونکہ احسان کی تفسیر

صدیث میں بیہے:

"ان تعبدوا الله كانك تواه "يعنى الله تعالى كى عبادت خالص نيت بي كرواور خضوع كي ساتھ اور خشيت الله كي عبادت كرو-

ہے'اس حدیث کو حاکم نے متدرک میں روایت کیا ہے۔

اوراس کی ایک مثال اللہ تعالیٰ کا یہ قول بھی ہے ارشاد ضداوندی ہے: ' وَلَکُمْ فِی الْقِصَاصِ عَنِ وَالْفَاظِ عَنِ ' (ابقرہ:۱۵۹) اورتمہارے لیے قصاص میں حیات ہے اس کے معنی کثیر ہیں اورالفاظ قلیل ہیں کیونکہ غرض اس سے یہ ہے کہ جب انسان کو یہ معلوم ہوجائے گا کہ کسی کوتل کرنے سے خود بھی قبل ہوگا تو پھر کسی کے قبل کی جراءت نہ کرے گا' پس قبل یعنی قصاص ہے آپس کی قبل وکشت کا انسداد ہوگیا اوراس میں شک نہیں کے قبل کا موقوف ہونا انسان کی حیات کا باعث ہے۔ وکشت کا انسداد ہوگیا اوراس میں شک نہیں کے قبل کا المقتبل انفی للقتبل ' پہیں سے زیادہ وجوہ قرآن کی حیات کا باعث ہے۔ قرآن کی ممالی جملہ اہل عرب کے قول ' المقتبل انفی للقتبل ' پہیں سے زیادہ وجوہ سے فضیلت رکھتا ہے' صالا نکہ اہل عرب کے نزد یک بینہایت جا مع مثل (کہا وت) ہے۔ گرابن اثیر نے اس فضیلت سے انکار کیا ہے اور کہا ہے کہ خالق اور مخلوق کے کلام میں کوئی تشیہ نہیں ہو سکتی۔

''انما العلماء يقدحون اذهانهم فيما يظهر لهم من ذلك''ان بيس عزائد وجوه فضيلت ميس عدد على الميس عند الكروية والمين المين
(۱) "القصاص حيواة" مين دس حروف بين اور" المقتل انفى للقتل "مين چوده حروف بين اور" المقتل انفى للقتل "مين چوده حروف بين -

(٢) قُلَّ كَانْفي حيواة كومتلزم نبين اورآية حياة كي ثبوت برنص ہے جواصل غرض ہے۔

(٣) حیواة کانکره لا نامفید تعظیم ہے اور اس امر پر دلالت کرتا ہے کہ 'قصاص' میں زندگی کی درازی ہے اور ای درازی حیات کی وجہ سے حیواة کی تغییر بقاء سے کی گئی ہے 'جیسے اللہ تعالیٰ کا قول' و کَسَیر بقاء سے کی گئی ہے 'جیسے اللہ تعالیٰ کا قول' و کَسَیر بقاء کے دور و رقم النّاسِ عَلَی حَیٰو قِو ' (ابقرہ: ٩٦)' اور ضرور تم النّاسِ عَلَی حَیٰو قِو ' (ابقرہ: ٩٦)' اور ضرور تم النّاسِ الله کا کہ دور (دنیا کی) زندگی پر سب لوگوں سے زیادہ حرص رکھتے ہیں' مگر' القتل انفی للقتل ''میں ایسانہیں ہے کیونکہ اس میں لام جنسی ہے۔

(۴) آیت میں تکرارنہیں ہےاور'' مثل''لفظ آل کی تکرار پرمشمل ہےاور گوتکرارکل فصاحت نہ ہو' مگر جو کلام تکرار سے خالی ہوگا'وہ اس کلام ہے جس میں تکرار ہوگی'افضل ہوگا۔

(۵) آیت میں اطراد اور جامعیت ہے اور مثل مذکور میں جامعیت نہیں کیونکہ ہر قل مانع قل نہیں ہے' بلکہ بعض قبل موجب قبل ہو تا ہے اور مانع قبل صرف قبل خاص ہے' جو قصاص ہے پس قصاص میں حیات ابدی ہے۔

ایجاز کی دوسری قتم ایجاز الحذف ہے

ایجاز الحذف کے مختلف اسباب ہیں:

(۱) ال حذف کا ایک فا کده اختصار ہے'ال کے ظہور کی وجہ سے عبث سے احتر از بھی ہے۔

(۲) ال بات پر تنبیہ کرنا کہ محذوف کے ذکر سے وقت قاصر ہے اور اگر اس کے ذکر کرنے میں مشغول ہو گئے' مقصد فوت ہو جائے گا اور یہی فا کدہ تحذیر اور اغراء کا ہے' اور اللہ تعالیٰ کا قول: ''نَافَة اللهِ وَسُفْیًاهَا' (اسمس: ۱۳)' اللہ کی اور پی کوئکہ 'نافة اور اس کے (پانی) پینے (کی باری کو بند کرنے) سے'' میں دونوں مجتمع ہیں' کیونکہ 'نافة الله ''تحذیر ہے اور' فروا''ال میں مقدر ہے اور' سقیاها'' اغراء (برا یکھنے کرنا)

ہے اور' الزموا''اس میں مقدر ہے۔

(٣) ان میں سے ایک تفخیم اور اعظام ہے کیونکہ اس میں ابہام ہوتا ہے جیسے اہل جنت کے وصف میں اللہ تعالیٰ کا قول '' حقی اِذَا جَآؤُو آهَا وَقَیْحَتْ اَبُوابُهَا ''(الزمر:اء)'' حتی کہ جب وہاں پہنچیں گے اس کے دروازے کھول دیئے جا کیں گئی اس آیت میں جواب کو حذف کر دیا گیا تا کہ اس بات کی دلیل ہو کہ اہل جنت جو پچھو ہاں پاکیں گئی اس کا وصف غیر متنا ہی اور کلام اس کے وصف سے قاصر ہے اور عقلیں جو جا ہیں مقدر کر ایس گار جو پچھو ہاں ہے' اس کی حقیقت تک رسائی نہیں ہو گئی۔ لیں' مگر جو پچھو ہاں ہے' اس کی حقیقت تک رسائی نہیں ہو گئی۔

ای طرح اللہ تعالیٰ کا قول ' وَلَوْ تَولی إِذَا وُقِفُوْا عَلَی النَّادِ ''(الانعام:٢٥)' اور بھی تم دیھو جب وہ آگ پر کھڑے کیے جائیں گے' بینی ایبا خوف ناک منظر ہوگا کہ دیھنے کی تاب نہ ہوگی اور عبارت اس کے بیان سے قاصر ہے۔

- (م) تجمی تخفیف کے لیے حذف کردیتے ہیں' کثرت استعال کی وجہ سے' جیسے حرف نداء کا حذف مثلاً''یوسف اعرض''میں یا حرف نداء حذف ہے۔
- (۵) ان وجوه میں ہے ایک وجہ یہ ہے کہ تعظیماً ذکر نہیں کیا جاتا' جیسے اللہ تعالیٰ کا قول ہے:

 "قُالَ فِوْعُونُ وَ مَا رَبُّ الْعَالَمِینَ ٥ قَالَ رَبُّ السَّمُوٰ اَتِ "(الشراء:٢٣-٢٣)

 "فرعون بولا: سارے جہال کا رب کیا ہے؟ مویٰ نے فرمایا: رب آ سان اور زمین کا "

 اس آیت میں تین مقامات پررب ہے قبل مبتداء محذوف ہے یعنی "ھو دب دبکم دبکم

 اس آیت میں تین مقامات پر رب نے قبل مبتداء محذوف ہے یعنی "ھو دب دبکم دبکم

 اس آیت میں تین مقامات پر رب نے بوئے مویٰ عالیہ للا نے فرعون کے سوال کرنے اور اس

 کے حال کوایک عظیم امر خیال فرماتے ہوئے احتر اما اور تعظیماً اللہ تعالیٰ کا اسم مبارک ذکر نہیں کیا۔
- (۲) ان میں سے ایک وجہ یہ ہے کہ کسی چیز کو حقیر اور گھٹیا سمجھ کر زبان کو اس کے ذکر سے بچانے کے لیے ذکر نہ کرنا 'جیسے' صبح بیٹے میں '(البقرہ:۱۸) یعنی منافقین بہر ہے گو نگے ہیں۔
- (2) عموم مراد لینے کی غرض سے حذف کردینا 'جیسے' وَاِیّساكَ نَسْمَعِیْنُ ' (الفاتح: ۳) یعنی عبادت اورا پنے تمام کاموں میں تجھی سے مدد ما تگتے ہیں اور' وَاللّٰهُ يَدْعُوْ آلِلٰی دَادِ

السَّكَرْمِ ''(ينس:۵٪) يعنی الله تعالی برايک کودارالسلام (جنت) کی طرف بلاتا ہے۔ (۸) رعايت فاصله کے ليے حذف کرنا 'جيے' مَا وَ دَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَى ''(اضیٰ:۳)' آپ کرب نے آپ کوئیں چھوڑ ااور نہ دہ (آپ سے) بیزار ہوا''۔" ای و ما قلاك''۔

(۹) ابہام کے بعد بیان کے قصد سے حذف کردینا بھیے کہ شیت کے عل میں مثلاً ' وَلَوْ شَآءَ لَهَدْ کُمْ ''(انحل:۹)' ای ولو شاء هدایت کم ''یعنی اگر الله تعالیٰ تمہاری ہدایت چاہتا۔ اطناب اور اس کے فوائد

اطناب کے کئی فوائد ہیں:

اس میں سے ایک ہے ہے کہ 'الا یہ صاح بعد الا بھام '' یعنی ابہام کے بعد وضاحت کرنا جیے اس کی مثال ' رَبِّ شَرَحَ لِی صَدِّرِی '' (طٰ:۲۵)'' عرض کی: اے میر ہے رب امیراسین کھول دے' ہے اس میں 'الشسرح' کے لفظ سے اتنا معلوم ہوتا ہے کہ متعکم کی چیز کی شرح کا خواستگار ہے اور 'صددی 'اس طلب کی تفییر اور اس کا بیان ہے مقام فرعون کے دربار میں بھیج جانے کی وجہ سے مصائب میں مبتلا ہونے کا مخبر ہے تاکید کا مقتضی ہے اور ایسے بی 'اکم فیشو کے لئے صَدِّر کے '' (الانشراح:۱)' کیا ہم نے تیراسینہ کشادہ نہ کیا' بھی ہے کہ بید مقام تاکید کا مقتضی ہے' اس وجہ سے کہ بیدا متنان کی جگہ ہے۔

ان میں سے ایک خاص کا عطف عام پڑاس کا فائدہ یہ ہے کہ اس طرح خاص کی فضیلت پرمتنبہ کر کے گویا یہ بتایا جاتا ہے کہ وہ عام کی جنس سے نہیں ہے یعنی وصف میں متغائر کو تغائر فی الذات کے مرتبہ میں رکھا جاتا ہے جیسے اس کی مثال اللہ تعالیٰ کا قول'' حفظو اللہ عَلَی الصّلوٰتِ وَالصّلوٰةِ الْوُسُطی ''(ابقرہ:۲۳۸)'' نگہبانی کر وسب نمازوں کی اور نجے کی نماز کی 'اور'' مَن سُحانَ عَدُو الله وَ مَلْنِکتِه وَرُسُلِه وَ جِبْرِیْلَ وَمِیْکُلَ '' اور نجی کی نماز کی 'اور' مَن ہواللہ اور اس کے فرشتوں اور اس کے رسولوں اور جرائیل اور میائیل کا اور میائیل کا اور میائیل کا اور میائیل کا ''۔

اورای طرح ایک عطف العام علی الخاص ہے 'بعض علاء نے غلطی ہے اس طرح کے عطف کا وجود تسلیم نہیں کیا ہے 'حالا نکہ اس کا فائدہ ظاہر ہے بعنی تعیم اور اوّل بعنی عام کو

الگ ذکر کرنے کی علت'اس کے حال پر تو جہ کرنا اور اس کی اہمیت کو اجا گر کرنا ہے' اس ك مثال أينَّ صَلُوتِي وَنُسُكِي "(الانعام: ١٦٣)" بِشك نماز اورميري قربانيال" ہے کہاس میں" نسك"عبادت كى معنى ميں ہے اور وہ عام تر ہے۔ اورْ التَيْنَكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْ انَ الْعَظِيْمَ " (الحجر: ٨٧) م نيتم كوسات آيتي دين جود مراكي جاتي بين اورعظمت والاقرآن' -

قرآن مجيد ميں تشبيه اور استعاره كابيان

تثبیہ: یہ بلاغت کی انواع میں سے سب سے اشرف اور اعلیٰ نوع ہے مبر دنحوی اپنی کتاب '' الكامل''ميں لکھتے ہیں:

اگر کوئی شخص کلام عرب کا بیشتر حصہ تشبیہ ہے وابسة قرار دیتا ہے تو اس کی بات کو بعیداز قیاس تصور نه کرنا جاہیے ابوالقاسم بن البند ار البغد ادی نے تشییهات قرآن کے بیان میں ایک مستقل کتاب تصنیف کی ہے اور اس کا نام' الجمان' رکھا ہے اور علماء کی ایک جماعت نے جن میں علامہ سکا کی بھی شامل ہیں' تشبیہ کی تعریف پر بیان کی ہے:

کہ اگر ایک امرایے معنی میں کسی دوسرے امرے ساتھ شرکت رکھنے پر دلالت کرتا ہے تواس کا نام ہے تثبیہ۔ ادوات تثبیہ تین قسم میں:

(۱)حروف(۲)اساء(۳)اورافعال_

حروف میں سے کاف ہے مثلاً 'کر ماد' جیسے اللہ تعالیٰ کے قول میں' مَشَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كُومَادِ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ ''(ابرائيم:١٨)' الإرباء مشرکوں کا حال ایبا ہے کہ ان کے کام بیں جیسے راکھ کہ اس پر ہوا کا سخت جھونکا آیا''اور "كان" بيك كَانَّهُ رُءُ وْسُ الشَّيَاطِينِ" (الصَّفْت: ١٥) " بيك ديوول كر" - "اسماء" میں ہے'' امثل'' اور شبہ یا ان دونوں کے ماننداور الفاظ جو کہ مماثلت اور مشابہت ہے مشتق ہوتے ہیں۔

علامه طبی کا بیان ہے کہ "مثل" کا لفظ ایس ہی حالت اور صفت میں استعال کیا جاتا

اس آیت کریمہ میں دس دس جملے ہیں اور ان سب سے ل کرمجموعی طور پر تشبیہ کی ترکیب اس حیثیت سے واقع ہو گائے ہیں ہی ہے کہ اس میں کچھ بھی ساقط ہو جائے تو تشبیہ میں خلل واقع ہو جائے گا۔ اس لیے کہ یہاں دنیا کی حالت کواس کے جلد ترگز رجائے اس کی نعمتوں کے فنا کے گھاٹ اتر نے اور لوگوں کے اس پر فریفتہ ہونے کے بارے میں اس پانی کی حالت سے مشابہ کرنا مقصود تھا' جو کہ آسانوں سے نازل ہوا اور اس نے انواع واقسام کی جڑی ہوٹیاں مثابہ کرنا مقصود تھا' جو کہ آسانوں سے نازل ہوا اور اس نے انواع واقسام کی جڑی ہوٹیاں اگا میں اور اس سرسز گھاس اور رنگ برنگ بودوں اور پھولوں نے اپنی گل کاری سے روئے زمین کو دیدہ زیب اور دیکش پوشاک سندس پہنا کر دلہن کی طرح سنوار دیا' یہاں تک کہ جب زمین کو دیدہ زیب اور دیش پوشاک سندس پہنا کر دلہن کی طرح سنوار دیا' یہاں تک کہ جب اہل دنیا اس دنیا کی طرف مائل ہوئے اور انہوں نے گمان کیا کہ اب یہ دنیا تمام خرابیوں اور زوال سے بُری ہوتو یکا یک اللہ تعالیٰ کا عذاب اس پرنازل ہوا اور اس طرح مٹ گئی کہ گویا کل تک کوئی چز جی نہتی۔

استعاره قرآنيه كابيان

استعارہ وہ لفظ ہے جواس چیز میں استعال کیا جائے جو چیز اصلی معنی کے ساتھ مشابہ

بعض علاء نے کہا ہے کہ استعارہ کی حقیقت رہے کہ کلمہ کسی معروف بہا'شے سے غیر معروف شک ہے کے خیر معروف شک کے لیے عاریتاً لے لیا جائے'اس کا فائدہ اور حکمت ایک خفی چیز کا اظہار اور ایسے اظہار کی مزید وضاحت کرنا ہوتی ہے'جو کہ جل نہیں ہوتا' حصول مبالغہ کی غرض سے ایسا کیا جاتا ہے یا بیسب باتیں مقصود ہوتی ہیں۔

اظهار حفى كى مثال الله تعالى كاقول 'وَإِنَّهُ فِي أَمُّ الْكِعَابِ ' (الرّزن: م) ' اورب

شک وہ اصل کتاب میں ہے" کہ اس کی حقیقت" و اند فی اصل الکتاب "حقیٰ چنانچہ اصل کے لیے" ام "کا لفظ مستعار لے لیا گیا اور اس کی علت یہ ہے کہ جس طرح اصل سے فرع کا نشو ونما ہوتا ہے' اس طرح ماں اولا د کے نشو ونما پانے کی جگہ ہے اور اس کی حکمت یہ ہے کہ جو چیز مرئی (وکھائی دینے والی) نہیں' اس کی ایسی مثال پیش کی جائے کہ وہ مرئی ہوجائے اور اس طرح سننے والا ساع کی حد سے منتقل ہو کر آئکھوں سے دیکھنے کی حد میں پہنچ جائے' یہ چیز علم میں حد درجہ بلیغ ہے۔

اورجو چیز کہ جلی (روش) نہیں ہے اس کے ایضاح کی الی مثال کہ وہ جلی ہو جائے ول باری تعالیٰ ' وَاخْدِ فِی صُلْ لَهُ مَا جَنَاحَ الدُّلِ '' (بی اسرائیل ۲۳۰) ہے کہ اس ہم او ہے ہے کہ بیٹے کورجمت اور مہر بانی کے طور پر مال باپ کے سامنے عاجزی کرنے کا حکم ویا جائے ۔ ''لھا''لفظ' ذل '' کے ساتھ پہلے'' جانب' کی طرف استعارہ کیا گیا'اس استعارہ کی قریب تر تقدیر ہے'' واخفض لھما جانب اللال ''یعن تو فروتی کے ساتھ اپنے پہلوکو جھکا۔ اور یہال استعارہ کی حکمت ہے ہے کہ نا قابل دید چیز کونمایاں اور نظروں کے سامنے کردیا جائے' تا کہ بیان میں صن پیدا ہواور چونکہ اس مقام پر مراد ہی کہ بیٹا اپنے والدین کے سامنے عاجزی اور اکساری کرے کہ کوئی ممکن پہلوفر وتی کا باقی نہ چھوڑے' اس لیے بیضرورت ہوئی کہ استعارہ میں ایہ الفظ لیا جائے' جو کہ پہلے لفظ سے زیادہ بلیغ ہو چنا نچہ اس غرص ہے'' جناح' '' کا لفظ لیا میں اس طرح کے معنی پائے جاتے ہیں' جو پہلو جھکا نے سے حاصل نہیں ہو ہے' مثال پہلوکا جھکا نا یہ بھی ہے کہ کوئی شخص اپنا باز وتھوڑ اسانیجا کردے اور یہاں مراد یہ ہے کہ اس قدر طرح کے پروں کا ذکر کیا جائے 'گویا بالکل فرش ہو جائے اور یہ بات بجر اس کے پرندوں کی طرح کے پروں کا ذکر کیا جائے اور کی صورت میں ممکن نہیں تھی۔

اور مبالفہ کی مثال ہے قول باری تعالی: ' وَ فَجَوْنَا الْآرْضَ عُیُوْنًا ' (القر: ١١) که اس حقیقت ' و ف جونا عیون الارض ' ہے یعنی ہم نے زمین کے چشموں کو جاری کیالیکن اگر اس کی تعبیر کردی جاتی تواس میں وہ مبالغہ بھی نہ آتا 'جو کہ پہلی عبارت میں ہاور یہ ظاہر کرتا ہے کہ تمام روئے زمین چشموں کا منبع ومرکز بن گئی ہے۔

قرآن حکیم کے کنامیاورتعریض کابیان

بلاغت کی انواع اور اسالیب فصاحت میں سے کنایہ اور تعریض بھی ہیں اور یہ بھی واضح رہے کہ کنایہ تصریح کی بہنست زیادہ بلیغ ہوتا ہے اہل بیان نے کنایہ کی تعریف یہ کی ہے کہ کنایہ ایسالفظ ہوتا ہے جس سے اس کے معنی کالازم مرادلیا جائے۔

كنايه كے كئ اسباب بين:

- (۲) دوسراسب بیہ ہے کہ کنابیاس لیے کرتے ہیں کہ تصریح کرنافتیج اور بُر امتصور ہوتا ہے ۔ چنانچہ ایسی جگہ کنابیہ بی مناسب ہے۔ مثلاً الله تعالی نے جماع کے لیے'' مسلامسیہ' مباشر ہ' افضاء' رفٹ' دخول''اور'' سر'' قول باری تعالیٰ'' وَلَیکنُ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ سِسرٌّا''(القرہ:۲۳۵)'' ہال ان سے خفیہ وعدہ ندر کھو' میں کے ساتھ بہطور کنابیہ بیان فر مایا سے۔
- (٣) تیسراسب بلاغت اور مبالغہ کا قصد ہے جیسے اللہ تعالیٰ کا قول ہے: '' اُوْ مَنْ یُنْشُوْ فِی الْمِحلَيةِ وَهُوَ فِی الْمِحْصَامِ غَیْرٌ مُبِیْنِ O ''(الزخن ۱۸۰)'' اور کیاوہ جو گہنے میں پروان چر سھے اور بحث میں صاف بات نہ کرے' اس میں عور توں کی نسبت سے کنا سے کہ وہ آرام پسندی اور بناؤ سنگار کے شوق میں پروان چڑھ کر ایسی ہوٹری ہیں کہ معاملات میں غور کرنا اور بناؤ سنگار کے شوق میں پروان چڑھ کر ایسی ہوٹری ہیں کہ معاملات میں غور کرنا اور باریک معانی کو سجھنا ان کے بس کاروگنہیں ہے۔

اگرالله تعالی یہاں پر السساء ''کالفظ لاتا تواس سے یہ بات ہر گزنه تکلی اور پھر مقصد یہ قاکہ ملاکہ سے اس بات کی نفی کی جائے اور الله تعالیٰ کا قول 'بَلْ یَدَاهُ مَبْسُو طَعَانِ '' الله که دووکرم کی بے کراں وسعت سے کنامہ ہے۔

(٧) چوتھا سبب بیہ ہے کہ اختصار مقصود ہوتا ہے 'مثلاً متعدد الفاظ کومحض ایک'' فعل' کے لفظ

(۵) پانچواں سبب کسی شخص کے انجام پر آگاہ کرنے کی غرض سے کنامیہ کیا جاتا ہے مثلاً قول باری تعالیٰ ' تَبَّتْ یَدَا اَبِی لَهَبِ ''(اللهب:۱) یعنی وہ جہنمی ہے اور آخر کاراس کا ٹھکا نا اورلوٹنے کی جگہ ' لهب ''یعنی آتش دوز خے۔

اور'' حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ٥ فِي جِيْدِهَا حَبْلُ ''(اللهب:٥-٣) يعنى چغل خورعورت كا مقام آخرت اوراس كا انجام كاربيهوگا كه وه جنهم كا ايندهن بن گی اوراس كی گردن میں طوق ہوگا۔

تعریض جتریض کنایہ کے قریب المعنی ہے ان دونوں کے درمیان فرق بہت باریک سا ہے۔

علامه سيوطى رحمة الله تعالى كا قول ب:

کنایہ اور تعریض کا فرق لوگوں نے مختلف الفاظ میں بیان کیا ہے اور وہ فرق تقریبا ایک ہی طرح کی عبارتوں پر مشتل ہے۔

علامہ زخشری کا قول ہے کہ ایک چیز کو اس کے لفظ موضوع لہ کے سوا دوسرے لفظ کے ساتھ ذکر کرنا کنا ہے ہے۔

اورتعریض بہ ہے کہ ایک شے کا ذکر اس غرض سے کیا جائے کہ اس سے غیر مذکور شے پر دلالت قائم ہو سکے۔

علامه سکا کی بیان کرتے ہیں:

تعریض وہ ہے جس کا بیان کسی غیر مٰد کورموصوف کے لیے کیا جاتا ہے۔

اور منجملہ تعریض کے ایک بات سے کہ مخاطب ایک شخص ہوا درمرا دکوئی اور شخص ہو۔ تاریخ

O اورتعریض بھی اس غرض سے ہوتی ہے کہ موصوف کی قدرت ومنزلت کی بلندی کوظاہر کیا جائے جیتے ' وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ ذَرَجَاتٍ ''(البقرہ: ۲۵۳)'' اورکوئی وہ ہے جے سب

يردرجول بلندكيا".

یعن محد مصطفے علیہ التحیة واللثناء کا نام اسم گرامی ایبا ہے جو بھی مشتبہ ہیں ہوسکتا۔ یا مخاطب سے لطف آمیز لہجہ میں گفتگو کرنے اور سخت کلامی سے احتر از کرنے کے لیے

تعریض کواستعال کرتے ہیں۔

مثلًا الله تعالى كاارشاد ہے:

''لَئِنُ أَشْوَكُتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ ''(الزمر: ٦٥)'' (اح مخاطب!)اگرتونے الله كساتھ شريك كياتو تيرے سے عمل ضرورضا ئع ہوجا كس كے''۔

اس آیت کریمہ میں بہ ظاہر روئے بخن حضور ملتی کی المرف ہے ' مگر مراد دوسرے لوگ ہیں اس کہ وجہ بیہ ہے کہ حضور ملتی کی لیا ہے۔ لوگ ہیں اس کہ وجہ بیہ ہے کہ حضور ملتی کی لیا ہے۔

خبراورانشاء كابيان

کلام کی صرف دونشمیں ہیں:خبراورانشاء۔

علم نحو کے ماہرین اور تمام اہل بلاغت کا اس بات پر اتفاق ہے کہ کلام خبر اور انشاء صرف دوہی قسموں میں منحصر ہے۔ دوہی قسموں میں منحصر ہے۔ ان کے سواکلام کی کوئی تیسری قسموں میں منحصر ہے۔

خبر: وہ کلام ہے جس میں صدق اور کذب داخل ہوتا ہے اور انشاء اس کے خلاف ہے۔

خبر کے مقاصد: خبر سے مقصود مخاطب کو کسی حکم کا فائدہ پہنچانا ہوتا ہے اور بھی خبر اس مقصد کے علاوہ دیگر اغراض کے لیے بھی آتی ہے جو حسب ذیل ہیں:

(۱) امر كم عنى مين جيئ و الله والله الله يسر ضعفن "(البقره: ٢٣٣) اور ما كيس دوده يلا كيل -

(۲) نمی کے معنی میں جیسے 'لَا بَسَمَشُهُ اِلَّا الْسَمُطَهَّرُ وُنَ O' (الواقد: 29) نہ چھو کیں اسے مگریا ک لوگ۔

") دعا کے معنی میں جیسے ' اِیّاكَ مَسْتَعِین '' (الفاتح: ٣) اور تجمی سے مدد جا ہیں۔

(٤٠) دعاضرروبلاكت كمعنى من "تبتت يَدَا آبِي لَهَبٍ وَتَبَّ "(اللبب:١) تباه مو

جائیں ابولہب کے دونوں ہاتھ اوروہ تباہ ہوہی گیا۔

ای طرح ''غُلَّتْ اَیْدِیْهِمْ وَلُعِنُواْ بِمَا قَالُواْ ' (المائدہ: ۱۳)خودان کے ہاتھ بندھے ہوئے ہیں اوران کے ای قول کی وجہ سے ان پرلعنت کی گئی۔

بعض علماء نے ''حصرت صدور هم ''کوبھی ای قبیل سے قرار دیا ہے اور کہا کہ یہ ان کے خلاف دعا ہے کہ اللہ تعالی ان منافقین مدینہ کے دلوں کو یوں ہی تنگی اور گھٹن میں رکھے کہ وہ بد بخت جنگ احد کے لیے آ مادہ نہ تھے۔

فصل

انثاء کی اقسام میں ہے ایک قسم استفہام ہے اور وہ استخبار کے معنی میں آتا ہے' یعنی کسی چیز کے بارے میں کچھ دریافت کرنا اور پوچھا۔ اور جس لفظ کے ساتھ کوئی بات پوچھی جائے' اے' ادات' استفہام کہتے ہیں۔

ادوات استفهام كابيان

(۱) ہمزہ مفتوح لینی اس کا مطلب ہے: کیا۔

(٢) "هَلْ"اس كامطلب ب: كيا؟

(٣) "مَا" كياچيز؟

(4) "من "كون اوركس في؟

(۵) "اتي" كون سا؟

(١) "كُمْ"كُتْع؟

(٤) "كَيْفَ"كيے؟

(٨) "أَيْنَ" كَهَال؟

(9) "آنی" کیئے کہاں ہے کب؟

(١٠)"مَتِي"كبِ؟

(١١) "أَيَّانَ"كِ

استفہام کی معنوں کے لیے آتا ہے۔

(1) انكار: اس مينفي كے لحاظ سے استفهاميم فهوم يا ياجا تا ہے اور اس كا مابعد منفى موتا ہے اى

وجهاس كساته' إلا "حرف استناء ضرورة تاب-جيسار شاد بارى تعالى ب:

''فَهَلَ يُهْلَكَ إِلَّا الْقَوْمُ الْفَاسِقُوْنَ 'O' (الاحقاف: ٣٥)'' تو كون ہلاك كيے جائيں گرب حكم لوگ' اور' وَهَلُ نُجْزِي إِلَّا الْكَفُوْرَ '' (ساء: ١١)' اور ہم كے سزادية اى كو جوناشكرائے' اور قول بارى تعالىٰ' مَنْ اَضَلَّ اللّهُ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نَّاصِرِیْنَ '' (الروم: ٢٩)' جے خدانے گراہ كرديا اور ان كاكوئى مددگار نہيں' ميں ايے ہى استقبام پر منفى كاعطف ڈالا گياہے' جس خدانے گراہ كرديا اور ان كاكوئى مددگار نہيں' ميں ايے ہى استقبام پر منفى كاعطف ڈالا گياہے' جس كامعنى ہوا' لا يهدى 'اور اى كى مثاليں ہيں۔' اَنُوْمِنُ لَكَ وَاتّبَعَكَ الْاَرْ ذَلُونَ '' (الشراء: ١١١)۔' بولے ہیں'۔ '' بولے : كيا ہم تم پر ايمان لے آئيں اور تبہار ہے ساتھ كينے ہوئے ہيں'۔

O ''اَنُّوُّ مِنُ لِبَشَوَيْنِ مِغْلِنَا (ای لا نومن)''(المؤمنون:۳۵)'' کیا ہم ایمان لے O آکیں اپنے جیسے دوآ دمیول پڑ'۔

O "أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ O" (طور: ٣٩)" كيااس كوبيثيال اورتم كوبين" .

(اَلَكُمُ اللَّا كُورُ وَ لَا الْأَنْشَى ' (النجم: ٢١) (لَّعِنْ ' لا يكون هذا ') كياتم كوبيثا اورا ب
 كوبين _

'' اَشَهِدُواْ خَلْقَهُمْ ''(الزفرف:١٩) (ليعنی'' ما شهدوا'') کياان کے بناتے وقت بيد
 حاضر تھے۔

اوراکشر احوال میں تکذیب بھی اس کے ساتھ ہی پائی جاتی ہے اور وہ ماضی میں بہمعنی اللہ یکن ''اور مستقبل میں بہمعنی'' لا یکون ''آتی ہے جیسے اس کی مثال ہے:'' اَفَاصُفا کُمُ رَبُّکُمْ بِالْبَنِیْنَ ''(بی اسرائیل: ۲۰)'' کیاتمہارے رب نے تم کو بیٹے چن لیا''(یعنی' لم یفعل ذلك'') اَوْرَقُول باری تعالیٰ' اَنْ لَمْ رُمُحُمُّوْ هَا وَاَنْتُمْ لَهَا کُرِهُوْنَ ''(هود: ۲۸) (یعنی' لا یکون هذا الالزام'') کیا ہم اسے تہارے چیپیٹ دیں اور تم بیزار ہو۔

وررامعیٰ ' توبیخ '' ہے اورای کو' تفری '' ہے بھی تعبیر کیاجا تا ہے۔ مثالیں:
(۱) '' اَفَعَصَیْتَ اَمْرِی '' (طٰ: ۹۳) تو کیاتم نے میراتکم نہ مانا (ب) '' اَتَعَبُدُونَ مَا تَنْحِتُونَ '' (الصَّفَة: ۹۵) کیا این ہاتھ کے تراشوں کو پوجتے ہو (ج) '' اَتَدُعُونَ بَعْلًا وَتَنْحَدُونَ بَعْلًا وَتَنْ اللّٰهُ عَدَاللهِ اللّٰ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ ال

ہوں اور ان کے کرنے پر ڈانٹ پلائی جاتی ہے کہ ایسا کیوں کیا ہے جیسا کہ اس کی مثال گزر چکی ہے۔

اور کبھی تو یہ کسی عمل کے ترک کیے جانے پر ہوتی ہے کہ جس کو کرنا جا ہے تھا اور اسے ح چھوڑ ناموز وں اور مناسب نہ تھا۔

جيےاس كى مثال الله تعالى كايةول ،

'' أَوَلَـهُ نُعَمِّرٌ كُمُّ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَنْ تَذَكَّرَ ''(فاطر:٣٤)اوركياجم نے تنہيں وہ عمر نه دئ تھی جس میں سمجھ لیتا جیسے سمجھنا ہوتا۔

اور نيزيد آيت 'ألَمْ تَكُنُ أَرْضُ اللهِ وَاسِعَهُ فَتُهَاجِرُوْا فِيهَا ''(النساء: ٩٥)' كيا الله يَ الله يَ الله عَن كثاره في الله عن الله عن الله عن كثاره في كم الله عن الله عن الله عن كثاره في كم الله عن الله ع

تیسرامعنی" تقریر" ہے اور وہ مخاطب کو کسی ایسے امر کے اقر ار اور اعتراف پر آمادہ کرنے کا نام ہے جواس کے نزدیک ثابت شدہ اور قر ارپذیر ہو چکا ہو اس وجہ سے اس پر صریح موجب (مثبت) کلام کا عطف کیا جاتا ہے اور اس کا عطف بھی صریح موجب کلام پر بی کیا جاتا ہے۔ یہ کیا جاتا ہے۔

اوّل یعنی اس پر کلام موجب کے عطف کیے جانے کی مثال' اللہ تعالیٰ کا ارشاد "وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ "(الانشراح:١-٢)" كيا ہم نے تمہاراسينه كشاده نه كيا اورتم پر سے تمہارابو جھا تارليا"۔

'' آگم یَجِدُکَ یَتِیْمًا فَاوْی ''(الفی: ۲)'' کیااس نے تنہیں یتیم نه پایا پھر جگه دی''۔ '' آگم یَجْعَلْ کَیْدَهُمْ فِنْی تَصْلِیْلِ ''(افیل: ۲)'' کیاان کا داؤتا ہی میں نه ڈالا''۔ اور دوسری شق (لیعنی استفہام تقریری کے کلام موجب پر معطوف ہونے) کی مثال

''اَکَذَّبْتُمْ بِالْاتِی وَلَمْ تُحِیْطُوا بِهَا عِلْمًا''(الله: ۸۴)'' کیاتم نے میری آیتیں حجلا کیں حالانکہ تہاراعلم ان تک نہ پنچاتھا''۔

جيها كه علامه جرجانى نے تقرير كى ہاور ثابت كيا ہے كه يه آيت الله تعالى ك قول " وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًا " (انهل: ١٣) ك قبيل سے اور اور

ان كمنكر موے اور ان دلول ميں ان كا يقين تھا ظلم اور تكبر سے)اور استفہام تقرير كى حقيقت بيہ كدوہ استفہام انكارى ہے اور انكار فى ہے (اور بے شك وہ فى پرداخل ہوا ہے) اور يہ سلمہ قاعدہ ہے كدفى كنفى اثبات موتا ہے استفہام تقريرى كى مثالوں ميں سے ايك بيہ بيت الله بيكافي عَبْدَة " (الزمر: ٣١)" كيا الله اسے بنده كوكافى نہيں "۔

ای طرح بیآیت بھی ہے:'' اَلَسْتُ بِسرَبِیکُم''(الاعراف:۱۷۲)'' کیا میں تمہارارب نہیں''۔

علامہ زمخشر ی نے ارشادِ خداوندی' اُلَمْ مَنْعُلَمْ اَنَّ اللَّهُ عَلَى مُحَلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ'' (البقرہ:۱۰۷)'' کیا تجھے خبرنہیں کہ اللہ سب کچھ کرسکتا ہے' کو بھی اس کی مثال بتایا ہے'۔

چوتھامعیٰ'' تعجب یا تعجیب'' ہے مثلاً'' تکیف تکفرُون بِاللّٰهِ''(البقرہ:۲۸)'' بھلاتم کیونکہ خدا کے منکر ہوئے''اور'' مَالِی لَآ اَرَی الْهُدُ هُدُ''(انمل:۲۰)'' کیا ہوا کہ میں ہد ہدکو نہیں دیکھتا''اور بیشم اور سابق دونوں قسموں کواسٹھی مثال اللہ تعالیٰ کا بیقول''اَتَا مُوُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ''(البقرہ:۴۲)'' کیا لوگوں کو بھلائی کا حکم دیتے ہو'' ہے۔

علامہ زخشری نے کہا کہ اس آیت میں ہمزہ استفہام تقریر کے معنی میں تو بیخ کے ساتھ وارد ہے اوران کی حالت پراظہار تعجب بھی ہے۔اور آیت کریمہ' مَا وَلَٰہُمْ عَنُ قِبْلَتِهِمُ'' (البقرہ:۱۳۲)'' پھیردیامسلمانوں کوان کے قبلہ سے'' میں تعجب اور استفہام حقیقی دونوں کا احتمال موجہ ہے۔

یا نیجوال معنی ہے: 'عتاب '' (ناراضگی اور خفگی کا اظہار کرنا) جیسے اللہ تعالیٰ کا قول ہے: '' اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ ٰامَنُوْا اَنْ تَخْشَغَ قُلُوْ بُھُمْ لِذِکْرِ اللّٰهِ '' (الحدید:۱۱)'' کیاایمان والوں کو ابھی وہ وقت نہ آیا کہ ان کے دل جھک جائیں اللّٰہ کی یاد کے لیے'' اور سب سے لطیف عمّا ب وہ ہے جو اللّٰہ تعالیٰ نے اینے محبوب افضل کا نئات مائٹہ لِیکھے پر کیا ہے' اللّٰہ تعالیٰ فرما تا ہے:

"غَفَا اللَّهُ عَنْكَ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ" (الوب: ٣٣)" اللَّمْهِين معاف كرے تم في انہيں كيوں اون دے ديا"۔

 تَعَبُّدُوا الشَّيْطَنَ "(يُس: ٢٠) أن الماولادِ آدم! كياميس نع مصعهد خدليا تقاكه شيطان كو خديد الشَّمُواتِ خي بنا به شيطان كو خي بنا به وه تهارا كلا وثمن بناور الله الله الله السَّمُواتِ وَالْاَدُونِ "(البقره: ٣٣)" فرمايا: ميس نه كهتا تقاكه ميس جانتا مول آسانول اور زمين كى سب جي موكى چزين "-

'' هَـلْ عَـلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَأَخِيْهِ''(يسف: ٨٩)'' (بولے:) بَهُ هِجْرَبُمْ نے پوسف اوراس کے بھائی کے ساتھ کیا کیا تھا؟''

ساتوال معنی ہے: '' افتخار' جیسے 'آگیس لی مُلُكُ مِصْرَ '' (الزفرف:۵۱)'' كيامير بے ليے مصر كى سلطنت نہيں''۔

آ تُقُوال معن '' تَقْخِم '' (عظمت اور برائی کا اظهار) جیسے ' مَالِ هلذَا الْکِتنْبِ لَا یُغَادِرُ صَغِیْرَةً وَلَا تَجَبِیْرَةً '' (الکہف: ۴ می)'' اس نوشتہ کوکیا ہوا نہ اس نے کوئی چھوٹا گناہ چھوڑ ااور نہ بڑا''۔

نوال معن '' تہویل اور تخویف' ہے (ڈرانا)' مثلاً' اُلْہُ حَاقَةٌ ٥ مَا الْہُ حَاقَةٌ ٥ '' (الحاقة: ۱۰۳)' وہ ق ہونے والی ۵ وہ ق ہونے والی ۵ ''اور' اَلْهَادِ عَهُ ٥ مَا الْهَادِ عَهُ '' (القاره: ۱۰۳)' دل دہلانے والی کیا وہ دل دہلانے والی ۵ ''

دسوال معنی سابق کے برعکس ہے اور وہ ہے" تسہیل اور تخفیف" (یعنی آسانی اور زی)
جیے 'وَ مَا ذَا عَلَيْهِمْ لَوْ 'امَنُوْا' (النساء: ۳۹)' اور ان کا کیا نقصان تھا اگر ایمان لاتے'۔
گیار هوال معنی' تہد بداور وعید' ہے (وحملی وینا) جیسے 'آلمہ نَھِلِكِ الْاَوَّلِیْنَ ' (الرسلات: کیا ہم نے اگلوں کو ہلاک نہ فرمایا'۔

بارهوال معنی "تسویه" بئ بیده استفهام بے جوایسے جمله پر داخل ہوتا ہے جس کی جگه مصدر کولا ناصیح ہوتا ہے جس کی جگه مصدر کولا ناصیح ہوتا ہے جسے "سَوا " عُلَيْهِمْ ءَ أَنْذَرْ تَهُمْ أَمْ لَمْ تُنْذِرْ هُمْ " (البقره: ٢) "أنبيس برابر ہے جا ہے تم أنبيل ڈراؤ باند ڈراؤ"۔

تيرهوال معنى ب: "امر" جيك اسلمتم ليعن اسلموا فهل انتم منتهون "يعنى انتهوا" اور" اتصبرون "ليعن" اصبروا" _

چودھوال معنی'' تنبیہ' ہاوروہ امری کی ایک سم ہے جیسے' اَلَمْ قَوَ اِلَی رَبِّكَ كَیْفَ مَدَّ السِظِّلَ ''(ای انسطر)(الفرقان:۵م)' اے محبوب! کیاتم نے اسپے رب کوندد یکھا کیسا

يھيلاياسايا"۔

اورالله تعالیٰ کایہ قول' مَا غَرَّكَ بِسرَبِّكَ الْكُویْمِ ''(الانفطار:٢) (لینیُ' لا تبغتر '') '' کس چیز نے فریب دیاہے'اپنے کرم والے رب ہے''۔

سترھوال معنی ہے:'' دعاء''اور یہ بھی نہیں کی طرح ہے' مگر یہ کہ دعاءاد نیٰ سے اعلیٰ کی طرف ہوتی ہے' جیسے مثلاُ' اَتُهْلِکُنا بِمَا فَعَلَ الشَّفَهَآءُ''لِعِیٰ' اَتُهْلِکُنا'' (الاعراف: ۱۵۵) '' کیا تو ہمیں اس کام پر ہلاک فرمائے گاجو ہمارے بے عقلوں نے کیا''۔

اٹھارھوال معنی ہے:''استر شاد'' (طلب ہدایت) جیسے' اَتَہ جُعَلُ فِیْھَا مَنْ یُّفُسِدُ فِیْھَا'' (البقرہ:۳۰)'' کیاا یسے کونائب کرےگا'جوان میں فساد پھیلائے''۔

فصل

انشاء کی ایک قتم امر ہے اور امر طلب فعل کا نام ہے نہ کہ فعل سے رکنے کا اور امر کا صیغہ مرز افعل '' افعل'' افعل'' امرا یجاب کے معنی میں حقیقت ہے جیئے' اقید مدوا الصلوہ'' کا نماز قائم کرو' فلیصوا معک'' امر کے مجازی معانی۔

امر کے مجازی معانی

امر کے حقیقی معنی تو وجوب ہے اور مجھی امر دیگر معنوں کے لیے بھی استعال ہوتا ہے اور وہ اس کے مجازی معنی ہیں' جیسے:

(١) ندب إس كى مثال الله تعالى كايدار شاوي: "وَإِذَا قُرِيَّ الْقُرِّ انْ فَاسْتَمِعُوا لَهُ

وَ اَنْصِتُواْ الْ الاعراف: ٣٠٣) أورجب قرآن بإهاجائة واست كان لگا كرسنواور خاموش ربوئ-

(۲) اباحت عليه فكاتِبُوهُم "(الور: ۳۳)" توانبيس آزادى لكهددو "امام شافعى رحمة الله عليه فرماتے بين: اس آيت بيس امر اباحت كے ليے وارد ہوا ہے اور اس قتم سے بيقول بھى ہے اللہ تعالى ارشاد فرما تا ہے:

" وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا" (المائده: ۲)" اور جب احرام سے فارغ ہوجاؤ توشکار کر علیہ ہو" ظاہر سے شکار کرنا واجب نہیں ہے مہاتے ہے۔

(٣) دعاء ٔ یدادنی سے اعلیٰ کی طرف امر ہوتا ہے جیتے ' رَبِّ اغْفِر لِی ''(نوح:٢٨)'' اے میرے رب! مجھے بخش دے'۔

(س) تہدید (دھمکی) جیسے 'اعملوا ما شئتم ''(خم اسجدہ: ۳)' جوجی میں آئے کرو' کیونکہ یہاں میمرادنہیں ہے کہ ان کوامرویا جارہا ہے کہ وہ جوجا ہیں کریں۔

(۲) تسخیر ایعنی ذلیل بنانے کے لیے جیسے "محوفو اقر دَقَّ "(القرہ: ۱۵)" کہ ہوجاؤ بندر"۔

اس میں ان معذب لوگوں کے ایک صورت سے دوسری صورت میں منتقل ہونے کوتعبیر

کیا ہے اور بہتدیلی شکل ان کوذلیل ورسوا کرنے کے لیے تھی اور بہانت سے خاص تر

امر ہے۔

(2) تعجیز (عاجز بنادینا) بھیے 'فَاتُوْ ا بِسُورَةِ مِّنْ مِّنْلِهِ ''(القرہ: ۲۳)'' تواس جیسی ایک سورت تو لے آؤ'' کیونکہ مرادان سے اس بات کوطلب کرنانہیں ہے بلکہ ان کے عجز کا اظہار مقصود ہے۔

امتنان (احسان جمانا) بيسے 'محلُوا مِنْ ثَمَرِ ﴿ إِذَا اَثْمَرَ ' (الانعام:١٣١) ' كھاؤاس
 كا پھل جب پھل لائے '۔

O تعجب جيئے 'أنْ ظُورْ كَيْفَ صَرَبُوْ اللّهَ الْأَمْثَالَ ''(بى اسرائل: ۴۸)' ويكھوانہوں في تعجب ميئے 'أنْ ظُورْ كَيْفَ صَرَبُوْ اللّهَ الْأَمْثَالَ ''(بى اسرائل: ۴۸)' ويكھوانہوں في تعجب ميئى تشبيب وين'۔

- O تسوید (برابر کرنا) بیتے فاصیرو آآو کا تصیر و آ' (القور:١٦) اب چاہومبر کرویا ندکرونا
- ارشاد جیئے 'وَاَشْهِادُوْآ إِذَا تَبَايَعُتُمْ ''(البقره:٢٨٢)' اور جبخریدوفروخت کروتو
 گواه کرلؤ'۔
- O انذار (ذَرانا) 'جِيبِے' قُلْ تَمَتَّعُوْا '' (ابراہیم: ۳۰)'' فر ماد یجئے (کچھے) فائدہ اٹھالؤ'۔
- اکرام'جینے' اُڈ خُسلُوْ ها بِسَلَامٍ ''(الحجر:٣٦)'' (ان سے کہاجائے گا:)تم ان میں
 داخل ہوجاؤ سلامتی کے ساتھ''۔
- انعام (نعمت كى يادد مإنى) جيئے "كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ" (الانعام: ۱۳۲) كھاؤاس
 انعام (نعمت كى يادد مإنى) جيئے "كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ" (الانعام: ۱۳۲) كھاؤاس
- O تَكْمُدْيبُ جِيبُ 'فُلُ فَاتُوْا بِالتَّوْرَاةِ فَاتْلُوْهَآ ''(آلٸران: ٩٣)'' ثم فرماؤ توريت لا كريزهؤ'۔
- " قُلُ هَلُمَّ شُهَدَاءً كُمُ الَّذِينَ يَشُهَدُونَ اَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هُذَا "(الانعام:١٥٠)
 " آ بِفر ما سَين: تم اين وه گواه لا وُجو گوائ دين الله نے اسے حرام کيا" _
 - O مشوره عيض فَانْظُر مَاذَا تَرِي "(الصَّفْت:١٠٢)" ابتود كيم تيري كيارائ هـ"-

فصل

نہی بھی انشاء کی ایک قتم ہے' نہی کسی کام ہے رکنے کے مطالبہ کو کہتے ہیں' نہی کا صیغہ' لا تفعل'' ہے۔ نہی کا حقیقی معنی تحریم ہے اور مجاز اُدیگر معانی کے لیے بھی اس کا ورود ہوتا ہے' جو حسب

ذيل بين:

- (۱) كرابت جيئ و لا ته مش في الأرض مَوَحًا "(بى اسرائيل: ۳۷)" اورزيين مين مي الراتان چل" -
- (٢) وعاء جيئ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا ''(آلعران: ٨)' الدرب! ماردول ثير هانه مر''_
 - (٣) ارشاوجیے 'لَا تَسْئَلُوْا عَنْ اَشْیَآءَ اِنْ تَبُدَ لَکُمْ تَسُوَّ کُمْ ''(الما کده:١٠١)
 ''ایی باتیں نہ پوچھوجوتم پرظاہر کی جا کیں تو تمہیں بری لگیں ''-
 - (م) تسويه بيية أوْلَا تَصْبِرُوْا "(الفور:١١)" (اب چاہو) صبر كرديانه كرد" ـ
- (۵) اختقاراً ورتقلیل جیے' وَلا مَـمُدَّنَّ عَیْنینک ''(طُناس)'' اوراے سننے والے! اپنی آئکھیں نہ پھیلا' 'یعنی وہ چیز قلیل اور حقیر ہے۔
- (۲) عاقبت 'مثلا'' وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوْ اللهِ سَبِيْلِ اللَّهِ اَمُوَاتًا بَلْ اَحْيَاءٌ''(آل عران: ۱۲۹)'' اور جوالله کی راه میں مارے گئے' ہرگز انہیں مردہ نه خیال کرو بلکه وہ اپنے رب کے یاس زندہ ہیں' یعنی جہاد کا انجام حیات ہے موت نہیں۔
 - (2) یاس (ناامیدی) جیسے لا تَعْتَذِرُو ا "(الوب: ٢٦)" بہانے ند بناؤ"۔
- (٨) المانت عيض أخستُ وافيها ولا تُكلِّمُون "(المؤمنون:١٠٨)" (رب فرمائكا:) وهتكار يرد ربواس من اور مجمد بات ندكرون -

سورتوں کےفواتح کابیان

واضح رہے کہ اللہ تعالی نے قرآن کھیم کی سورتوں کا آغاز کلام کی دس انواع کے ساتھ فرمایا ہے اور کوئی سورت ایسی نہیں جوان دس انواع میں سے کسی نہ کسی نوع میں داخل نہ ہو۔

- کہلی نوع اللہ تعالیٰ کا ثناء کرنا ہے چنانچہ پانچے سورتوں میں تحمید ہے اور دوسورتوں میں "تباد ك" ہے اور سات سورتوں میں شہیج ہے افتتاح فرمایا ہے۔
 - دوسری نوع حروف جی بی ان کے ساتھ انتیس سورتوں کوشر دع کیا ہے۔
- ص تیسری نوع نداء ہے بیدوس سورتوں میں وارد ہوئی ہے پانچے سورتوں میں رسول کریم ملی میں اسول کریم ملی میں کا میں کا میں کا میں استخطار کے نام میہ ہیں: الاحزاب الطلاق التحریم المزمل اور المدرثر

اور پانچ سورتوں میں امت کونداء کی گئی ہے جوحسب ذیل ہیں: النساءُ المائدہُ الجُجُّ الحجرات اورالمتحذبہ

- O چوتھی خبریہ جملے ہیں مثلا
- O "يَسْنَلُوْنَكَ عَنِ الْأَنْفَالِ" (الانفال: ١) " احْجوب! تم سَفْيَمُون كو يوجع بي".
- O "بُوَاءَ أَهُ مِّنَ اللهِ" (التوبه: ۱)" بيزاري كاعكم (سنانا ہے الله اور رسول كى طرف سے)"۔
 - O "أَتَّى أَمْرُ اللَّهِ" (الخل: ا)" اب آتا بالله كاحكم".
- ۔ ''اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ''(الانبياء:۱)'' قريب آگيا ٻے لوگوں کے ليے ان کے ان کے (انتمال کے) حساب کا وقت'۔
 - O "فَدْ أَفْلُحَ الْمُوْمِنُونَ " (المؤمنون: ١) "بِشك مرادكو يَغِيج ايمان والـ "
 - O "شُوْرَهُ أَنْزَلْنَهَا" (النور: ۱) "بيايك سورت بكهم في اتارى".
 - O "تَنْزِيلُ الْكِتْبِ" (الزمر:١)" كمّاب اتارنائے"۔
 - O ''اللَّذِيْنَ كَفَرُوا''(مُهذا)'' جنهوں نے كفركيا''
 - 0 "إِنَّا فَتَحْنَا" (الفِّحَ: ١)" بِشك م نِ تمهار ل ليروش فتَّ دي".
 - O "إِفْتُوبَتِ السَّاعَةُ" (القر: ا)" ياس آئي قيامت".
 - O "الرَّحْمَٰنُ O عَلَّمَ الْقُرُ انَ O" (الرَّمَٰن: ١-١) "رَحَٰن نے اینے محبوب کوقر آن سکھایا"۔
 - نقد سَمِعَ اللهُ "(الجادله:١)" بِشك الله في سنا".
 - O "اللُحَاقَةُ" (الحاقه: ١) "وه تل بونے والی"
 - O "سَالَ سَآئِلٌ" (العارج:١) "مطالبه كياب ايك سائل ني".
 - O '' إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوْحًا'' (نوح:١)' بِ شِك ہم نے نوح كواس كى قوم كى طرف بھيجا''۔
 - "لَلْآ الْفُسِمْ" (دوجلَّبول میں) (البلد:۱)" مجھائیشہر کی" (القیامہ:۱)" روزِ قیامت کی قشم"۔
 - O "غَبَسَ "(عبس:۱)" تيوري چرهاني" ...
 - O " إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ " (القدر: ١) " ب شك بم في الت شب قدر مين اتارا " _
 - O "كُمْ يَكُنِ" (البينة ا)" ندتيخ".

"القارعة "(القارعة)" ول د بلانے والی"-

نَّ إِنَّا اَعْطَيْنُكَ الْكُوْفَرَ" (الكورُ: ١) أي مجوب! بشك مم في تمهيل بشارخوبيال عطافر ما تين "-

پیکل تحیس (۲۳) سورتیں ہیں۔

یانچویں نوع ہے قتم پندرہ سورتوں کا آغاز قتم سے کیا گیا ہے ان میں سے ایک سورت ایسی ہے جس میں فرشتوں کی قتم یا دفر مائی گئی ہے اور وہ سورہ ' الصّفٰت' ہے۔

اور دوسورتوں یعنی سورہ بروج اور الطارق میں افلاک کی قتم کا ذکر ہے چیر سورتوں میں

لوازم افلاک کی شم کھائی ہے۔

سورہ النجم میں تریا کی قسم اور الفجر میں دن کے مبداء کی قسم ہے۔ الشمس میں آیۃ النہار کی قسم ہے الشمس میں آیۃ النہار کی قسم ہے اور اللیل میں زمانہ کے شطر (نصف حصہ) کی قسم ہے۔ الضحیٰ میں دن کے نصف حصہ کی اور العصر میں دن کے آخری حصہ کی یا پورے زمانہ بھر کی قسم ذکر فرمائی گئی ہے۔

اور دوسورتوں میں ہوا کی شم ہے جو کہ عناصر اربعہ میں سے ایک عضر ہے اور بیالذاریات اور المرسلات کی سورتیں ہیں ۔

اورسورہ الطّور میں مٹی کی قتم ہے اور یہ بھی ان بی کا ایک عضر ہے اورسورہ والتین میں نبات کی قتم ہے۔سورہ الناز عات میں حیوان ناطق کی قتم نکر ہوئی ہے اورسورہ والعادیات میں ان جانوروں کی قتم ہے جو چرند ہیں۔

چشی نوع شرط ہے اور بیسات سورتوں میں آئی ہے جوحسب ذیل ہیں:
 (۱) سورہ واقعہ (۲) سورہ منافقون (۳) سورہ تکویر (۴) سورہ انفطار (۵) سورہ انشقاق
 (۲) سورہ زلزلہ (۷) سورہ نصر۔

سانوین نوع امر ہے اور یہ چھسور توں میں آیا ہے جودرج ذیل ہیں: (۱) ''فُلُ اُوْجِی ''
''امے محبوب! فرمادومیری طرف وحی کی جاتی ہے''(۲)'' اِفُسراُء''(العلق:۱)'' پڑھو'
(۳)''فُلُ آکُافِلُ آیَانُگِهَا الْسُکَافِرُوْنَ ''(الکافرون:۱)''تم فرماؤا کے کافرو!''(۳)''فُلُ هُوَ
اللّٰهُ اَحَدُّ' (الاخلاص:۱)''تم فرماؤوہ اللہ ہے وہ ایک ہے''(۵)''فُلُ اَعُوٰذُ''(الفلق/الناس:۱)''تم فرماؤ میں اس کی پناہ لیتا ہوں'' یعنی'' المعوذین ''۔

(الماعون:۱)_

آ تھویں نوع استفہام ہے اور یہ چھ سورتوں میں آیا ہے: (۱)'' هَلُ اَتَٰی''(الدهر:۱)(۲)'' عَمَّ یَتَسَآءَ لُوْنَ''(النباء:۱)(۳)'' هَلَ اَتَاكَ'' (الغاشیہ:۱)(۴)''اَلَمْ نَشُوّحُ''(الم شرح:۱)(۵)''اَلَمْ قَوَ''(الماعون:۱)(۲)''اَرَایَّتُ''

نوین نوع بددعا ہے اور بددعا ہے صرف تین سورتوں کا افتتاح کیا گیا ہے:
 (ا)''وَیـُـلٌ لِّـلِـمُ طَلِقِفِینَ ''(الطففین ۱۰)(۲)''وَیـلٌ لِّـکُـلِ هُمَـزَقٍ''(الهمز ۱۰))
 (۳)''تَبَّتُ ''(اللہب:۱)۔

قرآنی سورتوں کے خواتم

یہ بھی تحسین کلام میں فواتح کی طرح منفر دھیٹیت کے حامل ہیں'اس لیے کہ یہ کلام کے آ

قر میں درساعت پر دستک دیتے اور گوش گزار ہوتے ہیں'ای وجہ سے یہ سامع کو گفتگو کے اختیام پذیر ہونے سے آگاہ کرنے کے ساتھ معانی کے عجیب پن اور ندرت کے بھی متضمن اختیام پذیر ہونے سے آگاہ کرنے کے ساتھ معانی کے عجیب پن اور ندرت کے بھی متضمن ہو کر آئے ہیں۔ تا آئکہ ان کوئن لینے کے بعد نفس پھر مزید کسی بات کا مشاق اور منتظر نہیں رہتا اور اس کی وجہ یہ ہے کہ سور توں کے خواتم' دعاؤں' پندونصائے' فرائض' تحمید' تبلیل' مواعظ وعد' وعیدای طرح ادر بہت سے امور میں سے کسی امریم شمل ہوتے ہیں۔

مثلاً سورہ فاتحہ کے خاتمہ میں پورے مطلوب کی تفصیل بیان کر دی گئی ہے کیونکہ اعلیٰ مطلوب وہ ایمان ہے جو ضلالت اور معصیت ہے محفوظ ہو کیونکہ نافر مانی اور گراہی غضب اللی مطلوب وہ ایمان ہے جو ضلالت اور معصیت ہے محفوظ ہو کیونکہ نافر مانی اور گراہی غضب الله تعالیٰ نے اپنے قول ' اَلَّذِیْنَ اَنْ عَمْتَ عَلَیْهِمْ ' کا باعث اور ان جملہ باتوں کی تفصیل الله تعالیٰ نے اپنے قول ' اَلَّذِیْنَ اَنْ عَمْتَ عَلَیْهِمْ ' الله تعدیدی '' جن برتو نے احسان کیا' سے بیان فرماوی ہے۔

- اور قرآن کی سورتوں کے خاتے میں دعا آنے کی مثال "سورہ بقرہ" کے خاتمہ کی دو
 آیتیں ہیں۔
 - O اوروصایا کی مثال سوره آل عمران کا خاتمہ ہے۔
- فرائض پرختم ہونے کی مثال سورہ النساء کا خاتمہ ہے۔ اس میں تکتہ اور حسن اختیام کی
 بات یہ ہے کہ اس میں موت کے احکام کا بیان ہے اور موت پر زندہ کا اختیام کار ہوتا

صورہ المائدہ کا خاتمہ مجیل اور تعظیم (عظمت و کبریائی) پر ہوا ہے۔

O اورسورہ الانعام کا خاتمہ وعد اور وعید پر ہوتا ہے۔

سورہ الاعراف کا خاتمہ فرشتوں کے حال کو بیان کر کے انسان کوعبادت خدادندی پر
 آ مادہ و برا مجیختہ کرنے کے ساتھ ہوتا ہے۔

صورہ الا نفال کا خاتمہ جہاداورصلہ رحی (رشتہ داروں کا خیال رکھنا) پرترغیب دلانے کے ساتھ ہوتا ہے۔

صورہ براُ ق کا خاتمہ حضور نبی کریم ملٹی آئیم کے مدح و ثناء 'آپ کے اوصاف عالیہ کے بیان اور تہلیل کے ساتھ کیا گیاہے۔

صورہ یونس کا خاتمہ حضور ملتی گیا ہم کو اللہ تعالیٰ کی طرف ہے تیلی دینے کے ساتھ ہوا ہے اور یوں ہی سورہ ھود کا خاتمہ بھی ہے۔

صورہ یوسف کا خاتمہ قرآن پاک کی مدح اور اس کے وصف کے بیان کے ساتھ ہوا
 ہوا

اور سورہ الرعد كا اختام ہوتا ہے رسول پاك طاق اللہ كى تكذیب كرنے والے كى تردید
 یہ۔

اورخاتمہ سورت کی واضح ترین علامت سورہ ابراہیم کا خاتمہ یعنی بیقول' ھلڈا بلکا عُ لِلنَّاسِ'' (ابراہیم: ۵۲) الآبی اوراس کی مثل الاحقاف کا خاتمہ بھی ہے اور اسی طرح سورہ الحجر کا خاتمہ ہے ۔

ارشاد ہوتا ہے:

" وَاغَبُدُ رَبَّكَ حَتَّى يَأْتِيكَ الْيَقِيْنُ O "(الحجر: ٩٩)" اور مرت وم تك البارب ك عبادت ميں رہو 'اس میں ' یقین " کی تغییر موت سے کی گئ ہا وربیاعلی درجہ کی براعت ہے۔ اور دیکھو! سورہ زلزال کا آغاز کس طرح سے قیامت کے ہولناک احوال ومناظر سے ہوتا ہے اور خاتمہ سورت ' فَمَنْ يَتَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهُ O وَمَنْ يَتَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهُ O وَمَنْ يَتَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ حَيْرًا يَّرَهُ O وَمَنْ يَتَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ

ترجمہ: '' تو جوایک ذرہ بھی بھلائی کرے اسے دیکھے گا اور جوایک ذرہ بھر برائی کرے'

اسے دیکھے گا''۔

اورسب سے آخریس نازل ہونے والی آیت 'وَاتَّقُوْا یَوْمًا تُوْجَعُونَ فِیْدِ اِلَی اللّٰهِ ' (البقرہ:۲۸۱)' اور ڈرواس دن سے جس میں الله کی طرف بھرو گے' میں کس شان سے براعت علوہ گر ہے اوراس میں وفات کی متلزم آخریت کی عکائی کس قدردکش انداز میں ہورہی ہے۔ ای طوہ گر ہے اوراس میں وفات کی متلزم آخریت کی عکائی کس قدردکش انداز میں ہورہی ہے۔ ای طرح سب سے آخر میں نازل ہونے والی سورت النصر میں بھی موت کی طرف اشارہ ملتا ہے' جیسا کدامام بخاری رحمۃ الله علیہ نے سعید بن جبیر کے طریق پر حضرت ابن عباس رسی گائند سے موایت کیا ہے' حضرت عمر فاروق رشی الله و الله و الله و الله تو الله الله الله الله الله کے قول ' إذَا جَاءَ نَصْرُ الله و الله و الله و الله تے جواب دیا: محلات اور شہروں کی قر ایعنی کشور کشائی کی خوشخری) مراد ہے۔

حضرت عمر فاردق رضي آلله نے فر مایا:

اے ابن عباس (مِنْهَالله)! اس ہے مراد ایک مدت معین ہے' جوحضور ملٹی کیا ہے لیے مقرر کی گئی تھی اور اس آیت میں آپ کی وفات کی طرف اشارہ ہے۔

امام بخاری نے حضرت ابن عباس رہناللہ سے یوں بھی روایت کی ہے کہ انہوں نے فرمایا:

حفزت عمر رشی آملہ کا معمول تھا کہ وہ مجھے بھی شیوخ بدر کی مجلس میں بلایا کرتے تھے اور شیوخ میں سے کی ایک کو بیہ بات گراں گزری۔ چنا نچہ انہوں نے کہہ دیا کہ بیالڑ کا (ابن عباس) ہم بزرگوں کے ساتھ مجلس میں کیوں شریک ہوتا ہے جب کہ ہمارے نچے بھی ان کی طرح ہیں۔

حضرت عمر و الله منظم الله منظم الله الله على معلوم ہے كه بيكون ہے؟ پھر ايك دن حضرت عمر و الله عمر و الله عمر و الله عمر و الله الله الله الله الله الله و ا

شیوخ بدر میں سے چند حضرات نے کہا: ہم کو حکم دیا گیا ہے کہ جس وقت ہمیں نفرت و فنح نصیب ہوتو اس وقت ہم اللہ تعالیٰ کی حمہ بجالا کیں اور اس سے بخشش طلب کریں۔ اور بعض صحابہ نے سکوت اختیار فر مایا اور کوئی جواب نہیں دیا۔ اس کے بعد حضرت عمر رضی کنٹنہ نے مجھ سے فر مایا: ابن عباس! کیا آپ کا بھی یہی قول ہے؟ میں نے جواب دیا: نہیں۔ حضرت عمر رضی کنٹنڈ فر ماتے لگے: پھرتم کیا کہتے ہو؟

میں نے کہا: اس میں حضور ملتہ اللہ کے وصال کی طرف اشارہ ہے اللہ تعالی نے آپ ملتہ اللہ کی اللہ تعالی نے آپ ملتہ اللہ کی موت کے علم ہے آگاہ فرمایا ہے کہ جب اللہ کی نصرت اور فتح آئے تو یہ تہمارے وصال فرمانے کی علامت ہے تو اس وفت تم اللہ تعالی کی حمد بیان کرنا اور اس کی تبیح کرنا اور معفرت طلب کرنا اور وہ بہت تو بہول کرنے والا ہے۔ حضرت عمر مِنْ کَاللہ نے یہ ن کر فرمایا: میں اس سورت کے متعلق وہی جانتا ہوں 'جو کچھتم نے بیان کیا ہے۔

قرآن پاک کی آیات اور سورتوں میں مناسبت

مناسبت لغت ہیں ہم شکل اور باہم قریب ہونے کے معنی ہیں آتا ہے آیات اوراس کی مثل چیزوں ہیں مناسبت کا مرجع ایک ایسامعنی ہے جوان ہیں باہم تعلق اور ربط کا کام دیتا ہے وہ معنی عام ہویا خاص عقلی ہوسی یا خیالی وغیرہ یااس کے علاوہ اور شم کے علاقے اور لزومات زہنی مثلاً سبب اور مسبب علت اور معلول نظیرین اور ضدین اور دیگر امور مناسبت کا فاکہ ہیہ ہے کہ وہ کلام کے اجزاء کو باہم جوڑنے اور ملانے کا کام ویتی ہے اور اس سے اجزاء کلام کا بہمی ارتباط بڑھ کر کلام میں مضبوطی اور تقویت پیدا کرتا ہے۔ تالیف کلام کا حال اس ممارت کی طرح ہوتا ہے جو کہ نہایت محکم اور متناسب اجزاء کی بنیا دیر قائم ہوتی ہے۔

علامه ابوجعفر ابن الزبیر ابوحیان کے استاذ نے اس موضوع پر ایک مستقل کتاب کھی علامہ ابوجعفر ابن الزبیر ابوحیان کے استاذ نے اس موضوع پر ایک مستقل کتاب بسور القرآن "ہے اور شخ بر ہان الدین بقاعی نے ای موضوع پر" نسطیم الدور فی مناسبہ الآی و السور "کے نام سے ایک کتاب تالیف کی ہے۔

اورعلامہ مافظ جلال الدین سیوطی رحمۃ اللّٰدی اس موضوع پر ایک عمدہ اور لطیف تصنیف "" تناسق اللدد فی تناسب السود" موجود ہے۔ علم المناسہ ایک بہترین فن ہے عام طور پرمفسرین نے اس علم کی دفت اور باریکی کی

وجہ سے بہت کم اس پر توجہ کی ہے۔

اور جن علماءمفسرین نے بہ کثرت مناسبات کو بیان کیا ہے'ان میں سے ایک امام فخر الدین رازی رحمۃ اللہ تعالیٰ ہیں'وہ اپنی تفسیر میں لکھتے ہیں:

قر آن حکیم کے اکثر نکات اور باریکیاں اس کی ترتیبوں' مناسبتوں اور رابطوں میں تضمر ہیں۔

شخ عز الدين بن عبدالسلام فرماتے ہيں:

مناسبت ایک اچھاعلم ہے لیکن ارتباط کلام کے عمدہ اور خوبصورت ہونے میں بیشرط ہے کہ وہ کسی ایسے کلام میں واقع ہو'جس میں اتحاد و یگا نگت ہوا وراس کا اوّل اس کے آخر سے مربوط ہو'للبذا اگر کلام کا وقوع مختلف اسباب پر ہوگا تو اس میں بیار تباط ہرگز نہیں ہوگا اور جو شخص ایسے کلام کو ربط دے گا' وہ خواہ مخواہ شخشے تکلف کا مرتکب ہوگا اور ہنتیلی پر سرسوں اگانے کی کرے گا اور ایسے بود ہے طریق کی بیروی کرے گا کہ اس سے تو معمولی قسم کے کلام کے حسن کو بھی بچانا اور محفوظ رکھنا ضروری ہے'چہ جائیکہ قرآن حکیم ایسے افسل ترین کلام کی خوبی وحسن کی حفاظت اور قرآن حکیم کا نزول جو ہیں سے زیادہ سال تک تدریجا ہوتا ہے اور اس عرصہ میں مختلف اوقات میں مختلف احکام کے بارے میں بینازل ہوا محرصہ میں مختلف اسباب کی بناء پر مختلف اوقات میں مختلف احکام کے بارے میں بینازل ہوا تھا اور اس طرح کا کلام بھی باہم مر بوط نہیں کیا جاسکتا۔

تعض آیات اس طرح کی ہیں کہ ان کی مناسبت ان کے ماقبل کے ساتھ مشکل نظر آتی ہے ان آیات میں اللہ تعالیٰ ارشاد فرما تا ہے: ان آیات میں سے ایک سورہ القیامہ کی ہی آیت کریمہ ہے جس میں اللہ تعالیٰ ارشاد فرما تا ہے:

'' لَا تُحَوِّكُ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ''(القيام:١٦) تم يادكر نے كى جلدى بيس قرآن كے ساتھ ايك كے ساتھ ايك دواوراس آيت كى وجه مناسبت اوّل وآخر كے ساتھ ايك نهايت دشوار امر ہے' كيونكہ بيسارى سورت احوالي قيامت كے بيان ميں نازل ہوئى ہے۔ بہال تك كه بعض رافضيوں نے يہاں تك كهديا كه اس سورت ميں سے كچھ حصه ساقط ہوگيا ہے۔

اور حدیث میں ہے کہ اس آیت کا نزول رسول اکرم ملٹی آیا ہم کے نزول وحی کی حالت میں زبان مبارک کوحر کت دینے پر ہوا تھا۔

ائم مفسرین نے اس کی بہت سی مناسبتیں بیان فر مائی ہیں۔

- ان میں ہے ایک یہ ہے کہ جس وقت اللہ تعالیٰ نے قیامت کا ذکر فرمایا اور یہ بیان کیا کہ جو شخص عمل آخرت میں کوتا ہی کرتا ہے وہ عاجلہ یعنی دنیا کی محبت میں مبتلا ہے اور دین کا منشاء دراصل بیہ ہے کہ نیکی کے امور کی طرف جلدی کی جائے اور بیرنیک کاموں میں سبقت شرعاً مطلوب ہے تو اللہ تعالیٰ نے متنبہ فرمایا کمبھی اس مطلوب کوایک ایس چیز عارض ہوجاتی ہے جواس ہے بھی زیادہ اہمیت کی حامل ہوتی ہے مثلاً وہ وحی کا پوری تو حداور یکسوئی کے ساتھ ہمہ تن گوش ہو کرسننا ہے اور اس کے مفاہیم ومطالب کو سمجھنا ے اور فورا اس کے حفظ اور یاد کرنے میں مشغول ہونا اس سے مانع ہے'لہٰذا امر ہوا کہ ساتھ ساتھ فورا حفظ اور باد کرنے میں جلدی نہ کرؤ اس لیے کہ اس کا باد کرانا اللہ رب العالمین کے ذمہ کرم پر ہے بس آ پ کا کام صرف اتنا ہے کہ جووجی اتر تی ہے اسے توجہ ہے سنتے رہنے اور جب اس کا نزول مکمل ہو چکے تو اس کے احکام کی اتباع کریں۔ پھر جس وقت یہ جملہ معتر ضرفتم ہو گیا'اس وقت دوبارہ کلام کا آغاز اسی انسان اوراس کے ا بناء جنس کے متعلقات ہے ہوا' جس کے ذکر سے پہلے کلام کا افتتاح ہوا تھا اور اللہ تعالیٰ نے فر مایا:"كلا" بيكلمدردع ہے گويا كدرب العزت نے فر مايا بلكمتم لوگ اے آدم کے بیٹو!اس وجہ سے کہتمہاراخمیراوراٹھان ہی عجلت سے واقع ہوئی ہے ضرور ہر چیز میں جلد بازی کرو گے اور اس عاجلانہ سرشت کی وجہ سے عاجلہ (دنیا) سے دوتی کا دم
- دوسری وجہ مناسبت بیہ ہے کہ جس نفس کا ذکر سورت کے شروع میں ہوا'اس ہے مصطفیٰ
 کریم ملتی آلیج کے نفس شریف اور ذات لطیف کی طرف عدول کیا اور گویا بیہ کہا کہ عام نفوس کی شان تو وہ ہے گراہے سراپا ستائش محبوب! آپ تمام نفوس سے افضل واعلیٰ
 جیں ۔لہٰذا آپ اپنی شان کے لائق کامل ترین احوال اختیار فرما ئیں۔
 اورای باب سے اللہ تعالیٰ کا بی قول'' یکسفیلُوْ نک عن الْاَ هلیّة ''(ابقرہ:۱۸۹)'' تم سے

نے چاندکو پوچھتے ہیں'' بھی ہے کیونکہ بعض اوقات اس پر بیاشکال وارد کیا جاتا ہے کہ '' ھلال'' کے احکام اور گھرول میں داخل ہونے کے احکام میں کون می مناسبت ہے؟ اور ان کوایک ساتھ کس تعلق اور ربط ومناسبت کی بناء پرذکر کیا گیا ہے؟

اس کا جواب بید دیا جاتا ہے کہ بیاستظراد کے باب سے ہے کیونکہ چاند کے گھٹے اور بر سے کی حکمت بید بیان کی گئی تھی کہ اس سے جج کے اوقات کا تعین ہوتا ہے اور بیگر وں میں دروازہ سے آنے کے بجائے بیچھے سے داخل ہوتا ان لوگوں کا عمو ما موسم جج میں معمول ہوتا تھا (جیسا کہ اس آیت کے شانِ نزول سے بتا چاتا ہے) لابندا گھر میں داخلہ کا حکم اس مقام پر سوال کے جواب میں امرزا کہ کو بیان کرنے کے قبیل سے ہوا' اس کی نظیر بیہ ہے کہ سمندر کے بازے میں سوال پیدا ہوا تھا تو اس کے جواب میں رسول اللہ ملتی آئیلی نے فرمایا: ' ہو الطھور ماؤ ھا الحل میتة''۔

ای طرح الله تعالی کا قول' وَلِللهِ الْمَشْوِقُ وَالْمَغُوبُ''(القره:١١٥)' اور بورب اور پختم سب الله بی کا ہے۔ کی نکہ اس کے بارے میں بھی بیسوال ہوتا ہے۔ کہ اس کی ماقبل سے کیا مناسبت ہے اور اس کا ماقبل ہے' وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنُ مَّنَعُ مَسَاجِدً اللهُ ''(القره: ١١٣)' اور اس سے بڑھ کر ظالم کون ہے جواللہ کی مسجدول سے روک'۔

شیخ ابومحمد الجوین رحمة الله علیه اپنی تفسیر میں لکھتے ہیں: میں نے ابوالحن الدھان سے سنا ہے ٔ دوفر ماتے تھے:

اس آیت کی وجہ اتصال اپنے ماقبل سے بیہ ہے کہ سابق میں بربادی بیت المقدس کا ذکر آچکا ہے بینی بیہ کہتم کو بیہ بات اس سے روگر دانی پر آ مادہ نہ کرے اور تم اس کی طرف رخ کروں اس لیے کہ مشرق اور مغرب سب اللہ تعالٰی کی بنائی ہوئی سمتیں ہیں۔

اعجاز قرآن

معجزہ ایسے خرق عادت امر کو کہتے ہیں'جوتحدی (چیلنے) کے ساتھ مقرون (ملا ہوا) ہواور وہ معارضہ سے سالم رہے۔ معجزہ کی دوشمیں ہیں:(1) جشی (۲) عقلی۔

بن اسرائیل کے اکثر معجزات بھی تھے کیونکہ وہ لوگ انتہائی کند ذہن اور کم عقل تھے اور حضور نبی کریم المٹی ہے کہ است کے لیے زیادہ تر معجزات عقلی تھے اس کی وجہ یہ ہے کہ رسول اکرم ملٹی ہے گئے گئے گئے گئے گئے کہ مسلول اور مہل کی درجہ کی ذکاوت اور فہم و فراست کے مالک بیں اور دوسری وجہ یہ ہے کہ شریعت محمدیہ تھے لئی صاحبہا التّحیّقة وَالشّنَاءُ ' نے چونکہ قیامت تک صفح ہت پر باقی رہنا ہے' اس واسطے اس امت کو یہ خصوصیت عطا ہوئی کہ اس شریعت کے شارع اور پنجبر ملٹی گئے گئے کہ میشہ رہنے والاعقلی معجزہ عطا کیا گیا' تا کہ اہل بصیرت اس کو ہر دور میں دیکھ کیس۔

جیسا کہ بی کریم ملی ایک ہے فرمایا کہ ہر بی کوایک ایسی چیز دی گئی کہ اس کی مثل انسان اس پرایمان کے آئے اور صرف مجھے جو چیز دی گئی ہے وہ وحی (قرآن مجید) ہے جواللہ تعالی نے مجھے پر نازل فرمایا ہے 'لہذا مجھے امید ہے کہ میرے پیروکار اور امتی سب نبیول کے پیروکاروں سے زیادہ ہول گے۔ (بخاری شریف)

دعوتِ مقابلہ کے باوجود کسی میں سکت نہیں کہ اس کا معارضہ کر سکے۔

اورجس وقت نبی پاک ملتی ایتی کے بات کی باند یوں کوچھور ہے تھے۔ میدان خطابت میں اپنی دورتھا کہ اہل عرب فصاحت و بلاغت کی بلند یوں کوچھور ہے تھے۔ میدانِ خطابت میں اپنی مثال آپ تھے قرآن نے جب ان فصحاء عرب اور شعلہ بیان مقرروں کوتحدی کی اور مقابلہ کا جیلنج کیا 'ان سے کہا: قرآن کی مثل لا وُ'اگرتم اپنے دعویٰ فصاحت و بلاغت میں سیج ہواور سالہ اسال تک انہیں مہلت بھی دیے رکھی' مگر عرب کے فصحاء سے ہرگز مقابلہ نہ ہوسکا اور وہ اس کی مثل نہ لا سکے۔ چنانچ اللہ تعالیٰ نے ارشاوفر مایا: ''ف لمی آئے و ابی حیدیث میں گیا آن کا نوا اس کی مثل نہ لا سکے۔ چنانچ اللہ تعالیٰ نے ارشاوفر مایا: ''ف لمی آئے و ابی حیدیث میں گیا آن کی مثل نہ لا سکے۔ چنانچ اللہ تعالیٰ نے ارشاوفر مایا: ''ف لمی آئے و ابی حیدیث میں گرسے ہیں''۔

اوراس کے بعدرسول اللہ ملٹی کی ابت اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے: 'اُم یَقُولُونَ افْتُواہُ فُلْ کَمْشُلُ بِیْسُ کرنے کا چیلئے فر مایا ، جس کی بابت اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے: ''اُم یَقُولُونَ افْتُواہُ فُلْ فَاتُو اُمْ فَاتُو اِللّٰهِ اِنْ کُنْتُمْ فَاتُو اِللّٰهِ اِنْ کُنْتُمْ فَاتُو اِللّٰهِ اِنْ کُنْتُمْ فَاتُولُونَ اللّٰهِ اِنْ کُنْتُمْ فَاتُولُونَ اللّٰهِ اِنْ کُنْتُمْ فَاتُولُونَ اللّٰهِ اللهِ ''(حود: ۱۳ سے ایک کے آف کے ایک بنائی ہوئی دس سور تیس کے آف اور اللہ کے سواجوئل سے سب کو بلاؤ 'اگرتم سے ہواور پھران کوایک ہی سورت بنالانے کی دوست دی جی اور اللہ کے سواجوئل سے سب کو بلاؤ 'اگرتم سے ہواور پھران کوایک ہی سورت بنالانے کی دوست دی جیسا کے ارشاد خداوندی ہے:

''اُمْ یَـقُـوْلُوْنَ افْتَـراَهُ قُلُ فَاتُوْا بِسُورَةٍ مِّنْلِهِ''(یونس:۳۸)'' کیایی(کافر) کہتے بیں کہ اُس نے خود گھڑلیا ہے اسے آپ فرمائیے: پھرتم بھی لے آؤایک سورت اس جیسی' اور اس کے بعدای تحدی اور چیلنج کو کمررذ کرکیا'ارشادِ خداوندی ہے:

''واِنُ گُنتُمْ فِی رَیْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَی عَبْدِنَا فَاتُواْ بِسُورَةٍ مِّنْ مِّنْلِهِ ''(البقره: ٢٣) ''اوراگرتمہیں کچھ شک ہو'اس میں جوہم نے اپنے خاص بندے پراتاراتواس جیسی ایک سورت تو لے آؤ''مگر جب وہ اس کے معارضہ سے عاجز ہو گئے اور اس کی مثل لانے پر انہیں قدرت نہ ہوئی اور ان خطیول اور بلغاء کی کثرت کچھ بھی کام نہ آسکی تو اللہ تعالیٰ نے اعلان فر مایا کہ تمام اہل عرب قرآن کی مثل پیش کرنے سے عاجز ہو گئے ہیں اور اس طرح اعلان فر مایا کہ تمام اہل عرب قرآن کی مثل پیش کرنے سے عاجز ہو گئے ہیں اور اس طرح قرآن یا کہ تو تا نے از شاد ہوتا ہے: " فُلُ لَيْنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اَنْ يَّاتُوا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرُ انِ لَا يَاتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضِ ظَهِيْرًا "(فاسرائيل:٨٨)

" تم فر ما وَ اگر آوی اور جنّ سباس بات پرمتفق ہوجا کیں کہ اس قر آن کی مانند لے
آکیں تو اس کامثل نہ لا سکیں اگر چہ ان میں سے ایک دوسرے کا مددگار ہو' ۔ سوچنے کا مقام
ہے کہ اہل عرب جو بر نے قصیح اللمان زبان آور تھے اور پھریہ کہ انہیں ہروقت یہ بات کھائے
ہاری تھی کہ کس طرح آپی پھوٹکوں سے چہ اغ مصطفویٰ کو بچھا دیں اور دین مصطفیٰ مائے ہے ہے اور
ہیلنے نہ دیں اس کا کام تمام کر دیں اگر ان کے بس میں ہوتا تو ضرور قر آن کا معارضہ کرتے اور
اس کے چیلنے کا تو ڑپیش کرتے ، جب کہ صورت حال ہے ہے کہ شرکین کے بارے میں ایک کوئی
بات منقول نہیں ہے کہ ان میں کسی کے دل میں قر آن کے معارضہ کا خیال تک آیا ہو یا اس نے
بات منقول نہیں ہے کہ ان میں کسی کے دل میں قر آن کے معارضہ کا خیال تک آیا ہو یا اس نے
بائی تو عناد و دشمنی اور رکیک حرکتوں پر اتر آئے ' بھی قر آئی آیات کا تسخر اڑاتے اور بھی
بائی تو عناد و دشمنی اور رکیک حرکتوں پر اتر آئے ' بھی قر آئی آیات کا جسخر اڑاتے اور بھی
بائی تو عناد و دشمنی اور رکیک حرکتوں پر اتر آئے' بھی قر آئی آیات کا جسخر اڑاتے اور بھی
ورط جرت میں وو بے بوکھلا ہٹ کے عالم میں بھانت بھانت کی بولی ہولیے' جو ان کی
لا میاری و بے بی کامنہ بوتا جو ص

ولید بن مغیرہ جب حضور ملٹی کی ایسا کلمہ کے جس سے معلوم ہو کہ وہ اس کو پہند نہیں کرتا تو کیا کہ وہ قرآن کے بارے میں کوئی ایسا کلمہ کے جس سے معلوم ہو کہ وہ اس کو پہند نہیں کرتا تو ولید نے کہا: میں کیا کہوں؟ اللہ کی قتم! تہہیں معلوم ہے کہتم لوگوں میں مجھ سے بڑھ کرکوئی شخص شعر رجز اور قصیدہ کا عالم نہیں ہے بخدا! جو بات وہ کہتا ہے ان میں سے کسی کے ساتھ مشابہت نہیں رکھتی اور اللہ کی قتم! محمد مصطفی ملٹی کیا تی جو بات کہتے ہیں ان کی بات میں لطافت و شیر بن ہے اس کا بالائی حصہ تمر دار اور اس کا زیریں حصہ شکر بار اور یقینا ان کے کلام کو غلب حاصل ہوگا اور رہے ہی مغلوب نہ ہو سکے گا اور بے شک بیدا ہے ہے کم تر تمام کلام مٹا کرر کھ دے گا اور اس کا شریک کیا سکہ جے گا۔

تصل قرآن میں کس وجہ سے اعجاز پایا جاتا ہے؟ امام فخرالدین رازی فرماتے ہیں: ا

قرآ ن علیم کے اعجاز کی وجہ اس کی فصاحت ٔ اسلوب 'بیان کی ندرت اور اس کا تمام عیوب کلام سے صحیح وسلامت ہونا ہے۔

علامه زملکانی کا قول ہے:

قرآن حکیم کے اعجازی وجہ اس کا ایک خاص ترتیب و تالیف پر ہونا ہے' نہ کہ مطلق ترتیب و تالیف پر ہونا ہے' نہ کہ مطلق ترتیب و تالیف اور خاص تالیف و ترتیب ہیہ ہے کہ اس کے مفردات' ترکیب اور وزن کے اعتبار سے اعتبار سے موزوں مناسب معتدل اور مسادی ہوں اور اس کے مرکبات معنوی اعتبار سے بلندترین درجہ اور مرتبہ کے ہوں۔

ابن عطیه بیان کرتے ہیں:

وہ سی بات جو ماہر علماء اور جمہور کا موقف ہے ، قرآن کے وجہ اعجاز کی نسبت یہ ہے کہ قرآن اپنظم عبارت ، صحت معانی اور فصاحت الفاظ کی روانی وسلاست کی وجہ ہے مجز ہے اس کی وجہ یہ کہ اللہ تعالیٰ کاعلم ہرشک کا احاطہ کرتا ہے ایسے ہی اللہ تعالیٰ کاعلم ، کرشک کا احاطہ کرتا ہے ایسے ہی اللہ تعالیٰ علم ، کلام کے بھی تمام محاس اور خوبیوں کو محیط ہے۔ لہذا جس وقت قرآن کا کوئی لفظ اللہ تعالیٰ نے مرتب فر مایا تو اپنے وسیع ومحیط علم سے اس بات کو بھی معلوم فر مالیا کہ کون سالفظ پہلے لفظ کے بعد آنے کی صلاحیت رکھتا ہے اور کون سامعنی دوسرے معنی کے بعد بیان و وضاحت کے لیے مناسب صلاحیت رکھتا ہے اور کون سامعنی دوسرے معنی کے بعد بیان و وضاحت کے لیے مناسب رہے گا اور پھرای طرح اوّل سے آخرتک قرآن یاک کی ترتیب ہوئی ہے۔

اورانسان عمو فاجهل نسیان اور ذهول کاشکار ہوتا ہے اور یہ بھی بدیمی طور پر معلوم ہے کہ کوئی بندہ بشر اس طرح کلام پر ہمہ گیر دسترس نہیں رکھ سکتا 'اس لیے قرآن کا نظم فصاحت کے بلند ترین مرتبہ میں ہوا ہے اور اسی دلیل سے ان لوگوں کا قول بھی باطل ہو جاتا ہے 'جو کہتے ہیں کہ اہل عرب قرآن پاک کامٹل لانے پر قادر سے' مگر انہوں نے اس سے صرف نظر کرلی حالانکہ سے جو کہتے حالانکہ سے جو کہتے مالانکہ سے جات ہے کہ قرآن کامٹل پیش کرنا ہرگز کسی کے بس میں نہیں ہے' اس لیے تم نے دیکھا ہوگا کہ ایک فصیح و بلیغ قادر الکلام شخص سال بھرا سے قصیدہ یا خطبہ ولکچر کی درسی اور کا نہ جھانٹ کرنے کے بعد بھی جب بھی دوبارہ اس پر نظر ثانی کا موقع پاتا ہے تو اب بھی اس میں مزید شخص اور اسلام قون باتا ہے تو اب بھی اس میں مزید شخص اور اسلام وقع پاتا ہے تو اب بھی اس میں مزید شخص اور اسلام وقع پاتا ہے تو اب بھی اس میں مزید شخص اور اسلام وقع پاتا ہے تو اب بھی اس میں مزید شخص اور اصلاح و تہذیب کی ضرورت ہوتی ہے اور ریسلسلہ یوں ہی جاری رہتا ہے۔

اور کتاب اللہ کی شان میہ ہے کہ اگر اس میں سے کوئی لفظ نکال دیا جائے 'پھر پوری لغت عرب کو چھان ماریں کہ اس سے اچھا کوئی لفظ ہاتھ آجائے تو ہر گز تلاش بسیار کے بعد بھی نہیں مل سکے گا' بلکہ اس جیسیا لفظ بھی دستیاب نہیں ہوگا' جو اس کی جگہ رکھ سکیں اور ہم پر قر آن کے اکثر حصہ کی براعت واضح ہوجاتی ہے' مگر بعض مواقع پر مخفی بھی رہتی ہے اور اس کا سب میہ ہوتا ہے کہ ہم اہل عرب سے ذوق سلیم اور طبیعت کی عمد گی میں بدر جہا کم ہیں۔

قرآن عظیم کے ذریعہ دنیا نے عرب پراس لیے جبت قائم ہوئی کہ وہ ارباب فصاحت سے اوران کی طرف سے معارضہ و مقابلہ کا شبہ کیا جا سکتا تھا اورا یسے ہی ہوا' جس طرح کہ حضرت موی علایہ لگا کا جادوگروں اور حضرت عیسیٰ علایہ لگا کا طبیبوں پر مجزہ کے ذریعہ جب قائم کرنا ہے' کیونکہ اللہ تعالیٰ عام طور پر انبیاء انتہا کے مجزات کو ان کے زمانہ کا بہترین امر قرار دیتا ہے' موی علایہ لگا کے عہد میں سحر و جادو درجہ کمال کو پہنچا ہوا تھا اور عیسیٰ علایہ لگا کے دور میں فن طب اپنے عروج پر تھا' لہذا ان کے مجزات کا اس طرح اظہار کیا گیا کہ انہوں نے سحر اور طب کو نیچا دکھایا اور ای طرح حضور سید عالم ملتی لیا ہم کے زمانہ مبارک میں فصاحت اپنے کمال پر تھی' چنانچہ نی اکرم ملتی لیا ہم نے ان کو وہ مجز ہ دکھایا' جس سے تمام فصحائے عرب کا غرور وغون ختم ہوگیا

تیرے آگے یوں ہیں دبے لیخ نصحاء عرب کے بڑے بڑے کوئی جانے منہ میں زبان نہیں 'نہیں بلکہ جسم میں جان نہیں

تنبيهات

اوّل: اس بات پراتفاق ہوجانے کے بعد کرقر آن پاک کامرتبہ بلاغت میں نہایت او نچاہے اس بارے میں اختلاف ہے کہ آیا فصاحت میں بھی اس کا درجہ ای طرح کیساں ہے یا کوئی تفاوت ہے؟ مثلاً یہ کہ ترکیب کلام میں کوئی ترکیب الی نہ ملتی ہو کہ اس خاص معنی کا فائدہ ویے میں قر آن سے بڑھ کر متناسب اور معتدل ہو؟ یا ایسانہیں؟ بلکہ اس کے مراتب میں فرق اور تفاوت ہے؟ قاضی نے منع کو ببند کیا ہے یعنی تفاوت کا انکار کیا ہے وہ کہتے ہیں کہ قر آن یا کہ میں ہرکلمہ فصاحت کے اعلیٰ ترین درجہ پر فائز ہے اگر چہ بعض لوگ اس کے بارے میں یاک میں ہرکلمہ فصاحت کے اعلیٰ ترین درجہ پر فائز ہے اگر چہ بعض لوگ اس کے بارے میں

دوسروں کی نسبت زیادہ اچھا ہونے کا خیال کرتے ہیں۔

ابونصر قشیری اور دیگر علماء کا مختاریہ ہے کہ قرآن میں فصاحت کے اعتبارے فرق مراتب موجود ہے چنانچے قرآن میں اقصح اور قصیح دونوں درجہ کے کلام ہیں۔

دوم: قرآن مجید کی شعرموزون سے تنزیه کی حکمت به بیان کی جاتی ہے که باوجود یکه موزون کلام کارتبہ دوسرے کلامول کے رتبہ سے بلندوبالا ہوتا ہے لیکن چونکہ قرآن سیائی کامعیار اور حق کا سرچشمہ ہےاورشاعر کامنتہائے فکریہ ہے کہ ووحق کی صورت میں اینے تخیل کے زوریر ماطل کی تصویر تھینچ دے اور وہ اثباتِ صدق اور اظہار حق کے بچائے مذمت اور ایذ اءر سالی۔ کے لیے مبالغہ آرائی ہے کام لیتا ہے جیسا کہ ثاعر کہتا ہے

ہوں وہ نحیف کہ ہواچثم مور میں م**دفون کتنا فراخ ملا گوشہ مزار مجھے** کے

شعركامعامله پچهايهاي بيك "أكذب اوست احسن اوست".

ای لیےاللہ سبحانہ وتعالیٰ نے اپنے نبی مکرم ملتی کیا ہم کواس سے یاک رکھااورای وجہ ہے کہ شعر کی شہرت کذب کے ساتھ ہوتی ہے۔ مناطقہ نے ان قیاسات کو جوا کثر حالتوں میں حموث اور بطلان کی طرف پہنچانے والے ہوتے ہیں' قیاسات شعریہ کے نام سے موسوم کیل

کسی دانا کا قول ہے:

کوئی دین دار اور سیائی کاعلم بردار شخص اینے اشعار میں مبالغه آ رائی اور رنگینی پید كرنے والانظرنہيں آياہے۔

قرآن مجيد مين مستنبط علوم

الله تعالى فرما تا ب: " مَمَا فَرَّ طُنَا فِي الْكِتْبِ مِنْ شَيْءٍ " (الانعام:٣٨)" بم في ال كتاب ميں كچھاٹھانەركھا'' په

اوراى طرح فرمايا: "وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتْبَ تِبْيَاناً لِّكُلِّ شَيْءٍ" (الحل: ٨٩) "اورہم نے تم یربیقر آن اتار کہ ہر چیز کاروش بیان ہے"۔ اور نبي كريم التُهُولِيكِم في مايا: "مستكون فتن "عفريب فتنول كادورا في والاي-

صحابہ کرام علیہم الرضوان نے عرض کیا: یارسول اللہ!اس سے بیخنے کا ذریعہ کیا ہے؟ ارشاد ہوا کہ کتاب اللہ کہ اس ملی مصنی مستقبل اور حال کی خبریں اور تمہارے لیے ہر چیز کا حکم موجود ہے ' اس حدیث کی تخ تنج امام ترندی اور دیگر محدثین نے کی ہے۔

معید ابن منصور' حضرت ابن مسعود رضی الله سے روایت کرتے ہیں' انہوں نے فرمایا:
سعید ابن منصور' حضرت ابن مسعود رضی الله سے روایت کرتے ہیں' انہوں نے فرمایا:
جس شخص کا ارادہ ہو کہ علم حاصل کرئے ہیں وہ قرآن کولازم بکڑ لے کیونکہ اس میں اوّلین اور
تہ خرین کی خبریں ہیں۔امام بیہ قی بیان کرتے ہیں کہ حضرت ابن مسعود رضی اللہ نے علم سے اس
کے اصول کا اعادہ کیا ہے۔

امام بیمقی رحمة اللهٔ حسن رحمة الله علیه ہے روایت کرتے ہیں'انہوں نے فرمایا:
الله تعالیٰ نے ایک سوچار کتابیں نازل فرمائی ہیں اوران میں سے چار کتابوں میں سب
کاعلم ودیعت فرمایا ہے۔ وہ چار کتابیں تورات' انجیل' زبور اور فرقان ہیں اور پھر تورات' انجیل'
زبور کاعلم قرآن یاک میں ودیعت فرما دیا ہے۔

امام شافعی رحمة الله عليه فرماتے ہيں:

علاء امت کے تمام اقوال حدیث کی شرح ہیں اور تمام احادیث قرآن پاک کی شرح ہیں اور تمام احادیث قرآن پاک کی شرح ہیں نیز فر ماتے ہیں: وہ تمام با تمیں جن کا نبی طبق آلیا تھی نیز فر ماتے ہیں: وہ تمام با تمیں جن کا نبی طبق آلیا تھی کے اس حدیث مبارک سے ہوتی ہے جس میں آپ طبق آلیا تھی نے فر مایا کہ میں صرف انہی چیز وں کو حلال بتا تا ہوں 'جواللہ تعالیٰ نے حلال فر مادی ہیں اور انہی چیز وں کے بارے میں حرام کا حکم دیتا ہوں 'جن کو اللہ تعالیٰ نے حرام فر مایا

اس حدیث کوامام شافعی نے'' کتاب الام''میں روایت کیا ہے۔ سعید بن جبیر رضی الشفر ماتے ہیں:

مجھےرسول اللہ ملتی کیا ہے جو بھی حدیث بینی ہے میں نے اس کا مصداق اللہ کی کتاب قرآن میں پایا ہے۔

حضرت ابن مسعود رہنگانہ نے فرمایا: میں جبتم سے رسول الله ملتھ ایک صدیث بیان کرتا ہوں تو اس کی تصدیق قرآن سے کرادیتا ہوں 'یہ حدیث ابن الی حاتم نے روایت کی

ے۔

امام شافعی کا پیجی قول ہے کہ دین کا کوئی مسلہ ایسانہیں ہے جس کا ثبوت اور اس کی دلیل قرآن سے ہوتی ہے۔ دلیل قرآن سے ہوتی ہے۔

اگریداعتراض کیا جائے کہ بعض احکام شریعت ایسے بھی ہیں' جوابتداء ًسنت سے ثابت ہیں تو پھرا یسے کیوں ہے؟

اس کا جواب میہ ہے کہ در حقیقت وہ احکام بھی کتاب ہی ہے ما خوذ میں کیونکہ قرآن پاک نے ہم پر رسول پاک ملٹ کیاآٹیم کی اتباع کو فرض کیا ہے اور آپ ملٹ کیا تیم کے ارشادات پر عمل کرنا ہم پر فرض قر اردیا ہے۔

ا مام شافعی رحمة الله علیہ نے ایک مرتبہ مکہ مکرمہ میں بیہ بات کہی کہتم لوگ جو بھی بات پوچھو میں اس کا جواب قر آن مجید ہے تمہیں دوں گا۔

اس پرلوگوں نے سوال کیا: آ پ اس محرم (احرام باند سے والے) کی بابت کیا کہتے ہیں جو حالت احرام میں زنبور (بھڑ) کو مارڈالے؟

امام ثنافعى نے فرمایا: 'بِسُمِ اللّٰهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ. ''' وَمَاۤ 'الّٰكُمُ الرَّسُولُ ۖ فَخُذُوْهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ''(الحشر: ٤)

'' اللّٰہ کے نام سے شروع جونہایت مہر بان رحم والا'اور جو پچھتمہیں رسول عطافر ما کیں وہ لواور جس سے منع فر ما کیں باز رہو''۔

اورا پنی بوری سند کے ساتھ صدیث بیان کی کہ حضرت حذیفہ بن الیمان نے رسول اکرم مُنْ مُنْ اللّٰهِ سے روایت کی ہے: حضورا کرم مُنْ مُنْلِلَم کے فر مایا:'' اقت دو ا بالذین من بعدی ابی بکر و عمر''۔

اور پھر انہوں نے ایک پوری سند کے ساتھ سفیان کے واسطہ سے حضرت عمر ابن خطاب رضی آللہ سے روایت بیان کی کہ انہوں نے محرم کو زنبور (بھڑ) کے مار ڈالنے کا حکم دیا۔ خطاب رضی آللہ سے روایت بیان کی کہ انہوں نے مخرم کو زنبور (بھڑ) کے مار ڈالنے کا حکم دیا۔ امام بخاری رحمۃ اللہ الباری نے حضرت ابن مسعود رضی اللہ سے روایت کیا ہے انہوں نے فر مایا: اللہ تعالیٰ نے ان گود نے والیوں 'بال اکھڑ وانے والیوں 'دانتوں کے درمیان شگاف ڈالنے والیوں' جو کہ خداکی خلقت کو بدلتی ہیں برلعنت کی۔

یہ بات قبیلہ بن اسد کی ایک عورت کو پینی اس نے آ کر حضرت ابن مسعود رضی اللہ ہے کہا کہ مجھے یہ بات پینی ہے کہ آپ ایسی ایسی عورت پر لعنت بھیجے ہیں ابن مسعود فرمانے گئے:

جن پر حضور ملتی کی آئی ہے کہ آپ ایسی ایسی عورت پر لعنت بھیجے ہیں ابن مسعود فرمانے گئے:

قرآن پاک میں ہے اس عورت نے کہا: میں نے تو قرآن پاک پورا پڑھا ہے اس میں کہیں یہ بات نہیں پائی جس کو آپ بیان کرتے ہیں۔ ابن مسعود رضی اللہ نے فرمایا: اگر تو نے قرآن کو پڑھا ہوتا تو ضروراس میں ہے بات پائی کیا تو نے ہیں۔ ابن مسعود رضی اللہ نے فرمایا: اگر تو نے قرآن کو فرمایا: اور جو پچھ کی باور جو پچھ کی ہوں وہ اور در سے منع فرما کی باز رہو اس عورت نے کہا: ہاں! اس کو بے شک پڑھا ہے ابن مسعود رضی اللہ عن باز رہو اس عورت نے کہا: ہاں! اس کو بے شک پڑھا ہے ابن مسعود رضی اللہ نے فرمایا: تو رسول اللہ طفی کی ہے ہی اس بات سے منع فرمایا ہے۔

ابن سراقد نے '' کتاب الاعجاز ''میں ابو بکر بن مجاہد سے قل کیا ہے کہ انہوں نے ایک دفعہ کہا: دنیا میں کوئی شکی ایسی نہیں ہے جس کا ذکر قرآن میں نہ ہؤلوگوں نے ان سے کہا: قرآن میں خیانتوں کا ذکر کہاں ہے؟ تو انہوں نے کہا: اللہ تعالیٰ کے اس قول میں ' کیٹ سس عَلَیْ کُمْ مُس خیا جُنَا جُ اَنْ تَذْ خُلُوْ ا بُیُوْ تًا غَیْرَ مَسْکُوْ نَهِ فِیْهَا مَتَاعٌ لَکُمْ '' (النور:۲۹)

جے ہے کہ کا کلو ہیوٹ میں اور پر اور ہیں۔ '' اس میں تم پر کوئی گناہ نہیں کہ ان گھروں میں جاؤ جو خاص کسی کی سکونت کے نہیں اور ان کے بریخے کا تمہیں اختیار ہے' اور یہی خیانتیں ہیں۔

ابن بربان کابیان ہے کہ حضور نبی اکرم ملٹی کی آئی نے جو پچھ فر مایا ہے وہ بہ عینہ یااس کی اصل قریب بعید قرآن میں موجود ہے جس نے سمجھ لیا سمجھ لیا 'جواندھار ہاوہ اندھار ہا' ایسے بی ہر حکم اور فیصلہ جوحضورا کرم ملٹی کی آئی ہے نے صادراور نافذ فر مایا' وہ قرآن سے باہم نہیں ہے۔

البتہ یہ بات ضرور ہے کہ ہرطالب قرآن اپنے اجتہاداور نہم کے مطابق جتنی کوشش اور ہمتے مرف کرےگا' اسی قدرقرآن کے مفاہیم ومطالب کو پالےگا' ایک اور عالم فر ماتے ہیں:

الله تعالی نے جس مخص کونیم وفراست کی دولت عطافر مائی ہواس کے لیے کوئی چیز الی نہیں جس کا اسخر اج قرآن سے ممکن نہ ہو وہ ہرشک کوقر آن پاک سے معلوم کرسکتا ہے حتی کہ ایک عالم نے نبی پاک ملٹ اللہ کی عمر مبارک تریسٹھ برس قرآن سے مستنبط کی ہے وہ کہتا ہے کہ اللہ تعالی نے سورہ المنافقین میں فر مایا ہے: " وَلَنْ يُؤَخِّوَ اللّٰهُ نَفْسًا إِذَا جَآءَ اَجَلُهَا"

(المنافقون:۱۱)'' اور ہرگز اللہ کسی جان کومہلت نہ دے گا جب اس کا وعدہ آ جائے گا'' اور یہ سورت تریستھویں سورت ہے' پھراس کے بعد اللہ تعالی نے سورہ التغابن کورکھا ہے' جواس امر کی طرف اشارہ ہے کہ حضور ملتی کی آئے ہم کے وصال سے دنیا میں نقصان عظیم ظاہر ہوگا۔ ابن الی الفضل المری اپنی تفسیر میں لکھتے ہیں:

قرآن پاک اوّلین اورآخرین کے علوم کا جامع ہے مگراس کے تمام علوم کا اعاطہ کرلین حقیقی طور پراللہ تعالیٰ ہی کی شان کے لائق ہے اس کے بعد اللہ کے رسول ملٹی کیا ہی کی شان کے لائق ہے اس کے بعد اللہ کے دسول ملٹی کیا ہی کی شان کے لائق ہے اس کے بعد اللہ کا علم اللہ تعالیٰ نے اپنے لیے مخصوص رکھا ہے اور اس کے بعد رسول اللہ ملٹی کیا ہی میراث سادات صحابہ کرام علیہم اجمعین کو پہنچی 'جسے خلفائے اربعہ کا مشید کیا ہے علم قرآن کی میراث سادات صحابہ کرام علیہم اجمعین کو پہنچی 'جسے خلفائے اربعہ کا مخترت ابن عباس حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہم اجمعین کیہاں تک کہ حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہم اجمعین کیہاں تک کہ حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہم اجمعین کیہاں تک کہ حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہم اجمعین کیہاں تک کہ حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہم اجمعین کیہاں تک کہ حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہم اجمعین کیہاں تک کہ حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہم اجمعین کیہاں تک کہ حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ کیا تھا تھا تھا تھا ہے ہیں:

اگرمیرے اونٹ باندھنے کی ری بھی گم ہو جائے تو میں اس کوبھی قر آن پاک میں پاتا ہوں۔

ازال بعد صحابہ سے تابعین نے علوم قرآن کی میراث پائی اوراس کے بعد سے پھر ہمتیں پست ہوگئیں' عزائم ٹھنڈ ہے پڑ گئے اور علماء کی طالت بٹلی ہوگئی' ان لوگوں نے صحابہ کرام اور تابعین کی طرح قرآن پاک کے علوم وفنون کا حامل بننے میں کمزوری دکھائی اور بعد کے علاء نے علوم کوکوئی انواع میں تقسیم کرلیا اور ہرایک گروہ کسی ایک فن کو سیمنے سکھانے کی طرف متوجہ ہوگیا' ایک جماعت نے لغات قرآن کے ضبط کرنے' اس کے کلمات کی تحریر' اس کے حروف کے مخارج اور تعداد کلمات' آیات' سورتوں' احزاب' انصاف اور ارباع اور اس کے متثابہ کے حروف کے مخارج اور تعداد کلمات' آیات سورتوں' احزاب' انصاف اور ارباع اور اس کے متثابہ کی تعداد' اور ہردس آیات تک تعلیم دینے کے اصول وضوابط وغیرہ محض اس کے متثابہ کلمات کے شار اور آیات متماثلات کی تنتی وشار پراکتفاء کیا اور قرآن کے معانی سے تعرض ہی نہ کیا اور نہ ہی ان مضمرات میں تدبر کیا' جوقرآن میں ودیعت کیے گئے ہیں۔ ان لوگوں کو نہ کیا اور نہ ہی ان مضمرات میں تدبر کیا' جوقرآن میں ودیعت کیے گئے ہیں۔ ان لوگوں کو نہ کہا در نہ کی نام سے موسوم کیا گیا ہے۔

علماءنحو نے معرب مبنی اساء وافعال اور حروف عاملہ وغیرہ کے بیان پر اپنی تو جہ مبذول رکھی اور اساءاور ان کے تابع افعال کی اقسام لازم ومتعدی اور کلمات کے رسم الخط اور انہی کے متعلق تمام امور کی نہایت شرح و بسط کے ساتھ تحقیق کی یہاں تک کہ بعض نحویوں نے مشکلات قر آن کے اعراب کو بتایا اور بعض نحویوں نے ایک ایک کلمہ کا اعراب الگ الگ بیان

علائے اصول نے قرآن مجید میں بائے جانے والے اصولی اور نظریاتی شوابد اور عقلی دلائل پرتوجہ مبذول کی مثلاً قول باری تعالی جل شانه اور تکان فیلھِمَآ اللَّهُ اللَّهُ لَفَسَدَتًا " (الانبیاء:۲۲)۔

"اگرآ سان وزمین میں اللہ کے سوااور خدا ہوتے تو ضرور وہ تباہ ہو جاتے "اور اس جیسی آیات کشرہ میں غور وفکر کر کے ان سے اللہ تعالیٰ کی تو حید اس کے وجو دُبقاء قدم قدرت اور علم پر دلائل و برا بین کا استنباط کیا اور نئی نئی دلیلیں پیش کیس اور جو با تیں اللہ سبحانہ و تعالیٰ کی شان کے لائق نہ تھیں 'ان سے اس کی تنزیہ داور پاکی کو بیان کیا اور اس علم کو نام "ملم اصول و من "رکھا۔

ایک جماعت نے خطابِ قرآن کے معانی میں غور وفکر کیا اور دیکھا کہ ان میں سے بعض خطابات عموم کے اور بعض خصوص کے مقتضی ہیں اور ای طرح کی دیگر با تیں معلوم کیں ' ایک طبقہ نے لغت کے احکام از قتم حقیقت و مجاز اس سے مستنبط کیے اور تخصیص ' اخبار' نص' ظاہر' مجمل' محکم' متثابہ' امر' نہی ' ننخ اور اسی طرح دیگر امور انواع قیاسات' استحصاب حال اور استقراء کی انواع پر کلام کیا اور اس فن کا نام' ' اصول فقہ' رکھا۔

اورایک جماعت نے قرآن کے حلال وحرام اوران تمام احکام پر جواس میں موجود ہیں' محکم طریقہ نے نظر صحیح اور فکر صادق سے کام لیا اور انہوں نے ان احکام کے اصول وفروع کی داغ بیل ڈ الی اور نہایت خوب صورت طریقے سے جامع بحث کی اور اس کا نام علم الفروع رکھا' اس کو'' علم الفقہ'' کے نام سے بھی یا دکیا جاتا ہے۔

- ایک جماعت کا نصب العین قرآن مجید میں پائے جانے والے گزشتہ صدیوں اور سابقہ امتوں سابقہ امتوں سابقہ امتوں سابقہ امتوں کے تاریخی واقعات نقل کیے اور ان کے آثار اور کارناموں کو مدون کیا' یہاں تک کہ دنیا کی ابتداء اور تمام اشیاء کے آغاز آفرینش کا ذکر کیا اور اس فن کا نام تاریخ اور نقیم رکھا۔
- اورایک جماعت نے قرآن مجید کی حکمتوں' تمثیلوں اورمواعظ پرمتنبہ کیا' جو کہ بڑے و کے بڑے و کے بڑے و کے بڑے و کے بڑے مردان کار کے دلوں کولرزادینے اور پہاڑوں کو پاش پاش کردینے والے ہیں۔
 لیس انہوں نے اس میں سے وعد' وعید' تحذیر اور تبشیر' موت اور آخرت کی یاد' حشر ونشر' حساب وعقاب' جنت اور دوز خ وغیرہ کے واقعات اخذ کیے' مواعظ کو فصول کے انداز میں مرتب کیا' زجر و تو نیخ کے اصول منضبط کیے اور یہ کام سرانجام دینے والی جماعت واعظین اور خطباء کے نام سے موسوم ہوئی۔
 - ایک گروہ نے قرآن کیم سے '' تعبیر الرؤیا''کے اصول متنبط کیے اور اس سلسلہ میں سورہ پوسف میں سات فربہ گایوں کو خواب میں دیکھنے کا قصہ جیل کے دوقیدیوں کا خواب اورخود حضرت یوسف علا سلااً کا سورج 'چا نداور ستاروں کو خواب میں بحدہ کرتے ہوئے ویکھنا اور اس طرح کے بیانات کو مشعل راہ بنا کرقرآن مجید سے ہرفتم کے خوابوں کی تعبیر کے قواعد بنائے اور اگر ان پرقرآن سے کسی خواب کی تعبیر دشوار ہوئی تو محدیث رسول اللہ سٹی آئی آئی ہے روشی حاصل کی کیونکہ حدیث مبارک فرآن پاک کی شارح ہے۔ بھر حدیث شریف سے بھی کسی خواب کی تعبیر نکالنے میں مشکل پیش آئی تو شارح ہے۔ بھر حدیث شریف سے بھی کسی خواب کی تعبیر نکالنے میں مشکل پیش آئی تو امثال و کلم کو مرجع بنایا پھر عرف عام اور لوگوں کے محاورات اور عادات واطوار کا بھی خود قرآن میں اشارہ ملتا ہے ارشاد خداوندی ہے: '' وَاقْوَرُ بِالْقُورُ فِی ''(الاعراف:۱۹۹) خود قرآن میں اشارہ ملتا ہے ارشاد خداوندی ہے: '' وَاقْورُ بِالْقُورُ فِی ''(الاعراف:۱۹۹) اور بھلائی کا کھم دو۔

بعض لوگوں نے آیت میراث میں شہام یعنی قصص اور حصہ داروں اور مستحقین کا ذکر دکھے کراس سے '' علم الفرائض' وضع کیا اور قرآن پاک میں نصف' ثلث ربع' سدس اور ثمن وغیرہ کے بیان سے فرائض کا حساب اور عول کے مسائل نکا لئے بھرائی آیت میں وصایا کے احکام کا انتخراج کیا۔

- 0 ایک طبقہ نے قراآن حکیم کی ان روش آیوں میں فکر ونظر سے کام لیا'جن میں رات'دن' چپاند' سورج' منازل' مہروماہ ونجوم اور بروج کی اعلیٰ حکمتوں پر دلالت موجود ہے اور ان سے ' علم المواقیت' کافن وضع کیا۔
- ادیوں اور شاعروں نے لفظ کی جزالت وعمد گی نظم کا بدیع اور اچھوتا پن حسن سیاق مبادی مقاطع مخالص خطاب کی رنگینی اور تنوع اطناب ایجاز وغیرہ امور کو پیش نظر رکھ کراس ہے علم بلاغت (معانی نیان بدیع) کی بنیاد ڈالی۔
- ارباب اشارات اوراصحاب حقیقت (صوفیاء کرام) نے قرآن میں نظر کی توان پراس کے الفاظ سے بہت کچھ معانی اور باریکیاں منکشف ہوئیں 'چنا نچیدان حضرات نے اپنی مخصوص اصطلاحات وضع کر کے ان معانی کو خاص نامول 'مثلاً فنا' بقاء' حضور' خوف' ہیت' انس' وحشت اور قبض و بسط وغیرہ نامول سے موسوم کیا۔
- O الغرض مذکورہ بالاعلوم وفنون تو وہ ہیں جوملت اسلامیہ کے علماء نے اخذ کیے اور ان کے علاوہ بھی قرآن کریم بے شارعلوم پر حاوی ہے۔

حضرت امام غزالی رحمة الله علیه اور دوسرے علماء کرام کا بیان ہے کہ قرآن مجید کی آ یتیں پانچ سو ہیں اور بعض کے نزدیک ایسی آیات صرف ایک سو بچاس ہیں ممکن ہے ان کی مرادان ہی آیات سے ہو جن میں احکام کی تصریح کر دی گئی ہے کیونکہ قصص اور امثال وغیرہ کی آیات سے بھی تو بہ کثرت احکام مستنبط ہوتے ہیں۔

شخ عزالدین بن عبدالسلام کتاب الامام فی ادلة الاحکام میں لکھتے ہیں:قرآن پاک کی بیشتر آیات اس طرح کے احکام سے خالی نہیں جوآ دابِ حسنه اور اخلاقِ جمیله پر مشتل موں

انبی کابیان ہے کہ مجی احکام پرصیغہ (امر) کے ساتھ استدلال کیا جاتا ہے اوریہ ظاہر

صورت ہے اور بسااوقات اخبار کے ساتھ جیے'' اُجِلَّ لَکُمْ ''(القرہ: ۱۸۷)'' تمہارے لیے طلال ہوا''۔'' حُبِرِ مَتْ عَلَیْکُمُ الْمَیْتَةُ ''(المائدہ: ۳)'' تم پرحرام ہے مردار''…'' کُتِبَ عَلَیْکُمُ الْمَیْتَةُ ''(المائدہ: ۳)'' تم پردوز نے فرض کیے گئے''اور بھی اس چیز کے ساتھ احکام کلینگمُ الموسیّامُ ''(البقرہ: ۱۸۳)'' تم پردوز نے فرض کیے گئے''اور بھی اس چیز کے ساتھ احکام پراستدلال ہوتا ہے' جس پردنیایا آخرت میں فورا یا آئندہ اچھا یا بُر ااور نفع یا نقصان کا نتیجہ مرتب ہو۔

اورشارع علالیلاً نے اس کی متعددانواع قرار دی ہیں تا کہ بندگانِ خدا کو قبیل احکام کی ترغیب وشوق دلایا جائے ہیں۔ ترغیب وشوق دلایا جاسکے اورخوف دلا کر پابنداحکام کیا جاسکے اور مختلف طریقوں سے تکم کو بیان کر کے اسے ان کے فہم وادراک کے قریب ترکر دیا جائے۔ چنانچہ ہراییا کام کہ شرع نے اس کے کرنے والے کی مدح کی اوراس کی عظمت بیان کی ہے۔

اس فعل یاس کے فاعل کو پہند فر مایا ہے یااس فعل پراپنی رضا وخوشنودی کا اظہار فر مایا ہے اس فعل پراپنی رضا وخوشنودی کا اظہار فر مایا ہے اور اس کے کرنے والے کو مجبوب و پہندیدہ قرار دیا ہے یااس کے کرنے والے کو مجبوب کی بیا ہم کرکت 'اچھائی وعمد گی اور استفامت کے وصف سے موصوف گردانا ہے یااس فعل کی بیا مقال کی قتم یا دفر مائی ہے 'جیسے شفع ونڑ اور مجاہدین کے گھوڑ وں اور نفس لوامہ کے قتم وکر کی ہے۔

ں یااس کواس امر کا سبب قرار دیا ہے کہ اللہ تعالیٰ اس کے فاعل کو یاد کیا کرتا ہے یااس سے محبت رکھتا ہے۔

ں یا سے جلدی (دنیامیں) یا آئندہ (آخرت میں) ثواب دیتا ہے یا ہندہ کو اللہ تعالیٰ کی شکر گزاری کرنے یا اللہ تعالیٰ ہندہ کو ہدایت فرمانے یا اللہ تعالیٰ کے اس فعل کرنے والے کو راضی کرنے یا اس کے گناہوں کو معاف کرنے اور اس کی برائیوں کا کفارہ دیا ہے۔ دینے کا وسیلہ قرار دیا ہے۔

ایداس نے وہ فعل قبول فر مایا ہے یا یہ کہ اللہ تعالیٰ نے اس فعل کے کرنے والے کی مددو نفر سے نامل کو کوئی بشارت دی ہے یا اس کے فاعل کو کسی خوبی کے ساتھ موصوف کیا ہے یا فعل ہی کامعروف وصف ذکر کیا ہے۔

O یااس کے فاعل سے حزن اور خوف کی نفی کردی ہے۔

یاس کوامن دینے کا وعدہ فر مایا ہے یا اس کو فاعل کی ولایت کا سبب قرار دیا ہے یا اس بات کی خبر دی ہے کہ رسول اکرم ملٹی کیلئے نے اسٹنی کے حصول کی دعا فر مائی ہے یا اس چیز کا وصف اس طرح سے ذکر کیا ہے کہ اس کو باعث قربت وثواب بتایا ہے۔

یااس کوصفت مدح کے ساتھ موصوف کیا ہے جیسے حیات نوراور شفاء اور بیاموراس فعل
 کی ایسی مشروعیت کی دلیل ہیں جو کہ واجب اور مندوب ہونے کے درمیان مشترک

اور ہراہیافعل کہ شارع نے اس کے ترک کرنے کا تھم دیا ہو یا اس فعل یا فاعل کی ندمت کی ہویا اس کے فاعل پرخفگی کا ظہار کیا ہویا اس کر کرنے والے پرلعنت کی ہویا اس فعل اوراس کے فاعل سے راضی ہونے اوراس سے محبت کی نفی فر مائی ہویا اس کام کے کرنے کو بہام اور شیطان ایسا کہا ہویا اس فعل کو ہدایت یانے اور مقبولیت حاصل کرنے ہے رکاوٹ قرار دیا ہو بااس کا وصف کسی برائی اور ناپسندیدگی کے ساتھ فر مایا ہو یا نبیاء کرام ﷺ نے اس فعل سے اللہ تعالیٰ کی پناہ طلب کی ہویا اس فعل پرغصہ کا اظہار کیا ہو یا اس فعل کوفلاح و کامرانی کی نفی کا سبب قرار دیا ہو یا کسی جلدیا دریمی آنے والے عذاب کا موجب بتایا ہو یا کسی ندمت کملامت ' گمراہی یا معصیت کا سبب بتایا گیا ہو ہااس فعل کی صفت خبث' رجس پانجس بیان کی گئی ہو یااس کونسق یااثم ہونے کے ساتھ موصوف کیا ہو پاکسی گناہ' نایا کی' لعن' غضب' زوال نعت' نزول عذاب کا سبب بتایا گیاہو یاوہ فعل کسی سزایا نے' سنگ دلی' ذلت نفس کا سبب قرار دیاہو یااس فعل کومعاذ اللّٰهُ اللّٰهِ كي عداوت ُ اس ہےلڑا كي' استہزاء ہامنخرى كرنے كا سبب بتايا گيا ہويا اس كام کرنے سے اللہ تعالیٰ اس کومحروم کر کے حجوز ہے یا خود اللہ تعالیٰ اپنی ذات کواس کام پر رکنے بابرداشت کرنے یا درگز رکرنے کے وصف ہے موصوف کیا ہو بااس فعل ہے توبہ کرنے کی دعوت دی ہویااس کام کے کرنے والے کو خبث یا اختقار ہے موصوف کیا ہو یا اس کوشیطانی کام قرار دیا ہو یا بیفر مایا ہو کہ شیطان اس عمل کو کرنے والول کی نگاہ میں آ راستہ ومزین کر کے پیش کرتا ہے یا بیفر مایا ہو کہ اس عمل کے کرنے والے کا شیطان دوست بن جاتا ہے یا یہ کہ اللہ تعالی نے اس فعل کو کسی بری صفت کے ساتھ

موصوف کیا ہو جیسے ظلم' سرکشی' حدیب بڑھنا' گناہ' مرض کا باعث ہوتا بیان کیا ہویا اس فعل مااس کے فاعل سے انبیاء ﷺ نے برأت کا اظہار فر مایا ہویا اللہ تعالیٰ کے حضوراس فعل کے مرتکب کی شکایت کی ہویااس کام کے کرنے والے سے عداوت کا اظہار کیا ہو یااس پرانسوس اورغم کرنے ہے منع کیا ہویا اس فعل کو فاعل کے لیے جلدیا دیر سے ناکافی ونقصان کا سبب بتایا ہو یاوہ فعل جنت اور اس کی نعمتوں ہے محرومی کا موجب ہے یا اس ا فعل کے حامل شخص کو اللہ تعالیٰ کا رخمن کہا گیا ہویا ہے کہ اللہ تعالیٰ کو اس ہے دشمنی رکھنے والابتایا گیا ہو یا بہ بتایا گیا ہو کہ اس نعل کا کرنے والا اللہ تعالی اور اس کے رسول ا کرم مُنْتَ مِیْلَائِمْ سے جنگ کرنے والا ہے یا اس فعل کا فاعل نے غیر کا گناہ خود اٹھا لیا ہو یا 🕕 اس تعل کے بارے میں کہا گیا ہو کہ یہ کا مہیں ہوتا ہے یا مناسب نہیں ہے یا اس کام کا سوال کرتے وقت اس سے بیخے کا حکم دیا گیا ہو یا اس کام کی ضدیر عمل کرنے کا حکم دیا گیا ہو یااس کے فاعل سے بائیکاٹ کرنے کا حکم دیا گیا ہویااس کام کے کرنے والوں نے آخرت (نتیجہ) میں ایک دوسرے برلعنت کی ہو یاانہوں نے باہم ایک دوسرے سے بیزاری کا اظہار کیا ہو یاان میں سے ہرایک نے دوسرے کے لیے بددعا کی ہو با اس کے فاعل کو ضلالت کے ساتھ موصوف کیا ہو مااس کے متعلق یہ کہا گیا ہو کہ پیمل اللهٔ رسول اور صحابہ کے نز دیک کوئی شئی نہیں ہے یا شارع عینم کے اس کام ہے ا اجتناب کرنے کوفلاح و کامیابی کا ذریعہ قرار دیا ہویا اس کام کومسلمانوں کے درمیان بغض وعداوت کا وقوع کا سبب بتایا گیا ہو یا بیہ کہا ہو کہ کیا تو اس کام کے کرنے ہے باز رہنے والا ہے؟ یا انبیاء کرام النا کا کواس کام کے کرنے والے کے حق میں دعا کرنے | ے منع کردیا گیا ہویااس کام کے کرنے پر ابعاد (دور کرنا) یا طرد (دھتکارنا) کا ترتب موامو یاس فعل کے کرنے والے کے لیے (قاتله الله) خدااس کوغارت کرے کے الفاظ واردہوئے ہوں۔

- یااس فعل کے فاعل کی نسبت بی خبر دی گئی ہو کہ اللہ تعالی اس سے قیامت کے دن کلام (رحمت کا کلام) نہیں فرمائے گا۔
- O اس کی طرف نظر (کرم) نہیں فرمائے گا اور اس کا تزکیہ نہیں کرے گا اور اس کے عمل

درست نہیں کرے گا'اس کا حیلہ چلنے نہیں دے گایا فلاح نہیں پائے گایا اس پر شیطان کو مسلط کرنے کی خبر دی گئی ہویا وہ فعل اس کے فاعل کی سجے دلی کا سبب ہویا وہ فعل اس کے کرنے والے کے لیے اللہ کی آئیوں اور قدرت کے واضح دلائل سے روگر دانی کا باعث بتایا گیا ہویا اس کے علت فعل کے بارے میں سوال کرنے کی خبر دی ہو کیونکہ یہ فعل کے بارے میں سوال کرنے کی خبر دی ہو کیونکہ یہ فعل کے نہ کرنے پر دلیل ہے اور اس کی دلائت محض کراہت پر دلالت کی بہ نبست تح یم برزیادہ ظاہر ہے۔

اوراباحت لفظ المحلال " سے ستفادہ وقی ہے اورای طرح جناح وج اثم اور مواخذہ کی نفی بھی اباحت کا فائدہ دیتی ہے اوراس کام کے کرنے کی اجازت ملئے اس فعل سے درگزر کرنے اوراعیان میں جومنا فع ہیں ان پراحسان جتائے تحریم سے سکوت فرمائے اور جو شخص کی چیز کو حرام بتائے اس پرا نکار سے سکوت فرمائے اور اس کی خبر دینے سے کہ اس نے بیچیز ہمارے (نفع) کے لیے بنائی اور بیدا کی ہے اور الگول کے ایسے عملول کی خبر دینے سے کہ اس فعل ہمارے (نفع) کے لیے بنائی اور بیدا کی ہے اور الگول کے ایسے عملول کی خبر دینے سے کہ اس فعل پر ندمت ندگی گئی ہواور اگر شارع کے خبر دینے کے ساتھ کوئی مدح بھی ہوتو وہ مدح اس فعل کے وجو بایا استحبابا مشروع ہونے کی دلیل ہے بیہاں تک شخ عز الدین کا کلام تمام ہوگیا۔

کو جو بایا استحبابا مشروع ہونے کی دلیل ہے بیہاں تک شخ عز الدین کا کلام تمام ہوگیا۔

ہوتا ہے اور اس کے متعلق ایک جماعت نے قرآن پاک کے غیر مخلوق ہونے پر اس طرح ہوتا ہے اور اس کے متعلق ایک جماعت نے قرآن پاک کے غیر مخلوق ہونے پر اس طرح قرآن کا ذکر چون (۱۳۵) مقامات پر کیا ہے مگرا کے جگہ بھی قرآن کو کلوق نہیں کہا اور جس جگہ قرآن کا ذکر چون (۱۳۵) مقامات پر کیا ہے مگرا کے جگہ بھی قرآن کو کلوق نہیں کہا اور جس جگہ قرآن اور انسان کا ذکر اکو تصفیل کے اس مخابیت کیا تھو کیا تو وہاں ان دونوں کے درمیان بیان میں مغابرت بیدا قرآن اور انسان کا ذکر ایشے کو آن سکھایا 10 انسان کی جان کو کلوق بیدا کیاں "درکی چنانچارشاوفر مایا:" اکو شخص کے گئر ان کو تھی آئی آئی نئیا کیاں میں مغابرت بیدا کردی پینانچار شاور آن سکھایا 10 انسان کی جان مجملوق پر اکیاں "۔

امثالِ قر آ ن

الله تعالی فرما تاہے:

" وَلَـقَـدُ ضَـرَبُـنَا لِلنَّاسِ فِي هٰذَا الْقُرُ انِ مِنْ كُـلِّ مَشَلٍ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ

(الزمر:۲۷)'' اور بے شک ہم نے لوگوں کے لیے اس قر آن میں ہرتشم کی کہاوت بیان فر مائی کہ کسی طرح انہیں دھیان ہو''۔

امام بیمبی رحمة الله علیهٔ حضرت ابو ہریرہ و منگالله سے روایت کرتے ہیں انہوں نے بیان کیا کہ رسول الله ملی آئی ہے فرمایا ہے: بے شک قرآن پانچ وجوہ پر نازل ہوا ہے: حلال عرام محکم متشابہ اورامثال پڑیس تم لوگ حلال کو کام میں لاؤ اور حرام سے خود کو بچاؤ محکم کی اتباع کرو اور متشابہ پر ایمان لاؤ اور امثال سے عبرت بکڑ و اور نصیحت حاصل کرو۔

O علامه ماوردی رحمه الله فرماتے ہیں:

''علم القرآن'' كاايك بهت عظيم حصه''علم الامثال' ہے حالانكه لوگ اس سے عافل بین اس لیے كہ وہ امثال ہی میں پھنس كررہ جاتے ہیں (یعنی كہانیوں میں ہی كہن ہو جاتے ہیں ان كى كنهه میں نہیں پہنچ) اور جن امور سے متعلق وہ مثالیس بیان ہوئی ہیں' ان سے عافل رہتے ہیں (اور بیسبک سارسبق گیز ہیں ہوتے) اور حقیقت سے ہے كہ مثل بغیر ممثل كے اسپ بے لگام اور ناقه بے زمام ایس ہے۔

O ایک اور عالم فرماتے ہیں:

امام شافعی رحمہ اللہ نے'' علم الامثال'' کوعلوم القرآن کے ان امور میں سے شار کیا ہے' جن کا جاننا مجتہد پر واجب ہے اور اس کے بعد قرآن کی بیان کر دہ ان امثال کی معرفت ضروری ہے' جواطاعت خداوندی پر دلالت کرنے والی اور اس کی نافر مانی سے اجتناب کوضروری قرار دینے میں مبین اور واضح ہیں۔

O شیخ عزالدین رحمه الله کا قول ہے:

اللہ تعالیٰ نے قرآن پاک میں امثال کو وعظ و تذکیر یعنی ڈرانے اور یاد دہانی کے لیے بیان فرمایا ہے کچران امثال میں ہے وہ جو تواب میں تفاوت پر یاعمل کے اکارت و رائیگاں کردینے یامدح و ذم وغیرہ پر مشتمل ہیں وہ احکام پر دلالت کرتی ہیں اور یاد دہانی کے لیے بیان فرمایا ہے کچران امثال میں سے وہ جو تواب میں تفاوت پر یاعمل کے اکارت ورائیگاں کردینے یامدح و ذم وغیرہ پر مشتمل ہیں وہ احکام پر دلالت کرتی ہیں۔

DarseNizami.MadinaAcademy.Pk

فصل

امثال قرآن كي دوتشميس بين:

(۱) ظاہر جس کی صراحت کردی گئی ہے۔

(۲) کامن (پوشیده) کهاس میں مثل کا کوئی ذکر ہی نہیں ہوتا۔

فتم اوّل كى مثالول ميں سے ايك الله تعالى كايول ہے:

'' مَنَّلُهُمْ تَكَمَّثُلِ اللَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا''(القره: ١٥) كداس ميں الله تعالى في منافقين كے دومثاليس بيان كى بين ايك آگ كے ساتھ دوسرى بارش كے ساتھ وسرى بارش كے ساتھ وسرى مثال الله تعالى كا يہ قول بھى ہے:

ُ 'النول مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتُ اَوْدِيَةً بِقَدَرِهَا ' (الرعد: ١٥) اللهَ آسان عن النَّمَة عن السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتُ اَوْدِيَةً بِقَدَرِهَا ' (الرعد: ١٥) اللهَ آسان عن النَّا اللهُ ال

ابن ابی جائم نے علی کے طریق سے حضرت ابن عباس رضائلہ سے روایت کیا ہے کہ اللہ تعالیٰ نے یہ جو مثال بیان فر مائی ہے اس میں سے قلوب اپ یقین وشک کے موافق محتمل ہوئے اور انہوں نے حظ اٹھایا 'سووہ زیر (جھاگ) تو وہ یوں ہی بہور وقابل انداخت ہوتا ہے یہ شک کی تمثیل ہے اور رہی وہ چیز جولوگوں کو فائدہ ہم پہنچاتی ہے تو وہ زمین میں تضہر جاتی ہے اور یہ شکی یقین ہے اور اس کی مثال یہ ہے کہ جس طرح زیور کو آگ میں ڈال کر کھر اکھوٹا و کھا جاتا ہے 'پھر اس میں سے خالص چیز لے لی جاتی ہو اور کھوٹ اس میں جھوڑ دی جاتی ہے 'ای طرح اللہ تعالیٰ یقین کو قبول فر مالیتا ہے اور شک کو چھوڑ دیا کرتا ہے۔

ای راوی کابیان ہے کہ حضرت عطاء رہن تنظر ماتے ہیں کہ بیمثال اللہ تعالیٰ نے مومن اور کافر کے لیے دی ہے۔

اور حضرت قیادہ دخی آللہ ہے مروی ہے کہ یہ تین مثالیں ہیں جن کوایک مثال میں سمودیا گیا ہے۔

ارشادِ خداوندی ہے کہ جس طرح یہ'' زبد'' (حجماگ) مضمحل ہوکر جفاء (کوڑا' کچرا) بن گیااور بے کارچیز ہوگیا کہ اب وہ قابل انتفاع نہیں رہا' ای طرح باطل اہل باطل ہے دور ہو جاتا ہے اور جس طرح کہ وہ پانی زمین میں ظہر کرشادالی پیدا کرتا ہے اور پیداوار میں اضافہ کا سبب بنتا ہے اور زمین سے نبات کی روئیدگی اور نشوونما کا ذریعہ بنتا ہے۔

یا جس طرح کے سونا جاندی کوآگ میں ڈالنے سے اس کامیل کچیل دور ہوجا تا ہے اور وہ کندن بن جاتا ہے اور اپنی سے وزر کے میل کی وہ کندن بن جاتا ہے اور انہی سے وزر کے میل کی طرح کہ دوہ آگ میں پڑنے سے الگ ہوجاتا ہے باطل بھی اہل باطل سے صححل اور جدا ہو جاتا ہے۔ جاتا ہے۔

اورای پہلی تھم کی ایک اور مثال اللہ تعالیٰ کا پی قول بھی ہے:

''وَ الْبَلَدُ الطَّيِّبُ' '(الاعراف: ۵۸) اور جواچھی زمین ہے۔ ابن ابی حاتم علی کے طریق ہے۔ ابن عباس مختمال اللہ تعالی نے مومن ہے۔ ابن عباس مختمال اللہ تعالی نے مومن کے لیے بیان کی ہے یعنی اللہ تعالی فرما تا ہے کہ '' مسومین طیب ''(پاک باز اور اچھا) ہے اور اس کاعمل بھی طیب وعمدہ ہے' جس طرح کہ اچھی زمین کا پھل اچھا ہوتا ہے اور (الاعراف: ۵۸) یہ مثال کا فرکے لیے دی گئی ہے کہ وہ شوریلی اور دلدلی زمین کی مانند ہے اور کا فرخود بھی خراب اور ردی ہے تو اس کے مل بھی خبث یعنی رداور خراب ہوں گے۔

اورای قبیل سے ہاں اللہ تعالیٰ کا قول 'اکہو ڈ اُ کے دُکم اُن تنگون کہ جُنة ''(القرہ: ۲۲۱)' کیاتم میں کوئی اسے پسندر کھے گا کہ اس کے پاس ایک باغ ہو' اس کے متعلق اما ہخاری نے حضرت ابن عباس رہن کا لئہ سے روایت کی ہے وہ فرماتے ہیں کہ ایک ون حضرت عمل فاروق اعظم رہن آلئہ نے صحابہ کرام میں مارضوان سے دریا فت کیا: تم لوگوں کے نز دیک ہے آیت کس بارے میں نازل ہوئی ہے: 'اکہو ڈ اُ حَدُّکُم اَنْ تَکُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِّنْ تَنْجِیْلٍ وَ اُعْنَابٍ 'لا رابقہ، کہ کا کہ اس کے پاس ایک باغ ہو مجوروں اور انگوروں کا 'متابہ کرام ہے کہ کہ کہ اس کے پاس ایک باغ ہو مجوروں اور انگوروں کا 'متابہ کا 'صحابہ کرام نے جواب دیا: اللہ تعالیٰ خوب علم والا ہے۔

حضرت عمر رضی آللہ یہ جواب من کر برہم ہوئے اور فر مایا: یہ کیا بات ہوئی 'صاف صاف کہہ کہ ہم جانتے ہیں یا نہیں جانتے 'پس ابن عباس رضی اللہ یہ من کر کہنے گے: اس کے متعلق میرے دل میں ایک بات ہے 'حضرت عمر رضی آللہ نے فر مایا: بھیتیج بیان کرواور اپنے نفس کو حقیر نہ سمجھو (یعنی) خوداعتادی ہوا حساس کمتری نہیں ہونا جا ہے۔

ابن عباس رضی اللہ نے کہا: یہ ایک عمل کی مثال دی گئی ہے۔

حضرت عمر مِنْ الله نے فرمایا: کس عمل کی بیمثال ہے؟

انہوں نے جواب دیا: ایک ایسے مال وارشخص کی جواللہ تعالیٰ کی اطاعت میں عمل پیرا ہوتا ہے کچر اللہ تعالیٰ نے اس کی طرف شیطان کو بھیجا تو وہ شخص نافر مانیوں اور گناہوں میں ایسا کاربند ہوا کہ اس نے اپنے تمام اعمال کا بیڑاغرق کردیا۔

أمنال كامِنَهُ

یعنی وہ امثال جو پوشیدہ ہوتی ہیں اور صریح طور پر لفظوں سے ظاہر نہیں ہوتیں' ان کے متعلق علامہ ماور دی بیان کرتے ہیں:

میں نے ابواسحاق ابراہیم ابن مضارب ابن ابراہیم سے سنا 'ان کا بیان ہے کہ میں نے اپ مضارب کو یہ بیان کرتے ہوئے سنا ہے کہ میں نے حسن ابن الفضل سے دریافت کیا کہ تم قرآن میں عربی اور عجمی ضرب الامثال بہت بیان کیا کرتے ہو'اچھا بھلا یہ بتاؤ کہ تم نے قرآن میں بیضرب المشل '' خیسر الامسور او ساطھا'' بہترین کام وہ ہے جس میں اعتدال ادر میاندروی یائے جائے' بھی کہیں یائی ہے؟

حسن ابن فضل نے جواب دیا: بے شک پیضرب المثل قرآن حکیم میں چار جگه آئی ہے: (۱) "لَا فَارِضْ وَلَا بِكُوْ عَوَانْ بَیْنَ ذٰلِكَ" (البقرہ: ۱۸)" نه بوڑهی نه بچھیا (بلکه) اس کے درمیان متوسط عمرک"۔

- (۲) '' وَالَّذِینَ إِذَا اَنْفَقُوا لَمْ یُسْرِفُوا وَلَمْ یَقْتُرُوا وَ کَانَ بَیْنَ ذَلِكَ قَوَامًا''(الفرقان: ۲۷)'' اوروه که جب خرچ کرتے ہیں نہ حد سے بڑھیں اور نہ تنگی کریں اور دونوں کے درمیان اعتدال برر ہیں'۔
- (٣) "وَلَا تَجْعَلْ يَدُكَ مَغْلُولَةً إلى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطُهَا كُلَّ الْبَسْطِ" (بن اسرائل: ٢٥) " اورا پناماتها في كردن سے بندها مواندر كھواورند بورا كھول دے"۔
- (٣) قولة تعالى: ' وَ لَا تَـجُهُوْ بِصَلَاتِكَ وَ لَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا'' (فى اسرائيل: ١١٠)' اورا بي نماز نه بهت او نچى آ واز سے پڑھواور نه بالكل آ سته بلكدان دونوں كے بچ ميں راسته چا هؤ'۔

مضارب کہتے ہیں کہ پھر میں نے پوچھا کہ کیاتم نے قرآن میں بیضرب المثل بھی پائی ہے: ''من جھل شیئا عاداہ (الناس اعداء لما جھلوا)''(ترجمہ:)حسن نے کہا: ہاں! دوجگہ قرآن میں اس کہاوت کامفہوم یا تاہوں:

(۱) ''بَـلُ كَـلَّابُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِه''(ينس: ٣٩)'' بلكها عِلْمَا بِعِلْمِهِ مَا كَمْم بر قابونه پايا''۔

(٢) ''وَإِذْ لَهُ يَهْتَدُوْا بِهِ فَسَيَقُولُوْنَ هٰذَا إِفْكُ قَدِيْمٌ ''(الاحقاف:١١)'' اور جب أنهيں اس كى ہدايت نه موئى تواب كهيں گے: يه پرانا بہتان ہے'۔

سوال:مضارب:'' اخبذر شو من احسنت اليه''(ترجمه:) کياييمثل(کہاوت) بھی قرآن میں ہے؟

جواب: حسن: بشك ديمهوالله تعالى كاقول 'وَمَا نَقَمُواْ آلَّا اَنْ اَغَنْهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ فَ مِنْ فَضَلِهِ ''(التوبه: ٤٣)' اورانهيس كيابُرالگايبى نه كه الله اوررسول نے اپنے فضل سے غنی كرديا''۔

سوال:مضارب: کیا بیثل''لیس المحیو کیالعیان''(شنیدہ کے بود ما نند دیدہ)قر آن سے یائی جاتی ہے؟

جواب:حسن: بالكل ديكهو! الله تعالى كا قول:

''اُوَلَمْ تُوْمِنْ قَالَ بَلَى وَلَكِنُ لِيَطْمَئِنَ قَلْبِى ''(القره:٢٦٠)'' فرمايا: كيا تَجِّے يقين نبيں؟ عرض كيا كہ يقين كيول نبيں! مگريہ چاہتا ہوں كہ مير _دل كوقر ارآ ئے''۔ سوال:مضارب:'' في المحر كات البوكات''(حركت ميں بركت) كياضرب المثل قرآن ميں ہے؟

جواب: حسن: جی ہاں! اللہ تعالیٰ کا قول' وَ مَنْ يُنْهَاجِرُ فِي سَبِيلِ اللهِ يَجِدُ فِي الْأَرْضِ مُسرٰغَمًّا كَثِيرًا وَّسَعَةً '(الناء: ١٠٠) اس پردلالت كرتا ہے اور جواللہ تعالیٰ كى راہ میں محربارچھوڑ كرنكے گا'وہ زمین میں بہت جگہ اور گنجائش یائے گا۔

سوال: مضارب: کیایی ضرب المثل' "کما تدین تدان "(چاه کن راه چاردر پیش) یعنی جیها کرو گے دییا بھرو گئ قرآن میں ہے؟ جواب: حسن: بال! الله تعالى كاقول: "مَنْ يَتَعْمَلُ سُودً عَيَّجُ زَبِه "(النهاء: ١٢٣)" اورجو برائى كرے گا اس كابدله يائے گا"-

سوال: مضارب: کیاتم کواہل عرب کی بیکہاوت "حسین تقلی تدری" بھی قرآن میں ملی ہے؟

جواب: حسن: بشك الله تعالى فرماتا ب: "وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ أَضَابَ الله تعالى فرماتا ب: "وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ أَضَلَّ سَبِيلًا" (الفرقان: ٣٢) "اوروه عنقريب جان ليس كَيْ جب عذا ب ريك سي كالمواكون تعا؟" كدراسته سے بھي كا بواكون تعا؟"

سوال: مضارب: كيا آپ نے بيضرب المثل كذ" لا يىلىدغ المومن من حجو موتين " (مومن ايك سوراخ سے دومرت نبيس ڈ ساجاتا)؟ قرآن ميں پائى ہے۔

جواب: حسن: بے شک دیکھو قول باری تعالیٰ ' هَالُ 'امَنگُمْ عَلَیْهِ اِلَّا کَمْ آ اَمِنْتُکُمْ عَلَی وَابِ اِسْ اِسْ اِسْ اِسْ عَلَیْهِ اِلَّا کَمْ آ اَمِنْتُکُمْ عَلَی اَسِ کے بارے میں تم پراسی طرح اعتبار کرلول' جس طرح پہلے اس کے بھائی (پوسف) کے بارے میں' میں نے تم پراعتبار کیا تھا''۔ موال: مضارب: میں نے کہا: کیا تم ہے کہاوت کہ' من اعان ظالماً سلط علیہ'' بھی قرآن میں یاتے ہو؟

جواب: حسن: بےشک و کھنے ارشاد خداوندی ہے:

(انج: ٣٠٠ عَلَيْهِ اَنَّهُ مَنْ تَوَلَّاهُ فَانَّهُ يُضِلُّهُ وَيَهْدِيْهِ إِلَى عَذَابِ السَّعِيْرِ ''(انج: ٣) (جس پراکھ دیا گیا کہ جواس کی دوئی کرے گاتو پیضرورائے گمراہ کر دے گااورائے عذاب دوزخ کی راہ بتائے گا'۔

سوال: مضارب: اورتم'' لا تبلد المحية الا حية''(عاقبت گرگزاده گرگشود) سيال دوره پلايئے ہوئی کہاوت کس آیت سے ليتے دے بیعو؟

جواب: حسن: اس آیت کریمہ سے اللہ تعالی فرما تا ہے: ' وَ لَا یَلِدُوْ آ اِلَّا فَاجِرًا كُفَّارًا'' (نوح: ۲۷)' اور ان کی اولا دنہ ہوگی گر بد كارشد يد كافز'۔

سوال: مضارب: اوربيضرب المثل كذ للحتيطان اذان ' ويوارك بهي كان موت بي أ

قرآن میں کہاں ہے؟

جواب:حسن: د يكھے الله تعالى ارشاد فرما تا ہے: ' وَفِيكُمْ سَمْعُونَ لَهُمْ '' (التوبه: ۲۷)' اور تم میں ان کے جاسوں موجود ہیں''۔

سوال:مضارب: اوركيابيكهاوت كه السجاهل مرزوق والعالم محروم " جابل كورزق دیاجا تا ہے اور عالم کومحروم رکھا' بھی قر آن میں ملتی ہے؟

جواب:حسن: ضرور دیکھو!الله تعالی کاارشاد ہے:

'' مَنْ كَانَ فِي الطَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدُ لَهُ الرَّحْمَٰنُ مَدًّا''(مريم:20)' جِوَمَرابي مِن بو تواہے حمٰن خوب ڈھیل دیے'۔

سوال: مضارب: اوركياييضرب المثل قرآن ميس ب:"المحلال لا يساتيك الساقوت والحرام يا ياتيك الاجزافا".

جواب :حسن: بالموجود ٢- آيت 'إذْ تَاتِيهِم حِيْنَانُهُمْ يَوْمُ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ لَا تَأْتِيهُم "(الاعراف: ١٦٣)" جب مفتد كردن ان كي محصليال ياني برتيرين ان كے سامنے آتيں اور جودن ہفتے كانہ ہوتا'نہ آتيں''۔

فا كده:جعفر بن مم الخلافه نے كتاب الاداب ميں ايك خاص باب مقرر كيا ہے جس ميں قرآن کے ایسے الفاظ ذکر کیے ہیں 'جو ضرب المثل کے قائم مقام ہیں اور یہ ایک بدیع نوع ہے' جس كون ارسال المثل 'ك نام سے موسوم كيا جاتا ہے۔ جعفر الخلاف لکھتے ہيں: حسب ذيل آيات قرآن اس نوع ندكوريس پيش كي جاسكتي بين:

الله تعالى كے سوا اس كا كوئى كھولنے

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُون اللهِ كَاشِفَةٌ.

(النجم:۵۸) والأنبيل.

(٢) كَنْ تَسَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تَمْ بِرَّز بِمِلَا لَى كُون يَبْجِوك جب تك راهِ خدامیں بن پیاری چیز نه خرچ کرو۔ اب اصلی بات کھل گئے۔

مُ مِيْدٍ تُحبُونَ . (آلعران: ۹۲)

(٣) ٱلْنُنُ حَصْحَصَ الْحَقُّ

(پوسف:۵۱)

(٣) وَضَوَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنْسِيَ خَلْقَهُ.

اور ہمارے لیے کہاوت کہتا ہے اور

(لس:۷۸) این پیدائش بھول گیا (ایاز قدرخود بشناس)۔ یہ اس کا بدلہ ہے جو تیرے ہاتھوں نے آگے بھیجا۔ (گندم از گندم بروید جوز جو) جو يو گئے وہي کا ٽو گے۔

هم ہو چکااس بات کا جس کاتم سوال (پوسف:۱۲۱) کرتے تھے۔

(٨) وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ. اور روك كروى كن ان ميل اور ال

ہے(جاہ کن راجاہ در پیش)

فرما دیجئے: ہرشخص اپنی طبیعت کے (بی اسرائیل:۸۴) مطابق کام کرتا ہے۔ (۱۲) وَعَسْمِ أَنْ تَكُورُهُواْ شَيْئًا وَهُو اللهِ الرقريب م كوئى بات تهميل برى لگےاور وہ تمہار بے حق میں بہتر ہو۔ ہر جان اپنی کرنی میں گروی ہے(یعنی (المدرُ:۳۸) جیبا کروگے دیبا بھروگے)۔ رسول برنہیں مگر حکم پہنجانا (کہ بر (المائده: ٩٩) رسولان بلاغ است وبس) نیکی کرنے والول پر کوئی راہ نہیں۔

نیکی کا بدلہ کیا ہے گرنیکی۔

(۵) ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدُكَ. (الْجُ:١٠)

(٢) قُضِيَ الْآمْرُ الَّذِي فِيْهِ تَسْتَفْتِينَ.

(2) أَلَيْسَ الصَّبْحُ بِقَرِيْبِ (عود: ٨١)

(ساء:۵۲) میں جے جاتے ہیں۔

(٩) لِكُلِّ نَبَا مُّسْتَقَرُّ (الانعام: ١٤) مرچيز كاوقت مقرر بـ-

(10) وَلَا يَسِعِيْقُ الْمَكُورُ السَّيِّيِّ إِلَّا اور بُراداوَا بِي طِيْدوال يِهِ بِي بِرَي بِرُتا بأهْلِهِ.

(قاطر:۳۳)

(١١) قُلُ كُلُّ يَّعْمَلُ عَلَى شَاكِلَتِهِ.

خَيو لَكُم. (القره:٢١٦)

(١٣)كُلُّ نَفْسِ بِمَا كَسَبَتُ رَهيْنَةٌ.

(١٣) مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلْغُ.

(١٥) مَا عَلَى المُحُسِنِينَ مِنْ سَبِيلِ.

(التوبه: ۹۱)

(١٢) هَلُ جَزَآءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ.

(الرحمٰن:۲۰)

(١٩) تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّى تَم أَنْهِيلِ ايك جَمَّا مُجْمُو كَ اور ان رابحشر:۱۳ کے ول الگ الگ ہیں۔ (الحشر:۱۳)

والے کی طرح۔

(الانفال:۲۳) ۔ جانتا (یعنی ان میں حق کے قبول کی کیچہ بھی صلاحیت ہوتی) تو ضرورانہیں سنوادیتا۔

اور میرے بندوں میں ہے شکر گزار

(ساء:١٣) بهت كم بين_

(البقره:۴۸۲) زياده تكليف نبيس ويتا_

(المائده: ۱۰۰) یاک اور نایاک برابزنبیں ہو سکتے۔

خشکی اور تری میں (انسانوں کے (الروم: ۱۱) کرتو تول کی وجہ سے فساد اور برائیاں

ظاہر ہوگئیں۔

کس قدر کمزور ہے جاہنے والا اور

(١٤) كُمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِنَةً ﴿ كَهُ بِارَاهُم جِمَاعت عَالِ، آ كُنْ كَثِير كَثِيْهِ ۚ قُ. (البقرة:٢٣٩)

كَثِيرة (البقره: ٢٣٩) بر-(١٨) آلنُّنَ وَقَدُ عَصَيْتَ قَبُلُّ. (ينس: ٩١) كيااب اور پہلے سے نافر مان رہا۔

(٢٠)وَ لَا يُنَبِّنُكَ مِثْلُ خَبِينُو . (فاطر: ١٣) اور تَجْهِ كُولَى نه بتائے گا'اس بتانے

(۲۱) کُلُّ حِزْبِ بِمَا لَدَیْهِمْ فَرِحُوْنَ O مِرگروہ جواس کے پاس ہے'اس پر

(المؤمنون:۵۳) خوش ہے۔

(٢٣)وَ قَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُورُ.

(۲۴) لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا. الله تعالَى سي كواس كي طاقت سے

(٢٥) قُلْ لَا يَسْتَوِى الْحَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ الصَّيْبُ الصَّابِينِ الْمُعَلِيمِ الْمَا يَكِعُ كه

(٢٧)ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحُو.

(٢٧)ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطَّلُوْبُ.

رانج:۲۲) جس کوچاہا گیا۔

ایی بی کامانی کے لیے کام کرنے (٢٨)لِمِثُلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعُمِلُونَ. (الصّفات: ٢١) والول كوكام كرنا جا ہے-اور وہ بہت ہی کم ہیں (آئے میں (٢٩)وَ قَلِيْلٌ مَّا هُمْ (ص:٣٣) نمک کے برابر)۔ عبرت بکڑنے والو (بصیرت کی) (٣٠) فَاعْتَبِرُ وَا يَاأُولِي الْاَبْصَارِ. (الحشر:۲) آئکھیں رکھنے والو۔

شامت اعمال ماصورت گرفته بےنظیر

حيثم عبرت بركشاوصورت حق بين نصير اسی طرح اور بھی ہیں۔

قرآن اورقتمیں اٹھانے کا بیان

ابن قیم نے اس موضوع یر" التبیان" کے نام سے ایک مستقل کتاب تصنیف کی ہے۔" فتم" مِ مَقْصُود خَبِرِ كَ تَحْقِيقَ اوراس كَى تاكيد موتى حِحْي كهاى بناءي أوالله يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَكَاذِبُونَ ''(المنافقون:۱)' اورالله گواہی دیتا ہے کہ منافق ضرور جھوٹے ہیں' ایسے كلامول كو بھی قتم کی قتم ہے شار کیا گیا حالانکہ اس میں شہادت (گواہی) کی خبر دی گئی ہے اور اس کوشم قرار دیئے جانے کی وجہ بیہ ہے کہ بید کلام خبر کی تا کید کرتا ہے اس لیے بیشم کے نام سے موسوم ہے۔اس جگدایک اعتراض کیا جاتا ہے کداللہ تعالیٰ کے شم یا دفر مانے کا کیامعن ہے؟ کیونکہ اگر وہ شم مومن کے لیے ذکر کی گئی ہے تو مومن تو محض خبر دیے ہی کے ساتھ بغیر

فتم کے اس کی تصدیق کرتا ہے اور اگر ہے مکا فر کے لیے بیان کی گئی ہے تو پھر کا فر کے لیے ہے سچوجھی مفیرہیں۔

اس اعتراض كاجواب بيده يا كيا ہے كةر آن شريف كانزول الل عرب كى زبان ميں ہوا ہے اور ان کی عادت ہے کہ جس وقت وہ کسی بات کو تا کید کے ساتھ ذکر کرنا جا ہے ہیں توقشم کھایا کرتے ہیں۔ ابوالقاسم قشیری اس اعتراض کے جواب میں لکھتے ہیں:

الله تعالی نے اتمام ججت اور اس کی تاکید کے لیے شم کوذکر کیا ہے اور بیاس لیے ہے کے حکم (فیصلہ کرنے والا) فریقین کے درمیان کسی امر کا فیصلہ دو ہی طریق ہے کرتا ہے: (۱) شہادت (۲) یافتم کے ساتھ'اس لیے کہ اللہ تعالیٰ قر آن میں دونوں نوعوں کا ذکر فر ما دیا تاكدان منافقين كے ليے كوئى جحت باقى ندرہ جائے۔ چنانچدارشا وفر مايا: 'فُلُ إِي وَرَبَّعَي إِنَّهُ لَحَقُّ ''(یونس: ۵۳)''تم فر ماؤ ہاں!میرےرب کی شم! بے شک وہ ضرور حق ہے'۔

اورفر مايا: "شَهدَ اللَّهُ آنَّهُ لَآ إِلَهُ إِلَّهُ وَالْمَلْئِكَةُ وَأُولُوا الْعِلْمِ" (آل عران:١٨) '' الله نے گواہی دی کہاس کے سوا کوئی معبود نہیں اور فرشتوں نے اور عالموں نے''۔اللہ تعالیٰ، اور فر شتے ادرعلم والے انصاف کے ساتھ گواہی دے چکے کہاس کے سواکو کی معبود نہیں اور ایک اعرابي كم تعلق بيان كيا كيا سي كراس في جب الله تعالى كاقول: " وَفِي السَّمَاءُ رِزْفُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ۞فَوَ رَبِّ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ إِنَّـٰهُ لَحَقٌّ ''(الذاريت:٢٣_٢٣)|ورآ الن 🛈 میں تمہاری روزی ہےاور تمام وہ چیزیں جن کاتم سے وعدہ کیا جاتا ہےاور آسان اور زمین کے 🕏 رب کی قتم! بے شک بیقر آن ای طرح حق ہے جیسا تمہارا آپس میں باتیں کرنا' ساتو چیخ اٹھا اور کہنے لگا: وہ کون ہے جس نے رب تعالیٰ کواس قدرغضب دلایا یہاں تک کہ اللہ تعالیٰ کے 💆 نز دیک بیدامرضروری قرار پایا کہوہ قتم ذکر کر کے بات کی تاکید فرمائے' فتم صرف کسی عظمت والے نام کے ساتھ ہی کھائی اور ذکر کی جاتی ہے اور اللہ تعالیٰ نے قرآن شریف میں سات جگدایی ذات مبارک کی تشم بیان فرمائی ہے:

(١) قُلْ إِي وَرَبِّيْ. (يِسْ: ٥٣) آپ فرمائے کہ مجھے اپنے رب کی

آپفر مادیجئے کیوں نہیں! مجھےایے (التغابن:۷) رب کی قتم ہے!تم ضروراٹھائے جاؤ گے۔ تو آپ کے رب کی قتم! ہم انہیں اور

(مریم: ۱۸) شیطانوں کوسب کو گھیر کرلائیں گے۔ اے نی ! آپ کے رب کی قتم! ہم

(الجر: ٩٢) ان سب سے ضرور پوچھیں گے۔

اے نی! آپ کے رب کی قتم! وہ

(٢) قُلْ بَلْي وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ.

(٣) فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيْطِيْنَ.

(٣) فَوَ رَبُّكَ لَنَسْئَلَنَّهُمْ أَجْمَعِيْنَ.

(۵) فَلَا وَرَبُّكَ لَا يُؤْمِنُونَ.

(النساء: ٦٥) مسلمان نه بول محر

(۲) فلا اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ. اور مجھ فتم ہے سب مشرقوں اور (۲) فلا اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ. (المعارج: ۳۰) مغربوں کے رب کی !

اور باتی تمام تنمیں اپن مخلوق کے ناموں کے ساتھ ذکر فرمائی ہیں۔مثلا اللہ تعالی ارشاد

فرما تاہے:

(1) "وَالتِّين وَالزَّيْتُون "(التين :١)" انجير كي تتم اورزيتون كي!"-

(٢) "وَالصَّفَّتِ" (الصَّفْت: ١) " قتم ب با قاعده صف بانده كركفر بهونے والول كى!"-

(٣) "وَالشَّمْسِ وَصُعِهَا" (السَّس: ١)" سورج اوراس كي روشي كي شم!"

(٣) ''وَاللَّيْل''(الليل:١)'' رات كي شم!''

(۵) ''وَالصَّحٰي ''(الفحل:۱)'' عِلِشت كَلْ مُثم!''

(٢) "فَلَا أَقْسِمُ بِالْحَنْسِ" (الكور:١٥) "فتم بالاستارول كى جوالنه پھريئ سيدھے چليں!"۔

اگر کہا جائے کہ اللہ تعالی نے مخلوق کی قسم ٹیوں کر ذکر فرمائی ہے حالانکہ غیر اللہ کی قسم اٹھانے کی بخت ممانعت آئی ہے۔

تو ہم کہیں گے کہاس کا جواب کی طریقوں سے دیا گیا ہے:

- پہلاطریق یہ ہے کہ ان جگہول پر مضافیہ محذوف ہے اور اصل میں اس طرح ہے:
 "ورب التین Oورب الزیتون Oورب الشمس "اورای طرح باتی میں ہے۔
- دوسراطریق یہ ہے کہ اہل عرب ان چیزوں کی تعظیم کرتے تھے اور ان کی قسم کھایا کرتے تھے لہٰذاقر آن کا نزول ان کے عرف کے موافق ہوا ہے۔
- تیسراطریق بیہ ہے کہ مصرف ان چیزوں کی کھائی جاتی ہے 'جوشم کھانے والے کے نزدیک بزرگی اور عظمت کی حامل ہوں اور وہ چیزیں قتم کھانے والے سے بلند و بالا ہوں اور اور چیزیں قتم کھانے والے سے بلند و بالا ہوں اور اللہ تعالیٰ سے بلند ترکوئی نہیں ہے 'اس لیے اس نے بھی اس ذات پاک کی قتم یا دفر مائی ہے اور بھی اپنی مصنوعات کی 'کیونکہ مصنوعات اپنے خالق اور صانع کی ذات اور وجود پردلیل ہیں۔
 - O ابن الی حاتم ، حسن رحمة الله علیه سے روایت کرتے ہیں انہوں نے کہا:

بے شک اللہ تعالیٰ ابن مخلوق میں ہے جس چیز کی جاہے تھم یاد فرمائے جب کہ کسی بندے کے لیے ہیں جب کہ کسی بندے کے لیے ہیں جائز نہیں کہ دہ اللہ تعالیٰ کے سواد وسری کسی چیز کی قتم کھائے۔

- ابن مردویهٔ حضرت ابن عباس رضی الله سے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فر مایا کہ الله تعالیٰ نے اپنے حبیب مرم مصطفیٰ التی آئی ہے افضل اور زیادہ شان وعظمت والا کوئی افس بیدانہیں فر مایا ہے اور حضور علیہ الصلوٰ ق والسلام کے علاوہ کسی کی جان کی قتم یا دنہیں فر مائی ہے صرف آپ کی جان کی قتم بیان فر مائی ہے 'ارشاد خداد ندی ہے:'' لَکھ مُر وُک اِنَّهُ مُ لَیْ ہِی سَکْرَ تِیهِم یَعْمَهُوْنَ '' (الحجر: ۲۲)'' اے محبوب (ملتی ایکی آپ کی جان کی قتم! بے شکو تیهم یک میں بھٹک رہے ہے''۔

 کی قتم! بے شک وہ این نشر میں بھٹک رہے تھ'۔
- پھراللہ تعالیٰ ان اصولِ ایمان کی قتم بیان فر ما تا ہے جن کی معرفت لوگوں پر واجب اور ضروری ہے اور وہ اصولِ ایمان جن کی قتم اٹھائی گئی حسب ذیل ہیں:
- (۱) توحید(۲) قرآن حق ہے (۳) رسول برحق ہے (۴) جزاوسزا (۵) اور وعدہ اور وعید۔
- اقل یعنی تو حیدی مثال الله تعالی کا بیقول' و السطّفیت صفّا' سے لے کرتا قوله تعالیٰ '' اِنَّ اِلله کُمْ لَوَاحِدٌ' (الصّفت: ۳ تا)'' فتم ہے ان کی کہ باقاعدہ صف باند ھے پھر ان کوجھڑک کر چلائیں' پھران جماعتوں کی کہ قرآن پڑھیں' بے شک تمہارا معبود ضرور ایک ہے'۔

آپ پنجبروں میں سے ہیں 0'اور' وَالنَّجْمِ إِذَا هَوٰی 0 مَا صَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا عَلَیْ صَاحِبُكُمْ وَمَا عَدِی 0 مَا صَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا عَدِی 0'(النجم:۱-۱)' حکمت والے قرآن کی شم! بیشکی سیدهی راہ پر بھیجے گئے ہوائی بیارے جیکتے تارے محمد طَنْ اُلَیْا ہُم کی شم! جب یہ معراج سے اترے تہارے صاحب نہ بہکے اور نہ بے راہ جائے'۔

جہارم(۱) ''واللذاریات''تاقولہ تعالیٰ' آنسما تُوعدُون کَصَادِقُ٥ وَاِنَّ الدِّیْنَ کَمَارِوْلُ٥ وَاللَّالِ! بِشَک جس بات کا لَوَاقِعٌ ''(الذاریات ۲۰۱۱)'' فتم ان کی جو بھر کراڑانے والیال! بے شک جس بات کا تمہیں وعدہ ویا جاتا ہے ضرور پی ہے اور بے شک انصاف ضرور ہونا ہے'۔
(ب)''والمُمْرُ سُلَتِ ''تاقولہ' اِنَّمَا تُوعدُونَ لَوَاقِعٌ ''(الرسلات: ۲-۱)'' فتم ان کی جو بیجی جاتی ہوضرور ہوئی

بنجم یعنی انسان کے احوال کی شمیں کھانے کی مثال' و السلّیلِ اِذَا یَنعُشٰی' تا قولہ تعالیٰ اِن سَعْیَکُمْ لَشَتْی' (اللیل: ۱۰۰۰)' اور رات کی شم! جب چھا جائے۔۔۔۔ کے شک تمہاری کوشش مختلف ہے'۔

ب ''وَالْعَدِيْتِ' ' تَاقُولَهُ ' إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكُنُوْدٌ ' (العاديات: ٢-١) ' قتم عان گُورُوں كى جوميدان ميں تيزى سے دوڑتے ہيں 'بے شك آ دمى اپنے رب كا يرانا شكرائے '۔

(ج)'' وَ الْعَصْرِ ٥ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ ٥ ''(العصر: ١-١)'' اس زمانه محبوب كل قتم! ٥ بے شك انسان ضرورنقصان ميں ہے''۔

(ر)'' وَالنِّيْنِ''الى قولهُ' لَـقَـدُ خَلَقُنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقُويْمٍ''(التين: ١٠٠٠) '' انجير كاشم ____ بشك بم نے انسان كواچھى صورت ير بنايا'' _

(ه) ' لَا أَقْسِمُ بِهِذَا الْبَلَدِ... المي قوله لَقَدُ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَدٍ '' (البلد: ١٠) ' مجھے اس شہر کی شم ____ بشک ہم نے انسان کو مشقت میں رہتا پیدا کیا''۔

مجادله كابيان

قرآن عظیم دلائل و براہین کی جمیع انواع پرمشمل ہے کوئی برہان دلیل تقسیم اور تحذیر الیک نہیں جو کہ معلومات عقلیہ اور سمعیہ سے بنائی گئی ہواور وہ کتاب اللہ میں بیان نہ ہوئی ہو ' مگرفر ق صرف میہ ہے کہ قرآن عکیم نے متعلمین کی طرح دقیق ابحاث میں الجھے بغیر ساوہ انداز میں اہل عرب کی عادات اور عرف ورواج کے مطابق دلائل و براہین کو پیش کیا ہے اور قرآن میں اہل عرب کی عادات اور عرف ورواج کے مطابق دلائل و براہین کو پیش کیا ہے اور قرآن کے اس سادہ اسلوب اور طرزیمان کو اپنانے کی دووجہیں ہیں:

- بہلی وجہ یہ ہے کہ اللہ تعالی خود فرما تا ہے: "وَمَا آرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهِ
 لِيْبَيِّنَ لَهُمْ" (ابراہم: ٣)
 - '' اور ہم نے ہررسول اس کی قوم ہی کی زبان میں بھیجا کہ وہ انہیں صناف بتائے''۔
- اور دوسری وجہ سے کہ جحت پیش کرنے کے دقیق طریق کی طرف وہی شخص مائل ہوگا' جوجلی اور روشن کلام سے دلیل قائم کرنے سے عاجز ہوگا' ورنہ جوشخص ایسے واضح ترین کلام سے اپنی بات سمجھا سکتا ہے' جس کو اکثر لوگ سمجھ سکتے ہوں' اسے کیا پڑی ہے کہ ایسے غافض کلام کی طرف مائل ہو' جس کو بہت کم لوگ جانتے ہوں اور قادر الکلام شخص ہرگز اپنی بات کو معمداور چیستان بنانے کی کوشش نہیں کرے گا۔
- چنانچاللہ تعالیٰ نے اپی مخلوق کے لیے دلائل بیان فرمانے کا نہایت واضح طریقہ اختیار فرمایا تا کہ عالم لوگ بھی خطاب کے اس صاف اور نہایت واضح اسلوب سے قرآن کے معانی اور مفاہیم کوسلی بخش طریقے سے سمجھ جائیں اور اس طرح ان پر ججت تام ہو جائے اور خواص اس اثناء میں ایسے مطالب کو بھی پالیں 'جو خطباء کے ذہنوں کی رسائی اور ان کے ادر اک سے بلند و بالا ہوتے ہیں۔

قرآن کے اسلوبِ مجادلہ اور طرزِ جدل کی مثالوں میں ایک یہ ہے کہ اللہ سجانہ تعالیٰ نے معاد جسمانی پر کئی طرق اور اقسام سے دلائل قائم فرمائے ہیں ایک قتم ابتداء یعنی پہلی حالت پرلوٹانے کا قیاس ہے جسیا کہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا ہے کہ ' تحما بَدَا کُم تَعُوْدُوْنَ '' حالت پرلوٹانے کا قیاس ہے جسیا کہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا ہے کہ ' تحکما بَدَا کُم تَعُوْدُوْنَ ' (الاعراف:٢٩)' جسیااس نے تہارا آغاز کیا 'ویسے ہی پلٹو گئے'۔

- "كُمَا بَدَأْنَا آوَّلَ خَلْقٍ نَعِيدُهُ" (الانبياء: ١٠٣)" بم نے جیسے پہلے اسے بنایا تھا ویسے ہی پھر کردس گے"۔
- ان الفَعَييْنَا بِالْنَحَلْقِ الْأُوَّلِ "(ق: ١٥)" تو كياجم پہلی بار بنا كرتھك گئے"۔
 دوسری قتم معاد پراس طرح استدلال فرمایا كہ جب اللہ تعالی زمین اور آسانوں کی تخلیق
 پرقادر ہے 'پھراس كے ليے مردوں كوزندہ كرنا بہ طریق اولی ثابت ہے كہ بیاس كی بہ نسبت
 (تمہارے سجھنے كے ليے) نہایت آسان ہے۔

الله تعالى ارشاد فرما تا ب:

"أوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمُونْتِ وَالْأَرْضَ بِقَلْدِرٍ "(يُس: ٨١)" اوركياوه جس في آسان اورزيين بنائي ان جيسے اور نہيں بناسكتا؟"

- تیسری قتم: زمین کے مردہ اور ویران ہونے کے بعد بارش وغیرہ سے اس کے دوبارہ زندہ اور سرسبز وشاداب کردینے پر قیاس کرنا ہے۔
- O چوتھے: تازہ و ہرے بھرے درخت ہے آگ کے پیدا کرنے پر مردوں کو دوبارہ زندہ کرنے کا قیاس کرناہے۔
- حاکم وغیرہ روایت کرتے ہیں کہ الی ابن خلف ایک ہڈی لے کرآیا اوراس کو چکنا چور کر
 ے بھیر دیا' پھر کہنے لگا: کیا اللہ اس ہڈی کو بوسیدہ اور ریزہ ریزہ ہوجانے کے بعد بھی
 زندہ کردے گا؟ پس اس موقع پر اللہ تعالیٰ نے یہ آیت اتاری کہ' قُل یُٹے بیٹھا الَّذِی
 اَنْشَاهَا اَوَّلَ مَرَّ وَ '(یس ،۹۷)' آپ فرما ہے: انہیں وہ زندہ کرے گاجس نے پہلی
 بارانہیں بنایا'۔ پس اللہ سجانہ نے نشاۃ ٹانیہ کونشاۃ اولیٰ کی طرف پھیر نے اور دونوں
 بارانہیں بنایا' کے پس اللہ سجانہ نے نشاۃ ٹانیہ کونشاۃ اولیٰ کی طرف پھیر نے اور دونوں
 کے درمیان علت حدوث کے مشترک ہونے سے استدلال فرمایا' پھر ججت کومزید پختہ
 کرنے کے لیے یہ قول بطور ججت ارشاد فرمایا کہ' اللّذی جَعَلَ لَکُمْ مِنَ الشّخوِ
 الْاَخْطَوِ نَارًا' (یس: ۸۰)' جس نے تبہارے لیے ہرے پیڑ ہیں ہے آگ بیدا گ'
 اور دو چیز ول کے درمیان بہ حیثیت تبدیل اعراض جامع ہونے کی یہ آیت ایک شکی کی
 افر پر قباس کرنے کی نہایت واضح اور روثن دلیل ہے۔
 - O اس فتم سے تعلق ہے اس استدلال کا کہ صانع عالم ایک ہی ہے اور یہ استدلال دلالت

قائع کے طور پر کیاجا تا ہے جس کی طرف آیت کریمہ 'لُو ٹُکانَ فِیھِمَا 'الِلَّهُ اِلَّا اللَّهُ لَفَسَدُتَا ''(الانبیاء:۲۲)' اگرآ سان وزمین میں الله کے سوااور خدا ہوتے تو ضرور وہ تباہ ہوجاتے 'مشیر ہے اور آیت نہ کورجس تمانع (یعنی متعدد معبود ول کے عدم اتحاد وا تفاق) پر دلالت کرتی ہے' اس کی تقریر اس طرح کی جاتی ہے کہ اگر کا بنات کے دو صانع و خالق ہوتے تو ہرگز ان کی تدبیریں ایک ہی نظام پر نہ چل سکتیں اور نہ یہ نظام کا بنات ایک نے بہت کہ موسکتا اور لاز ماان دونوں کو یا کسی ایک کو عاجز ہونا پڑتا' اس کی وجہ یہ ہے کہ اگر ان میں سے ایک صانع کسی جسم کو زندہ کرنے کا ارادہ کرتا اور دوسرے صانع کا ارادہ ای جسم کومردہ رہے کے اموتا تو اس کی تین صورتیں بنتی ہیں:

(۱) یا دونوں خداوُں کا ارادہ نافذ ہو گا(۲) یا دونوں خداوُں کا ارادہ نافذنہیں ہو گا (۳) یا! یک کاارادہ نافذ ہوگا' دوسرے کانہیں ہوگا۔

اس میں پہلی شق کی پھر دوصور تیں ہیں: یا تو دونوں کا اتفاق فرض کیا جائے گایا اختلاف بہصورت اوّل فعل کی تجزی لا زم آتی ہے اور بہصورت ثانی اجتماع ضدین اور بید دونوں باتیں محال ہیں۔

اور شق ٹانی پردونوں کا بھز اور بہصورت ٹالٹ کسی ایک صانع کا عاجز ہونالا زم آتا ہے۔ اور جو عاجز ہو'وہ خدانہیں ہوسکتا' بلکہ خداوہ ہے جو ہرممکن پر قادر ہے۔

فن مجادلہ کی اصطلاحات میں ہے ایک نوع'' قبول بسالسمو جب'' ہے'ابن الی الاصع بہان کرتے ہیں:

قول بالموجب کی حقیقت ہیہ ہے کہ فریق مخالف کے کلام کواس کے کلام کے فھوی معنی مدلول ومفہوم سے رد کر دیا جائے۔

اور "قول بالموجب" كي دوسميس بين:

(۱) پہلی قسم یہ ہے کہ غیر کے کلام میں کوئی صفت بہطور کنایہ اس شک کے لیے واقع ہو'جس کے لیے حاقع ہو'جس کے لیے حکم ثابت کیا گیا ہے۔ اب وہ صفت ای پہلی شک کے سوا دوسرے کے لیے ثابت کردی جائے۔ مثلاً اللہ تعالی ارشا وفر ما تا ہے:'' یَـقُولُونَ لَینُ دَ جَعَناۤ اِلَی الْمَدِینَةِ لَیْنُ حَبِینَ الْاَحْلُ مِنْهَا الْاَحْلُ قَلُ وَلِلْهِ الْعِزَّةُ ''(المنافقون: ۸)'' کہتے ہیں: ہم مدینہ چم کینہ چم

arseNizami.MadinaAcademy.Pk

کر گئے تو ضرور جو بری عزت والا ہے وہ (عزت والا) اس بیس سے نکال دے گا ہے جو نہایت ذلت والا ہے اور عزت تو اللہ اور اس کے رسول اور ایمان والوں کے لیے ہے'۔ اس آیت میں منافقوں نے لفظ اعز کنا یہ کے طور پراپنے گروہ کے لیے استعال کیا ہے اور اذل (ذلیل) کا لفظ گروہ مونین کے لیے بہ طور کنا یہ استعال کیا اور منافقوں نے اپنی جماعت کے لیے یہ بات ثابت کی تھی کہ وہ ایمان والوں کو مدینہ سے نکال دیں گے۔ پس اللہ تعالی نے ان کا روفر ماتے ہوئے صفت عزت کو منافقین کے بجائے ان کے مقابل جماعت کے لیے ثابت کردی'جو اللہ رسول اور ایمان والوں کی جماعت مے لیے ثابت کردی' جو اللہ رسول اور ایمان والوں کی جماعت ہے گئی کہ ہاں میرے ہے کہ عزت والے وہاں سے ذلیل کی جماعت ہے گئی کہ ہاں میرے ہے کہ عزت والے وہاں سے ذلیل لوگوں کوشہر بدر کریں گویا یہ کہا گیا کہ ہاں یہ جے کہ عزت والے وہاں سے ذلیل اور دلیں نکالے لوگ خود منافقین جی اور اللہ اور اللہ اور میں نکالے لوگ خود منافقین جی اور اللہ اور اللہ اس کے رسول مکر معزت والے اور نکال باہر کرنے والے جیں۔

صم دوم یہ ہے کہ ایک لفظ کو جوغیر کلام میں واقع ہوا ہے'اں کو اس شخص کی مراد کے خلاف برمجمول کر دیا جائے اور وہ لفظ اپنے متعلق کے ذکر سے اس کامحمل بھی ہو۔ علامہ سیوطی رحمۃ اللّہ علیہ کا بیان ہے کہ میر کی نظر ہے کوئی ایسا شخص نہیں گزرا' جس نے قرآن مجید ہے اس کی کوئی مثال پیش کی ہو۔

ہاں خود میں اس قتم کی ایک آیت ڈھونڈ نکالنے میں کامیاب ہوا ہوں 'وہ آیت یہ بے' اللہ تعالی ارشاد فرما تا ہے:

'' وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُوْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُولُوْنَ هُوَ أَذُنَّ قُلُ اُذُنُّ خَيْرٍ لِّكُمُ ''(احوبنا) '' اوران میں کوئی وہ ہیں کہ ان غیب کی خبریں دینے والے کوستاتے ہیں اور کہتے ہیں کہ وہ تو کان ہیں تم فرماؤ تمہارے بھلے کے لیے کان ہیں'' فن جدل میں قرآن کی اصطلاحات میں سے ایک مناقضہ بھی ہے۔

اور مناقضہ اس چیز سے عبارت ہے کہ ایک امر کو کسی محال اور ناممکن شک پر لاکا دیا جائے اور محال شئے سے متعلق کرنے میں اس بات کی طرف اشارہ ہوتا ہے کہ اس کا وقوع ہی دائرہ امکان سے خارج ہے مثلاً اللہ تعالیٰ کا قول ہے:

" وَلَا يَدَدُّ خُدُونَ الْجَنَّةَ حَتَّى يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ " (الاعراف: ٠٠) " اور

نہ وہ جنت میں داخل ہوں جب تک سوئی کے ناکے میں اونٹ نہ داخل ہو''۔

ایک اورشم'' مجاراہ المحصم'' ہے'اس کا مطلب بیہوتا ہے کہ قصم بینی فریق مخالف اور مدمقا بل لغزش کھائے اور پھسل کراپنے ہی بعض مقد مات کواس جگہ تسلیم کرئے جہال کہاس کوالزام دینااور قائل کرنامقصود تھا۔

مثلاً الله تعالى كا فرمان ہے:

''فَالُوْآ اِنْ اَنَتُمْ اِلَّا بَشَوْ مِّشْلُنَا تُرِيدُوْنَ اَنْ تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ ابَآوْنَا فَالْمُوْآ اِنْ اَنْتُمْ اللّهُمْ اِنْ نَحْنُ اِلّا بَشَوْ مِّمْلُكُمْ ''(ابراہیماا۔۱۰) فَانُوْنَا بِسُلُطْنِ مَّبِینِ Oَ اَلَتْ اَلْهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَحْنُ اِلّا بَشَوْ مِّمْلُكُمْ ''(ابراہیماا۔۱۰) 'نوجۃ ہیں اب کوئی روثن سندہارے پاس لے آؤ'ان کے رسولوں نے ان سے کہا: ہم ہیں تو ہمہاری طرح انسان ''۔اس جگہرسولوں کا یہ کہنا کہ'' اِنْ تَحْنُ اِلّا بِشَو مِّمْلُكُمْ ''(ابراہیم،۱۱) '' بی شرکم میں تاہم ہیں تو انسان ''۔اس جگہرسولوں کا یہ کہنا کہ'' اِنْ تَحْنُ اِلّا بِشَو مِّمْلُكُمْ ''(ابراہیم،۱۱) '' بی میں ایک طرح کا اقراران کے بشریت ہی میں مخصرہونے کا پایا جا تا ہے اور اس طرح گویا انہوں نے اپنی ڈوات سے رسالت کا انتفاء سے مقصود فریق مخالف کی دلجوئی کرنا اور ان کو بہلا نا ہے' پس گویا کہ انبیاء کرام نے یوں کہا ہے۔ تم نے ہمارہ کے انتفاء ہے۔ ہم ہمیں سے ہمیں ہے۔ ہمارہ کیا ہے اور ہم اس سے انکاری نہیں ہے۔ ہمارہ کیا نہا ہے وہ اس کے منافی تو نہیں ہے کہ الله تعالی نے اپنے فضل عظیم سے ہمیں ہیں' لیکن سے بات پچھاس کے منافی تو نہیں ہے کہ الله تعالی نے اپنے فضل عظیم سے ہمیں منصب رسالت کے لیے چن لیا ہے۔

قرآن پاک میں واقع اساء والقاب اور کنیتوں کا بیان

قر آن مجید میں انبیاءاور مرسلین علیم کی سے بچیس کے اساءمبارک ذکر ہوئے ہیں اور وہ شہور انبیاء انتقا ہیں:

O حضرت اسحاق عاليهلاً "آب حضرت اساعيل عاليهلاً كي ولا دت كے چودہ سال بعد پيدا

حضرت يعقوب عاليلاً "آپ نے ايک سوسينتاليس سال عمريائی۔

حضرت بوسف عاليه لأا ابن يعقوب ابن اسحاق ابن ابراتهم النلأ-

حضرت لوط علاليهلاً 'ابن اسحاق كا قول ہے: وہ لوط ابن ہاران ابن آ زر ہیں ۔

حضرت هود عاليه للا حضرت صالح عاليه للا حضرت موى عاليه للا حصرت موى عاليه للا حصرت موى عاليه لل

حضرت مارون علايسلاً حضرت دا ؤ د علايسلاً

حضرت سليمان عاليهلاً 'آپ حضرت داؤ د عاليه لاً کے جگر گوشه ہیں۔

O حضرت اليوب علاليه الأكار والكفل علاليه الأكار والكفل علاليه الأكار والكفل علاليه الأكار والكفل علاليه الأكار والكفل علاليه الأكار والكفل علاليه الأكار والكفل علاليه الأكار والكفل علاليه الأكار والكفل علاليه الأكار والكفل علاليه الأكار والكفل علاليه الأكار والكفل علائه الأكار والكفل على الأكار والكفل على الأكار والكفل على الأكار والكفل على الأكار والكفل على الأكار والكفل على الأكار والكفل على الأكار والكفل على الأكار والكفل على الأكار والكفل على الأكار والكفل على الأكار والكفل على الكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكفل الكار والكار حضرت زكريا علليهلأ

O حضرت السع عاليلاًا

O حضرت یکی عالیه لا (آپ حضرت زکر یا عالیه لا کے بیٹے ہیں)۔

O حضرت عيسيٰ علايسلاً

O فاتم الانبياء حضرت محمصطف عليه التحبة والثناء ملتوليكم -

اساء ملائکہ (فرشتوں کے نام)

قرآن مجید میں جن فرشتوں کے اساءآئے ہیں' یہ ہیں: حضرت جبرائیل میکائیل مالک (پیفرشتہ جہنم کا داروغہ ہے)۔ ماروت اور ماروت _

نوٹ: علامہ میوطی رحمة اللہ تعالیٰ عنہ نے الا تفان میں مختلف روایات کے حوالہ ہے کچھ اور بھی اساء ذکر کیے ہیں' مثلا الرعد' برق سجل' قعید' ذوالقر نین' روح اور سکینہ اس طرح فرشتوں کے اساء کی کل تعداد بارہ ہوئی۔ (مترجم)

صحابہ طالبہ علی ہے حضرت زید بن حارثہ طِی اُللہ کا نام قرآن مجید میں آیا ہے۔

عمران مریم کے باپ عزیز تی القمان یوسف (جن کا ذکر سورہ عافر میں ہے)اور یعقوب کا سورہ مریم کے اوّل میں ان کا ذکر آیا ہے اور ' تقی ' اللہ تعالیٰ کے قول ' إِنّهِی آعُودُ وُ اللہ تعالیٰ کے قول ' إِنّهِی آعُودُ وُ اللہ تعالیٰ کے قول ' إِنّهِی آعُور اللہ تَحْمُنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِیّا ' (مریم الا) ' میں (مریم) تجھے حرمیٰ کی بناہ مائلی ہوں اگر تو اللہ سے ڈرنے والا ہے ' ۔ اس میں کہا گیا ہے کہ بیدا یک ایسے مرد کا نام ہے جو عالمی شہرت کا حامل تھا اور اس کا نام زبان زوعام تھا' مراد بیہ ہے کہ اگر تو نیک جال میں تھی کی مثل ہے تو میں تجھ سے پناہ مائلی ہوں' اس بات کو تقلبی نے نقل کیا ہے۔

قرآن مجید میں عورتوں کے نام

قرآن مجید میں صرف ایک عورت حضرت مریم کانام آیا ہے'اس کے علاوہ کسی عورت کا نام ندکور نہیں'ایک قول میہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کاار شاو' اتبدعون بعلا' میں لفظ' بعل' ایک خاتون کا نام ہے' جس کولوگ دیوی مانتے اور اس کی پرستش کرتے تھے' پیقول ابن عسا کر ہے منقول ہے۔

قارون آزر جالوت اور بامان _

قرآن مجید میں جنات کے ناموں سے ان کے دادااہلیس کا نام آیا ہے۔

قبائل کےنام

قرآن پاک میں قبیلوں میں سے یا جوج 'ماجوج 'عاد مُمود مدین قریش اور الروم کے نام آئے ہیں۔

قوموں کے نام

اقوام کے نام جو کہ دوسرے ناموں کی طرف مضاف ہوکر آئے ہیں' حسب ذیل ہیں: قوم نوح' قوم لوط' قوم تع' قوم ابراہیم اور اصحاب الایکہ اور کہا گیا ہے کہ اصحاب الایکہ ہی مدین ہیں اور اصحاب الرس' قوم شمود کے باقی ماندہ لوگ ہیں۔ یہ ابن عباس رضاللہ کا قول ہے' عکرمہ کہتے ہیں کہ وہ اصحاب یاسین ہیں اور حضرت قادہ کا قول ہے کہ وہ قوم شعیب ہیں اور کہا گیا کہ وہ اصحاب الاخدود ہیں'ای کو ابن جریر نے پہندیدہ قول قرار دیا ہے۔قرآن پاک میں بتوں کے ایسے نام جو کہ انسانوں کے نام پررکھے گئے ہیں' حسب ذیل ہیں:

ور سواع ایغوث بعوق اورنسریه توم نوح کے اصنام تھے۔

ر رہی میں میں اور منا ہتان قریش کے نام تھے'ای طرح'' الوجو''اس شخص کے نزدیک بت کا نام ہے'جس نے اس کوراء کے پیش کے ساتھ پڑھا ہے۔

ام المختش نے کتاب'' الجمع والواحد' میں ذکر کیا ہے کہ'' دجر'' ایک صنم کا نام ہوتا تھا۔ اور جبت' طاغوت اور بعل بھی بتوں کا نام ہیں۔قرآن پاک میں شہروں کے خاص مقامات' جگہوں اور بہاڑوں کے حسب ذیل اساء ہیں:

به (پیشهر مکه کانام ہے) مدینه منورهٔ بدر احد حنین مشعر الحرام مصر بابل الایکه الحجر الحقاف طور بینا الجودی طوی (ایک وادی کانام ہے) الکہف الرقیم العرم حرد الصرم - ابن جریر حضرت سعید ابن جبیر رضی کشد سے روایت کرتے ہیں کہ ملک یمن میں ایک خطہ زمین ہے جواس نام سے موسوم ہے -

"ق":ایک بہاڑ جوزمین کے گردمحیط ہے۔

"الجوز": يهايك خطهز مين كانام --

'' الطاغيه'': روايت ہے کہ بيز مين کے اس علاقہ کا نام ہے جہال قوم ثمودکو پيوندخاک کيا گيا تھا' به دونوں قول الکر مانی سے منقول ہیں ۔

قرآن مجید میں آخرت کے مقامات میں سے مندرجہ ذیل جگہوں کے نام آئے ہیں:

'' فو دوس'': پیر جنت میں چوٹی کاعلاقہ ہے۔

''علیون'':روایت ہے کہ بیہ جنت کا بالا کی مقام ہے۔'

"الكوثر":جنت كالكنهر --

"سلسبيل" اور" تسنيم": جنت مين دوچشمول كنام بين-

"سجین": ایک جگه کانام ہے جو کفار کی روحوں کا ٹھکانا ہے۔

" صعود": جہنم میں ایک پہاڑ ہے جیسا کہ تر ندی میں ابوسعید خدری رضی آللہ سے مرفوعا مروی

-4

''غی' آٹام' موبق' سعیر' ویل' شائل''اور''سحق'':ییسبجہم کی دادیاں ہیں۔ ''یحموم'':سیاه دھوکیں کانام ہے۔

قرآن پاک میں کواکب (ستاروں) کے ناموں میں سے شمن قمر طارق اور شعری آئے ہیں۔

بعض علماء نے بیان کیا ہے کہ اللہ تعالیٰ نے قر آن مجید میں پرندوں کی دس جنسوں کے نام ذکر کیے ہیں:

سلوی'بعوض' مجھر' ذباب (مکھی)' انتحل (شہد کی کھی)' العنکبوت (کٹری)' الجراد' ٹڈی' بدید' غراب' کوا' ابابیل' غل' چیونٹی اور رہی رکنیت تو وہ قرآن پاک میں صرف ابولہب کی کنیت کا ذکر ہوا ہے' اس کے علاوہ اور کوئی کنیت نہ کورنہیں ہوئی' ابولہب کا نام عبدالعزیٰ تھا۔ فواکد :مصحف شریف کو بوسہ دینا مستحب ہے' کیونکہ حضرت عکر مہ بن ابی جہل ایسا ہی کرتے شھے۔

مصحف کے چو منے کو حجر اسود کے بوسہ دینے پر بھی قیاس کرنا' بعض علماء نے ذکر کیا ہے۔

اوراس کیے بھی قرآن مجید کو چومنامستحب ہے کہ وہ اللہ تعالیٰ کی طرف سے ہدیہ ہے' لہذااس کو چومنا ایسے ہی جائز امر ہوا' جس طرح کہ چھوٹے بچے کو بوسہ دینامستحب ہے اور سیہ عمل اظہارِ محبت کی غمازی کرتا ہے۔

امام احدر حمة الله عليه عال سليل مين تين روايتي آئي بين:

O قرآن شریف کوخوشبولگانا اوراسے رحل وغیرہ 'کسی اونجی چیز پررکھنامستحب ہے اوراس کوتکیہ بنانا حرام ہے'اس لیے کہ اس طرح کرنے میں قرآن کریم کی بے ادبی اور بے DarseNizami. MadinaAcademy. Pk

حرمتی ہوتی ہے۔

امام ذرکتی نے کہا ہے کہ ای طرح قرآن پاکی طرف پاؤں دراز کرنا بھی حرام ہے۔ ابن الی داؤد نے کتاب المصاحف میں سفیان سے روایت کیا ہے ان کے نزدیک صحف شریف کوائکا نا مکر وہ ہے اور ضحاک سے روایت ہے کہ حدیث شریف کے لیے قرآن پاک کی طرح کرسیاں (رحلیں یا بلند تیا ئیاں) استعال نہ کرو۔

ریاں ایک سے میں اور ایت سے میں ثابت ہے کہ قرآن پاک کو تعظیم کے لیے چاندی سے مزین اور آیک ایک سے میں ثابت ہے کہ قرآن پاک کو تعظیم کے لیے چاندی سے مزین اور آراستہ کرنا جائز ہے۔

امام بیمق نے ولید بن مسلم سے روایت کی ہے ، وہ کہتے ہیں کہ میں نے مالک رحمۃ اللہ علیہ سے مصاحف پر چاندی چڑھانے کے متعلق دریافت کیا تو انہوں نے ایک مصحف لاکر ہمیں دکھایا اور فرمانے گئے: میرے والد نے میرے وادا جان سے بیر روایت بیان کی ہے کہ صحابہ کرام علیہم الرضوان نے قرآن مجید کو حضرت عثمان غنی رضی اللہ کے عہد میں جمع کیا تھا اور انہوں نے مصاحف کواس طرح یااس کی مانندآ بسیم سے آراستہ اور مزین کیا تھا۔

بین بیمئلہ کہ صحف کوآب زرہے آراستہ کرنے کا کیا تھم ہے؟ تو زیادہ درست بات بیہے کہ مردکے لیے ناجائز اور عورت کے لیے جائز ہے۔

بعض علماء نے فرمایا ہے کہ مصحف پرسونا چاندی چڑھا کرآ راستہ کرنے کا جواز صرف خود مصحف کے ساتھ خاص ہے علاف جواس سے جدا ہوتا ہے اس تھم میں شامل نہیں ہے مگر اظہر مصحف کے ساتھ خال ہواز ہے۔

قرآن پاک کے نسخے پرانے اور بوسیدہ ہونے کی صورت میں کیا کیے جائیں؟
اگرقرآن مجید کے اور اق کو پرانے اور بوسیدہ ہوجانے یا ایک کسی اور وجہ سے اذکار رفتہ
اور نا قابل استعمال بنانے کی ضرورت پیش آجائے تو ان کو دیوار کی دراڑیا کسی اور ایسی جگہر کھنا
جائز نہیں ہے کیونکہ وہاں سے ان کے گرنے کا احتمال ہے اسی طرح وہ پاؤں کے نیچ آئیں
گے اور بے حرمتی ہوگی۔

ای طرح اوراق قرآنیکو مجاز نابھی جائز نہیں ہے کیونکہ اس طرح کرنے میں حروف کی کتر بریداور کلام کے جھے بخرے کرنالازم آتا ہے اس طرح رقم شدہ اور مسطور چیز کی تو ہین

پائی جاتی ہے۔

الحلیمی نے ایساہی کہا ہے اور نیز وہ فرماتے ہیں: اس کو پانی سے دھوڈ النا مناسب ہے اور اگر آگ میں جلا ڈالے تو بھی کوئی حرج نہیں ہے اس لیے کہ حضرت عثمان غنی منتقلہ نے ان مصاحف کو جلاڈ الاتھا، جن میں منسوخ شدہ آیات اور قراً تیں درج تھیں اور ان کے اس عمل کو مصاحف کو جلاڈ الاتھا، جن میں منسوخ شدہ آیات اور قراً تیں درج تھیں اور ان کے اس عمل کو مصاحف ناپندیدہ قرار نہیں ویا تھا۔

ادرایک دوسرے عالم کا قول ہے کہ دھونے کی بہنست جلا دینا بہتر ہے کیونکہ اس کا غسالہ (دھودن) زمین پر پڑے گا'اس سے بسااوقات بے حرمتی ہوتی ہے'ابن ابی داؤد نے ابن المسیب سے روایت کی ہے کہ انہوں نے فر مایا:

تم میں کو کی شخص مصحیف اورمسجد (یعنی به صیغه تصغیر) نه کیے کیونکہ جو چیز اللہ تعالیٰ کے لیے ہے وہ بہر حال عظمت والی ہے (لہٰذااس کوتصغیر کے صیغہ سے تعبیر کرنا (جو حقارت کے لیے بھی آتی ہے) نہیں چاہیے۔ لیے بھی آتی ہے) نہیں چاہیے۔

قرآن پاک کوبے وضوچھونے کا حکم

جمہور علماء كا مذہب يهى ہے كہ بے وضوفحض كومصحف باك جھونا حرام ہے خواہ وہ جھوٹا موال ہے خواہ وہ جھوٹا ہو يا بازا اوراس كى دليل الله تعالى كايفر مان ہے كذ لا يمسّه آلا الممطقر وُن 0 (الواقد: ١٩٥) " اسے نہ جھويں مگر باوضو ' ۔ اورامام تر ذى وغيرہ نے روايت كى ہے كذ لا يسمس المقر آن الا طاهر '' قر آن ياك كو ياك شخص كے سواكوئى نہ ہاتھ لگائے۔

ابن ماجہ نے اور دوسر ے علماء کرام نے حضرت انس و کی اللہ سے روایت کی ہے کہ سات چیزیں ایسی ہیں 'جن کا اجرو تو اب بندہ کو مرنے کے بعد بھی قبر میں ملتا رہتا ہے 'جس نے علم (دین کو) سکھایا' کوئی نہر جاری کی' کوئی کنوال کھودا' کوئی کچل دار درخت لگایا' مثلاً کھجور وغیرہ ' مجد بنوائی یا ایسی اولا د چھوڑ گیا جواس کے پس مرگ اس کے لیے دعائے مغفرت کرتی رہے یا قرآن یا کے کاکسی کو وارث بنا گیا ہو۔

مفردات قرآن كابيان

السلفي كتاب المختار من الطيورات مين امام شافعي رحمة الله يدروايت كرتے بين أنهون

نے بیان کیا ہے کہ حضرت عمر بن خطاب رضی آللہ کی کسی سفر میں ایک قافلہ سے ملاقات ہوئی ان میں حضرت ابن مسعود رضی آللہ بھی تھے حضرت عمر رضی آللہ نے ایک فیض کو حکم دیا کہ ان لوگوں سے بیل کر دریافت کرے کہ وہ کہاں ہے آرہے ہیں؟ قافلہ والوں نے جواب دیا کہ ' اقبلہ ا من المفح العمیق نوید البیت العتیق ''لیعنی ہم لوگ دور دراز سے آرہے ہیں اور بیت اللہ شریف جانے کا ارادہ ہے۔

حضرت عمر مِن الله نه به جواب من كرفر ما يا كدب شك ان لوگول مين ضروركوئى صاحب علم آدى به چنا نچه آپ نے تعم ديا كدا كي خض اس قافلہ سے با واز بلند دريافت كرے كه قرآن حكيم كاكون ساحصة عظيم تر ہے؟ (دريافت كرنے پر) حضرت عبدالله بن محدود مِن الله وقاله في الله وقاله في المقيور في المقيور في الله وقاله في المحتفی المقيور في المقرور في الله وقاله في الله وقاله في المحتفی المقیور في المقرور في الله وقاله وقاله في المحتفی المحتفی المقید نے الله وقاله والله والله في المحتفی المحتفی المحتفی المحتفی ہے؟ ابن محدود مِن الله وقاله والله و

م ي بي بي بي بي الله مَنْ يَعْمَلُ سُوْءً يُّجْزَبِهِ ''(النهاء: ١٢٣)' جوبرانی كرے گااس كابدله يائے گا''۔

۔ پھرعمر فاروق رئی آللہ نے فر مایا: ان سے پوچھو: قر آن میں'' اد جسی '' یعنی نہایت امید افزا حصہ کون ساہے؟

حضرت عبدالله بن مسعود وفئ الله في جواب ديا: " قُلْ يلعبادى الله يْن اَسُوفُوا عَلَى الله يُن اَسُوفُوا عَلَى الله يَن الله يَن اَسُوفُوا عَلَى الله يَن الله يَن الله يَن الله عَلَى الله يَن الله يُله يَن الله يَن الله يَن الله يَن الله يُن الله يَن الله يَن الله يَنْ الله يَن الل

میں؟ انہوں نے عرض کیا: ہاں۔اس روایت کوعبد الرزاق نے اپی تفسیر میں ای طرح بیان کیا ہے۔

ابن ابی عاتم نے عکرمہ رضی اللہ سے روایت کیا ہے وہ بیان کرتے ہیں کہ ابن عباس رضی اللہ سے پوچھا گیا کہ قرآن پاک میں ارجی (بینی سب سے امید افزا) آیت کون می ہے؟ تو انہوں نے ارشاد فر مایا کہ وہ اللہ تعالیٰ کا قول' اِنَّ الَّذِیْنَ قَالُوْ ا رَبِّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْ ا' رَمُ البحرہ: (م) '' بے شک وہ لوگ جنہوں نے کہا: ہمار ارب اللہ ہے پھراس پرقائم رہے' ۔ ابن ابی عاتم' سے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے کہا: میں نے ابو ہریرہ اسلمی سے سوال کیا: قرآن پاک میں وہ کون می آیت ہے جو اہل نار پرسب سے زیادہ گراں بار ہے؟ تو انہوں نے جو ابل دیا دیوں نے جو ابل عار پرسب سے زیادہ گراں بار ہے؟ تو انہوں نے جو ابل علی میں وہ کون میں نہ بڑھا کیں گھرائی اللہ کے گھرائی ' (النباء: ۳۰)' اب چھو! کہ ہم تمہیں نہ بڑھا کیں گھرعذاب' ہے۔

بعض علاء کابیان ہے:

- O قرآن مجید میں سب سے لمی سورت البقرہ ہے۔
 - O سب ہے مختصر سورت 'سورہ الکوثر ہے۔
 - 0 سب سے لبی آیت آیت دین ہے۔
- سب سے خضرا یت قرآن میں ' و الصُّعلی ' (انعی:۱)' چاشت کی شم' اور' و الْفَحْوِ ''
 (الفجر:۱)' ال صبح کی قشم' ہے۔
- O قرآن پاک میں (عا) کے بعد (عا) بغیر کی فاصلہ اور آڑ کے صرف دو مقام پرآئی اے: (۱)" عُفَدَةَ المنِدگاح حَتَّی "(ابقرہ: ۲۳۵)" نکاح کی گرہ (پی نہ کرو) یہاں کے کُٹی "(اکہف: ۲۰)" میں بازنہ رہوں گا یہاں تک کہ"ای

طرح دوكاف بلا فاصل دوى جگه آئے ہيں: (۱) "مَناسِكُكُمْ" (البقره:٢٠٠)" جُ ككام" (۲)" مَا سَلَكُكُمْ "(الدرْ:٣٢)" تتهيں كيابات لے كُنّ "اى طرح دوغين جمى بلاركاوٹ اور حرف فاصل كے ايك جگه آئے ہيں: "وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرِ الْإِسْلَامِ" (آل عران: ٨٥)" اور جو اسلام كے سواكوئى دين چاہے گا"۔

- O اورآیت دین کے سواکوئی آیت الی نہیں ہے جس میں تئیس کا ف جمع ہول -
- اورمواریث دوآیتوں کے سواکوئی دوآیتی الین نہیں جن میں تیرہ دقف آئے ہوں۔
- اورکوئی تین آیات والی الیی سورت نہیں جس میں دس واؤ آئے ہول سوائے سورہ
 والعصر کے۔
- اوریہ خصوصیت صرف سورہ الرحمٰن کی ہے کہ اس کی اکیاون آیتوں میں باون وقف
 میں۔
- ابوعبدالله النبازی المقری بیان کرتے ہیں کہ جب میں پہلی مرتبہ سلطان محمود بن ملک شاہ کے دربار میں گیا تو انہوں نے مجھ سے ایک سوال پوچھا کہ یہ بتاؤ کہ قرآن مجید کی وہ کون ہی آیت ہے جس کے اوّل میں (غین) ہو؟ میں نے جواب دیا کہ ایسی آیات تین ہیں: (۱)" غَافِرِ اللّٰذُنبِ" (الغافر: ۲)" گناہ بخشنے والا" (۲)" غُلِبَتِ الرّوّم 60" تین ہیں: (۱)" رومی مغلوب ہوئے" (۳) اور" غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ" (الفاتح: ۷)" نہ ان کی جن پر (تیرا) غضب ہوا"۔

علامہ سیوطی رحمۃ اللہ علیہ نے شیخ الاسلام ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ کے مخطوطہ سے نقل فر مایا ہے کہ قرآن پاک میں جار پے در پے (لگا تار) شدات حسب ذیل آیات میں آئے میں ...

(۱) "وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا 0 رَبُّ السَّمُواتِ "(مريم: ١٥- ١٣) "اور حضور كارب بهو لنے والانہيں ٥٥ سانوں كارب" (٢) "في بَحْو لُنجِي يَغْشَاهُ مَوْجٌ "(النور: ٣٠) "كى كنڈے كوريا ميں جے كھيرا ہوا ہو موج نے "(٣) "فَوْلَا مِنْ رَّبِ رَّحِيْمٍ " (يُسَالله عَلَى مَهُم الله وا" (٣) "وَلَقَدْ زَيْنَا السَّمَآءَ "(اللك ٥٠)" اور لين هم بان رب كافر ما يا ہوا" (٣) "وَلَقَدْ زَيْنَا السَّمَآءَ "(اللك ٥٠)" اور بي شك ہم نے مزين كيا آسان كو"۔

مبهمآ يات كابيان

معلوم ہونا چاہیے کہ علم مبہمات کا مرجع محض نقل ہے (یعنی اس میں قیاس آ رائی کی گنجائش نہیں ہے)اس جگہ ہم صرف بعض اہم آیات مبہمات کے ذکر کرنے پر اکتفاء کریں گئان کی مثالیں حسب ذیل ہیں:

| · | | |
|-------------------------------|---------------------------------|---|
| مرادومبهم كابيان | ترجمهآ يات | مبهم آیات |
| آ دم وحواء التلاث مرادب_ | میں زمین میں اپنا نائب | (١) إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ |
| | بنانے والا ہوں۔ | خَلِيْفَةً. (القره: ٣٠) |
| وہ اختس بن شریک ہے۔ | اور بعض آ دمی وہ ہے کہ دنیا میں | (٢) وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُعْجِبُكَ |
| r i | | قَوْلُهُ (البقره:٢٠٣) |
| وه حفرت صهيب رضي الله بين - | اور کوئی آ دمی اپنی جان بیچیا | (٣) وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشُوِي |
| | | ام حیات |
| مجابد کا بیان ہے کہ اس سے | ان میں سے کسی سے اللہ نے | |
| حفزت موی علی نبینامرادیں۔ | كلام فر مايا ـ | (القره:۲۵۳) |
| عبابد بی کا قول ہے کہ وہ حضرت | کوئی وہ ہے جے سب پر | (۵) وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجْتٍ. |
| محر ملتي لا مي - | درجوں میں بلند کیا۔ | (القره:۲۵۳) |
| ان كا نام حند بنت فاقوذ تقار | | (٢) إِمْرَاتُ عِمْرانَ. |
| | | (آلعمران:۳۵) |
| وه محمد ملتي يليم بير- | (اے مارے رب!) ہمنے | (٤)مُنَادِيًّا يُّنَادِي لِلْإِيْمَانِ. |
| | ایک منادی کوسنا کدایمان کے | (آل عمران:۱۹۳) |
| | لیے ندافر ما تاہے۔ | |
| وه ضمر ٥ بن جندب تھے۔ | اور جو اپنے گھر سے نکلا اللہ | (٨)وَمَنْ يَتْخُرُجُ مِنْ بَيْتِهِ |
| | اوررسول کی طرف ججرت کرنا | مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ |

| = | | 347 | ة الأنقان في علوم القرآك |
|----|--------------------------------|-----------------------------|----------------------------------|
| | | مراہے موت نے آلیا۔ | ثُمَّ يُدُرِكُهُ الْمَوْتُ. |
| i | | | (النساء:١٠٠) |
| | اس سے سراقہ بن جعشم مراد | ورتم میری پناه میں ہو۔ | (٩)وَإِنِّي جَارٌ لَّكُمْ. |
| | -4 | | (الاتفال:٨٨) |
| | صاحب سے حفزت سیدنا ابو بکر | ب اپ یار سے فرماتے | (١٠) إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ. |
| | صديق خليفهاول مرادين- | | (التوبه: ۲۰۰۰) |
| İ | مراد مصداق کا بیان: یه کهنے | ور ان میں کوئی تم سے بول | (١١) وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُولُ ا |
| | والاالجد بن فيس تھا۔ | کے کہ مجھے رفصت دیجئے ۔ | انُذُنَّ لِنِي. (التوبه:٣٩) |
| | وهمخص ذوالخويصره به | اور ان میں کوئی وہ ہے کہ | (١٢) وَمِنْهُمْ مَّنْ يَلْمِزُكَ |
| | j | صدقے بانٹنے میں تم پرطعن | فِي الصَّدَفَٰتِ. (التوبه: ۵۸) |
| - | | کرتا ہے۔ | |
| | وه فحشی بن حمیر تھا۔ | اگر ہم تم میں ہے کی کومعاف | (١٣) إِنْ نَعْفُ عَنْ طَآئِفَهِ |
| | | کریں۔ | مِّنْكُمْ. (التوبه: ۲۷) |
| | تغلبه بن حاطب وغيره - | | (١٣) وَمِنْهُمْ مَّنْ عُهَدَ |
| | | نے اللہ سے عہد کیا۔ | اللَّهُ. (التوبه: ۵۵) |
| | ابن عباس فرماتے میں: و | | (١٥)وُ اخْرُونَ اغْتَرَفُوا |
| ر | سات آ دمی ابو لبایه اور الر | کا قرار کرنے والے ہوئے۔ | بِذُنُوبِهِمُ (التوبه:١٠٢) |
| ۲ | کے ساتھی جد ابن قیس حرا | | |
| | اوس کروم اور مرداس۔ | | |
| ð. | وه لوگ ہلال بن امیهٔ مرار | اور کھی موقوف رکھے گئے ہیں۔ | (١٦)وَ اخْرُونَ مُرْجَوْنَ. |
| _ | ابن الربيع اور كعب بن ما لك | | (التوبه:۲۰۱) |
| ت | وخالفته منهم اوريبي تنين حضرات | | |
| | جنگ تبوک کے موقع پر مدی | | ; |
| | منورہ میں پیچیےرہ گئے تھے۔ | | |
| | | | |

| ابن اسحاق كابيان بكروه باره | اورجنہوں نے متجد بنائی ضرر | |
|---|----------------------------|--------------------------------------|
| افرادانصار میں سے تھے۔ | پنچانے کو۔ | مَسْجِدًا ضِوَارًا. |
| | | (التوبه: ۱۰۷) |
| مراد حفرت محمد ملت للم س | اور کیا وہ اپنے رب کی طرف | (١٨) أَفَمَنْ كَانَ عَلَى بَيِّنَـهُ |
| | ہےروش دلیل پر ہو۔ | مِّنْ رَبِّهِ. (هود: ١٤) |
| اس سے مراد کون ہے؟ اس | اور اس پر الله کی طرف گواه | (١٩)وَيَتْلُونُهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ. |
| میں چند اقوال آئے ہیں: | ì | (هود: ۱۵) |
| (ا)جرائيل عاليهلاًا (۲)قرآن |) | |
| بحيد (٣) حضرت ابوبكرصديق | | |
| عنفی رس الله بنی الله (۲۲) حضرت علی کرم الله | ; | |
| چېدالكريم_ | , | |
| نفرت سعد بن جبير كابيان | بشک ان منے والوں پر ہم | (٢٠)إنَّا كَفَيْنُكَ |
| l l | تہبیں کفایت کرتے ہیں۔ | 1 |
| پچ مخص تھے جن کے نام یہ | | |
| ب: وليدا بن المغير ه'العاص | | |
| ن وائل ابوزممه ٔ حارث ابن | ca | |
| بن اسودا بن عبد يغوث _ | <u> </u> | |
| عنرا مغرت عثان بن عفان رضي الله | ورجوانصاف كاتكم كرتاب_ | (٢١)وَمَنْ يَّأْمُو بِالْعَدْلِ. |
| راد ہے۔ | | (انحل:۲۷) |
| منزت ابوذر رشحاته بیان | يدوفريق ہيں۔ | (۲۲)هٰذَاٰنِ خَصَّمْٰنِ. |
| رتے ہیں کہ یہ آیت حزہ | . | (13:61) |
| يره ابن الحارث وليد ابن | عي | |
| بر کے بارے میں نازل | ' | |
| <u>ل</u> ہے۔ | я | |

| (۲۳) |
|-------------|
| ('') |
| |
| (rr) |
| مِّنَ الْكِ |
| (۲۵) |
| |
| (ry) |
| كَمَنُ |
| |
| ۲۷) |
| |
| ۲۸) |
| |
| r4) |
| اَزُوَا |
| ~•) |
| |
| ~1) |
| تظه |
| |
| ۲) |
| |
| |
| |
| |

| | 1 | <u> </u> |
|--------------------------------|-------------------------------|--------------------------------|
| وہ ولید بن مغیرہ ہے۔ | اسے مجھ پر چھوڑ جے میں نے | (٣٣)ذَرُنِي وَمَنْ خَلَقْتُ |
| | اكيلا پيداكيا_ | وَجِيْدًا. (الدرُّ:۱۱) |
| یہ آیات ابوجہل کے بارے | اس نے نہ سیج مانا اور نہ نماز | (٣٣)قَلا صَدَّقَ وَلَا صَلَّى. |
| 1 . | پرهی۔ | |
| وه آنے والے حضرت عبداللہ | اس پر کہاس کے پاس وہ نامینا | (٣٥) أَنْ جَآءَهُ الْأَعْمَى. |
| ابن ام مکتوم تھے۔ | | (۲:عیس) |
| وه امیه بن خلف تھا اور ایک | وہ جوبے پروابنہ ہے۔ | (٣٦) أمَّا مَنِ اسْتَغْنَى. |
| قول بیہ ہے کہ وہ عتبہ بن ربیعہ | | (عیس:۵) |
| | | |

قرآن مجید میں ابہام کے آنے کے اسباب ووجوہ کابیان

قرآن میں ابہام کے آنے کی کئی وجوہ ہیں:

پہلی: وجہ یہ ہے کہ چونکہ دوسری جگہ اس کا بیان ہو جانے کی وجہ ہے وہ مستغنی عن البیان ہے'
لہٰذاہہم ذکر کر دیا جاتا ہے' مثلاً اللہ تعالیٰ کا قول:'' حِسر اط اللّذِین اَنْ عَمْتَ عَلَیْهِمْ''
(الفاتح: ۱۰)'' ان لوگوں کی راہ جن پر تو نے انعام فر مایا''اس جگہ بیان نہیں کیا کہ وہ کون
لوگ ہیں جن پر انعام ہوا' مگر اس کا بیان دوسری جگہ اللہ تعالیٰ کے قول'' مَعَ الّذِینَ اَنْعَمَ
اللّٰهُ عَلَیْهِمْ مِّنَ النّبِینِ وَ الصِّدِیْقِینَ وَ الصَّّالِحِیْنَ ''(النہاء: ۱۹)'' ان
کے ساتھ ہوں گے جن پر اللہ نے انعام کیا جو انہیاء اور صدیقین اور شہداء اور صالحین ہیں''
میں آگیا ہے۔

دوسری: وجہ بیہ ہوتی ہے کہ اس لیے مبہم رکھتے ہیں کہ وہ اپنے مشہور ہونے کی بناء پر متعین ہے ' مثلاً اللہ تعالیٰ کا قول ہے:'' وَقُلْنَا یَآدَمُ اسْکُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةُ ''(البقرہ:۳۵) '' اور ہم نے فرمایا: اے آ دم! تم اور تمہاری بیوی جنت میں رہو'' کہ اس جگہ اللہ تعالیٰ نے '' حوا''نہیں فرمایا' جس کی وجہ یہ ہے کہ حضرت آ دم عالیسلاً کی ان کے سواکوئی دوسری

یوی تھی ہی نہیں البذاوہ متعین ہیں مختاج نہیں ہے یا ' آگم تو اِلَی الَّذِی حَآجَ اِبْوَاهِیمَ فِی ہی نہیں البذاوہ متعین ہیں مختاج نہیں ہے یا ' آگم تو اِلَی اللّذِی حَآجَ اِبْوَاهِیمَ فِی رَبِّمَ '' (البقرہ:۲۵۸)' (اے محبوب!) کیا آپ نے اس مخص کو ندو کی ماجس نے جھڑا کیا ابراہیم سے ان کے رب کے بارے ہیں' کہ یہاں نمرود مراد ہے'اس کو بیان نہر نے کی وجہ یہ ہے کہ یہ بات مشہور ہے کہ حضرتَ ابراہیم علایہ للا نمرود کی طرف نہول بنا کر بھیجے گئے تھے۔

تیسری: وجہ یہ ہے کہ بیان نہ کرنے میں کسی مخص کی پردہ پوٹی مقصود ہوتی ہے تا کہ یہ طریقہ اس
کو برائی ہے بچانے میں زیادہ موثر ثابت ہواور اس پرنری ہوجیسے اللہ تعالیٰ کا قول ہے:

'' وَمِنَ السّنَاسِ مَنْ یُّعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِی الْحَیٰو قِ اللّٰہُنْیَا''(البقرہ: ۲۰۳)'' اور بعض
آدی وہ ہیں کہ دنیا کی زندگی میں اس کی بات تھے بھلی گئے' اللایہ' وہ مخص اضن بن
شریق تھا' جو بعد میں دولت ایمان ہے بہرہ ور ہوااور بہت اچھا مسلمان ثابت ہوا۔

چوتھی: وجہ یہ ہوتی ہے کہ اس مہم چیز کے متعین کرنے میں کوئی بڑا فائدہ نہیں ہوتا جیسے'' اُو چوتی وجہ یہ ہوتی ہے کہ اس مہم چیز کے متعین کرنے میں کوئی بڑا فائدہ نہیں ہوتا جیسے'' اُو کے گئے اُلّٰ ہُم عَنِ الْقُرْیَةِ ''(الاعراف: ۱۹۳)'' اوران سے اس بستی کی طرح اللہ تعالیٰ کا قول' وَ سُنَلُهُمْ عَنِ الْقُرْیَةِ ''(الاعراف: ۱۹۳)'' اوران سے اس بستی کی طرح اللہ تعالیٰ کا قول' وَ سُنَلُهُمْ عَنِ الْقُرْیَةِ ''(الاعراف: ۱۹۳)'' اوران سے اس بستی کی طرح اللہ تعالیٰ کا قول' وَ سُنَلُهُمْ عَنِ الْقُرْیَةِ ''(الاعراف: ۱۹۳)'' اوران سے اس بستی کی طرح اللہ تعالیٰ کا قول' وَ سُنَلُهُمْ عَنِ الْقُرْیَةِ ''(الاعراف: ۱۹۳۱)'' اوران سے اس بستی کی طرح اللہ تعالیٰ کا قول' وَ سُنَلُهُمْ عَنِ الْقُرْیَةِ ''(الاعراف: ۱۹۳۱)'' اوران سے اس بستی کی طرح اللہ تعالیٰ کا قول' وَ سُنَلُهُمْ عَنِ الْقُرْیَةِ ''(الاعراف: ۱۹۳۳)'' اوران سے اس بستی کی طرح اللہ تعالیٰ کی طرح ہوں۔

پانچویں: وجہ یہ ہے کہ اس چیز کے عموم پر تنبیہ کرنامقصود ہوتی ہے کہ یہ خاص نہیں ہے عام ہے کہ یہ خاص نہیں ہے عام ہے کوئکہ اس کے برعکس اگر تعین کر دی جاتی تو اس میں خصوصیت پیدا ہو جاتی 'ہمہ مسیریت ندرہی جیسے اللہ تعالی کا قول ہے:'' وَ مَنْ يَنْ خُورُ جُ مِنْ بَيْتِهٖ مُهَاجِرٌ ا''(انساء: میریت ندرہی جیسے اللہ تعالی کا قول ہے:'' وَ مَنْ يَنْ خُورُ جُ مِنْ بَيْتِهٖ مُهَاجِرٌ ا''(انساء: میریت ندرجی جیسے اللہ تعالی کا قول ہے: '' وَ مَنْ يَنْ خُورُ جُ مِنْ بَيْتِهٖ مُهَاجِرٌ ان (انساء: میں ''(اور جوائے گھرے لیے جمرت کرکے''۔

چھٹی: وجہ یہ ہے کہ اسم اس کے بغیراس لیے ذکر کرتے ہیں کہ وصف کامل کے ساتھ موصوف

کرنے میں اس کی تعظیم مقصود ہوتی ہے جیئے 'وَلا یَاتَیلِ اُوْلُوا الْفَصْلِ ''(انور:۲۲)

'' اورتم میں سے جولوگ صاحبِ فضل اور وسعت والے ہیں' اور' وَالَّذِی جَآءَ بِالصِّدُقِ
وَصَدَّقَ بِه ''(الزمر:۳۳)' اور جو تچی بات لے کرآ ئے اور جنہوں نے اس کی تصدیق

کو' اور' اِذَّی یَقُولُ لِمصَاحِبِه ''(التوب:۳۰)' جب وہ اپنے ساتھی سے فر مار ہے تھ' والانکہ ان سب جگہوں میں مراد سچا دوست (صدیق) ہی ہے۔

ساتویں: وجد ابہام رکھنے کی یہ ہوا کرتی ہے کہ وصف ناقص کے ساتھ تحقیر کرنے کا قصد ہوتا ہے مثلاً اللہ تعالیٰ کا قول ہے: ' إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتُو'' (الكوژ: ٣) بِ شَكَة بهارا وَثَمَن ،ی و بی ہر خیر سے محروم ہے۔

قرآن کی تفسیروتاویل کی معرفت اوراس کی ضرورت کابیان

تفسیراور تاویل کے بارے میں اختلاف ہے۔

ابوعبیدہ اور ایک گروہ کا کہنا ہے کہ بید دونوں لفظ ہم معنی ہیں'امام راغب کا قول ہیہ ہے کہ تغیر کامعنی تاویل کی بہنست عام ہے' تغیر کا استعال زیادہ تر الفاظ اور مفردات میں ہوتا ہے اور تاویل کا استعال اکثر معانی اور جملوں میں ہوتا ہے' پھر (بیہ بھی فرق ہے کہ) تاویل کا استعال کتب الہیہ میں ہوتا ہے اور تفییر کو کتب الہیہ اور ان کے علاوہ دیگر کتابوں میں بھی استعال کر لیتے ہیں۔

علامہ ذرکشی بیان کرتے ہیں کہ تغییر وہ علم ہے جس سے قرآن پاک کو سمجھا جاتا ہے اور اس کے احکام کا استخراج اور اس کے اس علم تفییر کے ذریعے قرآن کریم کے معانی کا بیان اس کے احکام کا استخراج اور اس کے اسرار ومضمرات کو معلوم کیا جاتا ہے اس سلسلے میں علم لغت علم نحو علم صرف علم بیان اصول فقہ اور قوانین قراءت سے مددلی جاتی ہے۔

اس طرح تفسیر قرآن کے لیے اسباب نزول اور ناسخ ومنسوخ کی معرفت بھی ضروری

علم تفسيري فضيلت

علم تفسیر کی نصیلت اور اس کا شرف و مرتبہ کوئی مخفی امر نہیں ہے اس بارے میں خود اللہ تعالیٰ کا ارشاد مبارک ہے:

'' يُؤْتِى الْمِحْكُمَةَ مَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يَّوْتَ الْمِحْكُمَةَ فَقَدْ أُوْتِى خَيْرًا كَيْيُرًا' (البقره: ٢٦٩)' الله حكمت ويتا به جسے چا به اور جسے حکمت مل اسے بہت بھلائی ملی' دعفرت ابن عباس شِنالله سے مردی ہے وہ بیان کرتے ہیں کہ اللہ تعالیٰ کے قول: '' یو تی الحکمة' ' سے مرادمعرفت قرآن ہے یہ کہ اس میں ناسخ کیا ہے' منسوخ کیا ہے' محکم کیا ہے اور منتشابہ کیا

ے؟ مقدم کون می چیز ہے اور موخر کون می اور حلال کیا اور حرام کیا اور امثال کی شناخت کہ کون میں ہیں۔

ابوذرهروی'' فضائل القرآن' میں سعید بن جبیر کے حوالہ سے حضرت ابن عباس مِنْ الله سے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرمایا: جو محص قرآن مجید تو پڑھتا ہے مگراس کی تفسیر اچھی طرح نہیں جانتا' اس کی حالت اس اعرابی جیسی ہے جومطلب سمجھے بغیر بے ڈھب' شعر گنگنا تا رہتا ہے۔

- ا مام يهي اور ديگر علماء نے بيان كيا ہے حضرت ابو ہريره رشى اللہ عمر فوعاً روايت ہے:
 "اَغْدِ بُوا الْقُرُ اٰنَ وَالْمَنْ مِسُواْ غَوَائِسَهُ" قرآن باك كى تفسير كرواوراس كے عجيب وغريب معانى كى تلاش وجتجو ميں گےرہو۔
- ابن الا نباری حضرت صدیق اکبر رضی الله ہے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فر مایا کہ مجھے قرآن پاک کی سی ایک آیت کو حفظ کرنے کی نسبت اس کی تفسیر بیان کرنا زیادہ محبوب ہے۔

ای راوی نے حضرت عبداللہ ابن بریدہ سے بہ واسطہ سی سی ابی روایت کی ہے کہ انہوں نے فر مایا: اگر مجھے چالیس راتوں کا سفر کر کے بھی قرآن باک کی سی ایک آیت کی تفسیر کاعلم حاصل کرنا پڑے تو میں ضروراس کے لیے سفراختیا رکرلوں۔

اورای راوی نے شعبی کے طریق پر حضرت عمر فاروق رضی آللہ سے روایت کی ہے انہوں نے فر مایا کہ جس نے قرآن پاک کوتفسیر کے ساتھ پڑھا'اس کے لیے اللہ تعالیٰ کے نزدیک ایک شہید کا ثواب ملے گا۔

اعراب ہے مراد تفییر ہے

علامہ سیوطی رحمۃ اللہ علیہ بیان کرتے ہیں: مذکورہ بالا آثار کامعنی یہ ہے کہ اعراب و تعریب سے تفسیر مرادلی گئی ہے اس لیے کہ اعراب کا اطلاق حکم نحوی پرنی اصطلاح ہے ادراس لیے کہ سلف صالحین اپنے سلیقہ میں اس کے سکھنے کے مختاج نہ تھے۔

علامہاصبہانی فرماتے ہیں کہ سب سے افضل صنعت یافن جوانسان اختیار کرتا ہے وہ قرآن مجید کی تفسیر ہے۔ فن تفسير كوتين وجوه ہے ديگر علوم وفنون پرشرف حاصل ہے:

- (۱) موضوع کے اعتبار سے 'اس لیے کہ اس کا موضوع اللہ تعالیٰ کا کلام ہے جو تمام حکمتوں کا مرچشمہ اور ہر طرح کی فضیاتوں کا معدن 'اس میں ماضی ٔ حال اور مستقبل کے حالات اور اخبار کا بیان ہے۔ اس کے احکام مرورز مانہ کے ہاتھوں فرسودہ اور برانے نہیں ہوتے اور نہ ہی اس کے عالم مرورز مانہ کے ہاتھوں فرسودہ اور برانے نہیں ہوتے ہیں۔
- (۲) اورغرض کے اعتبار ہے اس کو جوشرف و ہزرگ حاصل ہے ٔ وہ اس لیے کہ اس کی غرض و غایت ہے ' عُسر وَ قِ الْو ْتُقْلَی '' (البقرہ:۲۵۲) کومضبوطی ہے بکڑنااور اس سعادت حقیقی کو پالیمنا' جسے بھی فنانہیں ہے۔
- (۳) اس کی سخت ضرورت ہونے کے لحاظ سے شرف یوں ہے کہ دینی یا دنیوی ہر کمال جلد حاصل ہونے والا ہو یابد برعلوم شرعیہ اور معارف دینیہ ہی کا محتاج ہوا کرتا ہے اور بیعلوم ومعارف کتاب اللہ کے علم پرموقوف ہیں۔

تفيير كے اصل الاصول ماخذ

تفییر قرآن کے حار ماخذیں:

پہلا ماخذ: نبی کریم سے نقل کا پایا جانا اور بیسب سے عمدہ ماخذ ہے 'لیکن ضعیف اور موضوع روایت سے احتراز لازم ہے کیونکہ کمزور اور من گھڑت روایات بہ کثرت ملتی ہیں 'اس لیے امام احمد رحمة الله فر ماتے ہیں کہ تین قتم کی روایتیں ایسی ہیں 'جن کی کوئی اصل نہیں ہے: مغازی 'ملاحم اور تفسیر۔

م ہاری) کے ساتھ سیح روایت کے ساتھ منقول ہے۔ علامہ جلال الدین سیوطی زرکشی نے جو ثابت کیا ہے' اس پر تبصرہ کرتے ہوئے فرماتے ہیں: تفسیر کے متعلق صیح روایات در حقیقت بہت ہی کم واقع ہوئی ہیں' بلکہ اس قسم سے

ہیں: سیر نے منان کا روایات در سیس بہت کا انہاں. اصل مرفوع احادیث حددرجہ قلت کے ساتھ پائی گئی ہیں۔

دوسرا ماخذ: اقوال صحابہ (علیهم الرضوان) ہے اخذ کرنا کیونکہ ان کی تفسیر علماء کے نز دیک اس روایت کے درجہ میں ہے جوحضور نبی اکرم ملتی لیکٹیم تک مرفوع ہو' جیسا کہ حاکم نے اپنی '' متدرک' میں بیان کیا ہے۔

تیسرا ماخذ: مطلق لغت کو ماخذ بنانا کیونکه قرآن عربی زبان میں نازل ہوا ہے'اس بات کوعلماء کی ایک جماعت نے ذکر کیا ہے'امام احمد رحمة الله تعالیٰ علیه نے بھی کی مقام پرات

الیکن فضل ابن زیاد نے امام احمد علیہ الرحمہ ہی سے نقل کیا ہے کہ ان سے ایک مرتبہ قرآن پاک کی مثال کس شعر سے پیش کرنے کی بابت دریافت کیا گیا کہ یہ کیسا ہے؟ تو انہوں نے فر مایا: مجھے یہ بات اچھی نہیں گئی ' چنا نچہ کہا گیا ہے کہ امام احمد کے اس قول کا انہوں نے فر مایا: مجھے یہ بات اچھی نہیں گئی ' چنا نچہ کہا گیا ہے کہ امام احمد کے اس قول کا فاہر مطلب یہ ہے کہ ممنوع ہے ' اس لیے بعض علاء نے یہ کہا ہے کہ قرآن مجید کی تفسیر افت کے مطابق جائز ہونے میں امام احمد سے دور دوایتیں آئی ہیں۔ اور یہمی قول ہے کہ اس سلسلے میں کر اہت کا احتمال اس شخص پر ہوگا جو کہ آ بیت کو اس کے ظاہر سے ایسے معنی کی طرف بھیر ہے جو اس کی ذات سے خارج اور محض محتمل ہیں اور کلام عرب کی دلالت اس معنی پر کم ہی ہواور غالب اور زیادہ تر وہ معنی شعر اور اس کی خلاف کی مثل کے علاوہ اور کلام میں نہیں پائے جاتے اور ذہمی فوری طور پر اس کے خلاف کی طرف ہی سبقت کرتا ہو۔

چوتھا ما خذ بتفسیر قرآن کلام کے معنی کے مقتضی اور شریعت سے مکتب اور ماخوذ رائے سے ک جائے اور یہی تفسیر ہے ، جس کے بارے میں رسول اکرم ملتی ایکنی نے حضرت ابن عباس معنی کے اس کے بارے میں رسول اکرم ملتی ایکنی کے حضرت ابن عباس معنی اللہ معنی کے اللہ کے اللہ معنی کے اللہ معنی کے اللہ معنی کے اللہ کے

اوراک امرکوحفرت علی کرم الله وجهدالکریم نے اپنے قول "الا فهما یوته الرجل فی المقو آن " مگروه فهم وادراک جوکسی شخص کوقر آن کے بارے میں عطافر مائی گئی ہوئ سے مرادلیا ہے اورای وجہ سے صحابہ رہائی ہے کا اس آیت کے معنی میں اختلاف ہوا اور ہرایک نے اپنے منتبائے فکر ونظر کے مطابق اپنی رائے قائم فر مائی مگر قرآن مجید کی ہرایک نے اپنے منتبائے فکر ونظر کے مطابق اپنی رائے قائم فر مائی مگر قرآن مجید کی تفسیر بغیر کی اصل کے محض رائے اور اجتباد کے ساتھ کرنا جائز نہیں ہے الله تعالی فر ماتا ہے: "وَ لَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْم " (بی اسرائیل:۳۱)" جس چیز کا تمہیں علم نہیں اس کے پیچھے نہ پڑو"۔

نيز فرمايا: ' وَ أَنْ تَسَقُّولُوا عَلَى اللَّهِ مَالَا تَعْلَمُونَ ''(الاعراف: ٣٣)' اوربيكه الله پر وه بات كبوجس كاعلم نيين ركھتے ''_

ای طرح ارشاد ہے: 'لِتبیّن لِلنّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَیْهِمْ ''(ایحل: ۴۳)'' تم لوگوں سے بیان کر دو جو ان کی طرف اترا' اس میں '' بیان' کی نسبت رسول اکرم مُشَّیَلِیْم کی طرف کی گئی ہے اور رسول اکرم مُشَّیُلِیْم نے فرمایا: '' مین تسکلیم فی القر آن بوایه' طرف کی گئی ہے اور رسول اکرم مُشَیِّلِیْم نے فرمایا: '' مین تسکلیم فی القر آن بوایه' فی اصاب فیقد اخطاء'' جس شخص نے اپنی رائے سے قر آن مجید میں کوئی بات کی فیاست کی بات درست بھی لکی مگراس نے ایسا کرنے میں غلطی کی ہے' اس صدیث کو جا ہے اس صدیث کو ابوداؤ د'تر فدی اور نسائی نے روایت کیا ہے۔

اور حضور نبی اکرم ملی کی آنم نفر مایا: '' من قبال فی المقر آن بسغیس علم فلیتبوا مقعده فی النار ''(اخرجابوداؤد) جس شخص نے قر آن پاک (کی تفییر) میں بغیر علم کے کوئی بات کبی کی وہ اپنا ٹھکا نادوزخ میں بنائے۔

امام بہبی بہلی حدیث کے بارے میں فرماتے ہیں کداگر بیحدیث صحیح ثابت ہوجائے تو (حقیقت امر تو اللہ ہی جانت ہوجائے تو) اس سے معلوم ہوتا ہے کہ رسول اکرم ملٹی کیائی اس نے رائے سے دہی رائے مراد ولی ہے 'جس کی پشت پرکوئی دلیل قائم نہ ہو' ورنہ وہ رائے جس کی تائید وتو ثیق کوئی روشن دلیل کردئے اس کوتفیر میں پیش کرنا جائز ہے۔ رائے جس کی تائید وتو ثیق کوئی روشن دلیل کردئے اس کوتفیر میں پیش کرنا جائز ہے۔ ماور دی رحمۃ اللہ علیہ بیان کرتے ہیں کہ بعض مختاط اور پر ہیزگارلوگوں نے اس حدیث کو اس کے ظاہری معنی پرمجمول کرتے ہوئے اجتہاد ہے آئن یاک سے احکام کا استنباط

كرناممنوع قرارديا ہے اگر چەشوابداس كے جواز كاساتھ ديتے ہوں اوركوئى نص صرح بھی ان کے قول کے شواہد کے معارض نہ ہو' پھر بھی وہ اپنے اجتہاد سے قر آ ن حکیم کے معانی کا اشناط کرنے ہے دست کش رہے ہیں'لیکن پیغل ہمارے اس تعبد (عبادت گزاری) ہے ایک قتم کا تجاوز ہے جس کی معرفت کا جمیں تھم ملا ہے کہ ہم قر آن میں نظر وَلَكر كاس عاحكام متنطري جيها كالله تعالى فرما تا ع: ' لَعَلِمَهُ الَّذِينَ يَسْتَنْبِطُونَهُ مِنْهُمْ "(النماء: ٨٣)" توضروران عاس كي حقيقت جان ليت "بيجو یستنبطونهٔ مِنهُم "(النماء: ۸۳)" تو ضروران سے اس کی حقیقت جان لیت " یہ جو بعد میں کاوش کرتے ہیں اوراگر پر ہیزگارلوگوں کی بیمنطق درست مان کی جائے تو اس کا مطلب یہ ہوا کہ اجتہاد کا دروازہ بنداورا سنباط کے ذریعے سے کسی امر کو معلوم کرنا ہی شجر ممنوعہ ہے اور اکثر لوگ قرآن پاک سے کسی چیز کو مجھیں ہی نہیں اور اگر حدیث نکور صحیح خابت ہوتو اس کی تاویل یعنی اس کا صحیح مفہوم سے ہے کہ جو خص صرف اپنی رائے نے کور جو خاب میں کلام کرے اور بجز اس کے لفظ کے کسی اور بات پر تو جہ نہ کر ہوت خواہ وہ حق بات کو پالے گروہ ہے غلط رواور اس کا صحیح منہا ج پر چلنا اتفاق کر سے تو خواہ وہ حق بات کو پالے گروہ ہے غلط رواور اس کا صحیح منہا ج پر چلنا اتفاق میں میں سے جو بی میں ہو ہو ہوں ہوں ہوں کا میں میں سے جو بی میں سے بی سے میں سے جو ہوں ہوں کی سے میں سے جو ہوں ہوں کا میں میں سے بی ای ہے ہے! کیونکہ اس مدیث کا منشاء یہ ہے کہ ایبا قول محض رائے ہے جس کا کوئی شابدنېيں ـ صريث ياك مين آتا بحكة القرآن ذلول ذو وجوه فاحملوه على احسن

صدیث پاک میں آتا ہے کہ الفر آن ذلول ذو وجوہ فاحملوہ علی احسن وجوہ میں الفہم چیز ہے اوروہ متعددوجوہ وجوہ ہے۔ البنائم اسے سب سے اچھے پہلو پرمحمول کرو۔ اس حدیث کوابونیم وغیرہ (پہلو) رکھتا ہے کہندائم اسے سب سے اچھے پہلو پرمحمول کرو۔ اس حدیث کوابونیم وغیرہ نے ابن عباس ویکنائذ سے قال کیا ہے اس حدیث میں لفظ 'ذلسول ''دومعنوں کااخمال کر گھتا ہے: (۱) ایک مید کہوہ قرآن اپنے حاملین (اٹھانے والوں) کا اس طرح مطبع اور کو یا ان کے زیر تصرف ہے کہ ان کی زبانیں ای قرآن ہی کے ساتھ ناطق اور گویا جیں (۲) دوسرے مید کرآن خودا ہے معانی کو واضح کرتا ہے کہاں تک کہان مجتبدین میں جی سجونہم القرآن سے قاصراور عاجز نہیں رہتی۔

اور جو وجوہ کا قول بھی دومعنوں کامحمل ہے: (۱) ایک میر کر آن کے بعض الفاظ ایسے میں جو تاویل کی کئی وجوہ کا احمال رکھتے ہیں (۲) اور دوسر مے معنی میہ ہیں کہ قر آن پاک JarseNizami.MadinaAcademy.Pk

میں اوامر ونواہی کرغیب وتر ہیب اور تحلیل وتحریم کی قتم سے بہ کثرت وجوہ موجود ہیں۔

ادرائی طرح قولہ 'ف احسلوہ علی احسن و جو ھہ '' بھی دومعنوں کا احمال رکھتا

ہے 'ایک بیہ ہے کہ اس کو اس کے بہترین معانی پرحمل کرنا ہے اور دوسرے بیمعنی ہیں کہ

کلام اللہ میں جو بہترین باتیں ہیں' وہ عزیمتیں بغیر رخصتوں کے ہیں اور عفو بغیر انتقام

کے ہے اور اس بات میں کتاب اللہ سے استنباط اور اجتہاد کے جواز پر دلیل بڑی روشن

مفسرکون ہوسکتا ہے؟

علماء بیان کرتے ہیں کہ قر آن کی تفسیر وہ مخص کرسکتا ہے جو تمام ایسے علوم کا جامع ہو'جن کی حاجت مفسر کو ہوتی ہے اور وہ مندر جہ ذیل پندرہ علوم ہیں:

(۱) علم لغت: کیونکہ مفردات الفاظ کی شرح اور ان کے مدلولات باعتبار وضع ای علم کے ذریعہ سے معلوم ہوتے ہیں۔

(۲)علم نحو بنحو کاعلم اس کیے ضروری ہے کہ معانی کا تغیر اور اختلاف اعراب کے اختلاف سے دابستہ ہے کہذا اس کا عتبار ناگزیر ہے۔

ابوعبید نے حسن رحمۃ اللہ سے روایت کی ہے کہ ان سے اس مخص کے متعلق پو چھا گیا، جو کہ زبان سے الفاظ کو ٹھیک طریق سے اداکر نے اور صحیح قراءت کرنے کے لیے عربی زبان سیکھتا ہے تو حسن رحمۃ اللہ نے جواب دیا: اس کوعربی کی تعلیم ضرور لینی جا ہے کیونکہ ایک آ دی کسی آیت کو پڑھتا ہے اور وہ وجہ اعراب میں لغزش کھا کر ہلاکت میں جاگرتا ہے۔

(۳) علم صرف: اس سے لفظوں کی ساخت ادر صیغوں کاعلم حاصل ہوتا ہے۔ ابن فارس رحمة الله عليہ کا قول ہے کہ جس محف سے علم صرف فوت ہوگیا' وہ ایک عظیم الثان چیز سے ہاتھ دھو بیٹھا ہے۔

(٣) علم اشتقاق: كيونكه اگر بم اشتقاق دومخلف مادول سے ہوگا تو وہ اپنے دونوں مادول كے مختلف ہوگا، جيسے "مسيح" كمعلوم نہيں آيا وہ "كمختلف ہوگا، جيسے" كمختلف ہوئے كے لحاظ سے الگ الگ ہوگا، جيسے" كمسيح" كے مختلف ہوئے ہے الگ الگ ہوگا، جيسے "مسيح" كے مختلف ہوئے ہوئے۔ "مسيح" سے بنا ہے۔ "ساحت" ہے مشتق ہے يا" مسح" سے بنا ہے۔

کاظ سے مفید ہونے کے لحاظ سے معانی سے مفید ہونے کے لحاظ سے ترکیب کلام کے خواص کی معرفت اور شناخت حاصل ہوتی ہے۔

علم بیان سے تراکیب کلام کے خواص کی معرفت ان کے وضوح دلالت اور خفائے دلالت میں مختلف ہونے کے اعتبار سے حاصل ہوتی ہے اور علم بدیع وجوہ تحسین کلام ک معرفت کا ذریعہ ہے انہیں تین علوم کوعلوم بلاغت کہتے ہیں۔

اورمفسر کے لیے یہ تنیوں علوم رکن اعظم ہیں کیونکہ مفسر کے لیے مقتضائے اعجاز کی رعایت لازی امر ہے اور وہ صرف انہی علوم سے معلوم ہوسکتا ہے۔

(۸) علم قراءت: اس کیے کہ قرآن کے ساتھ نطق کی کیفیت اس علم کے ذریعہ سے معلوم ہوتی ہے اور قراء توں ہی کے ذریعہ سے احتمالی وجوہ میں سے بعض کو بعض پرتر جیح دی جاتی ہے۔

(۹) علم اصول وین: پیم اس لیے ضروری ہے کہ قرآن پاک میں ایسی آیات بھی ہیں' جو اپنے ظاہر کے اعتبار ہے ایسی چیز پر دلالت کرتی ہیں جس کا اطلاق الله تعالیٰ پر جائز نہیں ہوتا ہے' لہٰذااصولی خض (کہ جس کواصول دین کاعلم حاصل ہوگا) اس کی تاویل کر کے ایسا طریق نکال لے گا جوعقیدہ صحیحہ کے موافق ہواور اللہ تعالیٰ کی طرف ان ماتوں کی نبیت درست ہو سکے۔

(۱۰)علم اصول فقہ: کیونکہ ای علم سے احکام پر دلیل قائم کرنے اور استنباط مسائل کا طریقہ معلوم ہوتا ہے۔

' السباب نزول اورضص کاعلم: یاس لیے ضروری ہے کہ ثنان نزول کے علم ہے ہی آیت کے وہ معنی معلوم ہوتے ہیں جن کے بارے میں آیت نازل کی گئی ہے۔

(۱۲)علم ناسخ ومنسوخ: اس علم کی ضرورت اس لیے ہے تا کہ محکم آیات کواس کے ماسواسے متاز کر سکیں۔

(۱۳)علم فقه:

(۱۴):ان احادیث مبارکه کاعلم ہو کتفسیر مجمل اور مبہم کی مبین ہیں۔

(١٥) علم وہبی (پاعلم لدنی): به وه علم ہے جو الله تعالى اپنے عالم باعمل بندوں كوعطا فرما تا

ای کی طرف اشارہ ہے اس صدیث میں ہے کہ 'من عمل بما علم ورثه الله ما لمه يعلم "ليني جو خص اين علم يمل كرے كا تواللہ تعالى اس كوان باتوں كا بھى علم عطافر مادےگا'جواہے معلوم نہیں ہیں۔

ابن الى الدنيافر ماتے ہيں:

قرآن کے علوم اور اس سے مستنبط ہونے والے احکام ومسائل ایک بحربے کراں ہے۔ پس پیعلوم جومفسر کے بارے میں برمنزلہ آلہ کے ہیں اور چراغ راہ کی حیثیت رکھتے ہیں' ان کے حاصل کیے بغیر کوئی شخص مفسر نہیں ہوسکتا اور جوشخص ان علوم کے بغیر تفسیر قرآن کرے گا' وہ تفسیر بالرائے کا مرتکب ہوگا' جس کے بارے میں نہی وار د ہوئی ہےاورلیکن جب ان علوم کے حاصل کرنے کے بعد تفییر کرے گا تو مفسر بالرائے نہ ہوگا جس کی ممانعت ہے۔ صحابه کرام اور تابعین مثالتهٔ نیم علوم عربیه کے طبعی اور فطری طوریر ہی عالم تھے'وہ اکتسابی عالم نہ بنے تھےاور دیگرعلوم کاانہوں نے حضور نبی اکرم ملٹیڈلٹٹم سے استفادہ کیا تھااور تعلیم سے حاصل کیے تھے۔

کتاب البر ہان میں ہے:معلوم ہونا جا ہے کہ صاحب نظر آ دمی کے لیے اس وقت تک ک معانی وحی کا ادراک حاصل نہیں ہوسکتا اور اس پر وحی کے اسرار ورموز اس وفت تک آشکارا نہیں ہو کتے' جب تک کہاں کے دل میں کوئی بدعت تکبر' ہوائےنفس' حب دنیا ہوتی ہے یاوہ گناه پراصرار کرتار ہتایااس کاایمان تذبذب اور تزلزل کا شکار رہتا ہے یااس کا پایہ حقیق ڈھیلا ہوتا ہے یاکسی ایسے مفسر کے قول پر اعتماد کرتا ہے جوعلم سے کورا ہوتا ہے یاا پی عقل ہی پر تفسیر کا پورامحل تغییر کرنے والا ہوتا ہے اور بیتمام باتیں ایسے موانع حجابات اور حصول فہم وعقل کی راہ كروزى بن ايك سايك بره كرب

طقات مفسرين

بیرصحابه صحابه کی جماعت میں دس صحابه کرام وظافی معسر مشہور ہوئے ہیں: خلفاء اربعہ (۵) حضرت محابه کی جماعت میں دس صحابہ کرام وظافی معسر مشہور ہوئے ہیں: خلفاء اربعہ (۵) حضرت عبدالله ابن مسعود (٦) حضرت عبدالله ابن عباس (٤) حضرت الى ابن كعب (٨) حضرت زید ابن ثابت (۹) حضرت ابوموی الاشعری اور (۱۰) حضرت عبدالله ابن زبیر (رضی الله تعالی عنهم اجمعین) قعالی عنهم اجمعین) ظفائے اربعه علیهم اجمعین میں سب سے زیادہ روایتی تفییر قرآن کے سلسلہ میں حضرت علی ابن ابی طالب کرم الله وجہدالکریم سے آئی ہیں اور باقی تمینوں خلفاء وظالی میں موایتی منقول ہیں اور اس کا سبب بیتھا کہ ان کا وصال پہلے ہوگیا اور بارے میں بہت ہی کم روایتی منقول ہیں اور اس کا سبب بیتھا کہ ان کا وصال پہلے ہوگیا اور حضرت ابو بکرصدیق وی تنظیم سے دوایت حدیث کی قلت کا بھی یہی سبب ہے -

تعری ہوبر میری وہ اللہ میں دوری میں میں میں ہوری ہے۔ ابو بکر صدیق رشی اللہ کے بہت ہی کم آٹار (اقوال) محفوظ ہیں جو تعداد میں تقریباً دس سے متجاوز نہیں ہوں گئے گر حضرت مولی علی مشکل کشاء کرم اللہ وجہدالکریم سے یہ کثرت آٹارتفسیر کے بارے میں مروی ہیں۔

معمر نے وہب ابن عبداللہ رحمۃ اللہ سے اور وہب نے ابوالطفیل رحمۃ اللہ سے روایت کی ہے وہ بیان کرتے ہیں: میں نے حضرت علی کرم اللہ وجہدالکریم کو خطبہ دیتے ہوئے دیکھا' وہ فرمار ہے تھے:

ترجمہ: تم لوگ مجھ سے سوال کرو! کیونکہ اللہ کی قتم! تم جو بات بھی پوچھو گے میں تم کو اللہ کوئی اس کی خبر دوں گا' ہاں! مجھ سے قرآن باک کے متعلق سوال کرو' اس لیے کہ واللہ کوئی آیت ایسی نہیں جس کے بارے میں مجھ کوعلم نہ ہو کہ آیا وہ رات میں نازل ہوئی یا دن میں اور ہموار میدان میں اتری یا پہاڑی علاقہ میں ۔ ابونعیم کتاب الحلیہ میں ابو بکر ابن میں اور ہموار میدان میں اتری یا پہاڑی علاقہ میں ۔ ابونعیم کتاب الحلیہ میں ابو بکر ابن عیاش کے طریق سے نصیر ابن سلیمان الاعمش سے اس کے باپ سلیمان کے واسطہ سے اور سلیمان حضرت علی کرم اللہ وجہد الکریم سے روایت بیان کرتے ہیں کہ انہوں نے فرمانا:

"والله ما نزلت آیته الیا وقد علمت فیم انزلت واین انزلت ان رہی و هب لی قلبا عقولا ولسانا سئولا "(ترجمہ:)الله کاتم! کوئی آیت الی تہیں نازل ہوئی جس کی نبت میں نے بینہ معلوم کرلیا ہو کہ وہ کس بارے میں نازل ہوئی ہے میرے رب نے مجھ کوایک نہایت مجھ والا دل اور بہت سوال کرنے والی زبان عطا فرمائی ہے۔

ابن مسعود رضی اللہ ہے بہ نسبت حضرت علی کرم اللہ وجہ الکریم کے بھی زیادہ روایتیں منقول ہیں۔

ابن مسعود رضی اللہ ہے روایت ہے وہ فر ماتے ہیں:

اس ذات پاک کی قتم ہے جس کے سواکوئی معبود برحق نہیں ہے! کتاب اللہ کی کوئی آیے نہیں ہے! کتاب اللہ کی کوئی اور آیت نہیں اتری مگر میہ کہ چھکوعلم ہے کہ وہ کن لوگوں کے بارے میں نازل ہوئی اور کہاں نازل ہوئیں ہے اور اگر میں کسی ایسے خص کا مکان جانتا ہوتا جو کہ کتاب اللہ کا مجھ سے زیادہ علم رکھنے والا ہواور وہاں تک سواریاں پہنچ سکتی ہوں تو اس کے پاس میں جا پہنچا۔

ابونعیم رحمة الله نے ابوالبختری سے روایت کی ہے'انہوں نے بیان کیا ہے کہ لوگوں نے حضرت علی کرم اللہ و جہدالکریم سے دریافت کیا: آپ ہم سے ابن مسعود (رضائلہ) کے بارے میں کھے بیان فرمائے' تو حضرت علی رضی کلنہ نے جواب میں ارشاد فرمایا: ' عسلم القرآن و السنه ثم انتھی و کفی بذلك علما ''یعنی انہوں نے قرآن اور سنت کا علم سیکھا اور پھر وہ نتہی ہوگیا اور ان کا اس قدر علم کافی ہے۔

اورحضور ملى الله في ان ك ليه يهي دعافر مائي:

"الله م اتبه المحكمة "اسالله! تواس كو حكمت عطافر ما اورايك روايت ميس ب: "الله م عليمة المحكمة "اسالله! تواس كو حكمت سكها.

ابونعیم نے الحلیہ میں ابن عمر و ایت کی انہوں نے بیان کیا ہے کہ حضور ملک تھی نے الحلیہ میں ابن عمر و اللہ سے روایت کی انہوں نے بیان کیا ہے کہ حضور ملک تھی: '' اللہ شم بارٹ فیلید و انہ شر ملک تھی: '' اللہ شم بارٹ فیلید و انہ شر اس کے علم میں) برکت عطافر مااور اس کے علم کی اشاعت فر ما دے دے اور اس کو پھیلا دے۔

ابونعیم نے اپنی ایک اور سند کے ساتھ حضرت ابن عباس منتکاللہ کا قول نقل کیا ہے کہ

انہوں نے فرمایا: میں رسول اکرم ملڑ گیا ہم کی خدمت میں اس حالت میں پہنچا ،جب آپ کے خدمت میں اس حالت میں پہنچا ،جب آپ کے پاس حضرت جرائیل عالیہ للا موجود نظے پس جرائیل عالیہ للا نے رسول اکرم ملٹھ کیا ہم سے کہا: یہ خص اس امت کا ''جبو ''زبردست عالم ہونے والا ہے کہا: آپ اس کی نبیت نیک وصیت فرما کیں۔

کھراسی رادی نے عبداللہ بن حراش کے طریق پر بدواسط عوام بن حوشب مجاہد رحمۃ اللہ علیہ سے روایت کی ہے کہ انہول نے حضرت ابن عباس و اللہ کا قول نقل کیا ہے کہ ابن عباس نے کہا: مجھ سے رسول پاک ملٹی کیا تیا ہے نے فر مایا: ''نے م کیا خوب ترجمان قرآن ہو۔

اُنْتَ ''تم کیا خوب ترجمان قرآن ہو۔

ابونعیم نے مجاہد سے روایت کی ہے انہوں نے بیان کیا ہے کہ حضرت ابن عباس رضاللہ اللہ علم کی کثرت کی وجہ سے بحر العلوم کہلاتے تھے (یعنی آپ کوعلم کا سمندر کہا جاتا تھا)۔

اورابن الحنفيه بروايت كى بى كدانبول نے فر مايا: ابن عباس اس امت كے "جبر" (زبردست) عالم بيں ۔

ای راوی نے حسن سے روایت کی ہے کہ انہوں نے کہا: ابن عباس رضی القرآن میں وہ بلند مرتبہ حاصل تھا کہ حضرت عمر فاروق رضی آند فر ماتے کرتے تھے: '' ذاکم فتی الکھول ان له لسانا سو لا و قلبا عقو لا ''یہ ہیں تمہارے پختہ عمر نوجوان تحقیق ان کی زبان بے حدسوال کرنے والی اور دل اعلی درجہ کا دانش ورہے۔

امام بخاری نے سعید بن جبیر کے طریق پر ابن عباس رضی اللہ سے روایت کی ہے انہوں نے بیان کیا ہے کہ حضرت عمر فاروق رضی اللہ مجھ کو اپنی خدمت میں شیوخ بدر کے پاس جگہ دیے اور ان کے ساتھ بھاتے تھے ای وجہ سے ان شیوخ میں سے بعض کے دل میں بید خیال آیا اور انہوں نے کہا: بیاڑ کا ہمار ہے ساتھ کیوں داخل کیا جا تا ہے حالا مکہ یہ تو ہمارے بیوں کا ہم عمر ہے۔ حضرت عمر نے بیا عمر اض من کر فر مایا: بیاڑ کا ان لوگوں میں سے جن کے درجہ کوتم جانتے ہو۔

میں سے جن کے درجہ کوتم جانتے ہو۔
چنانچہ اس کے بعد حضرت عمر من اللہ نے ایک دن شیوخ بدر کو بلا بھیجا اور ابن عباس کو بھی

ا نہی کے ساتھ بٹھایا۔حضرت ابن عباس کہتے ہیں: میں سمجھ گیا کہ حضرت عمر رہنجا للہ نے آج مجھ کو ان لوگول کے ساتھ محض اس لیے بلایا تا کہ ان کومیر امقام دکھا دیں' چنانچیہ حضرت عمر نے شیوخ بدر کو مخاطب کرتے ہوئے دریافت فرمایا: تم لوگ اللہ تعالیٰ کے قول إذا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْعِ "(الصر:١) جبالله كم داور (اس كي) فتي آ جائے'' کے متعلق کیا کہتے ہو (لینی اس کا کیامفہوم ہے)؟ بعض شیوخ نے کہا: ہمیں اس وقت الله تعالیٰ کی حمد کرنے اور اس سے بخشش ما نگنے کا حکم دیا گیا ہے 'جب کہ ہم کو نصرت عطا ہواور ہمیں فتو حات نصیب ہوں ۔بعض شیوخ بالکل حیب رہے انہوں نے کوئی بات نہیں کی -حضرت عمر رہی اللہ نے اس کے بعد میری طرف توجہ فر ماکر کہا: کیوں ابن عباس (مِنْحَاللہ) کیاتم بھی ایہا ہی کہتے ہو؟ میں نے کہا: نہیں! حضرت عمر صَىٰ الله نے بوجھا: پھرتم كيا كہتے ہو؟ ميں نے كہا: وہ رسول كريم المُنْ اللِّهُ كے وصال شریف کی طرف اشارہ ہے جس کاعلم اللہ تعالیٰ نے آپ کودیا تھااور فرمایا کہ' اِذَا جَآءَ نَهُ صُورُ اللَّهِ وَالْفُتُح "(النسر:١)" جس ونت الله تعالى كي نفرت اور فتح آئے" توبيه بات تمہارے دنیا سے سفر کرنے کی علامت ہے'اس وفت تم اپنے پروردگار کی حمر کے 🔻 ساتھاں کی یا کی بیان کرنا اور اس میں مغفرت طلب کرنا' یے شک اللہ تعالیٰ بہت تو یہ قبول کرنے والا ہے' میرا بیہ جواب سن کر حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ نے فر مایا: مجھ کو بھی اس سورت کے بارے میں یہی معلوم ہوا ہے جوتم کہتے ہو۔

طبقه تالعين

علامدائن تیمیہ کا بیان ہے: تفییر کے سب سے بڑے عالم اہل مکہ بین اس لیے کہ وہ لوگ حضرت ابن عباس رہن گاللہ کے اصحاب میں سے ہیں (یعنی انہیں آپ کی صحبت اور رفاقت حاصل رہی ہے) جیسے مجاہد عطاء ابن ابی رباح ' عکرمہ مولی ابن عباس' سعید ابن جبیر اور طاق س وغیرہ وظافی کے اور ای طرح کوفہ میں حضرت ابن مسعود وشی اللہ کے اصحاب اور علماء مدینہ مجمی تفییر کے بارے میں اعلی معلومات کے حامل ہیں مثلاً زید ابن اسلم جن سے کہ ان کے بینے عبد الرحمٰن ابن زید اور مالک ابن انس نے تفییر کا علم حاصل کیا۔

ان بزرگوں میں سرفہرست حضرت مجاہد ہیں 'حضرت فضل ابن میمون بیان کرتے ہیں:

میں نے حضرت مجاہد کو یہ فرماتے ہوئے سنا ہے کہ انہوں نے کہا:

میں نے تمیں مرتبہ قرآن مجید کوحضرت ابن عباس مِن اللہ پر پیش کیا ہے۔

نیز اسی رادی کا بیان ہے کہ مجاہد کہتے ہیں: میں نے قرآن کو ابن عباس مِنْ اللہ کے ساتھ بڑھا کہ اس کی ایک ایک آیت برگھبر کر پوچھا کہ وہ کس سامنے تین مرتبہ اس کی فیت کے ساتھ بڑھا کہ اس کی ایک ایک آیت برگھبر کر پوچھا کہ وہ کس کے متعلق نازل ہوئی ہے اور کیسے تھی؟

صیف کابیان ہے کہ ان لوگوں میں مجاہد بہت بڑے مفسر قرآن تھے امام توری کہتے ہیں: اگرتم کو مجاہد سے تفسیر کی روایت ملے تو تمہارے لیے کافی ہے۔

ابن تیمیه کا قول ہے: اسی سب سے مجاہد کی تفسیر پرشافعی اور بخاری وغیرہ اہل علم اعتماد کرتے ہیں۔

علامہ سیوطی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: فریابی اپنی تفسیر میں صحابی کے اقوال زیادہ اور تابعی کے اقوال بہت تھوڑے لاتے ہیں۔

اور منجملہ ان تابعین کے جن کی تفسیر قابل اعتاد ہے سعید بن جبیر بھی ہیں حضرت سفیان توری فرماتے ہیں:

تم تفسیر کاعلم چار شخصوں سے حاصل کرؤ سعید ابن جبیر سے مجاہد سے عکرمہ سے اور ضحاک ہے۔

حضرت قمادہ کا بیان ہے:

تابعین میں سے جا شخص بہت بڑے عالم ہوئے ہیں۔عطاء ابن ابی رباح رحمة الله علیهٔ بیمناسک کے بہت بڑے عالم تھے۔

- سعیدابن جبیر نیفسیر کے بہت ماہر تھے۔
- حضرت عکر مه کوعلم سِیْر میں بہت دسترس حاصل تھی۔
- اور حضرت حسن ان میں حلال اور حرام کے سلسلہ میں وسیع معلومات رکھتے تھے۔
 اور منجملہ ان لوگوں کے عکرمہ مولی ابن عباس ہیں شعبی کا قول ہے:
 عکرمہ سے بڑھ کر کتاب اللّٰد کا عالم کوئی باقی نہیں رہا۔

ساک بن حرب کہتے ہیں: میں نے حضرت عکرمہ کو بیہ کہتے ہوئے سنا' وہ فر ماتے تھے کہ

بے شک میں نے اس چیز کی تفسیر کر دی ہے جو کہ دولوحوں کے درمیان ہے (یعنی پور نے آن یاک کی تفسیر کر دی ہے)۔

تابعی مفسرین میں سے حسن بھری عطاء ابن ابی رباح عطاء ابن ابی سلمہ الخراسانی محمد ابن کعب القرظی ابو العالیہ ضحاک ابن مزاحم عطیہ العوفی وقادہ زید ابن اسلم مرہ البمد انی ادر ابو مالک ہیں۔

رئیج ابن انس اورعبدالرحمٰن ابن زید' بید دوسر سے طبقہ کے بزرگ ہیں' بیرحضرات جن کے اساءگرا می او پر ذکر ہوئے ہیں' قد مائے مفسرین ہیں اور ان کے بیشتر اقوال اس قتم کے ہیں' انہوں نے ان اقوال کاصحابہ کرام ہے سماع کیا اور ان سے لیے ہیں۔

پھراس طبقہ کے بعدالیی تفسیریں تالیف ہوئیں جو کہ صحابہ کرام اور تابعین دونوں کے اقوال کی جامع ہیں' جیسے سفیان ابن عیدیۂ وکیع ابن الجراح' شعبہ ابن الحجاج' بزید ابن ہارون' عبدالرزاق' آ دم ابن الی ایاس' اسحاق ابن را ہو یۂ روح ابن عبادہ' عبد ابن حمیدہ' سعید' ابو بکر ابن الی شیبہ اور بہت سے دوسر بے بزرگوں کی تفسیریں۔

اس گردہ کے بعدا بن جریر الطمری کا مرتبہ ہے اور ان کی کتاب تمام تفییروں میں سب
سے بڑی اور عظیم الثان تفییر ہے اور ابن ابی حاتم' ابن ماجۂ حاکم' ابن مردویہ' ابوالشخ
ابن حبان اور ابن المنذ روغیرہ کی تفییریں ہیں اور ان سب بزرگوں کی تفییریں صحابۂ
تابعین اور تبع تابعین ہی کی طرف مند ہیں اور ان تفییروں میں اس بات کے سوا پچھ
مجھی نہیں ہے' مگر ابن جریر کی تفییر کہ وہ تو جیہ اقوال اور بعض اقوال کو بعض پرتر جیح دیے
اور اعراب و استنباط سے بھی بحث کرتے ہیں' لہذا وہ دوسروں پر اس لحاظ سے فوقیت
رکھتے ہیں۔

اس کے بعد بہت سے لوگوں نے تغییر میں کتابیں لکھیں اور انہوں نے اسانید کو مختفر کر کے پیش کیا اور اقوال کے پے در پے نقل کیا اور یہیں سے خرابیاں پیدا ہوئیں اور صحح اور غیر صحح اقوال گذیڈ ہو گئے۔ بعد ازیں توبیہ ہوا کہ ہر شخص کو جو قول سوجھتا' وہ اس کو نقل کر بیتا تھا' پھر بعد کے لوگوں نے تو ان دیتا تھا' پھر بعد کے لوگوں نے تو ان باتوں کو اس خیال سے نقل کرنا شروع کر دیا کہ اس کی کوئی اصل ہوگئ تنہی پہلوں نے باتوں کو اس خیال سے نقل کرنا شروع کر دیا کہ اس کی کوئی اصل ہوگئ تنہی پہلوں نے

اس کوذکر کیا ہے اورسلف صالحین کی تحریروں یا ایسے بزرگوں کے اقوال کی طرف بالکل التفات نہ کیا'جن کی جانب تفسیر کےسلسلہ میں رجوع کیا جاتا تھا۔

اس کے بعد ایسے لوگوں نے تفییر کی کتابیں لکھیں جو کہ خاص خاص علوم میں عبور اور در مترس رکھتے تھے' پس ان میں سے ہرایک مفسر اپنی تفییر میں صرف اسی فن پر اقتصار کرتا' جس کا اس پرغلبہ ہوتا۔

چنانچیآپ دیکھیں گے کہنحوی کواعراب اوراس کے بارے میں متعدد وجوہ مختملہ کوذکر کے ان نے اور علم نحو کے قواعد ٔ مسائل ٔ فروع اوراختلا فات بیان کرنے کے علاوہ اور کوئی خیال ہی نہیں ہوتا ' جیسے زجاج اور واحدی نے'' البسیسط'' میں اور ابوحیان نے'' البحر والنہ'' میں کیا ہے۔

اورمورخ شخص کاشغل میر ہا کہ اس نے اپنی تفسیر میں قصول کی بھر مار کی اور اگلوں کی خرم مار کی اور اگلوں کی خبریں اور ان کے احوال کو درج کر دیا' اس کو اس سے سر د کارنہیں ہے کہ وہ واقعاتِ احوال اور قصص واخبار' جو وہ درج کررہا ہے سیچ بھی جیں یا نرا جھوٹ کا پلندا ہیں' جیسے کرنہا ہے کے بھی جیں یا نرا جھوٹ کا پلندا ہیں' جیسے کرنہا ہے کے بھی جیں یا نرا جھوٹ کا پلندا ہیں' جیسے کرنہا ہے کے بھی جیں کے نما ہے۔

اور فقیہ مفسر لگ بھگ تمام علم فقہ کو باب طہارت سے لے کراُم ّ وَلدیک پوری فقہی تفصیلات کو قلید تک بوری فقہی تفصیلات کو تفسیر میں بھردیتا ہے اور بسااوقات ان فقہی مسائل پر دلائل قائم کرنے پراتر آتا ہے جن کو آئیت کے ساتھ کوئی تعلق نہیں ہوتا اور اسی کے ساتھ اپنے مخالفین کی ویتا جاتا ہے جیسے علامہ قرطبی رحمۃ اللّٰدنے کیا ہے۔ ولیلوں کا جواب بھی دیتا جاتا ہے جیسے علامہ قرطبی رحمۃ اللّٰدنے کیا ہے۔

ورعلوم عقلیہ کے عالم خصوصاً امام فخر الدین رحمۃ اللّہ علیہ نے اپی تفسیر کو حکماء اور فلاسفہ کے اقوال اور اس تم کی باتوں سے بھر دیا ہے اور ایک چیز کو بیان کرتے کرتے دوسری چیز کی طرف نکل جاتے ہیں' جس کی وجہ ہے ان کی تفسیر کا مطالعہ کرنے والے شخص کو جیز کی طرف نکل جاتے ہیں' جس کی وجہ سے ان کی تفسیر کا مطالعہ کرنے والے شخص کو آیت کے موقع محل کے ساتھ عدم مطابقت کی وجہ سے خت حیرت ہوتی ہے۔ ابوحیان'' کتاب البح'' میں لکھتے ہیں:

امام رازی رحمة الله علیه نے اپنی تفسیر میں بہت سی طویل ابحاث اور کمبی چوڑی باتیں اسماری رحمة الله علیہ نے کہا ہے اسماری کردی ہیں جن کوعلم تفسیر میں حاجت ہی نہیں پڑتی 'اسی لیے بعض علاء نے کہا ہے

کہ علامہ رازی کی کتاب میں (تفسیر) کے علاوہ سب چیزیں ہیں۔

اور بدعتی کا مقصد صرف بیہ وتاہے کہ وہ آیوں کی تحریف کر کے انہیں اپنے فاسد مذہب پر منطبق اور چسٹیل شکار کی پرمنطبق اور چسپال کرے کیونکہ جہال اس کو دور سے بھی کسی آوارہ چسٹیل شکار کی صورت دکھائی دی اس نے فور آاس کو شکار کرلیا یا ذرا بھی کہیں گنجائش پائی 'پس جھٹ ادھر کو دوڑ گیا۔

علامہ بلقینی کابیان ہے کہ میں نے '' تغییر کشاف' میں آیت کریمہ ' فَمَنْ ذُحْوِحَ عَنِ السَّادِ وَ اُدْ حِلَ الْجَنَّةُ فَقَدْ فَازَ ''(آل مران: ۱۸۵)'' توجوآ گ ہے بچا کر جنت میں داخل کیا وہ مراد کو پہنچا'' کی تغییر میں اعتزال کی واضح علامت پائی ہے' بھلا جنت میں داخل ہونے سے مفسر نے عدم رؤیت کی طرف اشارہ کیا ہے۔

متنداور قابل اعتماد تفسير کون سي ہے؟

علامه جلال الدين سيوطي رحمة الله تعالى فرمات مين:

اگرتم بیکہوکہ پھرکون ی تفسیراچھی ہے جس کی طرف تم راہنمائی کرتے ہواوراس پراعتاد کرنے کا حکم دیتے ہو؟

تو میں کہوں گا کہ وہ متندامام ابوجعفر ابن جربر طبری رحمۃ اللہ تعالیٰ کی تفسیر جس پرتمام معتبر علماء کا اتفاق ہے کہ فن تفسیر میں اس ایسی کوئی تفسیر نہیں پائی جاتی۔ امام نووی رحمۃ اللہ تہذیب میں لکھتے ہیں:

ابن جریر کی تفسیر ایسی شاہکار ہے کہ اس کی مثل کسی نے کتاب تصنیف ہی نہیں گی۔





DarseNizami.MadinaAcadmey.pk